प्रकृति से वर्षा ज्ञान

(पूर्वार्द्ध)

मकलनकर्त्ता व नुवादक —
डा० जयशंकर देवशंकरजी शर्मा (श्रीमाली ब्राह्मण)
एफ एस आर आई (बीकानेर)

★

भूमिका-लेखक —
डा० वासुदेवशरण अग्रवाल

★

प्रकाशक
अगरचंद नाहटा
सचालक
राजस्थानी साहित्य परिषद्
कलकत्ता और बीकानेर

●

विक्रमाब्द २०२६] [मूल्य [illegible]) रु०

अनुक्रमणिका

मुद्रक : त्रिलोकीनाथ मीतल, अग्रवाल प्रेस, मथुरा ।

समर्पण

★

जिनकी अपार कृपा से मुझ पितृ-हीन ने अपनी शैशवावस्था में
पितातुल्य सुख भोगा है, जिन्होंने मुझे सुयोग्य नागरिक
बनाना ही अपना लक्ष्य माना था और जो
कृषि-विज्ञान में रुचि रखते थे, उन उदारमना
मेरे पोषक-पिता स्व० श्री मनकरण जी
व्यास रायपुर मारवाड़ वालों को
मेरा यह यत्किंचित प्रयास
समर्पित है !

*

जयशङ्करदेव शर्मा

प्रकाशकीय

प्रकृति की लीला अनंत है, इसका सही ज्ञान प्राप्त करना बहुत ही कठिन है। फिर भी मानव ने सदा प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न किया है और वह कुछ अंशों में सफल भी हुआ है। प्रकृति के नियमों की जानकारी प्राप्त करने के विविध प्रयत्न चिरकाल से होते रहे हैं और उन प्रयत्नों के फल स्वरूप बहुत से महत्वपूर्ण तथ्य मनुष्य ने प्राप्त किये हैं। मानव ने भविष्य के संबंध में भी कुछ सूचनाएँ प्राप्त की है, जिससे जीवन को नई गति प्राप्त हुई है।

मनुष्य, पशु, पक्षी आदि जीव जन्तुओं का जीवन मुख्यतः जल, अन्न, वनस्पति, वायु आदि प्राकृतिक वस्तुओं पर आधारित है। जल, पृथ्वी के भीतर से भी निकलता है और आकाश से भी बरसता है। पृथ्वी और जल के संयोग से अन्न एवं वनस्पतियाँ आदि उत्पन्न होती है। पृथ्वी के भीतर का जल निकालना बहुत कष्ट साध्य है। पर ऊपर से जो वर्षा प्रकृति के द्वारा होती है, वह सुलभ और सहज है। भारत में प्रकृति के नाना रंग या करिश्मे दिखायी पड़ते हैं। किसी प्रदेश में मे जल खूब बरसता है तो कोई प्रदेश सूखा-सा रहता है। अतः जिस प्रदेश मे वर्षा कम होती हैं, वहाँ के लोग स्वाभाविक रूप से ही अधिक उत्सुक और जागरूक होते हैं।

वृष्टि विज्ञान भारत का प्राचीन विज्ञान है। वैदिक काल से लेकर अब तक इस संबंध में काफी विचार एवं अन्वेषण होता रहा है। ज्योतिष ग्रन्थो मे इसकी विशेष चर्चा होना स्वाभाविक है क्यों कि

भविष्य का ज्ञान ज्योतिष से अधिक संबंधित है। प्रकृति प्रदत्त वर्षा पर जीवन बहुत कुछ आधारित है इसलिये किन-किन लक्षणों या कारणों से वर्षा कब और कितनी होगी, इसकी जानकारी मनुष्य के लिये विशेषतः — किसानों के लिये बहुत जरूरी है। वैसे व्यापारियों के लिये भी सुभिक्ष, दुर्भिक्ष आदि का ज्ञान आवश्यक है ही। जन-साधारण के लिये इस विषय के ज्ञान के स्रोत भड्डली वाक्य, मेघमाल आदि रचनायें हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ वर्षा-विज्ञान सबन्धी प्राप्त पद्यों एव कहावतों आदि का वृहद् संग्रह है, जो डॉ० जयशंकर देवशंकर जी शर्मा श्रीमाली ब्राह्मण ने कई वर्षों के परिश्रम और लगन से सकलित किया है। साथ ही हिन्दी अनुवाद करके इसकी उपयोगिता में चार चाँद लगा दिये हैं। जब मैंने उनका यह प्रयत्न और श्रम साध्य संकलित ग्रन्थ देखा तो उनके श्रम का सभी को लाभ मिल सके और उनका प्रयत्न सफल हो, इसलिए इसके ग्रन्थ के प्रकाशन मे विशेष रुचि ली। संयोग से कलकत्ता जाने पर मैने राजस्थानी साहित्य के महत्व के सम्बन्ध में भाषण दिये जिनका सभापतित्व दानवीर सेठ सोहनलाल जी दूगड़ ने किया। वे मेरे भाषण से बहुत प्रभावित हुये और तत्काल राजस्थानी साहित्य के उद्धार के लिये ५ हजार रुपये देने की घोषणा कर दी। उनकी इस विशेष उदारता के लिये मैं बहुत आभारी हूं। उस राशि से राजस्थानी भाषा के दो ग्रन्थ—सबड़का और इक्के वाला जिनके लेखक राजस्थानी साहित्य के विशिष्ट लेखक राजस्थान के श्रीलाल जी और मुरलीधर जी व्यास हैं, प्रकाशित किये जा चुके हैं। डा० जयशंकर जी देवशंकर जी शर्मा श्रीमाली ब्राह्मण का प्रस्तुत ग्रन्थ काफी बड़ा हो जाने से दो भागों में प्रकाशित किया जा रहा है। इसको पूर्वार्द्ध में प्रवर्षण, केतुचार, वायु धारणा आदि ४७ प्रकरणों में विभक्त है और उतरार्द्ध में १२ महीनों के वर्षा ज्ञान सम्बन्धी पद्यों का सानुवाद संकलन है। ग्रन्थ की उपयोगिता के विषय में दो मत हो ही नहीं सकते क्यों कि भारत कृषि प्रधान देश

है। हमारे पूर्वजों के वृष्टि विज्ञान सम्बन्धी अनुभव से लाभ उठाना बहुत ही जरूरी है। वैसे इस सम्बन्ध में कुछ ग्रन्थ पहले प्रकाशित हुये भी हैं पर अपने ढंग का यह विशिष्ट प्रयास अवश्य ही अधिक लाभ-प्रद होगा।

'प्रकृति से वर्षा ज्ञान' नामक इस ग्रन्थ में कई अनुभवी व्यक्तियों के पद्यों का संग्रह है। जिनमें डक और भड्डली विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भड्डली वाक्य की अनेकों प्रतियां हमारे अभय जैन ग्रन्थालय आदि हस्त लिखित ग्रन्थ भंडारों में प्राप्त हैं। मैंने प्राचीन प्रतियों की खोज करके भड्डली वाक्यों का एक संग्रह-ग्रन्थ सम्पादित भी कर रखा है। १५ वीं शताब्दी तक की प्रतियों में मुझे 'भड्डली वाक्य' के पद्य प्राप्त हुये हैं। 'भगवद् गो मडल' नामक गुजराती के वृहद् शब्द कोष के अनुसार भड्डली १२ वी शताब्दी में हुई हैं। पर अभी तक भड्डली वंशावलि उतनी प्राचीन प्रति बहुत प्रयत्न करने पर भी मुझे प्राप्त नही हो सकी है। मेघमाल-भड्डली के सम्बन्ध मे मेरा एक लेख 'परम्परा' पत्रिका के 'राजस्थानी साहित्य के आदि काल' विशेष अंक में प्रकाशित हो चुका है।

वर्षा-विज्ञान सम्बन्धी अलग कई रचनायें मेरी खोज मे प्राप्त हुई हैं, जो हिन्दी और राजस्थानी भाषा में है। उनमें से कुछ रचनाओं के सम्बन्ध में मेरा एक लेख 'मधुमति' में प्रकाशित हो चुका है। उसके अतिरिक्त भी कई एक रचनाओं की जानकारी और मिली है जिनके सम्बन्ध में फिर कभी प्रकाश डाला जायगा।

भारत के अलग-अलग प्रान्तों में इस सम्बन्ध में जो भी साहित्य प्राप्त है उन सब का संग्रह एवं तुलनात्मक अध्ययन किया जाना बहुत ही आवश्यक है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के पूर्वार्द्ध की भूमिका स्व० डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल ने मेरे अनुरोध से लिख भेजी थी। ग्रन्थ का पूर्वार्द्ध तो उस समय छप भी चुका था। पर प्रकाशन में देरी होने से माननीय डा० अग्रवाल जी की विद्यमानता में यह ग्रन्थ प्रकाशित नहीं किया जा सका, इसका मुझे विशेष खेद है।

उत्तरार्द्ध के प्रारम्भिक 'कुछ शब्द' पद्म भूषण माननीय डा० सूर्यनारायण व्यास ने लिख भेजने की कृपा की है। इसलिये मैं उनका भी बहुत आभारी हूं। श्री व्यास जी भारत के सुप्रसिद्ध ज्योतिष के विद्वान है। डा० अग्रवाल जी और व्यास जी जैसे महान् विद्वानों ने प्रस्तुत ग्रन्थ के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध पर अपने विचार लिख कर अवश्य ही इस ग्रन्थ का गौरव बढ़ाया है।

ग्रन्थ का मुद्रण अग्रवाल प्रेस, मथुरा में करवाया गया और इसके संकलनकर्ता डा० जयशंकर देवशंकरजी शर्मा श्रीमाली ब्राह्मण बीकानेर में रहते हैं, इसलिए मुद्रण में काफी देरी हुई एवं बहुत-सी अशुद्धियाँ रह गयीं। प्रेस एवं श्रीमालीजी दोनों की परिस्थितियों और असुविधाओं के कारण ग्रन्थ के प्रकाशित होने में कई वर्ष लग गये। इधर गत वर्ष इस ग्रन्थ के द्रव्य सहायक दानवीर सेठ सोहनलाल जी दूगड़ का भी निधन हो गया। यदि उनकी विद्यमानता में इस ग्रन्थ का प्रकाशन सम्भव होता तो अवश्य ही वे इस उपयोगी और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ को देख कर काफी प्रसन्न होते।

डा० ,जयशंकर जी देवशंकर जी श्रीमाली ब्राह्मण ने इस ग्रन्थ को तैयार करने में स्वान्तः सुखाय बहुत ही श्रम किया है। इसलिये उनका भी मैं विशेष आभारी हूँ। उनके वर्षों के श्रम को प्रकाश में लाने का कुछ श्रेय मुझे भी मिला, इसका मुझे हार्दिक संतोष है।

आशा है इससे भारतीय जनता काफी लाभ उठायेगी। ग्रन्थ बहुत उपयोगी है, अतः इस ग्रन्थ का प्रचार अधिकाधिक होना वांछनीय है।

अन्त में इस ग्रन्थ की प्रकाशन सस्था राजस्थानी साहित्य परिषद के सम्बन्ध में भी कुछ जानकारी दे देना आवश्यक समझता हूँ। स० २० ४ में माननीय नरोत्तमदास जी स्वामी और मुरलीधर जी व्यास कलकत्ता पधारे। तब राजस्थान रिसर्च सोसायटी को नया रूप देकर राजस्थानी साहित्य परिषद नामक संस्था की स्थापना की गई थी। उस समय 'राजस्थानी कहावत' भाग १-२ और 'राजस्थानी (निबन्ध माला) भाग १-२ का प्रकाशन किया गया। उनके मुद्रण, प्रकाशन की सारी व्यवस्था मेरे भ्रातृ पुत्र भंवरलाल ने कलकत्ता में की। जब दानवीर सोहनलाल जी दूगड़ ने ५ हजार रुपये मुझे राजस्थानी साहित्य के उद्धार के लिए दिये तो मैंने इसी संस्था को आगे बढ़ाने के लिये उन रुपयों का उपयोग उपरोक्त ग्रन्थों के प्रकाशन में इस संस्था के माध्यम से करना उचित समझा। उसी के परिणाम-स्वरूप प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन सम्भव हो सका है।

—अगरचन्द नाहटा

भूमिका

"प्रकृति से वर्षा ज्ञान" नामक यह बृहत् संग्रह अपने ढंग की अच्छी वस्तु है . डा० जयशंकर देवशंकर जी शर्मा (श्रीमाली ब्राह्मण) ने बहुत परिश्रम से वृष्टि सम्बन्धी लोक विश्वासों का संग्रह किया है । भारत कृषि-प्रधान देश है और यहां के चतुर किसानों ने अपने कृषि सम्बन्धी दीर्घकालीन अनुभवों को तथा लोकोक्तियों को स्मरणार्थ पद्यबद्ध कर दिया था । प्राचीन काल में वर्षा-ज्ञान के सूत्र संस्कृत भाषा में थे । फिर वे लोक की प्राकृत भाषाओं में ढले और विकास के अन्तिम युग में स्वभावतः हिन्दी भाषा की विभिन्न बोलियों में ढल गये । उन्हीं का यह विशद संग्रह राजस्थानी क्षेत्र से यहां प्रस्तुत किया गया है ।

प्राचीन काल में वृष्टि सम्बन्धी इस प्रकार का ज्ञान नक्षत्र-विद्या के अन्तर्गत माना जाता था । वेदों में मेघों को अभ्र और बिजली को स्तनयित्नु कहते थे । वृष्टि लाने वाली हवाएँ उस समय भी बहती थीं जिनके भारतीय आकाशमें भर जाने से जो चमक और कड़क होती थी उनका बहुत अच्छा वर्णन वैदिक मन्त्रों में पाया जाता है । वृष्टि लानेवाली हवाओं को मातरिश्वा और मूसलाधार बरसने वाले मेघों को पर्जन्य कहा जाता था । ऋग्वेद का पर्जन्य-सूक्त इस प्रकार है :—

अच्छा वद तवसं गीर्भिराभिः स्तुहि पर्जन्यं नमसा विवास ।
कनिक्रदद् वृषभो जीरदानू रेतो दधात्योषधीषु गर्भम् ॥ १ ॥
विवृक्षान् हन्त्युत हन्ति रक्षसो विश्वं बिभाय भुवनं महावधात् ।
उतानागि ईषते वृष्ण्यावतो यत्पर्जन्यः स्तनयन् हन्ति दुष्कृतः ॥२॥

रथीव कशयाश्वाँ अभिक्षिपन्नाविदूँतान्कृणुते वर्ष्यां ३ अह ।
दूरात्सिंहस्य स्तनथा उदीरते यत्पर्जन्यः कृणुते वर्ष्यं १ नभः॥३॥
प्र वाता वान्ति पतयन्ति विद्युत उदोषधीर्जिहतेपिन्वते स्वः ।
इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यः पर्जन्यः पृथिवीं रेतसावति ॥४॥
यस्य व्रते पृथिवी नंनमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति ।
यस्य व्रत ओषधीर्विश्वरूपाः स नः पर्जन्य महि शर्म यच्छ ॥५॥
दिवो नो वृष्टिं मरुतो ररीध्वं प्र पिन्वत वृष्णो अश्वस्य धाराः ।
अर्वाङेतेन स्तनयित्नुनेह्यापो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः ॥ ६ ॥
अभि क्रन्द स्तनय गर्भमा धा उदन्वता परि दीया रथेन ।
दृतिं सु कर्ष विषितं न्यञ्चं समा भवन्तूद्वतो निपादाः ॥ ७ ॥
महान्तं कोशमुदचा नि षिञ्च स्यन्दन्तां कुल्या विषिताःपुरस्तात् ।
घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्यः ॥ ८ ॥
यत्पर्जन्य कनिक्रदत्स्तनयन् हंसि दुष्कृतः ।
प्रतीदं विश्वं मोदते यत्किं च पृथिव्यामधि ॥ ९ ॥
अवर्षीर्वर्षमुदु षू गृभायाकर्धन्वान्यत्येतवा उ ।
अजीजन ओषधीर्भोजनाय कमुत प्रजाभ्योऽविदो मनीषाम् ॥१०॥
ऋ० ५ । ८३ । १–१०

उस महान् पर्जन्य के लिए अपने स्तोत्र का गान करो, वह महान मेघ दुड़कारते हुए सांड के समान अपने रेत की वृष्टि से ओषधियों को गर्भ धारण कराता है ॥ १ ॥ वह बड़े-बड़े वृक्षों को जड़ों से उखाड़ फेंकता है। दिशाओं में छिपे राक्षसों को मार भगाता है। संसार उसकी मार से थर्राता है। जब पर्जन्य गरजने लगते हैं तो बुरे सब डरप जाते हैं ॥ २ ॥

जैसे सारथी चाबुक की मार से घोड़ों को डेरवाता है वैसे ही पर्जन्य वृष्टि के दूतों रूपी बादलों को भेजता है वह शेर की तरह दूर से दहाड़ते हुये आकाश को वृष्टि से भर देता है ॥ ३ ॥ उसकी सात प्रचण्ड हवाएँ टूट पड़ती हैं। बिजलियाँ

कड़कती हैं। ओषधियां शिर उठाकर भूमियों से निकलती जाती हैं और आकाश चारों ओर से भर जाता है। जब पर्जन्य पृथिवी को गर्भ धारण कराता है तो सब प्राणियों के लिए अन्न उत्पन्न होता है ॥ ४ ॥

जिसके प्रताप से धरती झुक जाती है, पशु भय से इधर-उधर बिखरा जाते हैं, जिसके प्रताप से ओषधियां नाना रूपों में जन्म लेती है, वह पर्जन्य सबको मंगल देता हुआ आता है ॥५॥

हे प्रचण्ड मरुद्गण, आकाश से वृष्टि प्रदान करो, वर्षण-शील मेघ की धाराओं को प्रवाहित करो, जलों को बरसाते हुए विद्युत्गर्जन के साथ हे महान् असुर हमारे पालन के लिए यहाँ आवो ॥ ६ ॥

तुम बिजली की कड़क के साथ गरजो, ओषधियों को गर्भ धारण करावो और रथ पर लदे जल के साथ यहाँ आवो। अपने साथ पानी की मशकों का मुँह खोलकर नीचे उतरो। तुम्हारी मूसलाधार वृष्टि से नीचे-ऊँचे जल-थल एकाकार बन जाँय ॥ ७ ॥

जल के महान् पात्र को पृथिवी से ऊपर उठा ले जावो और खेलो। उसे नीचे बरसाओ। चारों ओर जल की वेगवती धाराएँ वह निकलें। आकाश और पृथिवी जल से भीग उठें। गौओं के पीने के लिए चारों ओर जल भरदो ॥ ८ ॥

जब पर्जन्य भयंकर शब्द करता हुआ बरसता है तब जो कुछ पृथिवी पर है वह हर्ष से प्रमुदित हो जाता है ॥ ९ ॥

हे पर्जन्य, तुमने मूसलाधार मेघ बरसाया है, अब बस करो, तुमने बालू के रेगिस्तानों में चलने के लिए मार्ग संभव कर दिया। तुमने भोजन के लिए ओषधियों को उपजाया है, सब प्राणियों में तुम्हारी प्रशंसा का भाव भर गया है ॥ १० ॥

ऊपर वर्षण करने वाले पर्जन्य मेघों का भरा-पूरा चित्र खींचा गया है, वह प्रतिवर्ष अनुभव में आता है। मातृभूमि के इस स्वरूप का वर्णन करते हुए अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त में कहा है:—

यां द्विपादः पक्षिणः संपतन्ति हंसाः सुपर्णाः शकुना वयांसि।
यस्यां वातो मातरिश्वेयते रजांसि कृण्वंश्च्यावयंश्च वृक्षान्।
वातस्य प्रवामुपवामनु वात्यर्चिः (अथर्वः-१२-१-५१)

हमारी इस पृथिवी पर वर्षा काल के प्रारम्भ में जब मातरिश्वा नामक वायु चलती है तो धूल उड़ाती हुई और वृक्षों को गिराती हुई आकाश को भर देती है और उसके झंझावाती झंकारों के पीछे बिजलियां गिरती हैं। यह मातरिश्वा दक्षिण से उत्तर आने वाली वायु होती है। महाभारत कर्णपर्व ४२-२१ में मातरिश्वा को बलवान्, उग्र, सबको मथकर चूर कर देने वाला प्रभञ्जन वायु कहा गया है :—

प्रमाथिनं बलवन्तं प्रहारिणं प्रभञ्जनं मातरिश्वानमुग्रम्।

अथर्व के एक अन्य सूक्त में पर्जन्य और वृष्टि के विषय में बहुत ही उत्तम वर्णन पाया जाता है:—अथर्व ४। १५। १-१६

समुत्पतन्तु प्रदिशो नभस्वतीः समभ्राणि वातजूतानि यन्तु।
महऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु॥१॥
समीक्षयन्तु तविषाः सुदानवोऽपां रसा ओषधीभिः सचन्ताम्।
वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिं पृथग्जायन्तामोषधयो विश्वरूपाः॥२॥
समीक्षयस्व गायतो नभांस्यपां वेगासः पृथगुद्विजन्ताम्।
वर्षस्य सर्गा महयन्तु भूमिं पृथग्जायन्तां वीरुधो विश्वरूपाः॥३॥
गणास्त्वोप गायन्तु मारुताः पर्जन्य घोषिणः पृथक्।
सर्गा वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवीमनु॥४॥

उदीरयत मरुतः समुद्रतस्त्वेषो अर्को नभ उत्पातयाथ ।
महऋषभस्य नयतो नभस्वतो वाश्रा आपः पृथिवीं
तर्पयन्तु ॥ ५ ॥
अभि क्रन्द स्तनयार्दयोदधिं भूमिं पर्जन्य पयसा समङ्धि ।
त्वया सृष्टं बहुलमैतु वर्षमाशारैषी कृशगुरेत्वस्तम् ॥६॥
सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु ॥ ७ ॥
आशामाशां वि द्योततां वाता वान्तु दिशोदिशः ।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः सं यन्तु पृथिवीमनु ॥ ८ ॥
आपोविद्युदभ्रं वर्षं सं वोवऽन्तु सुदानवउत्सा अजगराउत।
मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः प्रावन्तु पृथिवीमनु ॥ ९ ॥
अपामग्निस्तनूभिः संविदानो य ओषधीनामधिपा बभूव ।
स नो वर्षं वनुतां जातवेदाः प्राणं प्रजाभ्यो अमृतं
दिवस स्परि ॥ १० ॥
प्रजापतिः सलिलादा समुद्रादाप ईरयन्नुदधिमर्दयाति ।
अप्यायतां वृष्णो अश्वस्य रेतोऽर्वाङ तेन स्तनयित्नुनेहि।११
अपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः श्वसन्तु गर्गरा अपां
वरुणाव नीचीरपः सृज ।
वदन्तु पृश्निबाहवो मण्डूका इरिणानु ॥ १२ ॥
संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।
वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः ॥ १३ ॥

उपप्रवद मण्डूकि वर्षमा वद तादुरि ।
मध्ये ह्रदस्य प्लवस्व विगृह्य चतुरः पदः ॥ १४ ॥
खण्वखा३ इ खैमखा३ इ मध्ये तादुरि ।
वर्षं वनुध्वं पितरो मरुतां मन इच्छत ॥ १५ ॥
महान्तं कोशमुदचाभि षिञ्च सविद्युतं भवतु वातु वातः ।
तन्वतां यज्ञं बहुधा विसृष्टा आनन्दिनीरोषधयो भवन्तु।१६

वृष्टि से भरी हुई दिशायें चारों ओर छा जांय, हवा से लाई हुई मेघों की घटायें सब ओर से उमड़ी हुई आवें। इन्द्र-रूपी महान् वृषभ की दड़्क के साथ बरसते हुए जल धरती की प्यास बुझाव ॥ १ ॥

प्रचण्ड मरुद्गण दिखाई पड़ें और ओषधी वनस्पतियों में जलों की आर्द्रता का दर्शन हो। वर्षण के वेग पृथ्वी को हरा-भरा करें और नाना प्रकार की ओषधियां जन्म लें ॥ २ ॥

जलों की उठती हुई घटायें हमें देखने को मिलें, वृष्टि के वेग अनेक स्थानों पर फूटते हुए प्रगट हों। वर्षण के वेग भूमि को हरा-भरा करें और नाना प्रकार की ओषधियां जन्म लें ॥ ३ ॥

हे पर्जन्य, गर्जना करते हुए मरुद्गण तुम्हारे घोष की वृद्धि करें। वृष्टि के उन्मुक्त वेग भूमि पर जलधाराओं की सृष्टि करें ॥ ४ ॥

हे मरुद्गण, अपनी शक्ति के द्वारा समुद्र से मेघजलों को उठाकर आकाश में ले जाओ। इन्द्ररूपी महान् वृषभ की दड़्क के साथ बरसते हुए जल धरती की प्यास बुझावें ॥ ५ ॥

हे पर्जन्य, गरजो और बिजली की कड़क के साथ चमको। समुद्र को उद्वेलित करो और वृष्टिजल से पृथिवी को गीला करो। तुम्हारे द्वारा बहुल वृष्टि भूमि को प्राप्त हो। तुम्हें आता देखकर किसान अपनी गायों को घर की ओर हाँककर ले चले ॥ ६ ॥

उत्तम दान देने वाली हवायें, जलों के स्रोत और अजगर जैसे कुण्डलीमारे हुये मेघ आप सबकी रक्षा करें। हवाओं से उड़ाकर लाये हुए मेघ पृथिवी पर जल बरसावें ॥ ७ ॥

हर दिशा में बिजली चमकती हो, हर दिशा में हवाएँ बहती हों, हवाओं से उड़ाकर लाये हुये मेघ पृथिवी पर जल बरसावें ॥ ८ ॥

जल, बिजली, मेघ, वृष्टि, जल के सोते और अजगरों की तरह कुण्डलित बादल सबकी रक्षा करें। हवाओं से उड़ाकर लाये हुये मेघ पृथिवी पर जल बरसावें ॥ ९ ॥

जलों से उत्पन्न होने वाली अग्नि जो ओषधि का अधिपति हैं और हम सबके शरीरों के अनुकूल है ऐसा वह जातवेद आकाश से अमृत और प्राण के रूप में आकाश से पृथिवी पर जल की वृष्टि करे ॥ १० ॥

मेघ प्रजापति रूप में समुद्र से जल उठाते हुए उसका मन्थन करते है या उसे झकझोरते हैं। हे पर्जन्य, वर्षणशील अश्व का जो रेत या सोम है उसकी वृष्टि करो, अपनी गर्जन-तर्जन के साथ यहाँ आवो ॥ ११ ॥

हे असुर, सबके पिता, गड़गड़ाहट के साथ जलों को पृथिवी पर प्रेषित करो। जलवृष्टि के साथ मण्डूकों की टर्टर ध्वनि ऊँची उठे ॥ १२ ॥

जो मेढ़क वर्ष भर तक ब्रह्मचारी ब्राह्मणों की भाँति चुपचाप पड़े रहे, वे पर्जन्य मेघ के छींटे पाकर टर्टर घोष करने लगे ॥ १३ ॥

हे छोटी मण्डूकी, मेघ के स्वागत का गीत गावो, हे दादुरि, वृष्टि का आवाहन करो। अपने पैर फैलाकर ताल के बीच में तैरो ॥ १४ ॥

हे दादुरि खण्वखा, खैमखा का घोष ऊँचा करो, मरुतों को अपने अनुकूल बनाने वाले मेघों से जल की कामना करो ॥ १५ ॥

जलों के बड़े कोश को ऊपर उठाकर जल की वृष्टि करो। उसके साथ तूफानी हवाएँ बहें और बिजलियाँ कड़कें। अनेक दक्षिणाओं के साथ यज्ञों का वितान हो और ओषधियाँ सुख से हरी-भरी हों।

ऋग्वेद और अथर्ववेद के इन दो सूक्तों में भारतीय आकाश में घोरने और विजोरनेवाले पर्जन्य मेघों का और मातरिश्वा नामक वायु का बहुत ही अच्छा चित्र खींचा गया है। मेघ, विद्युत् और वायु के विषय में भारतीय किसानों ने सूक्ष्म दृष्टि से अनेक प्रकार का निरीक्षण प्रत्येक ऋतु, मास, और नक्षत्र में किया। वही उनके वर्षा-ज्ञान का आधार बना। इसी परम्परामें किसी समय वह कादम्बिनी-विद्याके रूप में जनपदों में प्रचलित थी। महामहोपाध्याय पं० श्री मधुसूदन ओझा ने इस विषय पर एक ग्रन्थ ही कादम्बिनी नाम से लिखा है। वाराहमिहिर ने बृहत्संहिता में वृष्टि-विद्या के सम्बन्ध में नक्षत्रों की दृष्टि से विचार किया है। ऊपर अथर्ववेद, १२-१ ५१ मंत्र में मातरिश्वा वायु को धूल उड़ाने वाला और

वृक्षों को उखाड़ फेंकने वाला कहा है। उसी पर आश्रित लोक में किंवदन्ती है-'भूइयां लोट चलै पुरवाई, तब जानो बरखा ऋतु आई।' भूमि में लोटती हुई और धूल उड़ाती हुई बड़ी तेज वायु जेठ के दूसरे पखवाड़े में चलने लगती है उसे ही 'भूइया लोट पुरवइया' कहते हैं। वह बिरवा-रूखों को झकझोर डालती है। यदि यही पुरवाई समय से पहले चैत के महीने में चल पड़े तो महुआ बहुत अधिक चूता है पर आम लसिया जाता है। उसमें लासी लग जाती है, अर्थात् पुष्पों के अन्दर जो गर्भ या धातु का रस होता है, पुरवइया के चलने से वह वीर्य अपने स्थान से च्युत हो जाता है और बाहर निकल कर पत्तियों पर फैल जाता है। कहते हैं कि चैत की पुरवाई महुवे के लिये बहुत अच्छी है जिस पेड़ में एक झौवा महुवा टपकता हो उसमें पूरवा में दो झौवें महुवा चूवेगा। पर पछिमा चल जाय तो दो महुवों का एक ही रह जाता है।

जाड़े में भी पुरवाई चल सकती है। जब पुरवाई चलेगी तब बादल उमड़ेंगे पर अकेले पुरवाई होगी तो बादल होकर रह जायेंगे, बरसेगा नहीं। जाड़े में वृष्टि के लिये दक्खिनहा वायु का चलना अत्यावश्यक है।

किसानों का कहना है कि वैशाख से आधे जेठ तक पछिमा वायु का नियत समय है। फूहड़ औरतें जो अपना घर साफ नहीं रखतीं, वे कहा करती हैं :—

पुरवा पछिवा तू मोरी माय, आंगन का करकट लेजा तू उड़ाय।

वैशाख से लेकर आधे जेठ तक आंधी का समय है।

किसानों में हवाओं के लिये कई पारिभाषिक शब्द हैं

जैसे फगुनहरा, हौंहरा, सुग्ररिया, झोला । फगुनहरा—वह हवा है जो वायव्य कोण से फागुन के महीने में चलती है। यह वायु देवता का कोण मानों उस समय वायु देवता ग्रपनी भण्डार कोठरी खोल देते हैं। यह तेज, बर्फीली हवा होती है जो हिमालय से बर्फ लेकर ग्राती है। उत्तरपश्चिम से ग्राती हुई इस हवा के कन्धों पर बर्फ के कण लदे रहते हैं। जब चलती है तो धरती हिल जाती है। इसी को हौका भी कहते हैं। जब ग्रनाज गलेथ रहा हो तब यदि हौका चल जाय तो दाना पोची हो जाता है। पञ्चतन्त्र में कहा है कि वसन्त की वायु शिशिर की शोभा का नाश कर डालती है :—

प्रति दिवसं याति लयं वसन्त वाता इतेव शिशिरती।

जेठ के महिने में दूसरी हवा चलती है जिसे हौंहरा कहते हैं या नेऋत कोण कहते हैं। वह दक्खिन, पच्छिम से चलती है। यह प्रचण्ड रेगिस्तानी हवा लू के रूप में मैदानों में भर जाती है। इसकी झुलसती लपटों से उड़ती हुई चिड़ियां ग्रौर चील भी मरकर गिर पड़ती हैं। इसे बमुरा भी कहा जाता है।

इसके बाद वर्षा ऋतु में मैदानों की धज कुछ ग्रौर की ग्रौर हो जाती है। उस समय उत्तर की ग्रोर से ग्राने वाली एक हवा बहती है जिसे राजस्थानी भाषा में सूरय या बुन्देलखंडी में सुग्ररी कहते हैं। एक लोकगीत में (मारुजी झाला दिये बदली) कहा है रीति मत ग्राय, पाणो भरलायै तो सूरया के सेरा ग्राये बदली। कभी कभी जाड़े में भी बारिस के बाद बर्फिली ठंडी हवा चलती है उसे डाफर या रीढ़ कहा जाता है। पौधों के दानों को झुलसा देने वाली जाड़े की ठंडी हवा झोला कही जाती है।

वस्तुतः जैसा चरक के सूत्र संस्थान में लिखा है वायु ही भगवान् है। वायु के प्रशमन और प्रकोप पर ही शरीर और बाह्य प्रकृति दोनो की कुशल निर्भर है। पृथिवी का धारण, अग्नि का प्रज्वलन, आदित्य, चन्द्रादिगति का विधान, मेघों का सर्जन, जलों का विसर्जन, स्रोतों का प्रवर्त्तन, पुष्प फलों की निष्पत्ति, वृक्ष वनस्पति का उद्भेदन, ऋतुओं का प्रविभाग, शस्य का अभिवर्द्धन, क्लेदन और शोषण आदि सब वायु पर निर्भर है। यही वायु जब प्रकुपित होता है तब पर्वतों के शिखिरों को चूर-चूर कर डालता है, पेड़ों को जड़ से उखाड़ फेंकता है। समुद्र को उत्पीड़ित कर देता है, सरोवरों को बिलो देता है, नदियों के प्रवाह को उलट देता है, भूकंप मचा देता है, मेघों को फूंक मार कर उड़ा देता है, कोहरा बिजली, धूला, मछली, मेंढ़क, साँप, पत्थर, बदली आदि की वृष्टि करता है। ऋतुओं के चक्र को गड़बड़ा देता है। खड़ी खेती के दानों की पीची कर देता है। भूतों का नाश कर डालता है। होत को अनहोत कर देता है। प्रलय में छूटने वाले और युगों की चौकड़ी को अस्त-व्यस्त कर डालने वाले मेघों के द्वार खोल देता है। ऐसे वायु के प्रचण्ड कर्म हैं।

हमारे समान और भी पाठकों को देखकर यह आश्चर्य होगा कि लोक-वार्त्ता के रूप में कितने भिन्न प्रकार के वर्षा ज्ञान सम्बन्धी सामग्री एकत्र की गई है। प्राचीन काल में वर्षा के जल के मापन विधि, प्रवर्षण या वर्षा काल, कितने स्थल में, मेघों से वृष्टि होनी है। इस विषय का ज्ञान लोकोक्तियों द्वारा कहा गया है। अन्तिम विषय क्षेत्र प्रमाण के सम्बन्ध में गर्ग, पराशर एवं वसिष्ठ ऋषियोंके मतका प्रमाण दिया गया है।

नक्षत्र के अनुसार वर्षा ज्ञान, वृष्टि के अनुकूल नक्षत्रों का परिचय, प्रवर्षण के नक्षत्र, योग केतु या पुच्छल तारों का वर्षा पर प्रभाव, अष्टमी से एकादशी तक के चार दिन के समय में वायु धारण के सम्बन्ध में जो उक्तियाँ इस संग्रह में दी गई हैं उनसे ज्ञात होता है कि कितनी बारीकी से नक्षत्र और वायु सम्बन्धी निरीक्षण करने के बाद वृष्टि का निर्णय किया गया था। ग्रहण द्वारा शुभाशुभ ज्ञान, सक्रान्ति से वर्षाज्ञान, स्तम्भ विचार प्रकरण देखने योग्य हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, वैशाख शुक्ल प्रतिपदा, जेठ शुक्ल प्रतिपदा और आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा इन्हें ज्योतिष में वर्षाज्ञान के चार स्तम्भ माना गया है। इन चारों प्रतिपदाओं को क्रमशः रेवती, भरणी, मृगशिरा और पुनर्वसु नक्षत्र हों तो वृष्टि अच्छी होगी और अन्न बहुत होगा, ऐसा समझना चाहिए। यदि किसी वर्ष में वर्षा के चारों स्तम्भ आ जांय तो उस वर्ष प्रजा आनन्द से जयजयकार करेगी। ग्रह एवं नक्षत्रों के सम्मेलन मे वर्षा ज्ञान का बड़ा प्रकरण लोक-वार्त्ता-शास्त्र का समृद्धि सूचित करता है। सूर्य, चन्द्र आदि ग्रह योग भी वर्षा ज्ञान के सूचक हैं। वर्षा सम्बन्धी, मेघों के गर्भ धारण विषयक प्रकरण भी देखने योग्य हैं। अगहन के महीने में शुक्ल पक्ष में जब पूर्वाषाढ़ नक्षत्र आता है तो उस दिन से मेघों के गर्भ धारण का समय आता है। जैसे सूखे प्रदेश में भी यदि बिजली का बल और मेघ बल यदि हो तो वृष्टि के लिये शुभ है। प्रचण्ड धूप के कारण बादल तप जाते हैं और मन्द, मन्द वायु बहे तो वर्षा गर्भ का स्थिति अच्छी रहेगी। वस्तुतः तो जैसा बाल्मीकि ने कहा है—सूर्य की किरणें बराबर नव महीने तक पृथिवी मे जल उठाकर गर्भ धारण करती रहती हैं। यदि वर्षा का यह गर्भ चू न जाय तो वृष्टि

अच्छी समझनी चाहिए। ठंडी वायु बिजली का चमकना, आकाश का गर्जन करना और चन्द्रमा का कुण्डल में बैठना ये चार लक्षण अच्छे माने गये हैं। विशेष बात यह है कि गर्भ धारण के समय यदि मेघ बरस जाय तो गर्भ नाश हो जाता है। आँधी, दिशाओं का दाह, तारों का टूटना, बिजली का गिरना, बिना बादल गजना ये लक्षण अच्छे नहीं हैं। चन्द्र और सूर्य के चारों ओर पड़ने वाले कुण्डल ही वर्षा ज्ञान के कारण माने गये हैं। वृक्ष, वनस्पति, फल-फूल आदि लक्षणों से वर्षा का अनुमान और फसलों की उपज का अनुमान किया जाता है। जैसे ढाक के पत्ते गिर जांय, पतझड़ के बाद फूल और फल लगें तो जानना चाहिए कि सातों वन अच्छे होंगे। गन्ने और चावल की उपज अच्छी हों तो अन्न का वाणिज्य करने वालों की (किरात पृ० १२७) मान्यता है कि गेहूँ और चना अच्छा होगा। यहाँ लोकोक्ति में किरात शब्द अन्न का सूचक व्यापार शब्द बनियों के लिए है जिन्हें संस्कृत में किराट् कहते हैं, लोक में किराड़ कहा जाता है। सलइया के वृक्ष को हल्का, फुल्का देखकर जी प्रसन्न होता है कि फसल अच्छी होगी। इसी प्रकार बेर, बेल, पीलू, नीम, आम और गोदिनो इनका अधिक फलना बताता है कि अन्न की उपज और दूध, दही आदि रस अच्छे होंगे। यदि नीम के पेड़ ऊपर से निबौली पककर नीचे गिरें और आम, जामुन, इमली, अनार और दाभ पककर नीचे जाय तो इतना अन्न उत्पन्न होगा कि कत्थी-कोठे सब भर जायँगे। इस उक्ति को मास से सम्बन्धित कहा गया है। उद्भिज पदार्थों की भाँति अन्य प्राणियों एवं प्राकृतिक साधनों के द्वारा भी वर्षा ज्ञान का संकेत लोक वार्त्ता शास्त्र में पाया जाता है। इनमें घाघ, मण्डरी और सहदेव के नाम ध्यान

देने योग्य हैं। किन्तु उनसे भी अधिक महत्वपूर्ण उल्लेख गुरु भद्रबाहु का है—भद्रबाहु गुरु कहते हैं कि उस दिन वर्षा होगी जिस दिन चलता हुआ पवन एकाएक रुक जाय और तीतल, बटेर आदि पक्षी बहुत स्नेह के साथ चहकते हुए दिखाई पड़ें। ये भद्रबाहु जैनों के प्रसिद्ध आचार्य ज्ञात होते हैं। सम्भवतः उन्होंने वर्षा ज्ञान सम्बन्धी कोई ग्रन्थ रचा था। इसी प्रकार से नन्द निर्माण नामक ब्राह्मण कवि की एक उक्ति दी गई है—जिसमें कहा है कि यदि चींटियाँ अण्डे लेकर बिल से बाहर इधर-उधर घूमतीं हों तो घोर वर्षा का सूचक है। यहाँ यह पक्ष भी ध्यान देने योग्य है कि इन लोकोक्तियों में वर्षा, मेघ, वायु और विद्युत् सम्बन्धी बहुत ही सजीव शब्दावली का प्रयोग हुआ है जिसका संग्रह युक्ति से किया जाना चाहिए। बादलों द्वारा वर्षा ज्ञान, बिजली से वर्षा ज्ञान, इन्द्र धनुष से वर्षा ज्ञान, वायु द्वारा वर्षा ज्ञान, मास और ऋतुओं से वर्षा ज्ञान इन सब प्रकरणों में वर्षा सम्बन्धी लोक वार्त्ता का बहुत सुन्दर वर्णन पाया जाता है। यह सब सामग्री राजस्थानी लोक वार्त्ता शास्त्र की देन है।* और राजस्थानी भाषा में ही इसका सरक्षण हुआ है किन्तु राजस्थान तो विशाल भारत का एक अंग है। हमारा विश्वास है कि काश्मीर, सिन्ध, हिमालय, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, आसाम, आन्ध्र, मालवा, गुजरात, महाराष्ट्र, कन्नड़, केरल और तामिल प्रदेश के किसान भी कम चतुर नहीं थे और उन-उन बोलियों में भी वर्षा सम्ब-

*इस ग्रन्थ के उत्तरार्द्ध में प्रत्येक मास के तिथि, वार, नक्षत्र आदि आदि पर प्रस्तुत प्राकृतिक विविध लक्षणों एवं चिन्हों के आधार पर विशद वर्णन किया गया है, जो देखने योग्य है। —जयशङ्कर देव शर्मा

न्धी परम्परागत सामग्री का भंडार उपलब्ध होना चाहिए। आवश्यकता यह है कि समय रहते उसका संग्रह कर लिया जाय। यह राजस्थानी वर्षा ज्ञानसंग्रह इस प्रकार के अन्य संग्रहों के निर्माण में सहायक हो सकता है।

संस्कृत लेखकों ने जो कुछ वर्षा ज्ञान के सम्बन्ध में लिखा है उसके साथ इन सूचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है और शासन के ऋतु विभाग को इस ओर शीघ्र ध्यान देना चाहिये। उदाहरण के लिये वातबलाहक, वर्ष वलाहक दो प्रकार के मेघ कहे गये हैं। ऐसे ही वर्षा की दृष्टि से पुष्कर, आवर्त्तक, अ्रूरण और समवर्त्तक और चार प्रकार मेघों के माने गये हैं। उनका पारस्परिक भेद निश्चित करना आवश्यक है। पर्ण शुष्क, पर्णमुच्छ और पर्णरुह नामक हवाओं का उल्लेख भी आता है। जिससे ज्ञात होता है कि पतझड़ में पत्तों को उठाकर गिरा देना और नये पत्तों को जन्म देना यह हेमन्त और वसन्त की हवाओं पर निर्भर है। इस प्रकार वर्षा ज्ञान सम्बन्धी यह संग्रह एक महत्वपूर्ण विषय की ओर हमारा ध्यान खींचता है। इस ज्ञान के पीछे समस्त देश के ऋतु विज्ञान का अनुभव सञ्चित है। इससे लाभ उठाना चाहिये। इस संग्रह के कर्त्ता डा० जयशंकर देवशंकर जी शर्मा (श्रीमाली ब्राह्मण) तथा श्री अगरचन्द नाहटा जी बधाई के पात्र हैं।

काशी विश्वविद्यालय —वासुदेवशरण

४-२-५५

प्रस्तावना

वर्षा सम्बन्धी कहावतें कब से प्रचलित हुई यह निर्णय कर लेना आसान नहीं है। क्योंकि वर्ष और वर्षा ये दोनों शब्द परस्पर एक दूसरे के पूरक है। यह तो मानी हुई बात है कि वर्षा का आकाश (खगोल) एवं पृथ्वी (भूगोल) से दृढ सम्बन्ध है। इन खगोल और भूगोल का ज्ञान जिस शास्त्र से जाना जाता है उसे ज्योतिष-शास्त्र कहते हैं। इसलिये यह दृढ़ता पूर्वक कहा जा सकता है कि, वर्षा-विज्ञान, जब से मानव को ज्योतिष-शास्त्र का ज्ञान हुआ तभी से प्रचलित है। अर्थात् यह ज्ञान अत्यन्त प्राचीन ज्ञान है। ज्योतिष-शास्त्र के विद्वानों ने सूर्यादि ग्रहों, नक्षत्रों, आदि की गति की ओर ध्यान देकर एतद्विषयक जो निष्कर्ष प्राप्त किया, उसे जहाँ भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त के विद्वानों ने आत्म-सात कर लिया वहाँ राजस्थानी के विद्वान् भी पीछे नहीं रहे। यहाँ सामान्य व्यक्ति को यह आशंका हो जाना स्वाभाविक है कि ज्योतिष-शास्त्र के ग्रन्थ संस्कृत में हैं और ये कहावतें राजस्थानी में। इसका समाधान यही है कि संस्कृत केवल विद्वानों की ही भाषा रही और अब भी है। परन्तु तत्कालीन उदारमना जन-सेवी संस्कृतज्ञोंने इस विषय को विशेषरूप से जनोपयोगी समझकर इसे अपनी भाषा का रूप दिया, जो इस विशाल देश की प्रत्येक जनपदीय भाषाओं में पाया जाता है। उन उदारचेत्ता मनीषियों की यही धारणा रही कि, इस परमोपयोगी ज्ञान से जन साधारण वंचित न रह जाय।

हमारे भारतवर्ष का भौगोलिक-वृत्त विभिन्न रूपों में पाया जाता है। इस महान एवं विशाल देश में कहीं वर्षा और कहीं जलाभाव। कहीं शीत है तो कहीं अत्यन्त ऊष्मा। कहीं विशाल हिमाच्छादित गिरि-शिखर है तो कहीं केवल बालू के टीले ही। इन रूपों में हमारे राजस्थान प्रदेश का भी एक रूप है। इस प्रदेश का निवासी, विशेष कर कृषक-वर्ग वर्षा-काल में आकाश की ओर टकटकी लगाकर अत्यन्त लालसापूर्ण-दृष्टि से सदा देखता रहा है। यहाँ के निवासियों ने अपने दीर्घकालीन अनुभव का निचोड़ (जो ज्योतिष-शास्त्र सम्मत है) यह वर्षा सम्बन्धी ज्ञान, मौखिक-रूप से एक के द्वारा दूसरे के पास अथच एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया। यही कारण है कि यह साहित्य, वर्तमान में इस दशा में है कि, इसकी भाषा सम्बन्धी प्राचीनता के विषय में केवल अनुमान का ही सहारा लेना पड़ता है।

राजस्थान-प्रदेश में वर्षा बहुत कम होती है। अतः इसकी प्रतीक्षा करना, इसके सम्बन्ध में अत्यन्त आवश्यक समझकर इसकी अग्रिम जानकारी प्राप्त करना यहाँ के निवासियों की एक आदत-सी बन गई और इसी आदत के प्रताप से यह ज्ञान अब तक जीवित रह सका। कहा जाता है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। इस सिद्धान्त के अनुसार ही वर्षा की आवश्यकता ने, इस प्रदेश के निवासियों में इसके पूर्व-ज्ञान के संचय की वृत्ति सदैव जागृत रखी और इन्हें वर्षा-ज्ञान रूपी यह आविष्कार मिला जिसके कारण एतद्विषयक कहावतों को संग्रह करने की प्रवृत्ति जागृत हुई। वर्तमान में जिस रूप में जो-जो कहावतें उपलब्ध है वे किसी एक ही व्यक्ति की देन हो, यह बात नहीं है। क्योंकि इन कहावतों मे डंक, डक्क,

घाघ, भड्डली, माघ, फोडगसी, सहदेव, जोशी, भद्रबाहु गुरू, भीम, आरगन्दा, परमारगन्दा आदि आदि कई व्यक्तियों के नाम आते हैं। इतना ही नहीं कहीं कहीं तो किसी का नाम न होकर "अरगभरिगया सब यूं केव्है" भी आता है। फिर भी वर्तमान में घाघों, भड्डलो एवं डंक को उक्तियाँ अधिक मिलती है। इन कहावतों के रचयिताओं के सम्बन्ध में खोज करना इनके द्वारा रचित यदि अन्य साहित्य अथवा ग्रन्थ हो तो उसे प्रकाश में लाना, यह इतिहास-शोधकों के लिये एक कार्य है।

यह बात सर्व मान्य है कि जिस वस्तु की विशेष आवश्यकता होती है उसकी उपलब्धि हेतु समय, एवं प्राप्त होने में सहायक लक्षरग आदि की ओर विशेषरूप से ध्यान देना ही पड़ता है। इस सिद्धान्त के अनुसार ही इस हेतु राजस्थान का कृषक-वर्ग परम्परा से वायु आदि अन्य प्राकृतिक लक्षरगों का सदैव बारीकी से अध्ययन करता रहा है। अपने इस अध्ययन-बल के आधार पर वह आकाश में, वायु-मण्डल में सूक्ष्मातिसूक्ष्म परिवर्तन होने पर भी उस पर अपना अनुमान लगाकर भविष्य का निर्णय करता आता रहा है। इस प्रकार से जिन विद्वान मनीषियों ने खोज कर अपने सही निर्णय इन कहावतों के रूप में जनता के लिये रख दिये हैं उनके सम्बन्ध में हमें यह तो मानना ही पड़ेगा कि, डक्क, भड्डली, घाघा एवं इन कहावतों के अन्य रचयिताओं को ज्योतिष-शास्त्र का ज्ञान अवश्य था। अधिकांश कहावतें ग्रहों, तिथियों, वार एवं नक्षत्रों, संक्रान्ति, सूर्य-चन्द्रादि के ग्रहरग से सम्बन्धित हैं। ये सभी, ज्योतिष-शास्त्र से सम्बन्धित है। कृषक-वर्ग का एतद्विषयक जानकारी रूपी ज्ञान ज्योतिष के ज्ञान का पूरक ही माना जायगा। इसमें संदेह करने की कोई गुंजाइश ही नहीं है।

कौन-सा ग्रह कहाँ है, किस गति में होने से उसका वायु मण्डल पर क्या प्रभाव पड़ता है, किस दिशा की वायु और बिजली की चमक से आकाश में क्या परिवर्तन उपस्थित हो जाता है, किस दिशा में इन्द्र-धनुष दिखाई देने पर उसका वर्षा पर क्या प्रभाव होगा आदि आदि बातें या तो पूर्ण विद्वान ज्योतिषी ही बता सकता है या राजस्थान का एक सीधा-सादा अपढ़ कृषक ही। जिसने, वर्षा सम्बन्धी कहावतों (जो उसे विरासत में मिलती आती रही थी) को सूत्र-रूप से कण्ठस्थ कर रखा है।

लोग कहते हैं, आज विज्ञान बहुत उन्नति पर है। जो, किसी अंश मे अपने-अपने क्षेत्र में ठीक भी है। आज का मनुष्य, इस मानव निर्मित-यान्त्रिक-विज्ञान की चकाचौंध में चौंधिया गया है। वह, यह नही सोचता है कि पाश्चात्यों की इस देन का मूल आधार केवल यन्त्र ही है जो मानव निर्मित ही तो है। कदाचित ये मानव निर्मित यन्त्र, किसी समय अपना कार्य ठीक रूप से न करें तो। तो क्या होगा? होगा यही कि वैज्ञानिक अयोग्य है, विश्वासपात्र नहीं है। आज वैज्ञानिकों ने एक घड़ी का आविष्कार किया है जो बिना चाबी दिये केवल बिजली से ही चलती है। मानलो कि, किसी कारण से कभी बिजली फैल हो जाय तो उस घड़ी का क्या होगा ? क्या वह उस समय भी यथावत चलती ही रहेगी ? क्या उसका बताया हुआ समय सर्वथा ठीक ही होगा ? यह ठीक है कि, इसके यन्त्र दोष पूर्ण है अतः वे यथोचित कार्य नही कर रहे है इसलिये वे अविश्वनीय हैं। तब क्या यन्त्रों द्वारा ज्ञात की गई भविष्य-वाणियें सदैव सही ही उतरेगी ? या वर्तमान में सही उतरती है ? इसका उत्तर नकारात्मक ही मिलता है और इसी कारण

से इसके द्वारा की गई भविष्यवाणी सही नहीं मिलती है। यद्यपि इन यन्त्रों के साधन से ज्ञात कर मौसिम की भविष्यवाणी करने की व्यवस्था सरकार द्वारा भी चलो आ रही है और अब तो इसमें विशेष सुधार किया जा रहा है कि, इस सम्बन्ध मे सही-सही जानकारी उपलब्ध की जा सके। एतदर्थ राकेट (कृत्रिम उपग्रह) आदि आकाश में छोड़े जा रहे हैं। तथापि ये भविष्यवाणियें जो केवल यन्त्रों पर ही आधारित होती हैं शतप्रतिशत सही हों, ऐसा नहीं है।

भारतवर्ष बहुत बड़ा देश है और इसके भिन्न-भिन्न भूभाग पर एक ही समय में विभिन्न ऋतुएं होती हैं। इसलिये देश (क्षेत्र)-काल को ध्यान में व रख कर प्राकृतिक साधनों द्वारा जो निर्णय किया जाता है, वह सही होता है। देश एव काल (समय) से सम्बन्धित यदि सही चीज कोई हो सकती है तो वह परमात्मा द्वारा निर्मित प्राकृतिक सूर्य-चन्द्रादि ही है, जैसा कि ऊपर बताया गया है। मानव-निर्मित भौतिक यन्त्र, त्रुटि-पूर्ण हो सकते हैं, ये अपनी क्रियायें भूल सकते हैं किन्तु परमात्मा के द्वारा प्राणी मात्र के हितार्थ निर्मित ये प्राकृतिक-साधन सूर्य-चन्द्रादि त्रुटि-पूर्ण नहीं हो सकते। यदि, ये अपनी क्रियायें भूल जायं तो महान अनर्थ हो जाता है। सूर्य यदि निकले ही नहीं अथवा एक ही स्थान पर स्थिर हो जाय किम्वा अस्त हो ही नहीं तो इसके परिणामस्वरूप वह स्थान जिस पर इसका प्रभाव पड़ता है, सर्वथा नष्ट हो जाय। वहाँ प्राणी मात्र की उपस्थिति की कल्पना ही कैसी ?

राजस्थानी कृषक इन त्रुटि रहित प्राकृतिक साधन पर पूर्ण आवस्था रखता है और इनके द्वारा प्राप्त परिणाम पर

विश्वास करता आया है। आधुनिक वैज्ञानिक के लिये अपने अनुसंधान हेतु उसे भव्य एवं ऊंची इमारत और बहुमूल्य यन्त्र आवश्यक होते हैं। इनके बिना वह अपूर्ण है। साथ ही बिना इन उपकरणों के वह कोई भविष्यवाणी कर ही नहीं सकता किन्तु राजस्थान का कृषक, बिना आडम्बर का एक साधारण व्यक्ति, पृथ्वी पर कही भी चाहे जङ्गल चाहे खुला मैदान-ही क्यों न हो, प्रकृति प्रदत्त सूर्य, चन्द्र और तारे आदि के आधार पर वहां खड़े-खड़े विना कागज कलम लिये और बिना गणित किये ही तत्कालीन प्राकृतिक परिस्थिति का अवलोकन करके यह बता सकता है कि वर्षा कब होगी, किस ओर होगी, कितनी होगी और परिणामस्वरूप अन्नोत्पादन कितना होगा तथा जन-स्वास्थ्य पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा।

वर्षा सम्बन्धी इन कहावतों की उपयोगिता एवं सर्वमान्यता ने इन्हें राजस्थान तक ही सीमित नहीं रखा अपितु, इनकी विशेषताओं ने भारतवर्ष के इतर प्रान्तों को भी विवश किया कि, उनके निवासी इन कहावतों के गुण-ग्राहक बने। मात्र यही कारण है कि ये तत्रस्थ भाषाओं से आवृत्त होती गई और उनमें समाहृत की गई। यहाँ तक कि, अब तो उन प्रान्तों के निवासी इन कहावतों के रचयिताओं को अपने ही प्रान्त का मानने लग गये। संयुक्त-प्रान्त (जो आज कल उत्तरप्रदेश के नाम पहचाना जाता है) मे जिसे घाघ नाम से माना गया है वही, मैथिली लोगों मे डाक नाम से विख्यात हुआ है। बङ्गाल प्रान्त भी इसी नाम से इसे अपना ही मानता है। हमारा राजस्थान प्रदेश तो डंक या डक्क को अपना ही मानता है जो आधार सहित है। क्योंकि डक्क – उतर डक्कउत शब्द से डाकोत बना है और इस नाम से इस प्रदेश में सर्वत्र एक

जाति फैली हुई है जिसे डाकोत, थावरिया, सनीचरिया, दिसान्त्री एवं अचारज कहा जाता है। ये डक्क या डंक ऋषि कौन थे, इस सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। किसी का मान्यता कुछ है और किसी की कुछ। जो कुछ भी हो डंक, भड्डरी, घाघ आदि के नामों से प्रचलित ये कहावतें चाहे वे इनके द्वारा रची हुई हो चाहे इनके नाम से किसी अन्य द्वारा रची हुई हों, है महत्वपूर्ण। यही एक मात्र कारण है कि, परम्परा से चलता आ रहा यह ज्ञान अभी तक जन-साधारण की जबान पर है।

हमारे देश भारतवर्ष में पाराशर मुनि नामक एक विद्वान महात्मा हुए है जिनका उल्लेख महर्षि याज्ञवल्क्य ने धर्मशास्त्रकारों की सूची में किया है। इन्होंने अनेक ग्रन्थ लिखे हैं जिनमें एक का नाम कृषि पाराशर हैं। बङ्गाल में इन पाराशर को कृषि का मुख्य आचार्य माना गया है। बङ्गाल के आधुनिक विद्वान-वर्ग, जैसे श्री गिरजाप्रसाद मजूमदार ने अपने "वनस्पति" नामक पुस्तक में, श्री डा० एस० पी० राय के अपने "प्राचीन भारत की कृषि प्रणालियाँ" में, श्री तारानाथ काव्यतीर्थ ने अपने "कृषि-संग्रह" में, श्री रामेशचन्द्रदत्त ने अपने "प्राचीन भारतीय सभ्यता का इतिहास"में, एवं श्री रघुनन्दन ने अपने "ज्योतिष तत्व" में कृषि पाराशर अथच पाराशर मत का उल्लेख किया है।

ये पाराशर मुनि कब हुए, इस विषय में आधुनिक विद्वानों की भिन्न-भिन्न सम्मतियाँ है। कोई ईसवी सन् ९५० से ११०० के मध्य और कोई ८ वीं शताब्दि में होना बताते हैं। किन्तु ई० स० १३०० वर्ष से पूर्व का काल मान कर सन्तोष कर लेते हैं।

बंगाल प्रदेश में वर्षा सम्बन्धी कहावतें जो बंगला भाषा में पाई जाती है, कहते है कि यह खना नामक 'एक विदुषी की देन है। कहा जाता है कि ये ज्योतिष-शास्त्र के प्रकांड विद्वान वराहदेव की पुत्र वधु थीं। जो स्वयं ज्योतिष-शास्त्र की परम विदुषी थीं। इसने सिंहल द्वीप में जन्म लिया था और मय नामक राक्षस की ये पुत्री थी। यह भी किम्वदंती है कि उन दिनों में सिंहल द्वीप के सभी राक्षस ज्योतिष-विद्या में निपुण होते थे। जब उन राक्षसों को यह ज्ञात हुआ कि खना अपने पति सहित ज्योतिष-विद्या में परम-निपुण होगी तो इसे चुरा लिया और ज्योतिष-विद्या की अच्छी शिक्षा दी। *

---

* खना के पति का नाम मिहिर बताया गया है और इस सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि मिहिर प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य वराहदेव के पुत्र थे। ये भी स्वय अच्छे ज्योतिषी थे। श्री वराहदेव ने जब अपने इस पुत्र के जन्म-समय के आधार पर आयु गणना की तो उन्हे इस पुत्र की केवल एक ही वर्ष की आयु मिली। अपना पुत्र होने के कारण मोह वश उस समय तीन बार आयु गणना की। किन्तु भूल रह जाने के कारण तीनों ही बार एक ही वर्ष आया। अत दुःखी-मन से इन्होने इस पुत्र को एक ताम्र पत्र मे रख कर समुद्र में प्रवाहित कर दिया जो सयोगवश सिंहल द्वीप के किनारे जा लगा। कहते है कि उस समय सिंहल द्वीप की महाराज कन्या खना यहा स्नान करने आई थी। इसने इस ताम्र-पत्र को उठा लिया जिसमे यह नवजात शिशु था।

बताया जाता है कि, खना अपने बाल्य-काल से ही ज्योतिष-विद्या में पारंगत थीं। इसने उस समय की गणना कर पता लगा लिया कि इस शिशु की आयु १०० वर्ष की होगी और भविष्य में यह राजा द्वारा सम्मानित ज्योतिषी होगा। खना के अनुरोध पर अन्य राक्षस

यह एक मानी हुई बात है कि, केवल मानव ही नहीं अपितु जङ्गम एवं स्थावर, समस्त प्राणियों के पोषणार्थ एवं वर्द्धनार्थ एक मात्र जो आधार है वह, आहार ही है। आहार को उपलब्धि, बिना कृषि के सम्भव नहीं। इसी लिये विद्वान मनीषियों ने कृषि को प्रधान कर्म बताया है :—

अन्नं तु धान्य सम्भूतं, धान्यं कृष्या बिना न च।
तस्मात्सर्वं परित्यज्य, कृषि यत्नं च कारयेत ॥
(भारतीय कृषि का विकास, पृ० २३.)

कृषि हेतु जल की परमावश्यकता रहती है। बिना जल के यह सर्वथा असम्भव है। यह जल, हम पृथ्वीवासियों को वर्षा द्वारा ही प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। यह बात भी सर्व विदित है कि, वर्षा का वायु से पूरा पूरा सम्बन्ध है। अर्थात् वायु बादलों को लाकर वर्षा करा देता है और यदि कहीं वर्षा

विद्वानों ने भी गणना की और खना की गणना को सही पाया वहीं इस शिशु का नाम मिहिर रख दिया। जो आगे चल कर एक अपूर्व ज्योतिषी बन गया। अपने मनोविनोद एवं विद्या-व्यसन की पूर्ति हेतु खना और मिहिर सदैव ज्योतिष सम्बन्धी चर्चा करते रहते थे। यद्यपि खना आयु में बड़ी थी फिर भी राक्षसों ने इसका विवाह इससे कर दिया।

मिहिर ने गणना द्वारा अपने माता-पिता एवं जन्म-स्थान का पता लगाया और उनके दर्शनार्थ रवाना हो गया। खना भी साथ ही थी माता-पिता के पास इस दम्पति के पहुँचने पर एवं अपना परिचय देने पर भी सहसा उन्हें विश्वास नही हुआ। तब खना ने अपने श्वसुर के पास से पति का जन्म लग्न लेकर देखा और उनकी भूल उन्हे बता दी। यद्यपि श्री वराहदेव अपनी इस भूल पर लज्जित हुए किन्तु, गुणज्ञ पुत्र एवं गुणवती पुत्र-वधु को पाकर वे अत्यन्त प्रसन्न हुए।

होती हो तो वहाँ से उन बादलों को उड़ा कर बरसते मेह को बन्द भी करा देता है। इसलिये इस ज्ञान की प्राप्ति करने वालों के लिये वायु सम्बन्धी ज्ञान का जानना परमावश्यक हो जाता है। इस सम्बन्ध में आचार्य श्री भद्रबाहु ने अपनी संहिता में बताया है कि:—

आहार स्थितयः सर्वे: जङ्गमा स्थावरास्तथा।
जल सम्भवं च सर्वं च, तस्यापि जननोऽनिलः॥

(भद्रबाहु संहिता, अध्याय ६ श्लोक ३७)

इसी अध्याय के श्लोक ३ में आचार्य श्री ने वर्षा के गर्भ के लिये इसी वायु को बलवान नायक बताया है। आपने अपनी संहिता में लिखा है :—

आदानाच्चाव प तात्च, पाचनाच्च विसर्जनात्।
मारुतः सर्वं गर्भाणां, बलवान नायकः स्मृतः॥

अर्थात् यह वायु मेघ गर्भ का लाने वाला, वर्षा कराने वाला, उस गर्भ को पकाकर वर्षा योग्य करने वाला और यही उसको बन्द कर देने वाला होने के कारण, बलवान नायक कहा जाता है।

श्री वराहदेव, महाराज विक्रमादित्य की राज-सभा के नव-रत्नों में से एक रत्न थे। महाराजा द्वारा मिहिर भी उसी सभा के एक रत्न बना दिये गये। कालान्तर में जब श्री विक्रमादित्य को मिहिर की पत्नी खना की विद्वत्ता का पता लगा तो वे बहुत प्रसन्न हुए और श्री वराहदेव से अपनी यह इच्छा प्रकट की कि, इस विदुषी का मैं सम्मान करना चाहता हूँ। किन्तु श्री वराह एवं मिहिर ने इसे उचित नहीं समझा। कहा जाता है कि राज्य-सभा से घर आते समय मार्ग में पिता-पुत्र ने इस पर परामर्श किया और इस निर्णय पर आये कि मिहिर अपनी पत्नी की जिव्हा काट ले।

वायु के महत्व को स्पष्ट करते हुए आचार्य श्री ने बताया है कि :—

वर्षं भयं तथा क्षमं राज्ञो जय पराजयम् ।
मारुतः कुरुते लोके, जन्तूनां पुन्यपापजम् ॥

(भद्रबाहु संहिता, अध्याय ६ श्लोक २.)

अर्थात् यह, जल (वर्षा) का जनक होने के कारण संसार के प्राणियों को भय एवं क्षेम कारक तथा राजकीय जय-पराजय का विधाता भी है।

कहते है कि मिहिर जब घर पहुँचे तो महाराजा विक्रमादित्य द्वारा कही गई सारी बात अपनी पत्नी से कही और अपने निर्णय से भी उसे अवगत करा दिया। श्री मिहिर ने खना से अपने जीवन की रक्षा के उपकार के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की और साथ ही अपनी विवशता भी। विदुषी खना अपने पति को असमंजस में पड़ा देख कर शीघ्र ही गणना द्वारा अपनी आयु का पता लगाया। अपनी इस हेतु की गई गणना द्वारा जब खना को पता लग गया कि मृत्यु सन्निकट ही है, तो उसने अपने पति को सहर्ष आज्ञा दे दी और कहा कि जहाँ मेरी जिव्हा रहेगी वहाँ कोई मूर्ख नहीं रहेगा। सभी व्यक्ति ज्योतिषविद होंगे। इसके पश्चात मिहिर ने खना की जिव्हा काटली और वह मर गई। बताया गया है कि वह कटी हुई जिव्हा जहाँ रखी थी, उसे चिउंटियों ने वहाँ पहुँच कर चट कर दिया। कहा जाता है कि यही एक मात्र कारण है कि चिउटियाँ वंश परम्परा से बुद्धिमान होती हैं और कोई वस्तु कहीं भी रख दी जाय, अपने इस अद्भुत ज्ञान के बल पर ही ये पता लगा कर वहाँ तक पहुँच जाती है।

प्राचीन भारतीय विद्वान पाँच तत्वों में वायु को भी एक तत्व मानते रहे है। उन्हें मात्र इतना ही ज्ञान रहा होगा यह बात नहीं है। वे, इस तत्व के भीतरी विभिन्न भेदों के भी ज्ञाता थे। इन भेदों को आज कल के वैज्ञानिक वायु की पेटियाँ कहते हैं। भगवान राम के आदर्श भक्त कविवर श्री गोस्वामो तुलसीदास जी ने अपने राम चरित्र मानस नामक अनुपम काव्य-ग्रन्थ में इसका वर्णन किया है। श्री गोस्वामी जी इस ग्रन्थ में जहां लंका दहन का वर्णन करते हैं वहाँ निम्न दोहे द्वारा इस बात को व्यक्त करते हैं :—

हरि प्रेरित तेहि अवसर, बहे पवन उनचास।
अट्टहास करि गर्ज कपि, बढि लागु आकास॥

वर्तमान वैज्ञानिक-वर्ग वायु में छप्पन प्रकार की पेटियों का होना बताते है। कहा जाता है कि ये सारी पेटियाँ पृथ्वी तक नहीं आ पाती हैं। पृथ्वी पर तो इनमें से बहुत ही कम पेटियां आती हैं।

वायु की जानकारी प्राप्त कर लेने मात्र से ही काम नहीं चलेगा। वर्षा विज्ञान को समझने के लिये दिशाओं की जानकारी भी परमावश्यक है। बिना इसे जाने, समझे इसका ज्ञान अपूर्ण ही रहता है। सामान्यतया दिशाओं के सम्बन्ध में यही बताया जाता है कि, ये चार हैं। किन्तु वर्षा-विज्ञान में दिशायें आठ मानी गई हैं। वर्षा का वायु से कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है, यह आचार्य श्री भद्रबाहु द्वारा स्पष्ट कर दिया गया है जो,

ऊपर बता दियाहै। दिशाओंकी जानकारी प्राप्तकर लेनेसे यह विदित होजाता है कि, यह प्रवाहित वायु किस दिशा से आ रहा

है और इसका वर्षा पर क्या प्रभाव होगा। आठ दिशाओं से प्रवाहितहोने के कारण इसका नाम अष्ट-प्रवाह रखा गया हैजिसे राजस्थानी भाषा में "परवा" कहते है जो संभव है प्रवाह शब्द का अपभ्रंश रूप हो। इसीलिये इस अष्ट-प्रवाह के स्थान पर राजस्थान प्रदेश में आठ प्रकार की परवा मानी गई है। जो, उक्त आठों दिशाओं से सम्बन्धित हैं। इन आठ में से तीन परवा शब्द के साथ कुछ विशेषण लगा कर उनके तीन नाम बना दिये गये हैं और शेष पांच दिखणाद, नागोरण, पछवा, सूर्यों और उत्तरार्ध के नाम से पहचानी जाती है। इन नामो को भली भांति समझने के लिये यहां एक कोष्ठक दिया जाता है। पाठक, इसे भली प्रकार से देख कर समझ लें।

सूर्यो (वायव्य)	उत्तरार्ध (उत्तर)	जल परवा (ईशान)
पछवा आथूणी (पश्चिम)		परवा (पूर्व)
नागोरण (नैऋत्य)	दिखणाद (दक्षिण)	धुर परवा (आग्नेय)

इन आठों दिशाओं का पृथक्-पृथक् वर्णन करते हुए सर्व प्रथम, परवा को लेते हैं। यह पूर्व दिशा की ओर से प्रवाहित वायु का प्रचलित नाम है। इस दिशा से प्रवाहित होने वाली इस वायु में वायु-शास्त्रियों ने वर्ष भर नमी रहना बताया है। कृषक-वर्ग इसे अपना मित्र मानते हैं। क्योंकि पूर्व दिशा में स्थित बंगाल की खाड़ी से उठने वाले मानसून की वर्षा को यह राजस्थान मे ले आती है। यह, जिस समय प्रवाहित रहती है उस समय आकाश मे बादल हो जाते हैं। ऐसे प्रवाह से उत्पन्न हुए बादलों को जब तक किसी शुष्क-वायु की टक्कर न लगे तब तक ये अवश्य ही वर्षा करते है। वायु-विदों ने भाद्रपद-मास को इसका यौवन-काल माना है। उनका अनुभव है कि इन्हीं दिनों (भाद्रपद-मास) में इसका जोर अधिकतर रहता है।अपने यौवनकाल में यह प्रवाहित हो जाती है तो इसके प्रभाव से आकाश में रुक-रुक कर बादल आते है और परिणाम स्वरूप कई दिनों तक वर्षा की झड़ी लग जाती है। जिसके कारण अत्यन्त वर्षा होती है। इस सम्बन्ध में राजस्थानी भाषा में एक निम्नलिखित कथोपकथन भी है :—

"सूर्यो केव्है ए परवा बाई, तूं गडा मेह कठासूं लाई !"

इसके उत्तर मे परवा कहती है।—

"क्यूं नहिं लाऊं रे सूर्या भाई, बोली दुनियां मरे तिसाई।
घडी बे घड़ी जे चालण पाऊं, तो घर बैठी पणिहार भराऊं।
खूटा बैठया पाडा पाऊं, जद सूर्यों की बेन (परवा) कैव्हाऊं ।।

इस कथोपकथन का तात्पर्य यह है कि, वायव्य-कोण का वायु जिसे राजस्थान में सूर्यो कहा जाता है, पूर्व दिशा की ओर से प्रवाहित इस वायु अर्थात् परवा से पूछती है कि"

तूं यह वर्षा कहां से ले आई ? इसके उत्तर में परवा अपनी आत्म-प्रशंसा करते हुए कहती है कि यदि मैं घड़ी दो घड़ी भी चल पाऊं तो इतनी वर्षा करदेती हूं कि, महिलाओं को जल लाने ही के लिये किसी तालाब या कूए पर जाने की आवश्यकता नहीं रहती है।पाडे (भेंस-भेंसे) आदि को भी अपनी पिपासाशान्त्यर्थ कहीं अन्यत्र नहीं जाना पड़ता है अपितु, ये पशु अपनेस्थान पर ही जल प्राप्त कर लेते है तभी तो मै तुम्हारी बहिन "परवा" नाम को सार्थक करती हूँ।

इसके सिवा इस वायु में, अपनी अन्य कई विशेषताएं भी हैं। यह जिन दिनों मे प्रवाहित होती है, उन दिनों में इसके प्रभाव से आकाश का वर्ण गहरा नीला हो जाता है। जहरीले जीवों के लिये तो यह अमृत का काम करती है। इसके प्रभाव से उनमें विष-वर्द्धन हो जाता है और यदि ऐसे (जहरीले) जन्तु सर्प आदि मरे पड़े हों तो उनमें प्राणों का पुनः संचार प्रारम्भ होकर वे जीवित हो जाते हैं।

मृत सर्पों को जीवित करने के सिवा इसका एक प्रभाव यह भी है कि इसके प्रवाह से ककड़ी, मतीरे आदि फलों में कीड़े पड़ जाते हैं। साथ ही उनका भली भाँति विकास भी नहीं हो पाता है। केवल इसी बात को लेकर राजस्थान का एक कवि अपनी भाषा में आकाश-गर्जना को लक्ष कर कहता है :

चाली परवा पून क, मतीरी पिल गई।
अब चाव्है जि तरो गाज, वा पुल.तो टल. गई॥"

अर्थात् इस परवा वायु के चलते ही खेतों में ककड़ी, मतीरे आदि के विकास में अवरोध हो जाना प्रारम्भ हो जाता

है और इनमें विकृति आ जाती है । इसे देख कर कवि बादल से कहता है कि अब तेरी चाहे जितनी गर्जना हो या वर्षा हो, वह समय (जो इनके भली भांति फलने-फूलने या विकसित होने का था) तो निकल गया ।"

इसका विकारी प्रभाव एक यह भी है कि यदि ज्येष्ठ मास में प्रवाहित हो जाय तो वर्षा-काल का श्रावण मास बिना बर्षा हुए ही व्यतीत हो जाता है । जिसके कारण अवर्षण से अकाल होने का भय उत्पन्न हो जाता है । आचार्य श्री भद्रबाहु ने अपनी संहिता में प्रकृति में अन्यथा-भाव हेतु लिखा है :—

प्रकृतेर्योऽन्यथा भावो, विकारः सर्व उच्यते :
एवं विकारे विज्ञेय, भयं तत, प्रकृति सदा ।।
— भद्रबाहु संहिता, अध्याय २ श्लोक ३.

इसका तात्पर्य यह है कि, जिस समय किसी कारण से प्रकृति में परिवर्तन होता है तो वे सभी लक्षण विकार कहे जाते हैं । अतः विकार युक्त प्रकृति मानव के लिये भयोत्पादक हो जाती है । (इसे केवल परवा के लिये ही नहीं अन्य विकृत अवस्थाओं पर भी लागू समझें ।)

ज्येष्ठ मास की परवा के भविष्य को वर्षा-विज्ञान के ज्ञाता राजस्थानी में इस प्रकार से व्यक्त करते हैं:—

"जेठ चालै जे परवाई (तो) सावण सूखो जाई ।।

बूढ़ परवा:-(आग्नेय दिशा का वायु), खगोल-विदों ने इस वायु में जल-वाष्प का शाश्वत निवास माना है। अतः वे, इसके प्रवाह को किसी ऋतु-विशेष के लिये ही उपयोगी न मान कर समस्त ऋतुओं में इसे वर्षा-कारक माना है ।

इस वायु का प्रवाह राजस्थान में बहुत कम होता है। यहाँ के किसान इसे फसल के लिये उपयोगी नहीं मानते हैं। यदि यह तेज चलने लग जाय तो पौधों को जड़ से उखाड़ कर फेंक देता है। इस प्रदेश में इसका प्रवाह अधिकतर शीत:काल में विशेषकर रहता है। अत: इससे वर्षा हो जाने के बहुत ही कम अवसर आते हैं। हाँ, शीत:काल होने के कारण इसका प्रवाह शीतल हो जाता है। इसलिए यह वायु तत्कालीन (मौसमी) फलों के लिये हानिकारक ही होती है।

दिखणाव—(दक्षिण-दिशा का वायु):—खगोल-विदों ने इसे नमी की दृष्टि से विशेष समृद्ध मानते हुए शीत:काल में वर्षा के हेतु इसका प्रवाह होना बताया है। गर्मी और बरसात में राजस्थान प्रदेश में इसका प्रवाह अत्यन्त स्वल्प—यदा कदा ही होता है।

नागोरण—(नैऋत्य-दिशा का वायु):—यदि यह शीत:काल में प्रवाहित होती है तो इसके परिणाम स्वरूप वर्षा - काल में बहुत वर्षा होती है। कदाचित वर्षा-ऋतु में यह प्रवाहित हो जाय तो यह श्रेष्ठ नहीं होगी, ऐसी मान्यता है। क्योंकि इन दिनों यह जब तेजी से प्रवाहित होती है तो इसके प्रभाव से आकाश में के बादल टिके ही नहीं रह सकते। अत: इन दिनों में इसके प्रभाव को वर्षा का अवरोधक माना गया है। इस सबंध में निम्न लोकोक्तियें प्रचलित हैं—

÷"नैरुत कूण को बादला, जे फरती सूं आवै।
थोड़ी विरखा होवसी, क पूरो लंच करावै॥"
+"आछो नही है बायरो, नैरुत कूंण को जांण।
मूंगो धान बिकावसी, रोग शोक पहुचांण॥

+"नैरुत कूए व्है सावणे, भादू दिक्खण जोय ।
ऊगूणी आसोजां पवन, तौ ऊभी साख सुकोय ।"

यह, चार प्रमुख दिशाओं की ओर से बहने वाली हवाओं के अतिरिक्त अन्य समस्त हवाओं से अधिक समय तक चलती रहती है एव अपने प्रभाव को व्यक्त करती है। इसीलिये कहीं-कही इसे पांचवी के नाम से भी सम्बोधन किया गया है। वर्षा-काल में इसका प्रवाह हो जाने से कृषक बहुत घबरा जाता है। वह भयभीत हो जाता है कि उसके सारे प्रयत्न (कृषि उत्पादन) इस वायु के प्रवाहित हो जाने के कारण असफल हो जाते हैं। तभी तो वह कहता है :—

"ढोंढा मारण, खेत सुकावण, तूं क्यूं चली आवे सावण ?"

"नाड़ा टांकण, बदल बिकांवण, तूं मत चालै आवै सावण ।"

कहा जाता है कि, इसका प्रभाव मध्यान्ह काल के उपरान्त ही होता है।

पछवा—आथूणी (पश्चिम-दिशा की वायु):—नागोरण की भाँति इस वायु का प्रवाह भी मध्यान्ह-काल के उपरान्त का है। यह, इस समय शक्तिशाली बनकर वर्षा कराता है। नागोरण में और इसमें यही अन्तर है कि, यह नागोरण की भाँति बादलों को उड़ाकर नही ले जाती। अपितु बादलों के समूह को एकत्रित कर वर्षा करा देती है। इस हेतु एक कहावत प्रसिद्ध है।

"आथूणी आसोज में, ल्यावै मेवडो जोय ।"

यह वायु, सदैव जल-वाष्प से सम्पन्न रहती है। यदि इसे किसी शुष्क-वायु की टक्कर न लगे तो इसमें वर्षा कराने की

+नैऋत: पवनो यावत् तावत्कूर्पान्महातपम् ।
वर्ष प्रबोध उत्तर भाग प्रथम स्थल, वायु विचार माह
... श्लोक ५२

अपूर्व-शक्ति हो जाती है। कहा तो यहाँ तक जाता है कि, वर्षण-शक्ति इसमें सम्पूर्ण वर्ष भर रहती है। किन्तु देखा यह गया है कि आश्विन-मास में कभी-कभी यह यौवनारूढ़-सी हो जाती है। अतः यदि इन दिनों में इसका प्रवाह होता है तो इसके फलस्वरूप बहुत वर्षा होती है। जिसके परिणाम स्वरूप होनेवाली फसल अच्छी होती है। एतदर्थ राजस्थानी में यह कहावत प्रचलित हुई:—

"आसोजाँ में बाजे पच्छम बाय ।
(तो) काती साख सवाई थाय ।।

किन्तु इन दिनों में अत्यधिक वर्षा हो जाना भी हितकर नहीं है। विद्वानों ने भी "अति सर्वत्र वर्जयेत्" कहा है। यह अत्यधिक वर्षा तत्कालीन फसल को क्षति पहुँचा देती है। राजस्थान का कृषक अपने अनुभव के आधार पर कहता है—

'आसोजाँ रा मेवड़ा, दोय बात विणास ।
"बोरटियाँ में बोर नही, विणियाँ नही कपास ।।"

अर्थात् आश्विनी मास की वर्षा से दो बात की हानि होती है। एक तो बेर-वृक्ष के फलों का नाश हो जाता है और दूसरा कपास के पौधों से कपास नहीं मिलती है।

ऊपर इसे आश्विन मास में यौवनारूढ़-सी होना बताया गया है, इसमें यौवनारूढ़ शब्द के साथ सी लगाने का अभिप्राय यह है कि यदि आसोज में यह बलवान होकर अधिक मेह करे तो, ऐसा है। क्योंकि वर्षा-विज्ञान के अनुभवियों ने चातुर्मास में होनेवाली वर्षा की जहाँ अवस्थाओं का वर्णन किया है, उसके अनुसार तो—

"मेंहो बारक आहड़ो, सावणे मोटियार ।
भादरवे गरड़ो थई, आहो जाय पदार ।।" वाग नो बरात

अर्थात् इससे यह विदित होता है कि मेह भाद्रपद-मास में वृद्धावस्था को प्राप्त होकर आश्विन में चला जाता है। इस प्रकार से यह निश्चित नहीं है कि उस महीने में वर्षा होगी ही। इसके समर्थन में राजधानी में कहा जाता है—

"आसवाणी, भागवाणी ।।"

अर्थात् आश्विन मास में भाग्य से ही वर्षा होती है। किन्तु इस वर्षा से लाभदायक यह एक बात अवश्य है कि इस मास में हुई वर्षा जहाँ वर्षा—काल में उत्पन्न होने वाले पदार्थो क्षति पहुँचाती है, वहाँ, यह उन्हालू साख (फसल) के लिये लाभदायक सिद्ध होती है। राजस्थानी कृषक इस सम्बन्ध में अपना अनुभव इस प्रकार से व्यक्त करता है—

"बरं हरावे मेंउलो, कै वरसे नवरात ।
तो पाके माती घणी, ए नारू नी हात ।।"

···ाग नो बरात

अर्थात् श्राद्ध-पक्ष अथवा नवरात्रि (आश्विन शुक्ल पक्ष के प्रारम्भ के नौ दिन) की वर्षा से आगामी उन्हालू की साख (फसल) अच्छी पकती है।

इस वर्षा के दो गुण हैं। एक तो इस मास में हुई वर्षा की बूँदों से समुद्र में सीपें गर्भित होती है और दूसरा यह कि इसके प्रभाव से बेलों (लताओं) में बहुत फल लगते हैं। परवा की भाँति फलों पर इस वायु का दुष्प्रभाव (कीड़े पड़ जाना आदि) नहीं है अपितु ये फल पूर्णरूप से विकसित होते हैं।

सूर्यो (वायव्य-कोण का वायु):-इसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि यदि यह गर्मी के दिनों में यदा-कदा चले तो सामान्य वर्षा कारक ही प्रभाव दिखाती है कदाचित् कभी-कभी यह शीत:काल में

प्रवाहित हो तो भी यही प्रभाव होता है अर्थात् वर्षा सामान्य ही होती है। वायु-विज्ञानविदों ने इसकी यौवनावस्था का श्रावण-मास निश्चित किया है। अतः इस मास में यदि इसका प्रवाह प्रारम्भ हो जाय तो घनघोर-वर्षा हो जाती है। बताया जाता है कि यह वायु भाद्रपद मास में निर्बल हो जाती है। फिर भी यदि यह इस मास में भी प्रवाहित हो जाय तो श्रावण मास की वर्षा के समान वर्षा कर केवल सामान्य वर्षा कराती है। यह भी कहा जाता है कि इसके मन्द प्रवाह से प्रवाहित बादल-समूह को परवा का किंचित हल्का सा झोंका लग जाय तो इन दोनों (सूर्यो और परवा) के सम्मिलित प्रभाव के कारण अति वृष्टि हो जाया करती है। इसके सम्बन्ध में एक बात यह भी प्रचलित है कि सूर्य के प्रभाव से होने वाली वर्षा के साथ यदि वायु भी रहे तो यह लक्षण अच्छा नहीं है। इस हेतु कहा गया है —

"वायव कूण को वायरो, पवन सहित बरसाय ।
(तौ) निपजै खटमल जीवड़ा, ईति भय कर जाय ।।

खटमल यद्यपि राजस्थान में सर्वत्र नहीं होते हैं किन्तु होते अवश्य है। इनकी उत्पत्ति के स्थान राजस्थान में आबू उदयपुर आदि ही हैं। किन्तु-ईति भय तो सर्वत्र हो सकता है।

भाद्रपद-मास के पश्चात् यह वायु सर्वथावाष्प-रहित हो जाने के कारण इसमें शीतलता आने लग जाती हैं जो आगे चल कर अपने शीतल-प्रभाव के कारण कृषि के लिये अत्यन्त हानि-

---

वायव्यवायुः कुरुते वृष्टिं पवन संयुताम् ।
ततः पीडामत्कुणाद्या ईतयोजीव वर्षणम् ।।
वर्ष प्रबोध उत्तर भाग, प्रथम स्थल, वायु विचार माह,
······श्लोक ५३

कर हो जाती है। इसके शीतल-प्रभाव से तत्कालीन उत्पन्न होने वाले अनाज के पौधे, फल देनेवाली बेलें (लतायें) सूखकर नष्ट हो जाती हैं। बताया जाता है कि यह (सूर्यो) वायु सायंकाल से अत्यधिक बलवान बनती है।

उतरार्ध (उत्तर-दिशा की वायु):—ग्रीष्म-काल में जैसा इसका जोर होगा वैसा ही इसका प्रभाव भी होगा और तदनुसार ही इन दिनों में काली-पीली आँधिया आया करती हैं जो अपने साथ काली-पीली मिट्टी उड़ा लाती हैं। कभी २ तो इसका प्रवाह इतना तीव्र होता है कि हाथ तक दिखाई नही देता है और घरों पर के छप्पर तक उड़ जाते हैं एवं पेड़ भी गिर पड़ते हैं। सरदी के दिनों में इसका प्रभाव (जो अधिकतर इस प्रदेश में रहता है) वर्षा के मार्ग को अवरुद्ध करने के साथ-साथ घोर शीत ला देती है। पतझड़ होने का भी यही कारण है। इसके सम्बन्ध में यह भी कहा जाता है कि, कभी २ इस हवा के कारण होली में जलाये जाने वाले 'बर-कूलों' में केलिशयम उत्पन्न हो जाता है। अतः ये बर-कूले अस्थि के समान हो जाते हैं। हाँ ग्रीष्म-काल में यह जब-जब भली भांति से प्रवाहित होती है तब-तब आंधी के पश्चात कभी-कभी वर्षा भी हो जाती है। एतदर्थ इस प्रदेश में निम्न उक्तियें प्रचलित हैं:—

"आन्धी साथे तो मेंह आया ही करे है।"

× × ×

"आन्धी पूठै मेह आवै ॥"

यह वायु जब तीव्ररूप से प्रवाहित होती है तो इसके प्रवाह से आकाश में के आच्छादित बादल तुरन्त ही अन्यत्र चले जाया करते हैं। श्रावण और भाद्रपद-मास के पूर्वार्द्ध तक इसमें नमी आजाती है। अतः वर्षा-काल में यदि इसका मन्द-प्रवाह जारी रहे तो इसके प्रभाव से उन दिनों में घनघोर वर्षा हो जाती है। किन्तु भाद्रपद-मास के उत्तरार्द्ध में इसका प्रवाह कृषि के लिये

हानिकर होता है। कहा जाता है कि उत्तरार्द्ध की वर्षा का समय मध्यान्ह से सूर्योदय के पहले-पहले ही रहता है।

जलपरवा-(ईशाण-कोण का वायु):—यह एक शुष्क-सी वायु है और इसमें अत्यन्त स्वल्प मात्रा में जल-राशि होती है। सो भी केवल वर्षा-ऋतु में ही। यही कारण है कि वर्षा हेतु इसका किंचित सा ही प्रभाव है। क्योंकि इसकी शुष्कता वर्षा के मार्ग को अवरुद्ध कर देती है। यदि वर्षा-जल से परिपूर्ण बादलों का समूह आकर जल वर्षा रहा हो और यह वायु प्रवाहित हो जाय तो इसके प्रभाव से वे बादल तुरन्त ही खण्डित होकर इधर-उधर बिखर जाते हैं। कदाचित् यह वायु शीत काल में प्रवाहित हो तो इसके परिणाम स्वरूप उन दिनों में शीत की विशेष वृद्धि हो जाती है।

राजस्थान के कृषक को उपरोक्त इन आठ प्रवाहों में से यदि निश्रमित तीन प्रवाह यथा समय (वर्षा-काल—चातुर्मास में) मिल जाय तो वह सन्तुष्ट हो जाता है। यह चाहता है कि—

सावण मासे सूर्यो बाजे भादरवै परबाई।
आसोजां आथूणी चालै, ज्यूं-ज्यूं साख सबाई ॥

अर्थात् श्रावण-मास में सूर्यो (वायव्य-कोण की वायु), भाद्रपद-मास में परवाई (पूर्व-दिशा की वायु) हो एव आश्विनी-मास में आथूणी—पछवा (पश्चिम-दिशा की वायु) हो और ये क्रमशः एक के बाद एक इस प्रकार से प्रवाहित हो तो इनके प्रभाव से खरीफ की कृषि दिनोंदिन उत्तम होती जाती है।

इनके सिवाय राजस्थान प्रदेश में कई ऐसी वायु भी प्रवाहित होती हैं जो अपना विशेष प्रभाव रखती हैं। उनमें से कुछेक निम्न हैं :—

बधूलियो :—बधूला अर्थात् वातचक्र—गोलाकार वायु है जो हाथी की सूण्ड के समान किम्वा कीपाकृति के समान आकार बनाकर चलती है। प्रायः उष्ण-काल में ही यह प्रवा-

हित होतो है। इसका प्रवाह अचानक हो होता है। इसका व्यास २० मील से लगाकर २-३ हजार मील तक का हो सकता है। इस वायु की गति २० से ४० मील प्रति घण्टा और कभी-कभी तो भयंकर वेग धारण कर लेने पर प्रति घण्टा २०० से ५०० मील की गति हो जाती है। यह अपने केन्द्र स्थित कम दबाव के स्थान के चारों ओर चक्कर काटती रहती है। इस केन्द्र में एक ऊर्ध्वगामी पवन-धारा होती है जो प्रति घण्टा १०० से २०० मील की गति से वायु को ऊपर उठाती है अतः इसकी चोटी ऊपर की ओर रहती है। यह वायु नीचे से उठती हुई ऊपर पहुँचकर वहाँ की वायु में मिल जाती है। देखा गया है कि इसका भयंकर वेग, तेज से तेज आधो से भी अधिक नाश-कारक सिद्ध हुआ है।

लूः—यह भी उष्ण-काल में प्रवाहित होने वाली एक वायु है। राजस्थान के थली-प्रदेश (रेगिस्तान) मे यह विशेष चलती है। इस वायु से एक लाभ यह होता है कि इसके प्रवा-हित होने पर अम्ल-रस वाले फल पक कर मीठे हो जाते हैं। किन्तु इसकी तीव्रता असह्य हो जाती है। तब मनुष्य के लिये यह मारक सिद्ध हो जाती है और लोग, लू लग जाने के कारण संकट में पड़ जाते हैं। जहाँ तक कि प्राण भी खो देते हैं।

रहलः—यह कार्तिक-मास में मन्थर-गति से चलने वाली वायु है। आस्तिक एवं धार्मिक महिलायें जो मास-स्नान करती हैं वे कार्तिक-स्नान करते समय प्रभु के नाम के साथ-साथ इसका वर्णन इस प्रकार से करती हैं:—

"ठण्डी रहल चलाई हे राम"

झण्डाड़ः—यह शीत:काल में अत्यन्त तीव्र-गति से चलने वाली वायु है। जब यह रात्रि में चलने लगती है तो इसका

प्रभाव ऊन्हालू साख पर हानिकारक सिद्ध होता है। तब कृषक-वर्ग इस फसल की आशा ही छोड़ देते हैं।

कांकरी उछालः—यह वायु पतझड़ के दिनों में अर्थात् बसन्त-ऋतु के आगमन से पूर्व प्रवाहित होती है। इसके प्रभाव से वृक्षों के पुराने पत्ते झड़ जाते हैं। कांकरी उछाल नाम तो इसका इस कारण से पड़ गया है कि इसकी तीव्रता से प्रभावित होकर वायु के साथ-साथ छोटे-छोटे कंकर भी उड़ते हैं जो नेत्रों में गिर जाने के कारण कष्टदायक होते हैं।

डाफर—:—यह, जिन दिनों में शीत अपने यौवन पर होता है अर्थात् पौष-माघ में जब कड़ाके की सर्दी पड़ती है तब वर्षा हो जाने पर, उत्तर दिशा की ओर से प्रवाहित होती है। इसकी तीव्रता प्राणी मात्र के लिये घातक सिद्ध होती है और कई प्राणी इसके भेंट चढ़ जाते हैं।

वाल् :—यह शीतःकाल व्यतीत हो जाने के अन्तिम दिनों में (फाल्गुण-मास) में प्रवाहित होती है। इसकी तीव्रता ऊष्मा के आगमन के साथ-साथ तीव्र शीत ले आती है। जिसके कारण इन दिनों में लोगों को जुकाम, ज्वर, कफज्वर (न्युमोनिया), खांसी आदि होने का भय रहता है। राजस्थानी में इसके लिए निम्न उक्ति प्रचलित है:—

फागण में सी चौगणो, जे चालै तो वाल्।''

इस विज्ञान तथा इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में कुछ वर्णन करने से पूर्व कुछ बातें यहाँ बता दी जाय तो उत्तम रहेगा। भारतीय-शास्त्र पाँच तत्वों की प्रधानता को सदा से मानते आये हैं और इस विज्ञान में भी इन्हीं पाँचों का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। आकाश, वायु, पृथ्वी, सूर्य की ऊष्मा एवं विद्युत-तेज यही पाँच वर्षा से भी सम्बन्धित हैं। इधर ज्योतिष-शास्त्र

में पञ्चाग भी आवश्यक है। इस पञ्चाग (ज्योतिष द्वारा निर्धारित पाँच अङ्ग) में तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण होते हैं। इनका सम्बन्ध सूर्य एवं चन्द्रादि ग्रहों से है। इन सूर्य-चन्द्रादि का आकाश से घनिष्ट सम्बन्ध है और ये ही प्राणी मात्र के जीवनदाता एवं जीवनरक्षक हैं। ग्रहों की गति से वातावरण में परिवर्तन होता है और उसका शुभाशुभ प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है। इस प्रकार से जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, यह वर्षा-विज्ञान भी ज्योतिष से सम्बन्धित एक विज्ञान ही है।

भारतवर्ष जैसे विशाल देश में ज्योतिष-शास्त्र के आधार पर से दो परम्परायें चलती है। जिनमें एक सौर-पक्ष से सम्बन्धित है और दूसरी चान्द्र-पक्ष से सम्बन्धित। सौर-पक्षी विद्वान मासान्त पूर्णिमा को मानते हैं और चान्द्र-पक्षी विद्वान अमावश्या को। इसलिये इस विशाल देश के कई प्रान्तों में मास का प्रारम्भ शुक्ल-पक्ष की प्रतिपदा से माना जाता है और कई प्रान्तों में कृष्ण-पक्ष की प्रतिपदा से। गुजरात, महाराष्ट्र आदि प्रान्तों में मास का प्रारम्भ शुक्ल-पक्ष की प्रतिपदा से होने के कारण वहाँ मासान्त-तिथि अमावश्या होती है और अन्य प्रान्तों में कृष्ण-पक्ष की प्रतिपदा से मास का प्रारम्भ होने के कारण मासान्त-तिथि शुक्ल-पक्ष की अन्तिम तिथि अर्थात् पूर्णिमा होती है। अतः जिन दिनों में गुजरात आदि प्रान्तों में मास का अन्तिम-पक्ष आता है उन दिनों में अन्य प्रान्तों में अगले मास का प्रथम-पक्ष (कृष्ण-पक्ष) प्रारम्भ होता है। अर्थात् गुजरात, महाराष्ट्रादि प्रान्तों में प्रचलित आषाढ़ कृष्ण, राजस्थान में श्रावण-मास का कृष्ण-पक्ष होता है।

राजस्थान और गुजरात प्रदेश की सीमायें परस्पर मिली

हुई हैं और यदि यह भी कह दें कि, राजस्थान और गुजरात-प्रदेश एक ही थे तो अत्युक्ति नहीं है। अतः वर्षा सम्बन्धी कहावतें राजस्थान से गुजरात में गईं अथवा गुजरात से राजस्थान में आई उन पर वहां-वहां के क्षेत्रीय वातावरण और परम्परा का प्रभाव पड़ जाना स्वाभाविक है। यही कारण है कि कभी २ किसी-किसी कहावत को पढ़कर लोग भ्रम में पड़ जाते हैं। यहाँ हम एक उदाहरण देते हैं:—

> आषाढ़ सुदी पंचमी ने दिवसे, जल बिन्दु जो पड़शे रे।
> मास आषाढ़ ही मेहज आवी, सहु सुणजो उल्लासे रे॥
> जो जल बिन्दु न पड़ी ते दिने, तो आषाढ़ मेह न थाय रे।
> अन्धारे पखवाड़े थोड़ो मेह, किहां कण जोवाय रे॥
>
> —वृष्टि प्रबोध, सं० १२०६-७

उपरोक्त कहावत भाषा की दृष्टि से गुजराती प्रतीत होती है। इसमें बताया गया है कि आषाढ़-शुक्ला पंचमी को किंचित मेह बरस जाय (जल बिन्दु पड़ जाय) तो मेह आषाढ में ही आवेगा। यदि यहाँ राजस्थानी परम्परानुसार मास का प्रारम्भ आषाढ़ कृष्णपक्ष में मानें तो यह पंचमी इस मास का बीसवाँ दिन होता है। जिस मास के बीस दिन व्यतीत होकर मास समाप्ति में केवल दश दिन ही शेष रह जाते हैं तब उस समय सम्पूर्ण मास के लिये जो चल ही रहा है, वर्षा हेतु की गई भविष्य-वाणी का क्या महत्व हो सकता है। ऐसी भविष्य-वाणियें निश्चय ही निरर्थक एवं कल्पित मानी जा सकती हैं। किन्तु, इस कहावत में आगे चलकर अन्तिम पंक्ति में जो यह कहा गया है कि, "अन्धारे पखवाड़े थोड़ो मेह किहां कण जोवाय रे" जब इस पंक्ति को ध्यान में रखते हुए सारी कहावत पर विचार कर इसकी भाषा के आधार पर उस प्रदेश

की परम्परा एवं मान्यता की ओर दृष्टिपात करते हैं, तब यह सत्य ही प्रमाणित होती हैं। क्योंकि, यह तो ऊपर बता दिया गया था कि, गुजरात-प्रदेश शुक्ल-पक्ष से मास का प्रारम्भ मानता है। वहाँ के हिसाब से यह पंचमी इस मास का पाँचवा ही दिन है न कि राजस्थानी परम्परानुसार बीसवां दिन। जिस मास के चार दिन व्यतीत हो जाय और पाँचवें दिन उस मास के लिये कोई भविष्य-वाणी कर दी जय तो यह उचित ही है। इसलिए गुजरात प्रदेश में माने जाने वाला आषाढ़ कृष्ण-पक्ष राजस्थान वासियो का श्रावण-मास का कृष्ण-पक्ष होता है।

यह पहले बताया जा चुका है कि, इन कहावतों की उपयोगिता से आकर्षित होकर अन्य प्रान्तों ने भी इन्हें अपनाया है, यह सही ही है। भारतवर्ष एक विशाल देश है। जिस पर एक ही समय में भिन्न-भिन्न स्थानों पर विभिन्न ऋतुयें पाई जाती हैं। पंचाङ्ग में तिथि, वार, नक्षत्र आदि सर्वत्र एक होते हुए भी देशान्तर रेखा एवं अक्षान्तर रेखाओं के कारण वातावरण में परिवर्तन होता ही है और उस वातावरण का काल पर अवश्य ही प्रभाव पड़ता है। जिसके कारण वर्षा का कोई ठोस आधारभूत एक ही लक्षण कहीं-कही नहीं मिलता है। इसलिए वर्षा की अग्रिम सूचना के लिये केवल किसी एक ही बात को आधार मान कर अन्तिम निर्णय पर नहीं आ जाना चाहिए। अपितु, वातावरण की शीत, ऊष्मा, वायु बादल, विद्युत एवं घन-गर्जन, इन्द्र-धनुष आदि का आधार भी साथ में लेना चाहिए। तभी, भविष्यवाणी की घोषणा सही होती है।

एक ही ग्रन्थ-लेखक, एक ही बात पर अपने ग्रन्थ में जब दो राय व्यक्त कर देता है और यह बात यदि पाठक के ध्यान में

आ जाती है तो वह (पाठक) उस समूचे ग्रन्थ को ही अप्रमाणित सा मान लेता है। ऐसा मानना, उचित नहीं है। क्योंकि, ज्ञानरूपी सागर की थाह ले आने में कोई समर्थ नहीं है। यह तो अगाध है। ग्रन्थ-लेखक ने किसी न किसी आधार पर ही इस सत्य को कहने का प्रयत्न अथच साहस किया होगा। हो सकता है ग्रह-योगादि के साथ-साथ स्थान एवं वायु-मंडल के वातावरण का भी कोई सूक्ष्म-प्रभाव उस समय रहा होगा। इस प्रकार के प्रसंग संस्कृत के ज्योतिष-ग्रन्थों में भी मिलते हैं। पाठक-वर्ग की जानकारी के लिए यहाँ कुछ श्लोक दिए जा रहे हैं। इनका अवलोकन कर लें:—

"सुभिक्षं कार्तिकयुगे क्वचिद दुःखं रणान्नृणाम् ॥"

···वर्षप्रबोध तीसरा स्थल, अधिक मास निर्णय के अन्तर्गत

——श्लोक ६

"माघ द्वये भुविक्षेमं राज्यानांच भयं तथा।
सुभिक्ष फाल्गुनयुगे, क्षत्रियाणां शिवं भवेत् ॥"

······श्लोक

इनके विपरीत

"क्वचिद् द्विकार्तिके दुःखं द्विमाघेप्यशुभं मतम्।
द्वि फाल्गुने वन्हि भयं——————··· ॥"

श्लोक ११

इन श्लोकों में एक स्थान पर तो यह बताया गया है कि दो कार्तिक मास होने से सुभिक्ष-योग है और दूसरे स्थान पर बताया गया है कि, दो कार्तिक मास होने से प्रजा में कष्ट बढ़ेगा। इसी प्रकार से एक स्थान पर यह बताया है कि दो माघ होने से क्षेम-कुशल रहेगा, वहीं एक दूसरे स्थान पर यह बता दिया कि, दो माघ का होना अशुभ है। इसी तरह से एक

स्थान पर दो फाल्गुन- मास का होना सुभिक्षकारक बताकर अन्यत्र इसी योग को अग्नि-भयकारक बता दिया।

सक्रांति पर वर्षा-योग के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार से विरोधाभास व्यक्त किया गया है। यथा :—

आषाढ़े चैव सक्रान्तौ यदि वर्षति माधवः।
व्याधिरुत्पद्यते घोरः :×: श्रावणे शोभन तदा॥
......वर्ष प्रबोध द्वितीयस्थल श्लोक स० ४५

इसके विपरीत :—

पौषे माघे च वैशाखे ज्येष्ठाषाढ़ाद्विनेषु च।
संक्रान्तौ वर्षति घनः सर्वदैव सुशोभनः॥"
...—वर्षप्रबोध द्वितीयस्थल श्लोक सं० ५४

इस प्रकार की परस्पर विपरीतता को देखकर ग्रन्थ पर से श्रद्धा उठ जाना स्वाभाविक है। किन्तु वर्षा-ज्ञान प्राप्ति के अन्य अनेक शकुन—प्राकृतिक साधन—भी तो हैं। अतः ऐसी बात मान्य न होते हुए भी अन्य बातों द्वारा प्रमाणों के द्वारा—छान बीन कर निर्णय कर लेना उत्तम रहता है।

इस प्रकार का विरोधाभास पाठकों को प्रस्तुत ग्रन्थ मे भी कहीं मिल सकता है। किन्तु यह निश्चित समझे कि इस ग्रन्थ में जहां कहीं जो ऐसा परस्पर विरोधी वर्णन आया है, वह शास्त्रोक्त एवं ज्योतिष-ज्ञान से सम्मत ही है।

गुजरात हो या राजस्थान, वर्षा संबन्धी कहावतों का निर्माण ज्योतिष-शास्त्र सम्मत ही किया गया है। प्रमाण-

---

पाठान्तर :—

:×:मनुज पशुनाशदा॥

श्री विजयप्रभसूरि विरचित मेघमाला विचार आषाढ़ मास
.....श्लोक १०

स्वरूप यहां संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रन्थ "वर्ष प्रबोध" का एक श्लोक और ठीक इसी से सम्मत एक कहावत जो भाषा की दृष्टि से एवं व्यवहारिक-दृष्टि से गुजरात प्रदेश की ही है, यहाँ देखकर स्पष्टीकरण कर देना उचित समझते हैं। पाठक-वर्ग इन पर तुलनात्मक-दृष्टि से विचार कर लें:—

संस्कृत श्लोक :—

> "चैत्रमित पक्ष जाताः कृष्णेश्वयुजश्च बारिदा गर्भाः
> चैत्रासित संभूताः कार्तिक शुक्लेभि वर्षति ॥"
>
> ——वर्ष प्रबोध,उत्तर भाग, दूसरा स्थल,
>
> ......श्लोक सं० १४

कहावत·—

> बेऊ पख चैती तणां, जे दिन बादल छाय।
> दिना सराधां क काती सुदी, क्रम थी विरखा थाय॥

इस कहावत की भाषा न तो शुद्ध गुजराती ही है और राजस्थानी ही। अपितु, दोनों भाषाओं का इसमें मिश्रण प्रतीत होता है। परन्तु है वर्षा-ज्ञान से सम्बन्धित और उपयोगी।' इसमें सन्देह नही। संस्कृत श्लोक के आदि में चैत्रसित पक्ष अर्थात् शुक्ल-पक्ष आया है और इस श्लोक की दूसरी पंक्ति का प्रारम्भ चैत्रासित शब्द से हुआ। यहाँ चैत्र—असित अर्थात् चैत्र कृष्ण-पक्ष का मास कराया है। श्लोक का गुजराती कहावत में तात्पर्य यह है कि, चैत्र शुक्ल-पक्ष का गर्भ दिनां सराधां (राजस्थानियों के आश्विन कृष्ण-पक्ष) में बरसता है। यहाँ गुजराती परम्परानुसार चान्द्र-पक्षीय मत का आधार लिया गया है। परन्तु गणना करने पर यह ठीक नहीं बैठता है। क्योंकि वर्षा हेतु स्थापित गर्भ, १९५ दिन बाद बरसता है ऐसा एतद्विषयक विद्वानों का मत है। अतः चैत्र शुक्ल-पक्ष से

१६५ दिन की गणना करने पर आश्विन कृष्णपक्ष नहीं आता है अपितु राजस्थानी परम्परा से माना जाने वाला कार्तिक कृष्ण पक्ष आता है जो सही माना जा सकता है। गुजरात प्रदेश तो श्राद्ध-पक्ष (दिनां सराधां के अनुसार) भाद्रपद-कृष्ण पक्ष को मानता है और चैत्र शुक्ल पक्ष से गुजरात प्रदेश के निवासियों के मतानुसार श्राद्ध के दिन तक गणना करें तो भी १६५ दिन पूरे नहीं होते हैं। इसलिये इस कहावत में दिनाँ सराधां अशुद्ध ही ठहरता है। इस प्रकार की भाषा सम्बन्धी भूलें हो जाना स्वाभाविक है। ऐसी भूल गुजरात की परम्परा को ध्यान में न लेकर राजस्थानी परम्परा का मिश्रण कर देने से हो गई है ऐसा मानना सङ्गतियुक्त होगा। अब १६५ दिन की कसौटी पर चत्रासित अर्थात् चैत्र कृष्ण पक्ष को लेवें और जाँच करें तो कार्तिक शुक्ल पक्ष ठीक बैठता है अर्थात् गुजरात का चैत्र कृष्ण पक्ष राजस्थान प्रदेशवासियों का वैशाख कृष्ण पक्ष ही होता है, और गणना करने पर कार्तिक शुक्ल पक्ष ठीक ११५ दिन के पश्चात् ही आता है। यह कार्तिक मास का शुक्ल पक्ष राजस्थान प्रदेश में समान रूप से एक ही माना जाता है।

राजस्थानी-कृषक का एतद्विषयक-ज्ञान कितना पूर्ण था, वह वायु सम्बन्धी जानकारी का कितना अनुभवी था यह स्पष्ट है। राजस्थान प्रदेश में न तो कहीं हिमाच्छादित कोई गिरिराज हीं है और न वसे कोई अन्य गहन गिरि ही, जिससे जल से परिपूर्ण हवायें टकरा कर जल-बिन्दुओं को पृथ्वी पर गिराकर यहाँ की ऊष्मा को शान्त कर दे। न यहाँ ऐसे सघन—घने—गहरे जंगल ही हैं कि जिनके पेड़ों आदि से वर्षा आकर्षित होकर आती रहे। इस प्रदेश का विशेष भाग ऊष्मा प्रधान रेगिस्तान—मरुस्थल—ही है। जिसकी विकट ऊष्मा हीं एक

मात्र ऐसी शक्ति है, कि जिसके प्रभाव से यहाँ (इस प्रदेश में) यदा-कदा वर्षा थोड़ी-सी वर्षा—हो जाती है। इस प्रदेश की यह विकट ऊष्मा, सूर्य के प्रचण्ड ताप से प्रभावित विदग्ध वायु-मण्डल की भार-हीन स्थिति को परिचायक होती है। इस अवस्था में इस प्रदेश का प्राणी मात्र, वायु के अभाव के कारण अत्यन्त व्याकुल हो जाता है। राजस्थान प्रदेश में ऐसी स्थिति को 'ऊमस' अथवा 'हूमस' आदि विभिन्न नामों से कहा जाता है। वास्तव में देखा जाय तो इस प्रदेश में ऐसी अवस्था ही वर्षा के आगमन की शुभ-घड़ी (शुभ- बेला) है। राजस्थानी का कवि, वर्षा-आगमन के इस अग्रिम लक्षण को नीति युक्त शब्दों में किस प्रकार से व्यक्त करता है, जरा इस नमूने को भी देखें:—

* दुशमण री किरपा बुरी, भली सैंण री त्रास।
आडग कर गरमी करै, जद बरसण री आस॥

कवि ने यहाँ वायु के अभाव से बढ़ी हुई व्याकुलता को भी सेण (शुभचिन्तक) द्वारा दिया गया त्रास (कालान्तर में जो वर्षा के रूप में शुभ फलदायी होता है) को भला अर्थात उत्तम माना है। ऐसी अवस्था में वातावरण में जो-जो परिवर्तन होता है, उसका चित्रण करते हुए बताया गया है कि—

*ऊमस कर घृत माढ गमावै, इण्डा कीड़ी ले बाहर आवै।
नीर बिनाँ चिड़ियाँ रज न्हावै, तो मेह बरसै घर मांह न मावै॥

(इस श्लोक की टिप्पणी अगले पृष्ठ पर)

---

* मध्य काले जनस्ताप ईदृश मेघ लक्षणम् ।:

❀ वर्ष प्रबोध ऊत्तर भाग दूसरा स्थल, सद्योवृष्टि लक्षणम्।
श्लोक संख्या १८७।

अर्थात् अत्यन्त ऊष्मा के प्रभाव से जब पड़ा-पड़ा घी अपनी स्थिरता को छोड़ दे, चिउंटियां अपने-अपने दरों (बिलों) में से अण्डे मुँह में लेकर बाहर निकल आवे, चिड़ियाँ अत्यधिक गरमी के कारण सन्तप्त हो जल के अभाव में मिट्टी में स्नान करे तो इन लक्षणों को अत्यधिक वर्षा होने की शुभ सूचना माना जाता है।

गुजरात प्रदेश और राजस्थान प्रदेश की वर्षा सम्बन्धी कहावतों के परस्पर सम्मिश्रित हो जाने के कारण उनमें—उनकी भाषा में—विकृति आ जाना स्वाभाविक ही है। इस लिए कभी-कभी वर्षा सम्बन्धी भविष्य वाणियें (जो इनके आधार पर घोषित की जाती है) बीस विश्वा सही नहीं प्रतीत होती है। वास्तव में देखा जाय तो यह सौर एवं चान्द्र पक्षों का अन्तर ही इसका कारण है। क्षेत्रीय परम्परा तो इन उभय पक्षों पर ही आधारित है। फिर भी इस सम्बन्ध में स्वयं व्यक्ति का ज्ञान विशेष महत्व रखता है। वर्षा सम्बन्धी कहावतें और संस्कृत श्लोक यहाँ दिये जाते हैं। पाठक दोनों द्वारा अनुमान लगावें कि वास्तव में इस विषय को समझने के लिये कितने गहन अध्ययन एवं मनन की आवश्यकता है:—

राजस्थानी :—घण गरमी घण वायरो, के नहिं होवै कोय।
घण च्यारूं दिस मे रेवे, के आभो लीलो होय॥

(पिछले पृष्ठ की टिप्पणी)

* विनोपधात पिपीलिकाना मण्डोप संक्रान्तिरहि व्यवाय:।
वर्ष प्रबोध उत्तर भाग दूसरा स्थल तात्कालिक लक्षणम्।
श्लोक संख्या २०४।

लक्षण सारा ए कह्या, जे केहां मिल जाय।
(तो)मत चिन्ता कर तूं मानवी, झटपट बिरखा थाय।।

संस्कृत श्लोकः—प्रतिवातश्च निर्वातं ह्यतिचोष्णमनुष्णता।
अल्पाभ्रं च निरभ्रं च, षड्विधे वृष्टि लक्षणा।।

वर्ष प्रबोध उत्तर भाग, दूसरा स्थल श्लोक सं० २०० ।

राजस्थानीः—जिण दिन होवै गरभड़ी, तिण थक्की छह मास।
ऊपर पनरा दीहड़ा, बरसै मेह सुगाज।।

संस्कृत श्लोकः—यन्नक्षत्रमुपते गर्भं श्चन्द्रे भवेत्सचन्द्रवशात्।
पंचनवति दिन शते, तत्रैव प्रसव प्रायाति।।

—वर्ष प्रबोध उत्तर भाग, दूसरा स्थल श्लोक सं० ४।

बीकानेर में मेरे स्थायी निवास कर लेने पर मुझे यहाँ राजस्थानी साहित्य के विद्वान श्री मुरलीधर जी व्यास से मिलने का अवसर आया और इनकी कृपा से स्थानीय अन्य राजस्थानी साहित्य सेवियों के सम्पर्क में आने का सौभाग्य मिला। जोधपुर निवासी भाई स्व० श्री जगदीश सिंह जी गहलोत एम. आर. ए. एस. एफ. आर. जी. एस. (लन्दन) ने अपनी कुछ पुस्तकें भेंट स्वरूप मुझे भेजी थीं जिनमें एक 'राजस्थानी कृषि कहावतें' का चतुर्थ संस्करण था। इसमें प्रत्येक कहावत के साथ-साथ अंग्रेजी रचना भी थी जो उन कहावतों को उस भाषा में स्पष्ट कर देती थी। यह पुस्तक छोटी अवश्य थी किन्तु थी महत्वपूर्ण। क्योंकि, राजस्थानी साहित्य में के एतद्विषयक विचार अंग्रेज विद्वानों तक पहुँचाने का यह माध्यम था। मुझे इस छोटी-सी पुस्तक से प्रेरणा मिली और भाई श्री गहलोत से मेरा सम्पर्क बढ़ता गया। यद्यपि वर्षा सम्बन्धी

कहावतें, राजस्थान प्रदेश में लोगों को कण्ठस्थ और लिपिबद्ध प्रचुर मात्रा में होंगी तथापि, मुझ से जितना हो सका, प्राप्त कर कुछेक ज्योतिष-ग्रन्थों में से राजस्थानी में अनुवाद कर मैंने यह ग्रन्थ पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध के रूप में तैयार किया है। इसकी तैयारी में मुझे श्री अगरचंद जी नाहटा की ओर से विशेषरूप से प्रोत्साहन मिलता रहा है। आपने, एतद्विषयक मुद्रित, अमुद्रित (हस्तलिखित) साहित्य मुझ तक भिजवा कर इस कार्य में मेरी सहायता की। मेरे जीविकार्थ चिकित्सा-क्षेत्र में व्यस्त रहने के कारण कभी-कभी इस ओर मेरी गति जब शिथिल हो जाती थी तब आपकी ओर से तकाजे के इन्जेक्शन मिलते रहे और मैं इस रूप में इस ग्रन्थ को पूरा कर सका। श्री वंशाधर जी बिस्सा ज्योतिषी, श्री हाकूजी जोशी, का भी मै आभारी हूँ, कि जो मुझे इधर-उधर से सामग्री प्राप्त करने मे मेरी सहायता करते रहे। फिर भी यह ग्रन्थ सर्वाङ्ग-पूर्ण है, मैं ऐसा नही मान रहा हूँ, क्योंकि राजस्थानी साहित्य का भण्डार विशाल है और सम्भव है बहुत कुछ शेष रह भी गया हो।

मैंने जिन-जिन पुस्तकों से इस सम्बन्ध में सहायता ली है उनके लेखकों और सम्पादकों का भी मैं आभारी हूँ। जिनके इस परिश्रम से मुझे भी प्रेरणा मिलती रही और मेरा यह कार्य सरल-सा होगया। प्रस्तुत ग्रन्थ में कहीं-कहीं एक ही उक्ति पुनर्वार आ गई है, ऐसा प्रसंगवश ही किया गया है। ग्रन्थ कैसा है, गुण-ग्राही सज्जनों के हाथ में है। इसमें जो कुछ भी त्रुटि या कमी प्रतीत हो, वह मेरा दोष है। पाठक इसकी उपयोगिता की ओर ध्यान दें और त्रुटि या कमी के

सम्बन्ध में अपना सुझाव देने की उदारता करें, जिससे इसका आगामी संस्करण उत्तम रूप से प्रकाशित हो सके ।

यह ग्रन्थ लिखा ही पड़ा रह जाता यदि श्री नाहटा जी इसके मुद्रण की ओर ध्यान न देते। मैं श्री नाहटाजी का इसलिये भी आभारी हूँ कि उन्होने इसे जन-साधारण के हाथों में पहुँचाने की व्यवस्था की ।

जयशंकर देवशंकरजी शर्मा वैद्यविशारद,
एफ. एस. आर. आई. बीकानेर।

दि० प्रताप जयन्ती (ज्येष्ठ शुक्ला ३, विक्रमाब्द २०२१)
तदनुसार १३ जून सन् १६६४ ई०
स्थानः—राजस्थान महिला चिकित्सालय,
सोनगिरी-मार्ग, बीकानेर (राजस्थान)

प्रकृति से वर्षा ज्ञान

पूर्वार्द्ध

प्रवर्षण-प्रकरण

प्राचीन कालीन वर्षा—जल मापन विधिः

(१)

एक हाथ परमाण को, गोल कुण्ड करलेव ।
विरखा आवण की वखत, बिना ओट धरि देव ।।
भेलो थें जल ने करो, जब विरखा खिण्ड जाय ।
तौल कियां थांनें तुरत, देसी भेद बताय ।।
चार हाथ भू भीजसी, जै एक द्रोण* हुय जाय ।
कै छिनमें आंगल केवो, कै छः फुट देवो बताय ।।

एक हाथ, अर्थात् अठारह इंच किम्वा चौबीस अंगुल के व्यास का एक गोल कुण्ड बनवा कर, वर्षा आने के पूर्व मैदान में (बिना किसी ओट के) पृथ्वी से कुछ ऊपर (लकड़ी किम्बा लोहे की तिपाही पर) रखदें ।

---

* यह भारतीय प्राचीन मान तौल है, जो इस प्रकार से है :—
५ तोलों का आधा पाव का एक पल् ।
५० पल् का एक आड़क ।
४ आढ़क का एक द्रोण ।

नोट :—वर्तमान तोल के अनुसार एक पल, अनुमानतया एक छटांक (लगभग दो औंस का होता है ।)

जब वर्षा रुक जाय, इस जल को तौल लें। यह जल यदि एक द्रोण होगा तो, पृथ्वी के भीतर चार हाथ तक (९६ अंगुल किम्वा ६ फुट की गहराई की मिट्टी भीगी हुई मिलेगी।

(२)

प्रवर्षण (वर्षा का) काल

पैलो छांटां जद हुवै, माण्डे अपणो रूप।
अग्र भाग तिणखा तणो, जल मोती सो रूप॥
जेठ सुदी पूनम तथा, अगली पड़वा जोय।
इणां दिनां के मांयने, रिछ पूर्वाखाडा होय॥
इण सूं गिण सताईस रिछ, मूल तलक सम्भाल।
वायु धारण मेघ गरभ, ओ है परवरशण काल॥

सर्व प्रथम की वर्षा की बूंदों के चिह्न पृथ्वी पर बन जाय और घास के अग्र भाग पर वह (वर्षा का) जल, मोती के समान दिखाई दे तो यह प्रवर्षण की वर्षा है, ऐसा समझें।

ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा किम्वा इसके दूसरे ही दिन आने वाली आषाढ़ कृष्णा प्रतिपदा इनमें के जिस किसी दिन पूर्वाषाढा नक्षत्र हो, उससे सत्ताईसवे नक्षत्र (मूल) पर्यन्त प्रवर्षण काल माना गया है।

(३)

स्थल परिमाण से प्रवर्षण का शुभाशुभ फल

कोई पण्डत यूं केवे, नहीं छेत्र परमाण।
कोई पण्डत यूं देवे, दस जोजन परमाण॥
गरग परासर वसिष्ठ रुषी, था विद्या री खांण।
बारे जोजन थापियो, विरखा तणो परमाण॥

कोई आचार्य तो इस सम्बन्ध में क्षेत्र प्रमाण को प्रधानता न देते हुए कहते हैं कि प्रवर्षण-काल की वर्षा का कोई नियम नहीं। वर्षा हो जाना ही श्रेष्ठ है। किन्तु कोई-कोई दश योजन परिधि वर्षा क्षेत्र को उत्तम मानते हैं।

इस विषय में गर्ग पराशर एवं वशिष्ठ ऋषि का मत है कि इस समय की वर्षा का क्षेत्र बारह योजन होना श्रेष्ठ और इससे कम होना श्रेष्ठ नहीं है।

(४)

नक्षत्रानुसार प्रवर्षण काल का वर्षाज्ञान

रोहणी बेऊं फाल्गुणी, उत्तरा भादू जोय।
तौ चौमासे मेवलो, द्रोण पच्चीसां होय॥

उत्तराखाड़ा पुनरवसू, जे होय विसाखा मेह।
बीस द्रोण विरखा हुवै, इणमें नहिं सन्देह॥

पूरवाखाड़ा हस्त चित्र, धनु रेवती होय।
मिरगसिर में विरखा हुयां, सो लेवो जोय॥

पेले भादू पुक्ख में, जे द्रोण पन्दरा हुय जाय।
आदरा का अठ्ठारे गिणो, असनी बारै थाय॥

भरणी अनुराधा मघा, मूल सरवण जे आय।
नवदै द्रोण मेह होवसी, असलेखा तेरे थाय॥

कृतिका खाली एकली, दस द्रोण बरसाय।
जेठा स्वाती सतभिखा, द्रोण चार ले आय॥

इण तरे परवरसण हुयां, विरखा होसी ठीक।
जे उत्पात हुय जाय तो, टूटी जाणो लीक॥

प्रवर्षण-काल में प्रथम ही प्रथम रोहिणी, दोनों फाल्गुणी और उत्तरा भाद्रपदा में से किसी भी नक्षत्र में वर्षा हो तो वर्षा-काल में पच्चीस द्रोण जल बरसेगा। उत्तराषाढ़ा, पुनर्वसु एवं विशाखा इनमें से किसी में हो तो वर्षा-काल में बीस द्रोण वर्षा होगी। पूर्वाषाढ़, हस्त, चित्रा, धनिष्ठा तथा रेवती इन पांचों में से किसी में भी हो तो वर्षा सोलह द्रोण ही होगी। पुष्य, पूर्वा भाद्रपदा इन दोनों में किसी एक में हो तो पन्द्रह द्रोण जल बरसेगा। इसी प्रकार आर्द्रा में अठारह, भरणी, मघा, अनुराधा, मूल और श्रवण इन पांच में से किसी एक में वर्षा होने पर चौदह द्रोण जल बरसेगा। अश्विनी में बारह, आश्लेषा में तेरह, कृतिका में दश और ज्येष्ठा, स्वाति एवं शतभिषा में वर्षा होने पर चार द्रोण वर्षा होगी। परन्तु यह भी ध्यान में रखना परमावश्यक है कि इस अवसर पर किसी प्रकार का उत्पात हो जाय तो वर्षा काल के लिये यह नियम भंग हो जाता है। अर्थात् इसका यथोचित फल नहीं मिलता।

(५)

जी निखतां परवरसण चवै, वीं ज निखतां मेह।
जे परवरसण वरसै नहीं, तो धरा उडावै खेह॥

प्रवर्षण-काल में जिन-जिन नक्षत्रों में वर्षा होगी, वर्षा-काल में उन-उन नक्षत्र में मेह बरसेगा। कदाचित प्रवर्षण-काल में वर्षा न हो तो इस वर्ष वर्षा न हो कर पृथ्वी पर धूलि ही उड़ेगी।

(६)

प्रवर्षण के योग

सम अग्रिम अर उभय, पृष्ठ जोग जे होय।
तीन भला चौथो बुरो, करसण थोड़ो होय॥

जेठा शतभिखा अर आदरा, असलेखा ने स्वात ।
सम जोग सूं सुभिक्ष तणो, लावै ए बरसात ॥
तीनूं पूरवा अर करित्तका, मघा मूल जे होय ।
अग्गम जोगां कारणे, साख सावणूं होय ॥
तीनूं उत्तरा रोहणी, पुनरवसु ने स्वात ।
च्यारूं महिना वरससी, आछी निपजै साख ॥
दस नखत बाकी रया, पृष्ठ जोग बण जाय ।
थोड़ी छांटां कारणे, करसणा थोड़ो थाय ॥

प्रवर्षण-काल के चार योग माने गये हैं। जो सम, अग्रिम, उभय और पृष्ठ योग के नाम से पहचाने जाते हैं। नक्षत्रों की सत्ताईस संख्या में से इनमें के प्रत्येक समूह में पृथक-पृथक नक्षत्रों का एक-एक वर्ग है। इन समूहों के नक्षत्रों मे प्रथम वर्षा होने के फल भी पृथक पृथक हैं। वे इस प्रकार हैं :—

आर्द्रा, अश्लेषा, स्वाति, ज्येष्ठा और शतभिषा इन पांच के समूह का नाम सम-योग है। इस सम-योग में के किसी भी नक्षत्र में प्रवर्षण हो तो सुभिक्ष करने योग्य वर्षा होगी।

तीनों पूर्वा (पूर्वा फाल्गुणी, पूर्वाषाढ़ा और पूर्वाभाद्रपदा) कृतिका, मघा और मूल इन छहों के समूह को अग्रिम-योग कहा जाता है। इस योग के किसी भी नक्षत्र में प्रवर्षण हो तो इनके फलस्वरूप केवल वर्षा काल की ही खेती होने योग्य वर्षा होगी।

तीनों उत्तरा (उत्तरा फाल्गुणी, उत्तराषाढ़ा और उत्तराभाद्र-पदा) रोहिणी, पुनर्वसु एवं विशाखा इन छः नक्षत्रों के समूह को उभय-योग कहते हैं। इस योग के किसी भी नक्षत्र में प्रवर्षण हो तो वर्षा काल के चारों महीनों में वर्षा होती रहेगी।

अश्विनी, भरणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा श्रवण, धनिष्ठा और रेवती इन दश नक्षत्रों के समूह को पृष्ठ-योग कहते हैं। इनमें के किसी भी नक्षत्र में प्रवर्षण (प्रथम वर्षा) होने से समूचे वर्षा काल में स्वल्प-वर्षा होने के कारण कृषि भी कम ही होगी।

(७)

ग्रहों एवं तीन निमित्तों का प्रवर्षण नक्षत्र पर प्रभाव

सूरज शनि मंगल तथा शिखावन तारो दिखै।
परवरसण नखत पर, तो फल इणरो यूं लिखै॥
वक्री व्है कै बीचमें, कै तेज तारा के ऊपरै।
दिव्यादि निमित्त बी, जे उत्पात करै॥
तो अनावृष्टि दुर्भिक्ष व्है, है अक्षेम अकल्याणकर।
जे शुभ ग्रह हुय जाय तो, यां सू व्हैं ऊंधो असर॥

प्रवर्षण के नक्षत्र पर पाप-ग्रह (सूर्य, शनि एवं मंगल), पुच्छल तारा इनमें से कोई हो, ग्रह उस नक्षत्र पर वक्री हो अथवा उसके बीच में किम्वा उसमें के प्रकाशवान तारे के ऊपर होकर निकले तथा दिव्यादि तीन प्रकार के निमित्तों में से किसी भी प्रकार के निमित्त के कारण उत्पात हो जाय तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, अक्षेम और अकल्याण-कारक फल होगा। यदि उस नक्षत्र पर कोई शुभ ग्रह हो तथा उस दिन कोई उत्पात न हो तो उपरोक्त प्रभाव से विपरीत अर्थात् सुवृष्टि, सुभिक्ष, क्षेम एवं कल्याणकारक फल होगा।

(८)

दिव्य के निमित्त

सूरज चन्द्र राहू ग्रसै, तारो चोटीलो होय।
आभा में रिछग्रह दीसियां, निमित्त मानजो सोय॥

सूर्य किम्वा चन्द्र ग्रहण का होना, पुच्छल तारे का उदय होना नक्षत्र एवं अन्य ग्रहों का उदय होना आदि आकाश के निमित्त माने गये हैं।

केतु चार (पुच्छल तारा) प्रकरण

(१)

चोटीलो तारौ उदय, सींग पूंछ सौ होय ।
छत्र भंग दुर्भिच्छ करै, परजा सुखी ना होय ॥
बरस एक दो तीन में, पड़े काल भयभीत ।
तारा चरित्र अशुभ यूं आगम लखजो मीत ॥

तारा, यदि चोटी, सींग अथवा पूंछ के आकार का उदय हो तो जिस क्षेत्र में यह उदय हुआ है उस देश किम्वा उस क्षेत्र के राजा को क्लेश, प्रजा को अनेकों प्रकार के संकट तथा एक दो किम्वा तीन वर्षों मे भयंकर दुर्भिक्ष होगा ।

(२)

सावण भादूं मास में, जे एहड़ों तारौ होय ।
तौ नदियां पाणी अथाग ह्वै, धान न सूंघे कोय ॥

चोटी वाला तारा श्रावण-भाद्रपद मास में उदय हो तो इस वर्ष इतनी वर्षा होगी कि, नदियों में बाढ़ आ जावेगी और उत्पादित अनाज को कोई पूछेगा ही नहीं ।

(३)

आसू काती माँयने, उदै तारौ जौ होय ।
तौ चौपायाँ को नाश ह्वै, सरवर सूखा जोय ॥

चोटी वाला तारा, आश्विन-कार्तिक मास में उदय हो तो इस वर्ष अवर्षा के कारण नदी, कूए, तालाब आदि सूख जावेंगे और भयंकर दुर्भिक्ष होगा । यहां तक कि पशुओं का (गाय आदि का) भी नाश हो जावेगा ।

(४)

मिगसर पौसां अगन भय, देश दुखी हुय जाय ।
तस्करपण बधसी घणो, रोग पीड़ा भी थाय ।।

इस तारे का मार्गशीर्ष एवं पौष में उदय होना अग्नि-भय, चोरों का भय, रोग-पीड़ा आदि के कारण प्रजा दुःखी रहना निश्चित है ।

(५)

माघ फागण जे होय तो, समयो खोटो आवै ।
धान नाश सारो हुवे, जोर दुकाल जतावै ।।

माघ-फाल्गुन मास में इस तारे के उदय होने से उत्पन्न होने वाला सारा धान, अन्न नष्ट हो जावेगा और इसके परिणाम स्वरूप भयानक दुर्भिक्ष होगा ।

(६)

चैत वैसाखां होय तो, परजा आनन्द मनावै ।
जैसा बादल ऊपजै, वैसो ही मेह करावै ।।

चैत्र-वैशाख में इस तारे के उदय होने से जैसे बादल होंगे वैसी ही वर्षा होगी । प्रजा यज्ञ यागादि धार्मिक-कार्य करेगी और धन-धान्य की वृद्धि होने के कारण प्रजा आनन्द मनावेगी ।

(७)

जेठ अषाडां उदय हुयां, आन्धी जोर जतावै ।
लड़ै राजवी परसपर, झाड़ अर सिखर पड़ जावै ।।

ज्येष्ठ-आषाढ़ में ऐसा तारा उदय हो तो इतने जोरों से वायु चले कि वृक्ष एवं पर्वतों के शिखर तक गिर पड़ें और राजा लोग परस्पर एक दूसरे के विरोधी बनकर लड़ पड़ेंगे ।

वायु–धारणा

(१)

जेठ महीना मांयने, होय ऊजलो पाख ।
आठम सूं ग्यारस तलक, वायु धारण साख ।।
धूराऊ ऊगूण अर, ईसाण कूण मृदु वाय ।
आभो स्निग्ध बादल ढक्यो, धारण भलो बताय ।।
सूरज चन्दो बादल ढक्या, बिजली चमके जोय ।
आन्धी आवे बून्दां पड़ै, आछी धारण होय ।।
धूराऊ ऊगूण अर, ईसाण कूण की बीज ।
आछा लक्खणां सूं भरी, तो नहीं विरखा री खीज ।।

ज्येष्ठ शुक्ला अष्टमी से एकादशी तक के चार दिन वायु धारणा के दिन कहे जाते हैं। इन दिनों में उत्तर, पूर्व और ईशान दिशा से मृदु वायु आता हो और आकाश स्निग्ध बादलों से ढंका हुआ हो तो यह शुभ धारणा मानी जाती है।

इन चार दिनों में सूर्य एवं चन्द्र बादलों से ढंके हुए हों, बिजली चमकती दिखाई दे, आन्धियें (रेत बरसाती हुई तीव्र वायु) आवे, जल की बूंदे बरसे तो यह भी शुभ धारणा ही मानी जाती है।

उत्तर, पूर्व और ईशान दिशा में उत्तम लक्षणो से युक्त बिजली उत्पन्न हो चमके, तो वर्षा की कमी नही रहेगी। अर्थात् खेतिबों की वृद्धि करने योग्य उत्तम वर्षा हो जावेगी।

(२)

मोटा मोटा बादला, स्निग्ध प्रदक्षिण चाल ।
करसण करसी जो धणी, होसी मालामाल ।।

स्निग्ध और बहुत बड़े–बड़े बादल जिनकी गति प्रदक्षिण (पूर्व से दक्षिण और दक्षिण से पश्चिम इस क्रम से) हो तो इतनी वर्षा होगी जो सभी प्रकार की खेतियों के लिये उपयुक्त हो।

(३)

धूल सहित वरसे जे पांणी। पंछी आछी बोले वांणी॥
जल रेती गोबर सू खेले। टाबर आछी क्रीड़ा खेले॥
स्निग्ध कुण्डल शशि सूरज होय। पण घण दूखण रो टालो जाय॥
तो बिरखा होय घणेरी जाणो। करसण करता आणन्द मांणो॥

जल-वर्षण के साथ-साथ धूल की भी वर्षा हो, पक्षी अच्छे सुहावने शब्द बोले अगर वे जल, रेत (मिट्टी) किम्वा गोबर आदि में क्रीड़ा करते हो, बालक भो अच्छे-अच्छे खेल खेलते हों, चन्द्रमा और सूर्य के चारों ओर स्निग्ध कुण्डल (किन्तु अत्यन्त दूषित न हो) हो तो इस वर्ष, वर्षा इतनी अधिक होगी कि, कृषक-वर्ग आनन्दित हो जावेंगे।

(४)

लगातार ए च्यार दिन, एक सरीखा होय।
तो सुवृष्टि अर सुगाल व्है, क्षेम कल्याण लो जोय॥
एक सरीखा नहिं हुयां, फल आछो नहीं बतावे।
सरप आदि पीड़ा करै, चोर दुष्ट सतावे॥

उपरोक्त लक्षणो से युक्त, उपरोक्त चारों दिन एक सरीखे व्यतीत हों तो परिणामस्वरूप इस वर्ष सुवृष्टि एवं सुभिक्ष होगा। जिसके परिणामस्वरूप प्रजा क्षेम और कल्याण को प्राप्त करेगी।

किन्तु ये चारों दिन एक से (एक सरीखे) नहीं हो (एक कैसा और दूसरा कैसा) तो इसका परिणाम हानिकारक, जन्तु, सर्प तथा चोर एवं दुष्टों द्वारा लोगों को कष्ट उठाने पड़ेंगे।

(५)
वायु धारण गलने के कारण

स्वाती आदि च्यार रिछ, जेठ सुदी के मांय ।
महीना च्यारू मानलो, सावण आद कराय ।।
जिण दिन आवे मेवलो, उण महीने परमाण ।
विरखा तो होवे नहीं, निश्चे लीजो मान ।।

ज्येष्ठ शुक्ला पक्ष में स्वाति नक्षत्र से लगाकर ज्येष्ठा तक के चार नक्षत्रों को वायु-शास्त्रियों ने वर्षा की धारणा के दिन माने हैं। इनमें के प्रत्येक नक्षत्र को वर्षा काल के चार महीनों (श्रावण से कार्तिक तक) में से एक महीने का प्रतीक माना है। अतः इन चारों दिनो में यदि वर्षा हो जाय तो वर्षा-काल के चारों महीने कोरे ही जावेंगे। अर्थात् वर्षा-काल में वर्षा नहीं होगी। किन्तु केवल किसी एक-दो या तीन दिन वर्षा हो जावेगी तो क्रमशः उस या उन्हीं महीनों में वर्षा का अभाव रहेगा। वे क्रमशः इस प्रकार हैं:—स्वाति से श्रावण, विसाखा से भाद्रपद, अनुराधा से आश्विन और ज्येष्ठा से कार्तिक। उक्त योग, वायु धारणा के गल जाने वाले योग माने गये हैं।

ग्रहण द्वारा शुभाशुभ ज्ञान

ग्रहण–योग

(१)

* जीं (जिण) नखतां सूरज तपे, जिहीं अमावस होय।
पड़वा सांझी जो मिले, रवि खोड़ो तब होय ॥

जिस नक्षत्र पर सूर्य हो और उसी नक्षत्र पर अमावास्या आ जाय तो यह, ग्रहण-योग हो जाता है।

(२)

२ मासारिख्य तीज अंधियारी। लड़े ज्योतसी ताहि बिचारी।
तिहि नखतां जे पूरणमासी। तो निहचे चन्द्र ग्रहण उपजासी॥

जिस मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया को जो नक्षत्र हो, वह नक्षत्र पूर्णिमा के दिन आ जाय तो यह ग्रहण, चन्द्र ग्रहण होगा।

(३)

* मंगल राशी पर मंगलवारी। ग्रहण पड्यां दुरभिक्ख विचारी॥

मंगल राशि पर मंगलवार हो और ग्रहण हो जाय तो इसका प्रभाव, इस वर्ष दुर्भिक्ष-कारक होगा।

---

* मावस दिन जे रिछ हुवे, रवि उण रिछ में आय।
मावस में पड़वा मिल्यां, सूरज ग्रहण कराय॥

२*चन्दा सूं रवि सातमे, मिले राहु रवि एक।
पूनम में पड़वा मिले, तो ग्रहण चान्द को टेक॥

* कर्क राशि में मंगलवारी। ग्रहण पड्यां दुरभिक्ख विचारी॥

जब चन्द्रमा कर्क राशि पर हो तो तब मंगल के दिन ग्रहण होना दुर्भिक्ष-योग है।

(४)

* गुरुवारां धन विरखा करसी । थावरवारां राजा मरसी ॥

यदि गुरुवार हो तो घन की वर्षा होगी (उत्पादन अधिक होने से लोगों का कारबार अच्छा चलेगा) । किन्तु इस दिन शनिवार हो गया तो किसी राजा की मृत्यु होगी ।

(५)

२*एक मास में ग्रहण दो होय । तोभी अन्न मूंघो जोय ॥

एक मास में दो ग्रहण होने से अन्न महंगा हो जावेगा ।

---

* गुरु बासर घन बरखा करसी । थावरवारां राजा मरसी ॥

धन राशि पर गुरु हो उस दिन ग्रहण होने से वर्षा, शनिवार हो तो राजा की मृत्यु होगी ।

पाठान्तर:—

२*मास रिच्छ जो तीज अंधारी । लेहु ज्योतिषी ताहि विचारी ॥
तिहि नक्षत्र जो पूरन्मासी । निहचे चन्द्र ग्रहण उपजासी ॥

* चन्द्र सूर्य का ग्रहण व्है, मास एक में दोय ।
कोप शस्त्र क्षय जगत को, लड़त घणा नृप लोय ॥

* एक मास में दो गहना । राजा मरे कि सहना ॥

नोट:—यहाँ 'सहना' शब्द से सेना का अभिप्राय है ।

* जे वर मइना एक में, गरण थये जे बेय ।
धान मले मोंगो घणो, मेंह वरे तो नेय ॥

* एक मास में ग्रहण जो दोई । तो भी अन्न महंगो होई ॥

† गहतो आँथे गहतो ऊगे । तो भी चोखी साख न पूगे ।।

सूर्य या चन्द्र उदय होते समय ग्रहण लगे हुए ही उदय हो तो अथवा अस्त होते समय ग्रहण लगा हुआ ही रहे तो इसके प्रभाव से इस वर्ष खेती अच्छी नहीं होगी ।

(६)

पेली चन्दो पाछे सूर । तो रोग होवसी भरपूर ।।
घर घरवाली कलह करावै । आगे पीछे रो फल बतावै ।।

चन्द्र-ग्रहण प्रथम हो और तत्पश्चात सूर्य ग्रहण आवे तो प्रजा में रोग-वृद्धि हो, पति-पत्नी मे कलह हो ऐसा योग बताया गया है ।

(७)

गरण थया पूठे जयें, कासा गरब कवाइ ।
जाये वरी वरात तो, पाका थइ रखराइ ।।

सूर्य ग्रहण किम्वा चन्द्र ग्रहण के प्रभाव से कच्चे गर्भ गल जाते हैं । यदि इसके (ग्रहण के) पश्चात छींटे पड़ जाय तो यह गर्भ आगामी चातुर्मास के लिये सुरक्षित रह जाते हैं । जिसके परिणामस्वरूप निश्चित समय पर वर्षा हो जाती है ।

---

† ग्रसित उदय अथमे ग्रसति, रवि शशि करत संहार ।
जे रवि शशि सारो ग्रसत, जग व्है सकल दुखार ॥

वार और ग्रहण पर से शुभाशुभ ज्ञान

(१)

ग्रहण होय रविवार को, अन्न लाभ है दुरभिक्ष ।
राजा विग्रह सोम में, मूंगा ह्वै रस इक्ष ।।

रविवार को ग्रहण होने से दुर्भिक्ष होगा इसलिये अन्न संग्रह में ही लाभ है । यदि सोमवार को ग्रहण हो तो राजाओं में परस्पर विग्रह होगा और गुड़, खांड, गन्ना आदि रस-कस पदार्थ महंगे होंगे ।

(२)

मंगल अगन उछाल बहु, बुध जन करो विचार ।
रक्त मंजीठ कुसुम रंग, बुध महंगो इह कार ।।

मंगलवार का ग्रहण हो तो, लाल रंग के पदार्थ मजीठ एवं कुसुम (पीले) रंग की वस्तुएं महंगी होंगी ।

(३)

गुरु दिन ग्रहण जे होय तो, दुगुणो लाभ चौमास ।
रूपो तेल कपास घीव, संगरह करजो तास ।।

ग्रहण के दिन गुरुवार हो तो कपास, घी, तेल एवं चान्दी संग्रह कर लें । चार महीनों में इनसे दूना लाभ हो जावेगा ।

(४)

भृगु सुत बारे ग्रहण हो, तो अन्न घणो संसार ।
सब सुख पूरण मेदनी, राज रिद्धि विस्तार ।।

शुक्रवार का ग्रहण हो तो पृथ्वी पर आनन्द ही आनन्द रहेगा । अन्न बहुत उत्पन्न होगा और राज्यकोष में वृद्धि होगी ।

(५)

श्याम वस्तु तिल लौह हु, सर्व अन्न अरु ज्वार ।
लाभ चौगणो मास इक, ग्रहण होत शनिवार ।

शनिवार का ग्रहण हो तो काले रंग के पदार्थ, तिल, लोह, अन्न एवं ज्वार संग्रह कर रख लें । एक महीने में ही इनसे चौगुना लाभ होगा ।

(६)

ग्रहणजोग आछो गिणो, जो छः छः महिने होय ।
पाँच सात को अन्तर हुयां, दुरभिक्ख लेसो जोय ।।
भादू आसू काती तथा, माघ मास में आय ।
इण मासां जे ग्रहण हुवे, तो आछो मेह कराय ।।
बीजा महीनां मांयने, ग्रहण जोग जे आवै ।
तो अनावृष्टि दुरभिक्ख अर, अकल्याण करावै ।।

छः छः महीनों के अन्तर से आने वाले ग्रहणों का फल शुभ होता है । परन्तु यही यदि पाँच किम्वा सात मास के अन्तर (विसम संख्या , से हो तो दुर्भिक्षकारक होते है । यह महामारी, अनावृष्टि योग वन जाता है ।

भाद्रपद, आश्विन कार्तिक और माघ महीनों मे ग्रहण हो तो वर्ष के लिये अच्छा (सुवृष्टि, क्षेम, कल्याण, सुभिक्ष कारक) होता है । किन्तु अन्य महीनों मे होने वाले ग्रहण का प्रभाव इसके विपरीत अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, अक्षेम एवं अकल्याणकारक होता है ।

(७)

सूरज ग्रहण पन्दरै दिनां, चन्द्र ग्रहण शुभ होय ।
चन्द्र पछी पन्दरै दिनां, सूरज भलो नहिं जोय ।।

सूर्य ग्रहण के बाद में पन्द्रह दिन के अन्तर से होने वाले चन्द्र ग्रहण का फल शुभ होता है। किन्तु, चन्द्र ग्रहण के बाद के पन्द्रह दिन पर आने वाला सूर्य ग्रहण अशुभ फलदाता होता है।

(८)

रवि शशि ग्रस्तोदय हुयां, फल इण भांत करावै ।
पेलो राजा नाश करे, अर बीजो उन्हालू सुखावै ।।

सूर्य किम्वा चन्द्र ग्रहण लगा हुआ ही उदय हो तो ऐसे सूर्य ग्रहण का फल राजाओं को नाश करने वाला और चन्द्र ग्रहण का फल खरीफ की फसल को नाश करने वाला होता है।

(९)

खग्रास ग्रहण के ऊपरां, निजर क्रूर ग्रहां री पड़ै ।
कै तो दुरभिक्ख होवसी, कै महामारी पड़ै ।।

खग्रास (सम्पूर्ण लगा हुआ) ग्रहण हो और उसे कोई क्रूर ग्रह देखता हो तो यह, दुर्भिक्ष एवं महामारी उत्पन्न करने वाला होता है।

(१०)

ग्रहण के स्वामी द्वारा शुभाशुभ

सौ अर पेंतीस घटावजो, विक्रम सम्वत होय ।
जो बाकी बच जाय वो, शक शालिवाहन जोय ।।
इण अंकां ने गुणां देवो, अंक बारा के साथ ।
पहलो महिनो चैत गिण, ग्रहण मास लौ हाथ ।।
ए, इण में मेल कर, भाग सांत को देय ।
बाकी बचै सो ग्रहण धणी, फल इण भांत करेय ।।
एक बच्यां ब्रह्मागिणो, दो गिणीजै चन्द ।
च्यार कुबेर ने मांनजो, तीन गिणीजै इन्द्र ।।

पांच वरुण छः अग्नि गिण, शून्य यम समझाय ।
आगे फल वरणन करूं, देऊं शुभ अशुभ बताय ।।

विक्रम सम्वत में से एकसौ पैंतीस घटाकर जो अंक शेष रहें यह, शालिवाहन शक के अंक हैं। इन्हें बारह से गुणा करें और जो गुणनफल आवे उसमें चैत्र मास को एक का अंक मान कर जिस मास में ग्रहण हो उस अंक को इस गुणनफल में जोड़ दें। इस योग में अब सात का भाग दे। जो भाग शेष रहे वह ग्रहण के स्वामी को सूचित करने वाले अंक होंगे।

एक शेष रहने पर ब्रह्मा, दो हो तो चन्द्रमा, तीन हो तो इन्द्र, चार हो तो कुबेर, पांच हो तो वरुण, छः हो तो अग्नि और शून्य (०) शेष रहे तो यम उस ग्रहण का स्वामी है। इस ग्रहण-स्वामी के शुभाशुभ का फल इस प्रकार है :—

(११)

जै ब्रह्मा स्वामी हुवे, पशु ब्राह्मण बध जाय ।
करसण री वृद्धि करै, क्षेम आरोग्य कराय ।।
हुवे चन्द्रस्वामी अगर, करै पशु ब्राह्मणरी हांण ।
अनावृष्टि अवसै करै, निश्चै करने जांण ।।
इन्द्र हुयां राजा लडै, साख उन्हालू जाय ।
परजा रो अकल्यांण हुवै, ऐसो जोग बताय ।।
धनपति घन हणं कुबेर, करै सुभिक्ष घणेरो ।
वरूण वृद्धि करसण करै, राजा अशुभ परजा भलेरो ।।
अग्नि स्वामी होय तो, अभय आरोग्य जताय ।
विरखा आछी होवसी, करसण खूब कराय ।।
यम नाम है डरावणो, मेह खंच कर जाय ।
दुरभिक्ख करै खेती हणै, ऐसो जोग कराय ।।

ग्रहण का स्वामी ब्रह्मा हो तो पशु और ब्राह्मणों एवं कृषि की वृद्धि हो तथा क्षेम एवं आरोग्य फल दाता है। चन्द्रमा हो तो पशु और ब्राह्मणों को पीड़ा तथा अनावृष्टिकारक है। इन्द्र हो तो राजा लोगों में परस्पर वैमनस्य (लड़ाई), खरीफ की खेती का नाश एवं जनता में अकल्याण हो। कुबेर के होने पर धनवानों के धन का नाश किन्तु देश में सुभिक्ष होगा। वरुण के स्वामी होने पर राजाओं के लिये तो अशुभ किन्तु प्रजा के लाभदायक (शुभ) तथा कृषि की वृद्धि होगी। अग्नि स्वामी होने पर अभय, आरोग्य, उत्तम वर्षा एवं कृषि की वृद्धि होगी। किन्तु यम हुआ तो इसके नाम स्मरण से ही भय होता है। इसका प्रभाव अनावृष्टि, दुर्भिक्ष एवं कृषि का नाशकारक तथा प्रजा के लिये दुःखदायक होगा।

———

संक्रान्ति पर से वर्षा ज्ञान

(१)

जिण वारां रवि संक्रमे, तिणी अमावस होय ।
खप्पर हाथां जग भ्रमै, भीख न घालै कोय ।।

अमावस्या के दिन सूर्य संक्रान्ति योग, अकाल की सूचना देता है। प्रजा भीख पर निर्वाहार्थ इधर-उधर भटकेगी किन्तु इन्हें भीख में कुछ देने योग्य सामर्थ्य वाले व्यक्ति ही नहीं रहेंगे।

(२)

जिण वारां रवि संक्रमे, तासूं चौथे वार ।
असुभ पड़ंती सुभ करै, जोसी जोतिस सार ।।

जिस दिन (वार) को संक्रान्ति हो उसके चौथे दिन अशुभ-योग हो तो भी शुभ हो जाता है।

(३)

बीचै तीजै किरवरो, रस कुसुम्भ महंगाय ।
पहले छट्ठे आंठमें, पिरथी परलै जाय ।।

सूर्य-संक्रान्ति के दूसरे और तीसरे दिन हो तो गडबड़ है। रस वाले पदार्थ महंगे होगे। पहला, छट्ठा और आठवां तो पृथ्वी पर प्रलय करने वाले हैं।

(४)

कर्क संक्रमी मंगलवार, मकर संक्रमी सनिहि विचार ।
पनरै मोहरतवारी होय, तो देश उजाड़ करै यूं जोय ।।

कर्क-संक्रान्ति को मंगलवार का होना और मकर संक्रान्ति का शनिवार का होना तथा वह पन्द्रह मुहूर्त की हो तो इनके प्रभाव से देश मे ऐसा अकाल पड़ेगा कि, देश उजड जावेगा।

(५)

रिक्ता तिथि अर क्रूर दिन, दोपारां के प्रात ।
जे संक्रान्ति आ जाय तो, सम्वत मूंघो जात ।।

रिक्ता तिथि एवं क्रूर दिन (शनि, मंगलवारादि) को यदि मध्याह्न अथवा प्रातःकाल में संक्रान्ति हो तो इस योग से यह समझें कि, इस वर्ष अन्न महंगा बिकेगा।

(६)

जेंठा आदरा सतभिखा, स्वात सुलेखा मांहि।
जे संक्रान्ति आ जाय तो, मूंघो नाज बिकाहि॥

ज्येष्ठा, आर्द्रा, शतभिखा, स्वाति एवं अश्लेषा नक्षत्रों में से किसी दिन संक्रान्ति हो तो इस योग से यह समझलें कि, इस वर्ष अन्न महंगा बिकेगा।

(७)

पोणा बे पोणा तणे, मा मगसर के पौह।
उतरण आवै पोणती, तो नें घान घरोह॥

दीवाली से पौने दो मास या पौने तीन मास (मार्ग शीर्ष या पौष में) के अंतर पर संक्रान्ति का आना दुखदायी (अशुभ) माना जाता है। क्योंकि, इस लक्षण से इस वर्ष, वर्षा का अभाव रहने से अन्न एवं घास नहीं मिलेगे।

(८)

धन का सूरज होय जद, मूलादिक नव नखत्त।
मेघ सहित निजरां पडै, तो विरखा वरसै सत्त॥

पौष मास में धन की संक्रान्ति हो तब इस दिन मूल से प्रारम्भ करके नौ नक्षत्र (मूल से रेवती तक) में से कोई भी नक्षत्र हो और आकाश में बादल आदि दृष्टिगोचर हो तो ये लक्षण आगामी वर्षा काल में अच्छी वर्षा होने की अग्रिम सूचना है, ऐसा सही मानें।

नोटः—किसी-किसी का अभिप्राय है कि धन की संक्रान्ति के पश्चात आने वाले मूल नक्षत्र से रेवती तक के किसी नक्षत्र के दिन उपरोक्त लक्षण दृष्टिगत हो तो वर्षा अच्छी होती है।

(६)

पड़वा आड़ी चार दे, क्रमथी तिथियाँ देख ।
नन्दा भदरा अर जया, रिक्ता पूर्णा पेख ॥
मेख भान जीं तिथ हुवे, बीं को ध्यान लगाव ।
विरखा थोड़ी होवसी, झटसूं देव बताय ॥
राज जुद्ध भदरा में हुवे, जया रोग करजाय ।
पशुघात रिक्ता तणो, पूर्णा धान बधाय ॥

मेष

जिस तिथि को मेख सक्रान्ति हो उन तिथि को देखें। वह, कौनसी है। यदि यह नन्दा-तिथि है तो इस वर्ष, वर्षा-काल मे वर्षा कम होगी। भद्रा तिथि हो तो राजाओं मे परस्पर युद्ध होगा। जया मे हो तो मनुष्यों में व्याधि होगी। रिक्ता-तिथि, पशुओं के लिये घातक होगी और इस दिन यदि पूर्णा तिथि आगई तो इसके प्रभाव से उस वर्ष, अन्न की उत्पत्ति बहुत होगी।

(१०)

तिथि मावस के दिनां, जे सिकरान्त आजाय ।
खरपर जोग बणाय दे, अन्न नास कर जाय ॥

अमावस्या-तिथि के दिन संक्रान्ति का होना खर्पर-योग बनाता है। यह, प्राणियों के लिये और अन्न के लिये नाशक होता है।

(११)

मेख करक अर मकर, वार क्रूर व्है सिकरान्त ।
थोड़ो अन अर चोर भौ, हुवे नही बरसात ॥
रोगचार फैले घणौ, विगरै पण होजाय ।
वार क्रूरसिकिरान्त रो, ऐसो जोग बताय ॥

यदि मेष, कर्क और मकर की संक्रान्तियों में से किसी में भी क्रूर वार हो तो उस वर्ष में वर्षा नही होगी, अन्न का उत्पादन कम होगा, चोर और रोगों के कारण प्रजा त्रस्त रहेगी तथा विग्रह फैलने का भी यह योग है।

(१२)

शनि भान मंगलवार जे, यूं सिकरांतां आय।
पेले बीजे अर तीसरे, तौ खरपर जोग कराय॥

यदि प्रथम संक्रान्ति को शनिवार, दूसरी को रविवार और तीसरी सक्रान्ति के दिन मंगलवार, इस प्रकार से क्रम से आ जाय तो यह खर्पर-योग बन जाता है। यह योग, प्रजा के लिये कष्टकारी होता है।

(१३)

दीतवार के दिनां पोसी व्है सिकरांत।
ज्ञानवान सब यूं केव्है, मूंगो धान करात॥

पौष मास की संक्रान्ति के दिन इतवार का आना, ज्ञानवान-लोगों ने अन्न की महंगाई का द्योतक बताया है।

(१४)

सनीवार तिगणौ करे, भौम चौगणो होय।
गुरू चन्दर आधो हुवे, बुध सुक्कर सम जोय॥

यही संक्रान्ति, शनिवार की हो तो अन्न का भाव तिगुना होगा, मंगलवार इस दिन होगा तो अन्न का मूल्य चौगुना हो जावेगा। कदाचित इस दिन वृहस्पति अथवा सोमवार हो जाय तो इसके प्रभाव से अन्न का मोल आधा हो जावेगा और बुध अथवा शुक्रवार इस दिन आ गया तो अनाज का भाव समान ही रहेगा।

(१५)

मीन मेख सिकरांत बिच, आठम मंगल होय।
तो संगरेह धान करायलो, लाभ घणेरो होय॥

मीन और मेष की संक्रान्ति के मध्य अष्टमी तिथि सहित मंगलवार आजाय तो यह योग, अन्न संग्रह करने की सूचना देता है। क्योंकि इस समय संग्रह किया हुआ अन्न आगे जा कर चौगुना लाभ तक दे जा सकता है।

(१६)

कुम्भ मीन सकिरांत विच, नवमी रोयण आय।
मेह सरासर होवसी, ऐसो जोग बताय ॥

कुम्भ और मीन की संक्रान्तियों के मध्य नवमी तिथि के दिन रोहिणी नक्षत्र आजाय तो इसके फलस्वरूप उस वर्ष सामान्य वर्षा होगी।

(१७)

कुम्भ मीन सिंकरात विच आठम रोयण होय।
इण जोगां रे कारणे, थोड़ो बरसे तोय ॥

कुम्भ और मीन की संक्रान्ति के मध्य अष्टमी के दिन रोहिणी नक्षत्र का आ जाना स्वल्प वर्षा होने की अग्रिमी सूचना देता है।

(१८)

कुम्भ मीन सिकरांत विच, दसमी रोयण आवै।
विरखा होसी सांचरी, ऐसो जोग बणावै ॥

कुम्भ और मीन की संक्रान्ति के मध्य अष्टमी तिथि को यदि रोहिणी नक्षत्र आ जाता है तो इस योग से उस वर्ष अच्छी वर्षा होने की यह शुभ सूचना है, ऐसा समझें।

प्रकृति से वर्षा ज्ञान

स्तम्भ विचार

(१)

च्यार दहाड़ा थम्म रा, बरस मांयने आवै ।
दिनां रिछां परभाव सूं, विरखा जोग बतावै ।।

वर्ष में चार दिन ऐसे आते हैं जिन्हें, वर्ष के चार स्तम्भ कहते हैं। उन दिनों के नक्षत्रों के प्रभाव से वर्ष भर के शुभाशुभ (वर्षा) के योग का निश्चय होता है।

(२)

चैत थकी असाड तक, पड़वा ऊजल देख ।
रेवत भरणी मिरगली, पुनरवसु ले पेख ।।
ए दिन बाजे थम्भरा, जोतस रे आधार ।
विरखा कैसी होवसी इण सूं कर निरधार ।।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा, वैशाख शुक्ला प्रतिपदा, ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा और आषाढ़ शुक्ला प्रतिपदा के दिन क्रमशः रेवती, भरणी, मृगशिरा, एवं पुनर्वसु नक्षत्र होने पर वर्ष भर में वर्षा कैसी होगी—वर्ष कैसा व्यतीत होगा—इसका ज्योतिष के आधार पर निर्णय कर ले।

(३)

चैत सुदी पड़वा दिनां, रिछ रेवती होय ।
प्रभु कृपा है जांणजो, विरखा आछी होय ।।

यदि चैत्र शुक्ला प्रतिपदा के दिन रेवती नक्षत्र हो तो ईश्वर कृपा से इस वर्ष अच्छी वर्षा होने की सूचना है।

(४)

वैसाख सुदी पड़वा दिनां, भरणी रिछ जे होय ।
सरासरी व्है तावड़ो, तो घास घणेरो जोय ।।

यदि बैसाख शुक्ला प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र हो और इस दिन, गरमी-धूप-साधारण हो तो यह समझ लें, इस वर्ष घास अधिक होगा ।

(५)

जेठ सुदी पड़वा दिनां, हिरणी जे आवै ।
वाजै ढब रो वायरो, तो चिन्ता नहि करावे ।।

यदि ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र हो और इस दिन अनुकूल वायु बहे तो इस वर्ष, भविष्य के लिये चिन्ता करने की आवश्यकता नही रहेगी अर्थात् वर्ष, वर्षा हो जाने के कारण अच्छा रहेगा ।

(६)

सुदी असांडाँ पड़वा दिनां, पुनरवसु जो आय ।
अन्न घणेरो नीपजै, लोग सुखी हो जाय ।।

आषाढ शुक्ला प्रतिपदा को यदि पुनर्वसु नक्षत्र हो तो इसके प्रभाव से इस वर्ष अन्न का उत्पादन बहुत होगा जिसके कारण प्रजा सुखी रहेगी ।

च्यारूं ही थम्भा वरस में तो बरसत चउमास ।
जे थम्भा होवे नही, तो नहि बरसत तिण मास ।।

उपरोक्त चार स्तम्भ वर्ष के माने गये है। यदि इन चारों प्रतिपदाओं के दिन उपरोक्त चारों नक्षत्र क्रमश: हों तो उस वर्ष, वर्षा काल (चातुर्मास) में वर्षा होगी अन्यथा, वर्षा नही होगी ।

स्तम्भ-विचार

(६)

चार थंभ है बरस रा, जांणै जांणणहार ।
ए च्यारू ही होजाय तो, होवे जयजयकार ।।

वर्ष के चार स्तम्भ माने गये हैं। यदि किसी वर्ष में ये चारों ही आ जाय तो उस वर्ष प्रजा हर्षोन्मत्त हो जाती है ।

(८)

चारू थंभा ह्व जुदा, अलग-अलग संकेत ।
जीं थंभा को जोर व्है, फल बीसोही करदेत ।।

ये चारों स्तम्भ अपने अपने समय पर पृथक-पृथक ही वर्ष में आते हैं इनमें जो जैसा होता है, वैसा ही फल करता है ।

(६)

सुद पड़वा चैत की, रिच्छ रेवती होय ।
जल को थंभों मानजो, घणो बरसेलो तोय ।।

चैत शुक्ला प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का होना, जल का स्तम्भ कहा जाता है । इसलिये यदि ऐसा योग आया होगा तो उस वर्ष, वर्षा अधिक होगी ।

(१०)

सुद पड़वा बैसाख की, भरणी रिछ जे आय ।
तो घास घणोरे होवसी, तृण थंभ देव बताय ।।

बैशाख शुक्ला प्रतिपदा को यदि भरणी नक्षत्र आ जाय तो यह तृणा-स्तम्भ कहा जाता है । इसके फलस्वरूप उस वर्ष घास अधिक होगी ।

(११)

जेठ सुदी पड़वा दिनाँ, हिरणी जे आ जाय ।
वाय थंभ इणने कह्यो, जोरां चालै वाय ।।

ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र हो तो यह, वायु का स्तम्भ कहा जाता है। अतः इसके प्रभाव से उस वर्ष वायु अधिक चलेगी।

(१२)

असाड़ सुदी पड़वा दिनां, रिच्छ बक्ख जे होय।
थंभो अन रो है सिरै, धान घणेरो होय ॥

आषाढ़ शुक्ला प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का होना अन्न का स्तम्भ माना जाता है। जिस वर्ष ऐसा योग आता है उस वर्ष, अन्न प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होता है।

(१३)

थंभा च्यारूं व्है नहिं तो दुःख पावै नर नार ॥

जिस वर्ष ये चारों स्तम्भ में से एक भी नही होता है। उस वर्ष प्रजा को अत्यन्त कष्टों का सामना करना पड जाता है।

ग्रह एवं नक्षत्रों के सम्मिलन से वर्षा ज्ञान

(१)

गुरु रवि मंगल पुरुष पिछाँण। राहू ससि भृगु बनिता जांण ।।
सनि बुध केतु नपुसंक बाजै । आप आपकी ठौड़ां छाजै ।।

गुरु, रवि, मंगल ये तीन ग्रह पुरुष संज्ञक है। राहू, चन्द्र, शुक्र ये तीन स्त्री संज्ञक हैं। शनि, और बुध तथा केतू ये तीन नपुंसक माने गये है। ये ग्रह अपने-अपने स्थान पर ही शोभा देते हैं।

(२)

दोन्यूं षाठा भादरा, धन श्रवण ने मूल ।
सतमिल रेवत अस्वनी, भरणी ने मत भूल ।।
किरतका रोयण मिरगली, सारां ने गिण लेव ।
रिछ चवदह ऐ सहु, नर संज्ञा कर देव ।।

पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, धनिष्ठा, श्रवण, मूल, शतभिषा, रेवती, अश्विनी, भरणी कृतिका, रोहिणी और मृगशिरा ये चौदह नक्षत्र नर-संज्ञा के हैं।

(३)

* गिणले आदरा पुनरवसु, पुख असलेखा जांण ।
बऊ फाल्गणी ने साथ ले, दे मघा ने मांन ।।
स्वात चितरा हस्त रिख, ए दस तिरिया जांण ।
राधा विसाखा ज्येसठा, ए तीन नपुसंक मान ।।

---

* द्वीशात्रिभंनपुंसाख्यं मूलात्पुसश्तुर्दश ।
आर्द्रादिदशऋक्षाणिदेवियोषित्प्रकीर्तिताः ।।
पुसोयोषिम्महावृष्टिःषढेयोषा भवेत्क्वचित् ।
द्वंद्वे स्त्रीशीतलंज्ञे यमुभयोःपुरुषेण चः ।।

"मेघमाला" नारायणप्रसाद मिश्र द्वारा
अनुवादित जलयोगान्तर्गत श्लोक २८७,८८

आर्द्रा पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, पूर्वा फाल्गुणी, उत्तरा फाल्गुणी, मघा, हस्त, चित्रा, और स्वाति ये नक्षत्र स्त्री संज्ञक हैं।

अनुराधा, विशाखा और ज्येष्ठा ये तीन नक्षत्र नपुंसक माने गये हैं।

(४)

नर तिरिया मेला हुयां, होय घणेरो मेह।
नर-नरां सूं तप नहीं, तिय तिय सूं नहिं मेह ।।
मिलै नपुंसक पुरुष सूं, बरस करवरो जांण।
इण जोगां बिरखा नहीं, कथ्यो सास्तर परमांण ॥

पुरुष ग्रह और स्त्री नक्षत्र, अथवा पुरुष नक्षत्र और स्त्री संज्ञक ग्रह परस्पर मिल जाय तो इस योग के कारण वर्षा बहुत होगी। पुरुष नक्षत्र से पुरुष ग्रह का परस्पर मिलना,ऊष्मा की कमी को सूचित करता है। स्त्री ग्रह से स्त्री नक्षत्र का मिलना वर्षा की कमी को सूचित करता है। किन्तु नपुंसक ग्रह और पुरुष नक्षत्र या नपुसक नक्षत्र और पुरुष ग्रह का सम्मिलन तो वर्षा की अत्यन्त कमी अर्थात् सर्वथा अभाव को सूचित करता है।

(५)

मघादि पांच रिच्छ में, जे शुक्र आथूणो होय।
तो यूं जांणो भड्डरी, पिरथी पांणी ना जोय ।।

स्त्री-ग्रह और स्त्री-नक्षत्र एक साथ आ जाय तो वर्षा नहीं होती है। इसके अनुसार शुक्र स्त्री ग्रह है और मघा, पूर्वाफाल्गुणी, उत्तरा-फाल्गुणी हस्त और चित्रा ये स्त्री नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों में शुक्र का पश्चिम में होना, वर्षा का अभाव सूचित करता है।

(६)

डेऊ फागण हस्त अर, सुलेखा चित्र मघाय।
शुक्र अत इण रिछ हुयां, बिरखा जाय विलाय ।।

बुध गुरु सुक्कर तीन थकि, बे रिछ जीं पर आवे।
बेऊ सम अंशां हुयां, अवसे मेह करावे ॥
भौम मघा भृगु चीतरा, शनि रोयण ने देख।
ईं जोगां रे कारणे, अन्ननाश ने पेख ॥
सुरगुरु अर भिरगु गिरै, व्है भरणी अर विसाख।
तो सस्ती घास बिकावसी, ऐसी आशा राख ॥
शनी राहु ग्रह वली, आदरा रिछ पर होय।
क्यूं उड़ीके बावला, मेह बून्द नहिं होय ॥
मघा धनिष्ठा ऊपरै, जे आवै सुरराय।
हिरणी पर राहू हुयां, सस्तो नाज बिकाय ॥
श्रवण धनिष्ठा ऊपरै गुरु सुक्कर आजाय।
अन्न निपजेला मोकलो, सस्ता गहूं कराय ॥

दोनों फाल्गुणी, हस्त, चित्रा, आश्लेषा और मघा इन छः नक्षत्रों में से किसी एक पर शुक्र अस्त हो तो अवश्य वर्षा होती है। बुध, गुरु और शुक्र इन तीन ग्रहों में से कोई से भी दो ग्रह एक ही नक्षत्र पर समान अंशों से परस्पर मिलजाय तो अथवा तीनों ही एकत्रित हो जाय तो इस योग के कारण अत्यन्त वर्षा होगी। मंगल का मघा नक्षत्र पर होना और शुक्र का चित्रा नक्षत्र पर होना तथा शनि का रोहिणी नक्षत्र पर होना इन योगों से सर्व प्रकार के अन्नों का नाश हो जाता है। गुरु और शुक्र ग्रहों का भरणी या विशाखा नक्षत्र पर होना चतुष्पद-प्राणियों के लिये घास को सस्ता करता है। वर्षा के अवरोध कारक ग्रह-योग, आर्द्रा पर शनि वा राहू का होना माना गया है। गुरु यदि मघा या धनिष्ठा नक्षत्र पर आ जाय तो, मृगशिरा नक्षत्र पर राहु हो तो इन योगों के कारण अन्न सस्ता होगा। यदि श्रवण धनिष्ठा नक्षत्रों पर गुरु या शुक्र आ जाय तो अन्न बहुत होगा और गेहूँ सस्ते बिकेंगे।

सूर्यादि ग्रह एवं नक्षत्रों के सम्बन्ध के आधार से वर्षा ज्ञान

(१)

१ अस्वनी गली भरणी गली, गलिया जेठा मूर ।
पूर्वाखाडा धडूकियां, निपजै सातूं तूर ॥

सूर्य का अश्विनी नक्षत्र पर, भरणी नक्षत्र पर, ज्येष्ठा नक्षत्र पर एवं मूल नक्षत्र पर आने के समय वर्षा हो जाना उत्तम नहीं माना गया है। किन्तु, सूर्य पूर्वाषाढा नक्षत्र पर हो तब यदि वर्षा हो जाय तो इसे उत्तम माना गया है। कहा जाता है कि इस अवसर पर हुई वर्षा से अनाज बहुत उत्पन्न होता है

(२)

अस्वनी ने भरणी वरे, भारी थाय दकार ।
वरसै करतीका मयै, निश्चै थाय हगार ॥

अश्विनी और भरणी की वर्षा घोर अकाल की सूचक है । कृतिका नक्षत्र मे हुई वर्षा, सुकाल को ले आती है ।

(३)

अस्वनी गलियां अन्न विनासै । गली रेवती जल ने नासे ॥
भरणी नासै तृणेस हूं तो । किरतका वरसै अन्न बहूतो ॥
बादल पर बादल धावै । केव्है भडुली जल आतुर आवै ॥

सूर्य के रेवती नक्षत्र पर आने के समय वर्षा हो जाय तो वर्षा काल मे वर्षा का अभाव रहेगा। अश्विनी नक्षत्र पर सूर्य हो और वर्षा हो जाय तो अन्न का नाश होगा। भरणी नक्षत्र पर सूर्य हो और वर्षा हो जाय तो वर्षा काल में वर्षा का अभाव होने से घास एवं अन्न दोनों

पाठान्तर:—

१ अस्वनी गल भरणी गली, गलया ज्येष्ठा मूल ।
पूर्वाषाढा धडूकियां, निपजे समी अतूल ॥

नहीं होंगे । किन्तु सूर्य के कृतिका नक्षत्र पर आने पर यदि वर्षा हो जाय तो उपरोक्त दोषों का अशुभ फल नष्ट हो जाता है । भड्डली कहते हैं कि, इसके प्रभाव से वर्षा काल में मेघ-घटाएं उमड़-उमड़ कर आवेगी और वर्षा बहुत होगी ।

(४)

बरसे भरणी तो छोड़े परणी ।।

जिस समय सूर्य भरणी नक्षत्र पर हो और उन दिनों में वर्षा हो जाय तो उस वर्ष ऐसा भयकर अकाल पड़ता है कि पुरुष अपनी पत्नी को छोड़ कर उदर-पोषणार्थ अन्यत्र चले जाने के लिये बाध्य हो जाता है ।

(५)

भोंडो भरणी नो वरयो, करे मनक नी हाण ।
वरसे करतिका मयँ, करे जगत कल्याण ।।

भरणी नक्षत्र पर हुई वर्षा के कारण जन-हानि होगी । किन्तु कृतिका नक्षत्र की वर्षा, संसार का कल्याण करने वाली होती है ।

(६)

भरणी मिरगा नखत पर, सूरज केतु रो जोग ।
खण्ड लवण अर सेंधवा, निस्चें मूंघा भोग ।।

भरणी किम्वा मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य एवं केतु हो तो इसके प्रभाव से बिड़नमक और सेंधा नमक अवश्य महगे हो जावेंगे ।

(७)

किरतका एक भबूकड़ो, ओगण सहु गलिया ।।

कृतिका नक्षत्र पर सूर्य हो और उन दिनों में बिजली की चमक एक बार भी हो जाय तो, इससे पूर्व के समस्त अपशकुन नष्ट हो जाते हैं ।

(८)

१ चन्दा बीस सहेलियां, मत्ता आगलिया।
जो न भिजोवैं कृतिका, सगली सांठ लियां॥

कृतिका नक्षत्र पर सूर्य के रहते हुए थोड़ी-सी बून्दें भी न बरसे तो वर्षा काल में वर्षा का अभाव ही रहेगा। इसलिये कृतिका में मेह बरस जाना ही उत्तम है।

(९)

कमी छांट हो कृत्तिका कल्यांण। निपजंत धरा यदि सप्त धान॥
कृत्तिका नक्षत्र बहु वरसि मेह। करवरौ सम्वत नहिं सन्देह॥

सूर्य के कृतिका नक्षत्र पर रहते जरा-सा भी मेह बरस जाय तो आगामी वर्षा काल में अच्छी वर्षा होगी। कदाचित, इन दिनों में अधिक वर्षा हो गई तो संवत् मध्यम होगा।

(१०)

करकृतिका कल्याण, बूठो घर विदु तणे।
रोयण दांती राण, मरजादे देव करण तणी॥

सूर्य के कृतिका नक्षत्र पर रहते समय कुछ वर्षा हो जाय तो रोहिणी पर सूर्य के जाने के बाद उन दिनों मे केवल बिजली ही चमकती रहे तो भी कोई भय नही। कृतिका के प्रभाव से वर्षा अच्छी होगी।

(११)

कृतिका तपै रोहणी गाजै। चोथो चरण मिरग नहीं बाजै।
आदरा वाय झकोले जोय। तो तृण काल् माघ कहुं तोय॥

सूर्य के कृतिका नक्षत्र पर होने के दिनों में अत्यन्त गर्मी पड़े, सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर होने के दिनों में बिजली चमके तथा मृगशिरा

---

१ चन्दा बीस सहेलियां, सत्ता आगलिया।
जे न भिजोवै कृत्तिका, सगला सा टलिया॥

नक्षत्र के चौथे चरण पर सूर्य के रहने पर वायु न बहे एवं सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र पर जाने पर जोर से वायु बहती रहे तो कवि माघ से कहता है कि, इस वर्ष तृण का अवश्य ही अकाल होगा अर्थात घास नहीं मिलेगा ।

(१२)

१ कृतिक तो कोरी गई, आदरा मेह न बून्द ।
तो यूं जाणो भड्डली, काल मचावै दूंद ।।

सूर्य के कृतिका एवं आर्द्रा नक्षत्र पर रहते लेश मात्र भी वर्षा न हो तो कवि, भड्डली से कहता है कि, इस वर्ष अकाल पड़ेगा ।

(१३)

रोयण तपै ने मिरगलो बाजै तो आदरा अरण चिन्तिया गाजै ।।

रोहिणी नक्षत्र पर सूर्य हो और इन दिनों में गर्मी अत्यन्त पड़े एवं मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य हो उस समय तेज वायु चले तो आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य के आने पर अचानक बादलों की गड़गड़ाहट सुनाई देने लग जावेगी ।

(१४)

रोहण वाजै ने मिरगलौ तपै तो राजा झूंझे ने परजा खपै ।।

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहने के दिनों में आन्धी चले और मृगशिरा नक्षत्र में सूर्य हो तब अत्यन्त गर्मी पड़े तो इस वर्ष राजाओं में (राष्ट्रों में) परस्पर युद्ध होगा एवं प्रजा का नाश होगा ।

(१५)

रोहण रेली तौ रुपिया री अधेली ।।

यदि सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते समय वर्षा हो जाय तो इस वर्ष कृषि की पैदावार रुपये में आठ आने—अर्थात् आधी—ही होगी । परिणामस्वरूप अन्न महंगा होगा ।

---

† कृतिका तो कोरी गई, आदरा मेड़ न बूंद ।
तो यूं जाणो चतर नर काल मचावे धुंध ।।

(१६)

रोहण बरसै मिरग तपै, कांईक आदरा जाय ।
केवे घाघ सुरग भड्डरी, स्वान भात नहिं खाय ।।

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर आने पर वर्षा हो, मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य हो तब बहुत गर्मी पड़े और आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य हो तब कुछ वर्षा हो जाय तो इन लक्षणों से इस वर्ष इतनी अच्छी फसल होगी कि भात जैसे उत्तम खाद्य-पदार्थ को कुत्ते भी नहीं खावेंगे ।

(१७)

रोहण चवै मिरग तपै, किरत्तका कोरी जाय ।
दुरभिक्ख निश्चै जांणजो, पड्यां आदरा वाय ।।

सूर्य के कृतिका नक्षत्र पर रहने के दिनों में जल की बून्द भी नही पड़े, रोहिणी पर सूर्य हो तब किंचित वर्षा हो, मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य हो तब गर्मी अधिक पड़े और आर्द्रा पर सूर्य हो तब वायु अधिक चले तो इन लक्षणो से इस वर्ष निश्चय ही दुर्भिक्ष होगा ।

(१८)

कई रोहणी विरखा करै, बचै जेठ नित मूर ।
एक बून्द किरतका पड़ियां नासै तीनूं तूर ।।

रोहिणी में वर्षा होना और जेठ में नही होना इससे कोई हानि लाभ नही । किन्तु कृतिका मे एक बून्द भी मेह बरस जाय, तो तीनो फसलें चौपट हो जावेगी ।

(१९)

रोहण दाजी ।।

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहने के समय में बिना वर्षा के बिजली चमकती हुई दिखाई दे तो यह भयंकर अकाल के लक्षण हैं ।

(२०)

रोहण कुण्डाली ॥

सूर्य के कृतिका नक्षत्र पर होने के समय वर्षा हो जाय, रोहिणी पर सूर्य आने पर केवल बून्दाबान्दी ही हो और बिजली चमके तो इन लक्षणों से इस वर्ष कहीं खेती होगी और कहीं नहीं होगी।

(२१)

जे रोहिणी बरसै नहीं, बरसे जेठा मूर।
एक बून्द स्वाति पड़यां, निपजै तीनूं तूर ॥

यदि रोहिणी में वर्षा न हो, ज्येष्ठा और मूल में वर्षा हो जाय साथ ही स्वाति में एक बूंद ही पड़ जाय तो इस बर्ष, तीनों फसलें उत्पन्न होगी।

नोट:—यहाँ तीनों फसलों से अभिप्राय जौ, गेहूँ और चने से है। प्राय: राजस्थान में दो ही फसलें (खरीफ और रबी) ही होती हैं।

(२२)

रोहण वरस मिरग नहिं बाजै,
तो बीज न चमके अर इन्दर नहिं गाजै।

रोहिणी नक्षत्र में वर्षा हो, मृगशिरा में वायु न चले तो इस लक्षण से यही प्रतीत होता है कि इस वर्ष, वर्षा काल में न तो बिजली ही चमकेगी और न वर्षा ही होगी।

(२३)

रोहण सुंवाडी ॥

सूर्य कृतिका एवं रोहिणी नक्षत्रों पर रहे इन दिनों में वर्षा हो जाय, साथ ही बिजली भी चमके तो इन लक्षणों से देश की समृद्धि बढ़ेगी।

(२४)

* पेली रोहण जल हरै, बीजी बहोत्तर खाय ।
तीजी रोहण तिण हरे, चोथी समंदर जाय ॥

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर आने से इसके प्रथम चतुर्थांश काल में यदि वर्षा हो तो अकाल पड़ेगा। द्वितीय चतुर्थांश-काल में हो तो बाद में बहत्तर दिन तक वर्षा न होगी। तृतीय चतुर्थांश-काल में वर्षा हो तो इस वर्ष घास की कमी रहेगी। सद्भाग्य से इसके चौथे चतुर्थांश-काल मे वर्षा हो जाय तो इसके प्रभाव से वर्षा काल (चातुर्मास) में अत्यन्त वर्षा होगी।

(२५)

रोहिण गाजे किरती न बरसे (तो) टुक टुकड़ां ने दुनिया तरसे ॥

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर आने के दिनों में आकाश में गर्जना हो और कृतिका में जब सूर्य था तब वर्षा न हुई तो इन लक्षणों से इस वर्ष ऐसा भयंकर अकाल आवेगा कि मनुष्य रोटी के एक-एक टुकड़े के लिये तरसता फिरेगा।

---

* पहली रोहण गले तो दिन बहोत्तर खाय ।
दूजी रोहण गले तो, बाछड़ो न गाय ॥
तीजी रोहण गले तो, जड़ा मूल सूं जाय ।
चौथी रोहण गले तो, मेह मोकलो थाय ॥

सूर्य के रोहणी नक्षत्र पर आने से प्रथम चरण (चतुर्थांश-काल) मे वर्षा हो जाय तो बहत्तर दिन तक वर्षा नही होगी। दूसरे चरण में वर्षा हो तो गौ आदि पशुओं की हानि होगी। तीसरे चरण मे वर्षा होना भयकर क्षतिदायक और चौथे चरण की वर्षा, वर्षा काल में अच्छी वर्षा होने की सूचना है।

(२६)

रोहिण तपे अरकिरतका बरसे (तो) धू धू कार जमानो दरसे ॥

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर आने के दिनों में गर्मी अधिक हो और कृतिका पर सूर्य था तब किंचित वर्षा हो गई हो तो इस वर्ष अत्यन्त सुभिक्ष होगा।

(२७)

सारी तपे जे रोहिणी, सारो तपे जो मूर।
पड़वा तपे जे जेठ की, तो निपजै सातूं तूर ॥

रोहिणी और मूल नक्षत्रों पर सूर्य हो तो उन दिनों में पूर्ण गर्मी रहे साथ ही ज्येष्ठ मास की प्रतिपदा के दिन भी बहुत गर्मी हो तो इस वर्ष सातों प्रकार के अन्न उत्पन्न हो जावेंगे।

(२८)

रोहिणी के दिन रोहिणी घड़ी एक जो होय।
काल पड़त अति आकरो, बिरलो जीवे कोय ॥

जिस दिन रोहिणी नक्षत्र हो उसी दिन लग्न में सूर्य रोहिणी के बीच एक घड़ी के लिये आ जाय तो इस लक्षण से भयंकर अकाल होगा।

(२९)

‡ रोहणी मांहे रोहिणी घड़ी एक जो दीख।
हाथां खप्पर मेदनी, घर घर मांगे भीख ॥

सूर्य रोहिणी नक्षत्र पर आ जाय और एक घड़ी भर भी यदि आकाश मे बिजली दिखाई दे दे तो यह भयंकर अकाल की सूचना है।

---

‡ रोहिणी मांहे रोहणी घड़ी एक जो दीख।
हाथ ठीकरा लोग के, घर घर मांगे भीख ॥

(३०)

वरे नखेतर रोयणी, रेले खांखर पान ।
तो पाके होवन हरा, धरती ऊपर धान ।।

केवल पलाश के पत्ते पर से पानी बह निकले इतनी स्वल्प वर्षा भी यदि रोहिणी नक्षत्र में हो जाय तो पृथ्वी पर विविध प्रकार के अन्न उत्पन्न हो जाते हैं।

(३१)

गले रोहिणी मिरग तपे, आदरा वाजे वाय ।
डंक कहै हे भड्डुली, दुरभिक्ख होण उपाय ।।

सूर्य जब रोहिणी नक्षत्र पर हो उस समय किञ्चित जल बरसे, मृगशिरा पर सूर्य हो तब गर्मी पडे और आर्द्रा पर सूर्य हो तब वेग सहित वायु चले तो इन लक्षणों को देखकर कवि भड्डुली से कहता है, इस वर्ष दुर्भिक्ष होने के ये लक्षण है।

(३२)

* मिरगा वाय न वाजियो, रोहण तपी न जेठ ।
कै ने बान्धौ झूंपड़ो, बैठो वड़ले हेठ ।।

सूर्य मृगशिरा नक्षत्र पर हो उन दिनों में वायु न चले, सूर्य जब रोहिणी नक्षत्र पर (ज्येष्ठ मास मे) था तब अत्यन्त गर्मी नही पडी हो, तो कवि कृषक से कहता है कि, झोंपडी बनाने का श्रम क्यों करते हो, बरगद के पेड़ के नीचे ही रह जाओ। क्योकि, ये लक्षण अकाल पड़ने के हैं।

---

* मगसर वाय न वज्जिया, रौहण तपै न जेठ ।
गोरी चुगसी कांकरा, खड़ी खेजड़ा हेठ ।।

(३३)

२ मिरगां वाय न बादला, रोहण तपी न जेठ ।
आदरा जै बरसै नहीं, कुण सेव्है अलसेठ ॥

सूर्य मृगशिरा नक्षत्र पर हो तब वायु न चले और न बादल ही हो। ज्येष्ठ मास में पूरी गरमी भी न पड़े और आर्द्रा नक्षत्र बिना बरसे ही चला जाय, तो इन लक्षणों से इस वर्ष, वर्षा होना मुश्किल है। इसलिये कृषि की झंझट कोई क्यों ले।

(३४)

मिगसर वाय न बादलां, आदरा न वूठां मेह ।
भर जोबन में बेटो नहीं, तीनूं हार्या एह ॥

सूर्य मृगशिरा नक्षत्र पर हो तब वायु नहीं चले, आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य हो तब मेह नहीं हो और पूर्ण युवावस्था वाले माता-पिता के सन्तान नहीं हो तो ये तीनों व्यर्थ हैं।

(३५)

चार बिलखसी हिरणी तपियां ।
विण सांठो ने भैंस टाबरिया ॥

मृगशिरा नक्षत्र के तपने से ये चार दुःख पाते हैं। कपास, गन्ना, बालक और भैंस। बालक तो माता-गाय या भैंस के दूध कम होने से दुःख पाते हैं।

(३६)

तपै मिरगलो जोर सूं (तो) मेह घणेरो होय ॥

यदि मृगशिरा नक्षत्र में जब सूर्य हो तब गर्मी अत्यन्त तेज हो तो इस लक्षण को अच्छी वर्षा होने की सूचना समझें।

पाठान्तरः—

२ गोरी बीणै कांकरा, ऊभी खेजड़ी हेठ ॥

(३७)

पैले चरण मिरगलो नहिं बाजै। तो सावण रा दस दिन गाजै॥
[1]पछलो चरण अमूझ्यां जाय। तो सोले दिन सावण रा खाय॥

सूर्य के मृगशिरा नक्षत्र पर आने के पहले चरण में वायु नहीं चले तो श्रावण मास के दस दिनों तक बादलो की गर्जना ही होगी। इसके पिछले चरण में वायु नही चले तो श्रावण मास के सोलह दिनों तक वर्षा का अभाव रहेगा।

(३८)

घणो मेह दोय दिनां, दूजै दो दिन नांय।
तीजै दोयां मूसका, चौथे टीडी आय॥
तोता होवै पाँचवें, छट्ठे विगरे घर लाय।
व्है सातमे दो दिनां, तो विगरे पर घर जाय॥

सूर्य के मृगशिरा नक्षत्र पर आने के प्रथम दो दिनों में वर्षा हो तो वर्षा काल में अति-वृष्टि होगी। दूसरे दो दिनों मे वर्षा हो तो वर्षा-काल मे वर्षा का अभाव रहेगा। तीसरे दो दिनो में हो तो उस वर्ष चूहे अधिक होंगे। चौथे दो दिनो मे वर्षा हो तो टिड्डियों का जोर रहेगा। पांचवें दो दिनों में हो तो तोते अधिक होंगे। छठे दो दिनो मे हो तो अपने राज्य मे और सातवें दो दिनो मे हो तो पर (पड़ोसी) राज्य मे विग्रह होगा।

(३९)

[2] दोय मूसा दोय कातरा, दोय टीडी दोय ताव।
दोयां री बादी जल हरै, दोय विस अर दोय वाव॥

मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य हो तो इसके प्रथम दो दिनों में वायु न चले तो इस वर्ष चूहे अधिक होंगे। तीसरे-चौथे दिन वायु न चले तो

---

१ पिछलो चरण मृग नहिं बाजै, तो सावन मास मेह नहीं गाजै।
२ राजस्थानी कृषि कहावतें मे ये लक्षण मघा नक्षत्र के बताये गये हैं।

इस वर्ष गबरीले कीड़े अधिक हों। पाँचवें-छठे दिन वायु न चले तो टिड्डी-दल, सातवें-आठवें दिन वायु न चले तो ज्वर की व्याधि बढे। नौवें-दसवें दिन वायु न चले तो वर्षा का अभाव रहे। ग्यारहवें-बारहवें दिन वायु न चले तो विषैले कीड़े एवं जन्तु उत्पन्न होंगे और तेरहवें चौदहवें दिन वायु न चले तो प्रचण्ड आंधी आवेगी।

(४०)

वरसै आदरा, तो बारे पादरा ॥

आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य आने पर वर्षा हो जाय तो वर्ष भर(बारहों महीने) अच्छी तरह से व्यतीत होंगे।

(४१)

पेली आद टपूकड़े, मासां पक्खां मेह ॥

सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र पर आते ही बून्दाबान्दी हो जाय तो यह समझें कि महीने पन्द्रह दिनों में ही वर्षा आ जावेगी।

(४२)

आदरा बरसै च्यार सूं, अर मघा बरसै पाँच सूं ॥

आर्द्रा नक्षत्र बरसता है तब आर्द्रा सहित आश्लेषा पर्यंत के चार नक्षत्रों में भी वर्षा होती है और मघा बरसता है तब मघा सहित पाँच नक्षत्र (चित्रा तक) में भी बर्षा होती है।

(४३)

आदरा बाजै वाय, (तो) झूंपड़ी झोला खाय ॥

आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य के आने पर वायु चलने लग जाय तो यह लक्षण अकाल को सूचित करता है। इस वर्ष किसानों के झोंपड़े स्थिर न रह सकेंगे। क्योंकि उदर निर्वाहार्थ इन्हें अन्यत्र जाना होगा।

(४४)

आदरा सूरज आवियां, अगस्त जोग लो जोय ।
रात लग्यां सुभिक्ष व्है, दिन में दुरभिक्ख होय ॥

सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र पर आ जाने पर अगस्त-योग को देखें। यदि वह रात्रि में लगता है तब तो इस वर्ष सुभिक्ष होगा और कदाचित इसके विपरीत, दिन में लगता है तो यह दुर्भिक्ष-कारक योग है ।

(४५)

* आदरा तो वरसी नहीं, मिगसर पौन न जोय ।
भद्रबाहु गुरु यूं कहै, बिरखा बून्द न होय ॥

आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य हो तब वर्षा का न होना और मृगशिरा नक्षत्र पर सर्य हो तब पवन का न चलना ये ऐसे लक्षण हैं कि इनके प्रभाव से इस वर्ष, वर्षा की एक बून्द भी नहीं बरसेगी ।

(४६)

आरम्भ विरखा काल् रो, सूरज आदरा जोय ।
गाज बीज बिरखा हुयां, आछी विरखा होय ॥
वायु चाले जोर की, घूप उनाली होय ।
तो चौमासा मांयने, ऊष्ण-काल् लो जोय ॥

सूर्य आर्द्रा पर आने पर आकाश में गर्जना बिजली चमकना एवं वर्षा का होना, ये लक्षण वर्षा-काल मे अच्छी वर्षा होने के सूचक हैं । यदि इन दिनों में जोर की वायु ही चले तो यह समझलें, वर्षा-काल भी ग्रीष्म-ऋतु-सा ही व्यतीत होगा ।

(४७)

सूरज ऊगरा की बखत, आदरा लागै आय ।
तो निस्चै कर जारा जो, रोग भय कर जाय ॥

---

* आदरा तो वरसी नही मृगसिर पवन न जोय ।
तो जाणीज भड्डली, बिरखा बून्द न होय ॥

दो घडो दिन चढ्यां, तो जुद्ध विगरे के रोग ।
दोफरां लग जाय तो, घास खेती रो भोग ।।
सिझ्यां लाग्यां सुभिक्ख व्है, रात लग्यां सुख जोग।
मंझ रात में जे लगै, तो मिल् घणेरा भोग ।।
रात पाछली सुख ऊपजै, ऐसो जोग कराय ।
भाग फाटती बखत लग्यां, लोग दुखी हो जाय ।।

आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य, सूर्योदय के समय आता है तो इसके प्रभाव से प्रजा में रोग का भय होगा। दो घड़ी दिन चढ़े यदि आता है तो युद्ध-विग्रह एवं रोग का भय होगा। यदि मध्यान्ह में आता है तो कृषि एवं घास की क्षति होगी। रात्रि में आने पर सुख एवं सायंकाल में आने पर सुभिक्ष होगा। यदि अर्द्ध-रात्रि में सूर्य आता है तो भिन्न भिन्न प्रकार के भोग प्राप्त होंगे। रात्रि के पिछले प्रहर में आने पर सुख और उषा: काल में आने पर प्रजा को दुःख होगा।

(४८)

*आदरा भरणी रोयणी, मघा उत्तरा तीन ।
जे मंगल् व्है आंधी चलै, तो विरखा होसी छीण ।।

मंगलवार के दिन आर्द्रा, भरणी, रोहिणी, मघा और तीनों उत्तरा, इनमें से कोई भी नक्षत्र हो और उस दिन आन्धी चले तो वर्षा-काल में वर्षा कम होगी।

(४६)

एक आदरियो हाथ लाग जाय पछै तो करसो राजी ।।

आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य हो और एक भी वर्षा हो जाय तो कृषक प्रसन्न हो जाता है।

---

*आर्द्रा भरणी रोहणी, मघा उत्तरा तीन ।
इन मंगल् आंधी चले, तब लौं बिरखा छीन ।।

(५०)

आद न बरसै आदरा, हस्त देय दे छेह ।
घाघ कैव्है सुण भड्डरी, क्यूं आवेलो मेह ॥

आर्द्रा नक्षत्र की आदि में वर्षा न होना, हस्त के अन्त में वर्षा न होना, इन लक्षणों से यह निश्चित है कि इस वर्ष, वर्षा का अभाव ही रहेगा ।

(५१)

*चढ़ती अरसै आदरा, उतरतो बरसै हस्त ।
बीघोड़ी व्है आकरी, तो भी सुखी गृहस्त ॥

सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र पर आने के प्रारम्भ काल में और हस्त नक्षत्र पर सूर्य के जाने के अन्तिम काल मे वर्षा हो जाय तो राज्य लगान चाहे जितना अधिक लगादे अन्न तो बहुत ही होगा । अतः कृषक खुशी से वह लगान अदा कर देगा ।

(५२)

आदरा गयां तो तीन ज जावै, सिण साटी अर कपास ।
जै हस्तीड़ो कोरो जावै, तो मत कर विरखा की आस ॥

सूर्य आर्द्रा पर हो उन दिनों मे वर्षा न हो तो सन, साठी चावल और कपास नहीं होगे । किन्तु हस्त नक्षत्र में वर्षा नहीं हुई तो रबी और खरीफ़ दोनों की सम्भावना नहीं है ।

(५३)

नखत आदरा ऊपरै, सरज मंगल होय ।
नाज मूंघो एक मास, रह कर सूंघो होय ॥

---

*एक स्थान पर इस प्रकार से मिला है:—
चढती बरसै चीतरा, उतरतो बरसै हस्त ।
करड़ो हासल राज रो, तो भी सुखी गृहस्त ॥

सूर्य और मंगल दोनों आर्द्रा नक्षत्र पर साथ-साथ आ जाय तो इसके फल स्वरूप अन्न एक मास तक महंगा रह कर बाद में सस्ता होगा।

(५४)

आडे आवे आदरा, घणे वे नें मेंय।
खाड खबूसा ई भरे, सरवरिया तो नेंय॥

आर्द्रा नक्षत्र जो प्राय: आषाढ में आता है, इसमें साधारणतया अधिक मेह नहीं बरसे तो चातुर्मास में भी वर्षा उतनी ही होगी कि जिससे छोटे-छोटे खड्डे ही भरेंगे, सरोवरादि नहीं भरेंगे।

(५५)

आदरा भरै खाबड़ा, पुनरवसु भरै तलाव॥

सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर आने पर वर्षा हो तो वर्षा काल में केवल इतनी ही वर्षा होगी जिससे छोटे-छोटे खड्डे ही भरेंगे और यही वर्षा सूर्य के पुनर्वसु नक्षत्र पर जाने पर बरसेगी तो, वर्षा काल में इतनी वर्षा होगी कि सारे तालाब जल से भर जावेंगे।

(५६)

वख पख दोनूं वादीला। वरसै तो बरसै अर ठाला तो ठाला।

सूर्य, पुनर्वसु पर हो या पुष्य पर, इन दोनों में वर्षा हो जाय तब तो समय पर वर्षा होगी और इन में वर्षा नही हुई तो ये खाली ही चले जावेंगे।

(५७)

वख पख बे भायेला। वर्ष्या तो विरखा ने वायला तो वाये ला।

पुनर्वसु और पुष्य दोनों मित्र हैं इन पर सूर्य आ जाय और वर्षा हो जाय तब तो समय पर वर्षा हो जावेगी। कदाचित इन दिनों में वायु चलने लग गया तो वर्षा के दिनों में वायु ही चलेगी।

(५८)

वख पख जे भरै न ताल। तो भरसी ए अगली साल॥

पुनर्वसु और पुष्य नक्षत्र में यदि तालाब नहीं भरे तो इस वर्ष, वर्षा की आशा ही छोड़ दो। अब तो अगले वर्ष ही ये (ताल-तलैयाएं) भरेंगे।

(५९)

पुनर्वसु में जे बाजै वाय। तो कन्थ छोड़ कामणी जाय॥

सूर्य, पुनर्वसु नक्षत्र पर आने पर वायु चलने लग जाय तो यह समझले कि इस वर्ष ऐसा दुर्भिक्ष होगा कि पत्नियां अपने पतियों को छोड़ कर उदर-निर्वाहार्थ अन्यत्र चली जाने को बाध्य हो जावेंगी।

(६०)

जे बरसै पुनर्वसु अर स्वात।
तो ना चाले चरखो अर ना चाले तांत॥

पुनर्वसु और स्वांति नक्षत्र में से किसी पर भी सूर्य हो और वर्षा हो जाय तो उस वर्ष, कपास नहीं होगा। जिसके परिणामस्वरूप कातने के लिए चरखा नहीं चलेगा और रुई धुनने हेतु न तांत ही बजेगी।

(६१)

न वरस्यौ पुखै तो वरसै घणा दुःखे॥

सूर्य के पुष्य नक्षत्र पर आने पर यदि वर्षा न हो तो आगे वर्षा की आशा करना ही व्यर्थ है। क्योंकि, इस लक्षण से वर्षा कठिनाई से ही होगी।

(६२)

पुख रौ पांणी, जाणे इमरत वांणी॥

सूर्य के पुष्य नक्षत्र पर आने पर वर्षा हो तो यह जल कृषि-कार्य के लिये अमृत-सिंचन का कार्य करता है।

(६३)

पुख वरस तो मोती निपजावै ।।

सूर्य के पुष्य नक्षत्र पर आने पर वर्षा का होना इतना उपयोगी माना गया है कि कवि कहता है कि ये उत्पन्न होने वाले दाने अन्न नहीं अपितु मोती के सदृश हैं ।

(६४)

असलेखा बूठां, वैदां घरै वधामणा ।।

आश्लेषा नक्षत्र पर सूर्य के आ जाने पर वर्षा का होना भविष्य में रोगोत्पत्ति को सूचित करता है । यह लक्षण तो चिकित्सक वर्ग (वैद्यों एवं डाक्टरों) के घरों में खुशियां मनाने के योग्य हो जाता है ।

(६५)

असलेखा चंगी तौ चंगी अर फंगी तो फंगी ।।

सूर्य के आश्लेषा नक्षत्र पर आ जाने पर वर्षा अच्छी हो तब तो सारा वर्ष अच्छा । फसल अच्छी होगी अन्यथा अकाल ही होगा ।

(६६)

मघा मचान्त मेहा, नहीं तौ उड़ंत खेहा ।।

सूर्य के मघा नक्षत्र पर आने पर वर्षा हो गई तब तो ठीक है और कदाचित इन दिनों में वायु चलने लग गई तो केवल मिट्टी ही उड़ेगी ।

(६७)

मघा रौ बरसणो अर मां रौ पुरसणौ बराबर है ।।

मघा नक्षत्र के बरसने की तुलना माता द्वारा पुत्र के लिये भोजन परोसने से, कवि ने की है । अर्थात् माता के परोसे भोजन से

पुत्र भूखा नही उठता है उसी प्रकार से मघा की वर्षा से कृषक पूर्ण रूप से संतुष्ट हो जाता है।

(६८)

बरसै मघा तौ खड़ ना ओघा ॥

सूर्य के मघा नक्षत्र पर आ जाने पर वर्षा हो जाय तो घास-अन्न बहुत होगा।

(६९)

मघा मेह बरसावियां, धान घणेरौ होय ॥

सूर्य के मघा नक्षत्र पर आजाने से उस समय वर्षा हो जाय तो इस वर्ष अन्न बहुत होगा।

(७०)

मघा चूकियां पड़सी काल ॥

सूर्य के मघा नक्षत्र पर आ जाने पर वर्षा नहीं हुई तो इस लक्षण से इस वर्ष अन्न एवं तृण दोनों की कमी हो जाने के कारण अकाल पड़ेगा।

(७१)

मघा मेह माचन्त, के गच्छन्त ॥

सूर्य के मघा नक्षत्र पर आ जाने पर या तो वर्षा हो जाती है या यह अदृश्य हो जाती है।

(७२)

मघा रौ मीठौ पाणी ॥

मघा नक्षत्र पर सूर्य हो उस समय वर्षा हो जाय तो इस जल की कवि मीठे जल से तुलना कर इसकी उपयोगिता को सिद्ध करता है।

(७३)

जे वरसै मघा तो करे धान रा ढगा ।।

मघा नक्षत्र पर सूर्य हो तब वर्षा हो जाय तो इसके प्रभाव से कृषि इतनी होगी कि अन्न का ढेर लग जावेगा।

(७४)

आगे मग्घ पाछै भांन । तौ बिरखा होसी ओस समान ।।

मघा नक्षत्र पहले आ जाय और पश्चात् सूर्य उदय हो तो इसका यह प्रभाव होगा कि वर्षा, ओस के समान ही होगी।

(७५)

मघा में बावै भल, ने पूर्वा में वावै तल ।।

मघा नक्षत्र पर सूर्य आया देख कर ज्योतिषी कृषक को कहता है कि इन दिनों की वर्षा में जो भी बो दो, वह उग आवेगा। यदि तिल ही बोना हो तब तो जब सूर्य पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र पर आवे तब ही बोना लाभदायक होता है।

(७६)

मघादि पांच रिच्छ मां, भृगु पच्छम जै होय ।
तो यूं केव्है भड्डली, पुहंमी नीर न जोय ।।

मघा से प्रारम्भ होकर पांच नक्षत्रों पर में से किसी पर भी शुक्र पश्चिम में यदि उदय हो जाय तो लक्षण इस के प्रभाव से वर्षा का अभाव ही रहेगा।

(७७)

गयो वरस पूर्वा वाल्‍ै ।।

सूर्य, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र पर हो और इन दिनों में वर्षा हो जाय तो यह लक्षण सारे वर्ष भर के अकाल को सुधार देने में समर्थ है।

(७८)

जे पूरवा लावै पुरवाई, तो सूखी नदियां में नाव चलाई ।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र पर सूर्य हो और इन दिनों में पूर्व दिशा का वायु चले तो इसके परिणामस्वरूप इतनी अधिक वर्षा होगी कि सूखी रहने वाली नदियों में इतना जल आ जावेगा कि उसमें नाव चलने लग जावेगी ।

(७९)

* जे वरसै उतरा (तो) धान न खाय कुतरा ।।

सूर्य के उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में आ जाने पर वर्षा हो जाय तो इसके परिणामस्वरूप इतना अन्न उत्पन्न होगा कि, भोजन के लिये परस्पर लड़ने वाले कुत्ते तक इसे नहीं सूंघेंगे ।

(८०)

उत्तरा उत्तर दे यह, हस्त गयो मुख मोड़ ।
परजा गई थी मालवे बीने चित्रा लाई मोड़ ।।

सूर्य, उत्तरा फाल्गुनी और हस्त इन दोनों नक्षत्रों पर रहे उस समय वर्षा न होने के कारण अकाल पड़ जाता है । किन्तु सूर्य चित्रा नक्षत्र पर आने पर वर्षा हो जाय तो अन्न इतना उत्पन्न होगा कि, प्रजा अपना भरण-पोषण आनन्द पूर्वक कर सकेगी ।

(८१)

हस्त बरस चितरा मंडरावै,
घरां बैठो करसौ सुख पावै ।।

हस्त नक्षत्र में सूर्य हो और इन दिनों में पानी बरस जाय, चित्रा नक्षत्र पर जब सूर्य हो तब आकाश में बादल मंडराते रहने से ऐसा समझलें कि यह अच्छी फ़सल उत्पन्न होने की अग्रिम सूचना है ।

---

* पांणी पड़ै उत्तरा तो धान सूघे कुत्तरा ।

(८२)

हस्तीड़ो मेह बरसावै। चित्रा उमड्यां बादल लावै ।।
समौ निपजसी सांतरौ। करसां रे मन मोद न भावै ।।

हस्त नक्षत्र पर सूर्य हो और इन दिनों में मेह बरसे, चित्रा नक्षत्र पर सूर्य हो तब आकाश में उमड़ते हुये बादल आते देखें तो कृषक मोद के मारे आनन्द विभोर हो जाता है।

(८३)

हस्ती जातो पूंछ हिलावै। तौ घर बैठा गहुँ निपजावै ।।

हस्त नक्षत्र पर सूर्य हो और इसके समाप्त होते-होते ही यदि वर्षा हो जाय तो यह वर्षा, कृषि के लिये—गेहूं की खेती के लिये—उत्तम है।

(८४)

※ हस्त बरसियां तीनूं आवे, साली सक्कर मास।
डरण बरसियां तीनूं आवै, तिल कोद्रव ने कपास ।।

हस्त नक्षत्र पर सूर्य हो तब हुई वर्षा चावल, गन्ना एवं उड़द के लिये लाभदायक होती है और यही वर्षा, तिल कौदों एवं कपास के लिये हानिकारक हो जाती है।

(८५)

हस्तीड़ो सूंड उलाले, तो पोटे आई गाल ।।

सूर्य, जब हस्त नक्षत्र पर हो उस समय वर्षा हो जाय तो इसके फलस्वरूप वर्ष भर के सब प्रकार के भय नष्ट हो जाते हैं।

※ चित्रा वरसियां तीनूं जावै, उड़द तिल्ल कपास।
चित्रा वरसियां तीनूं होवैं, साली सक्कर मास ।।

चित्रा नक्षत्र पर सूर्य हो तब वर्षा होने पर उर्द, तिल्ली और कपास की खेती का नाश हो जाता है, और यदि इस वर्षा से चावल, गन्ना एवं गेहूं (यहाँ मास से गेहूँ) का अभिप्राय है उत्पन्न होते हैं।

(८६)

* जे विरखा चितरा में होय । तो सारी खेती जावै खोय ।।

सूर्य, चित्रा नक्षत्र पर हो और उस समय में वर्षा हो जाय तो इसके प्रभाव से समस्त खेती नष्ट हो जाती है।

(८७)

चितरा बरसियां जे जोड़े खेत,
तो गेरुवी रोग लागेलो तूं चेत ।।

सूर्य, चित्रा नक्षत्र पर हो उन दिनों में कृषक खेत जोत लेता है तो उत्पन्न होने वाली फसल में गेरूंवां नामक रोग हो जाता है।

(८८)

गेली चित्रा मांडे खेल, (तो) काले नन्हाले लावे रेल ।।

सूर्य, चित्रा नक्षत्र पर हो उन दिनों में बून्दाबान्दी हो जाय तो इससे फलस्वरूप भयकर गर्मी के दिनों में असमय ही वर्षा हो जाती है।

(८९)

चढ़ती बरसे चित्तरा उतरतो बरसे हस्त ।
करडो हासल हुयां थकां, हारे नहीं गृहस्त ।।

चित्रा नक्षत्र के चढते समय और हस्त नक्षत्र के उतरते समय यदि वर्षा हो जाय तो राज्य की ओर से कितना ही अधिक कठोर भूमिकर हो, फिर भी गृहस्थ इसे देने से हार नही खाता है। अर्थात् उसे वह आनन्द से चुका देता है।

नोटः—पीछे सं० ५१ पर यह उक्ति आर्द्रा नक्षत्र के लिये भी आई है।

---

* थाय समौ मातो घणौ, सितरा वरै वरात ।
खाइ मरे जे ओदरा, तौय हरो ने हात ।।

चित्रा नक्षत्र पर सूर्य हो तब वर्षा हो जाने से वर्षा का भविष्य अच्छा होता है। चूहे निरन्तर अन्न खा-खा- कर मर जाय तो भी फसल की क्षति नहीं मानी जाती।

(९०)

चित्रा दीपक चेतवै, स्वाती गोवरधन्न ।
डंक कहै है भड्डली, अथक नीपजै अन्न ॥

डंक नामक कवि कहता है कि हे भड्डली, चित्रा नक्षत्र के दिन दीपावली हो और गोवर्द्धन-पूजा के दिन स्वाति नक्षत्र हो तो इसके फलस्वरूप इस वर्ष पृथ्वी पर अन्न का अत्यधिक उत्पादन होगा ।

(९१)

स्वाती में जे बरसे मेंह, तो करसे रे नहिं अन्न रो छेह ॥

सूर्य, स्वाति नक्षत्र पर हो उन दिनों में हुई वर्षा कृषक को अन्न की कमी नही होने देगी । अर्थात् आने वाली फसल से अन्न बहुत होगा ।

(९२)

बरसें स्वात तो नहिं बाजें तांत ॥

सूर्य, स्वाति नक्षत्र पर हो तब वर्षा हो जाय तो यह, कपास के लिये घातक है । इस वर्ष, रूई धुनने वाले (पींजारे) की तांत नहीं बजेगी ।

(९३)

* स्वाती दीवा जो बले, खेले विसाखां गाय ।
घणाक भड्डली रण चढै, उपजीं साख नसाय ॥

स्वाति नक्षत्र मे दीपावली होना और बिशाखा नक्षत्र में गोवर्द्धन-पूजा होना, राज्यों में विग्रह और उत्पन्न हुई फसल को नष्ट हो जाने को सूचित करता है ।

---

* १ स्वाती दीपक जो बरे, खेल विसाखा गाय ।
घणां गयन्दा रण चढं, उपजी साख नसाय ॥

(६४)

स्वाती दीवा जै बलै, बिसाखा खेले गाय।
भड्डली तो साची भणे, बरस सवायूं थाय ॥

दीपावली के दिन स्वाति नक्षत्र हो और गोवर्द्धन-पूजा के दिन (कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के दिन) विशाखा नत्रक्ष हो, इस दिन चन्द्रोदय हो तो भड्डली नामक कवि सत्यतापूर्वक कहता हैं कि, यह वर्ष बहुत ही उत्तम (सदा से सवाया) रहेगा।

नोटः—पिछले पृष्ठ और इस पृष्ठ के फुट नोट में इसके विपरीत भी कुछ उक्तियाँ दी हैं।

(६५)

स्वाती पर मंगल् चलै, रेवत चालै भान।
प्रजा भाग दुख भोगसी, राजा घटसी मान ॥

स्वाति नक्षत्र पर मंगल और रेवती नक्षत्र पर सूर्य जिस वर्ष में आता है उस वर्ष, प्रजा में दुःख भोगना, पीड़ा होना और राजाओं का सम्मान घटने का योग आ जाता है।

(६६)

अनुराधा पर व्है सनी, जेठा गुरु महाराज।
प्रजानाश कारण बण्यो, पच्छम जुद्धां साज ॥

अनुराधा नक्षत्र पर शनि और ज्येष्ठा नक्षत्र पर वृहस्पति जब हो तो उस वर्ष, पश्चिम दिशा के देशों में युद्ध होगा और प्रजा का नाश होगा।

पिछले पृष्ठ की संख्या ६३ से सम्बन्धित:—

* २ स्वाती दीवा जै बले, विसाखा खेले गाय।
तो राणीजाया रण चढ़ै, अर पिरथी परलै थाय ॥

* ३ स्वातो दीपक प्रज्ज्वले, विसाखा पूजै गाय।
लाख गयन्दां घड़ पड़ै, या साख निरफल् जाय ॥

(६७)

मूल नखत होवे शनि, स्वाती बुध को भाग।
मघा मिरगपति अन्न को, संगरै लाभालाभ ॥

मूल नक्षत्र पर शनि, स्वाति नक्षत्र पर बुध और मघा नक्षत्र पर जिस वर्ष चन्द्रमा हो तो उस वर्ष अन्न संग्रह कर लेना लाभदायक है।

(६८)

मूल् नखत सूं गिणती करौ, भरणी तक जावौ पूग।
दिखणादी वायु चल्यां, तो बिरखा आछी अचूक ॥

चैत्र मास में मूल नक्षत्र से भरणी तक के दिनों में यदि, दक्षिण दिशा का पवन चले तो यह शुभ है। इसके प्रभाव से इस वर्ष, वर्षा अच्छी होगी।

(६९)

† मूल् गल्यो रोहण गली, अद्रा बाजी वाय।
हाली बेचो बलधिया, करसण लाभ न थाय ॥

मूल और रोहिणी पर सूर्य हो तब बादल हो आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य हो उन दिनों में वायु चले तो बैलों को शीघ्र बेच देना चाहिये। क्योंकि इस वर्ष खेती में किसी प्रकार का उत्पादन होने की कोई सम्भावना नहीं है।

---

† मूल् गल्या रोहण गली आदरा बाजी वाय।
हालीं बेचो बलधियां, खेती लाभ न थाय ॥

इसके विपरीतः—

† मूल् गल्या पण चतुर नर, बोले विस्वा बीस।
सावण की पंचक झड़ी, आस समै की दीस ॥

(१००)

उत्तराखाडा मन्द ने, फालगणीं चालै सोरी।
'पुनर्वसु का पूखणां, जल बिन भूमि कोरी ॥

उत्तराषाढा अथवा पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र पर शनि हो और पुनर्वसु नक्षत्र पर सूर्य हो तो ये शुभ नहीं है। जिस वर्ष में ये योग आ जाते हैं, उस वर्ष पृथ्वी जल के अभाव से सूखी ही रह जाती है। अर्थात् उस वर्ष, वर्षा नही होगी।

(१०१)

सरवण सूखे स्याली, अर भादू सूखै उन्हाली ॥

श्रवण नक्षत्र पर सूर्य हो तब वर्षा का न होना बरसाती अन्न (का तीसरा) को और भाद्रपदा नक्षत्र पर सूर्य हो तब वर्षा का न होना (उन्हाली-साख) रबी की फसल में होने वाले अन्न को नष्ट कर देता है।

(१०२)

सरवण रिछ के ऊपरै, ग्रह जो आवे क्रूर ।
तो गेहूं मूंघा करै, अम्बर उड़सी धूर ॥

श्रवण नक्षत्र पर यदि कोई क्रूर ग्रह आ जाय तो इसके परिणामस्वरूप गेहूं महंगे हो जावेंगे और आकाश में से वर्षा के स्थान पर मिट्टी ही उड कर गिरेगी।

(१०३)

रिछ धनिष्ठा ऊपरै, शनि मंगल को साथ ।
राजा अर परजा तणो, भाग भवानी हाथ ॥

धनिष्ठा नक्षत्र पर शनि और मंगल जिस वर्ष साथ-साथ आ जाते है वह वर्ष राजा और प्रजा को हानिकारक ही रहता है।

(१०४)

शतभिछ ऊपर देव गुरु, मंगल चित्राधार ।
अन्न घास कई ना हुवे, रच्छक जगदाधार ॥

शतभिषा नक्षत्र पर गुरु और चित्रा नक्षत्र पर मंगल-ग्रह जिस वर्ष आ जाय, तो उनके प्रभाव के कारण उस वर्ष, वर्षा के अभाव के कारण, अन्न-घास उत्पन्न नहीं होंगे।

(१०५)

नक्षत्रों एवं चन्द्र के मार्ग से वर्षा ज्ञान

चित्रा राधा जेसठा, किरती रोयरण जोय।
मघा हिरणी मूल् अर, विसाखा साडा होय।।
चन्दो धुरदिस तणो शुभदायक हो जाय।
लंकाऊ जे होय तो, हा हा कार कराय।।

चन्द्रमा, कृतिका, रोहिणी मृग शिरा, मघा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा नक्षत्रों से उत्तर में निकले तो यह शुभ लक्षण है। इससे सुवृष्टि, सुभिक्ष राजा-प्रजा में क्षेम-कल्याण की वृद्धि होगी। दुर्भाग्य से यह इसके विपरीत अर्थात् दुखिण का हो तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, अकल्याणकारक फल होगा।

(१०६)

चन्द्र की राशि पर से वर्षा ज्ञान

बिरखारुत रे मांयने मीन मिथन व्है चन्द।
कन्या धन को होय तो, मेह मचावै दुन्द।।

वर्षा-काल में मिथुन, कन्या, धन अथवा मीन राशि का चन्द्र हो तो इस योग से अवश्य ही वर्षा होती है।

मास–तिथि एवं नक्षत्रों से वर्षा ज्ञान

(१)

चैत्र सुदी पड़वा दिनां, रिच्छ रेवती होय ।
प्रभु कृपा है जांणजो, विरखा आछी होय ॥

यदि चैत्र शुक्ला प्रतिपदा (नव-वर्ष प्रारम्भ के दिन) रेवती नक्षत्र हो तो ईश्वर कृपा से इस वर्ष, अच्छी वर्षा होने की यह अग्रिम सूचना है ।

(२)

वैसाख सुदी पड़वा दिनां, भरणी रिछ जे होय ।
सरासरी व्है तावड़ो, तौ घास घणेरो लो जोय ॥

यदि वैशाख शुक्ला प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र हो और गरमी साधारण हो तो इस लक्षण से इस वर्ष घास अधिक होगी ।

(३)

जेठ सुदी पड़वा दिनां. मिगसिर रिछ आवै ।
बाजे ढब रो वायरौ, चिन्ता नहीं करावै ॥

यदि ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र हो तो वायु अनुकूल बहेगा जिससे भावी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं रहेगी ।

(४)

सुदी अषाड़ पड़वा दिनां, पुनर्वसु जे आय ।
अन्न घणेरो नीपजे, लोग सुखी हो जाय ॥

आषाढ़ शुक्ला प्रतिपदा को यदि पुनर्वसु नक्षत्र होगा तो इस लक्षण से इस वर्ष अन्न का उत्पादन बहुत होगा जिसके कारण प्रजा सुखी रहेगी ।

(५)

चैत्र वैसाख असाढ़ अर, माघ फागरण का मास।
सातम स्वाति नखत हुआं, शुभदायी फल् आस॥

चैत्र, वैशाख, आषाढ, माघ और फाल्गुन इन पांच महीनों की सप्तमी को यदि स्वाति नक्षत्र हो तो अत्यन्त शुभ फलदायक हैं।

(६)

* आखा रोयरण बायरी, राखी स्रवरण न होय।
पोही मूल् न होय तो, महि डौलती जोय॥

अक्षय-तृतीया को रोहिणी नक्षत्र, रक्षा-बन्धन को श्रवण, पौष की पूर्णिमा को मूल् नक्षत्र न हो तो यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा।

---

१ * पोही मावस मूल् बिन, रोयरण बिन आखा तीज।
संव्वरण बिनां, सलूरिणयौ, क्यूं भावे है बीज॥

२ * मौन अमावस मूल बिनां, रोहरण बिनां आखातीज।
सावरण सरवरण ना मिलियां, विरथा भावरणो बीज॥

नोटः—मौन अमावस्या माघ महीने की अमावस्या को गुजरात की ऊंझा फार्मेसी के विक्रमाब्द २०१८ के पंचांग में बताया है।

ग्रह योग और वर्षा ज्ञान

(१)

* आगल् रवि पाछल् पदी, मंगल् हाल्यो जाय।
ऐ वरशे अन्न मोकलो, हरख घणेरो थाय ॥

जिस वर्ष रवि के पीछे मगल चलता हो तो इस योग से उस वर्ष अन्न बहुत उत्पन्न होगा।

(२)

‡ मंगल् आगल् पछि रवि, जो व्है असाडे मास।
चौपद नासै चारदिस, विरले जीव्यां आस ॥

आषाढ मास मे मंगल आगे और सूर्य पीछे-पीछे चल रहे हों तो इस योग के प्रभाव से यह निश्चय समझलें कि इस वर्ष चौपायों (गाय, भैंस, बकरी आदि) का नाश होगा, इनमें से विरले ही जीवित रहेंगे।

---

* १ आगे रवि पीछे चलै, मंगल मास असाड।
तौ बरसै अन मोल ही, पृथ्वी अनन्दै बाढ ॥

२ रवि आगे पीछे चले मंगल् जो असाढ़।
तो वरसे अन मोकलो, पृथ्वी आनन्द गाढ़ ॥

३ पीछे मंगल् सूर्य के, आसाडां में जाय।
वरसै मूसलधारही, पृथ्वी अन्न न समाय ॥

‡ १ आगे मंगल् होय जद, पीछे होवे भान।
जे विरखा कुछ होय तो, वरसै ओस समान ॥

२ मंगल् रथ आगे हुवै, लारे हुवै जो भान।
आरम्भिया यू ही रहै, खाली रेहवै निर्वाण ॥

३ मंगल् रथ आगे चले, पीछे चले जो सूर।
मन्द वृष्टि तब जांणिये, पड़सी सगले भूर ॥

(३)

रवि शुक्र मंगल अगर, साथ चन्द्र जो होय।
मकर कुम्भ राशि हुयां, काल हलाहल जोय ॥

मकर, कुम्भ राशि पर सूर्य, मंगल, शुक्र, चन्द्रमा के साथ हो तो इस योग के कारण निश्चय ही दुष्काल पड़ेगा।

(४)

सूर्य शुक्र अर बुद्ध जे, इक राशी पर आ जाय।
विरखा थोड़ी होवसी, मूंघो अन्न कराय ॥

सूर्य, शुक्र और बुध एक ही राशि पर आ जाय तो इस वर्ष, वर्षा कम होने और अन्न महंगा होने की सूचना है, ऐसा समझें।

(५)

राहू मंगल साथ में, वृषभ लगन जे होय।
वरस बीच में भय हुवै दुरभिख लेवो जोय ॥

राहू और मंगल, वृषभ लग्न पर हो तो इस योग के प्रभाव से वर्ष के मध्य (छठे महीने) में भय उत्पन्न हो और दुर्भिक्ष भी हो जायगा।

(६)

मिथुन घर हौवे शनि, राहू भी आ जाय।
काल पड़े संसार में, नरपति नाश कराय ॥

शनि, मिथुन राशि पर हो और राहू भी साथ में आ जाय तो इसके प्रभाव से संसार में दुर्भिक्ष हो तथा राजाओं का नाश हो।

पिछले पृष्ठ की संख्या २ से सम्बन्धित:—

* ४ आगे मंगल पीछे रवि, जो असाड के मास।
चौपद नासे चहुँ दिसा, विरले जीव्यां आस ॥

(७)

गुरु सूं शनि ने देखलो, घर सातवैं जे होय ।
नाश प्रजा को होवसी, अन्न न निपजै कोय ॥

गुरु से सातवें स्थान पर यदि शनि आय तो यह योग, प्रजा एवं अन्न को नष्ट कर देने वाला है ।

(८)

गुरु शनि दोन्यूं अगर इक राशि पर आ जाय ।
अन्न न निपजै एक भी, प्रजा नाश हो जाय ।

गुरु और शनि दोनों एक ही राशि पर जिस वर्ष आ जाते हैं तो इसके प्रभाव से उस वर्ष, अन्न का किंचित भी उत्पादन नहीं होगा और परिणामस्वरूप प्रजा का नाश होगा ।

(९)

गुरु मंगल दौन्यूं अगर, इक राशि आ जाय ।
तो चौमासनें बरसे नहीं, बिन बरस्यां ही जाय ॥

गुरु, मंगल दोनों ही का एक राशि पर आ जाना वर्षा-काल में चारों महीने बिना वर्षा के व्यतीत हो जाने को सूचित करते हैं ।

(१०)

गुरु सूर्य शनि बुध जो, इक राशि पर आ जाय ।
घर घर होय बधामणां, सुखी जगत हो जाय ॥

गुरु, सूर्य, शनि और बुध ये चारों ग्रह एक ही राशि पर आ-जाय तो यह योग प्रजा के घर-घर में आनन्द की बधाइयें बांटने के योग्य है । इसके कारण लोगों में सुख की वृद्धि होगी ।

(११)

गुरु शुक्र शनि राहू ए, च्यार ग्रह जे होय ।
इक राशि इक चाल सूं, जे पतरा में होय ॥

तो मेह घणेरी होवसी, जल थल एक कराय ।
कण घण मूंघा होवसी, प्रणचीती हो जाय ।।

गुरु, शुक्र, शनि, राहू ये चार ग्रह एक साथ ही एक ही घर में हो तो इनके प्रभाव से इस वर्ष वर्षा तो बहुत होगी जिसके कारण जल-स्थल एक हो जावेंगे । परन्तु प्रन्न का महंगा हो जाना निश्चित है । किसी प्रनहोनी घटना के होने का भी इस योग का प्रभाव है ।

(१२)

गुरु मंगल मल मास में, राश्यन्तर जे होय ।
कै नष्ट करे संसार ने, कै मेह घणेरो होय ।

गुरु, मंगल ये ग्रह मल-मास (पुरुषोत्तम-मास) में राश्यन्तर (एक राशि से दूसरी में चले जाना) हो जाय तो यह, ऐसा योग है कि, इसके कारण या तो वर्षा बहुत होगी प्रथवा किसी कारण से संसार का नाश होगा ।

(१३)

मास प्रसाढ़ग्रर पख उजियाले,
बुध जो ऊगे किस हो काले ।
मेह न बरसे मण्डल सारे,
कण कौड़ी ना मिले तीं बारे ।।

आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष में बुध का उदय हो तो इस योग का प्रभाव प्रनावृष्टि है । प्रतः प्रन्न बहुत महंगा होगा ।

(१४)

बुध शुक्र प्रसाढ़ में, एक साथ आ जाय ।
सूरज साथे नहीं हुयां, मेह घणेरो थाय ।।

आषाढ़ मास में बुध और शुक्र का एकत्रित हो जाना तो बहुत वर्षाकारक है, किन्तु, सूर्य यदि साथ में आ जाय तो यह प्रनावृष्टि-योग हो जाता है ।

(१५)

* सुदी असाडां बुद्ध को, उदै हुयो जो देख।
शुक्र अस्त सावण लखो, महा काल अवरेख ।।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष में बुद्ध का उदय हो और श्रावण में शुक्र को अस्त होता देखो तो समझ लो, इस वर्ष महान अकाल होगा।

(१६)

सावण सुद के मांयने, शुक्र सिंह को होय।
के तो विरखा व्है नहीं, व्है तो घणेरी होय ।।

श्रावण शुक्ल पक्ष में सिंह राशि पर शुक्र हो तो या तो वर्षा होगी ही नहीं और यदि प्रारम्भ हो गई तो बहुत वर्षा होगी।

(१७)

सावणवद पख ने देखो। तुल मंगल जे होय विसेखो ।।
करक राश में जे गुरु आवै। सिंह राशि पै शुक्र सुहावै ।।
ताल जो सोखै बरसै धूर। कहूं न उपजै सालों तूर ।।
१ सावण उजला पाख में, जे ए सब दरसाय।
दण्ड होय क्षत्रिय लड़ै भीड़ै पृथ्वीपति राय ।।

श्रावण के कृष्ण पक्ष को देखो, यदि इस मे मंगल तुला राशि पर, गुरु कर्क राशि पर, सिंह राशि पर शुक्र आ जाय तो इन के कारण भरे हुए ताल (तालाब-सरोवर) सूख जावेगे, मिट्टी की वर्षा होगी और कहीं भी किसी प्रकार का अन्न उत्पन्न नहीं होगा।

---

* आषाढे बुध ऊगमे, शुक्र श्रावणे मास।
भड़ली हूँ तुझने कहूँ, कणवी पीवे छास ।।

पाठान्तर:—

१ सावण उजला पाख में, जो ये दरसाय।
युद्ध होय क्षत्री लड़ै, भिड़ै पृथ्वी पतिराय ।।

यदि ये समस्त योग श्रावण शुक्ल पक्ष में आ जाय तो इनका यह परिणाम होगा कि, राजा (राष्ट्रपति) परस्पर युद्ध करेंगे।

(१८)

बुध शुक्र जे बेऊ गमण, करले सावण मास।
तो जाणोजै भड्डली, मिलै न तिण में छास॥

यदि श्रावण मास में बुध, शुक्र का उदय और अस्त हो तो इस वर्ष अन्न कम होगा। कवि भड्डली को सम्बोधन कर कहता है कि, और तो क्या इस वर्ष लोगों को जीवन निर्वाहार्थ छाछ तक नहीं नसीब होगी।

(१९)

जीवोदय भृगु अस्त जो, होय सावणे मास।
अनावृष्टि दुर्भिक्ष सूं, होय प्रजा ने त्रास॥

श्रावण मास में बुध का उदय और शुक्र अस्त हो जाय तो इसके प्रभाव से अनावृष्टि और दुर्भिक्ष हो जायगा और परिणाम स्वरूप प्रजा को बहुत कष्ट होगा।

(२०)

१ कर्क में भींजै कांकरो, सिंह अभीनो जाय।
तो भाखै यू भड्डली, टिड्डी फिर फिर खाय॥

भड्डरी कहता है कि, सूर्य जब कर्क राशि पर हो तब केवल कंकर ही भीजे और जब सूर्य सिंह राशि पर हो तब वर्षा हो ही नहीं तो इसके परिणाम स्वरूप टिड्डियों द्वारा खेती नष्ट होगी।

---

१ कर्क बुवावै काकड़ी, सिंह अबोयो जाय।
तो यूं भाखे भड्डरी, कीड़ा फिर फिर खाय॥
२ कर्कज भीजै कांकरो, सिंह अभीनो जाय।
तो तुम जांणो चतुर नर, कीड़ी फिर फिर खाय॥

(२१)

होय शुक्र ग्रस्त ग्रासोज मास,
सब लोग सुखी ग्रानन्द तास ॥

ग्राश्विन मास में शुक्र का ग्रस्त होना, लोगों को सुखदायक होता है।

(२२)

रवि के ग्रागे सुरगुरु, ससि सुक्रां परवेस।
दिन चौथे के पांचवें, रुधिर बहन्तो देख॥

सूर्य के ग्रागे वृहस्पति हों ग्रौर चन्द्रमा, शुक्र की परिधि में प्रविष्ट हो तो इस योग के ग्राते ही चौथे या पांचवें दिन में देश में रक्त पात (लडाई-झगड़ा) प्रारम्भ हो जावेंगे।

(२३)

मीन सनीचर करक गुरु, जे तुल मंगल होय।
गैंहूं गोरस गोरड़ी, विरला विलसै कोय॥

जिस वर्ष मीन का शनि, कर्क का गुरु ग्रौर तुला राशि पर मंगल हो तो इस योग के प्रभाव से इस वर्ष गेहूं, दूध ग्रादि पदार्थ एवं गन्ने की उपज मारी जावेगी।

(२४)

१ कै जो सनीचर मीन को, कै तुल मंगल को होय।
राजा बिगरे परजा क्षय, विरला जीवै कोय॥

---

१ मीन तुला बे राशि पर, जे सनीचर होय।
राजा विग्रह परजा छय, बिरलो जीवै कोय॥

मीन या तुला राशि पर शनिश्चर का होना राजाग्रों में परस्पर युद्ध, प्रजा का नाश होगा। इस योग के प्रभाव से बिरला ही जीवित रहेगा।

मीन पर शनि, तुला राशि पर मंगल का होना एक ऐसा योग है कि इसके प्रभाव से राजाओं में परस्पर विग्रह होगा और प्रजा का नाश होगा।

(२५)

आगे मंगल् पाछै भान,
तो विरखा जाणो ओस समान ।।

यदि मंगल् आगे हो और सूर्य पीछे हो तो इस योग के प्रभाव से इस वर्ष, वर्षा ओस के समान ही होगी। अर्थात् अत्यन्त स्वल्प वर्षा होगी।

(२६)

धन का सूरज होय तब, मूलादिक नव नखत्त ।
मेघ सहित निजरां पड़ै, तो विरखा वर्से सत्त ।।

सूर्य जब धन राशि पर हो उन दिनों में मूल नक्षत्र सहित नौ नक्षत्रों में आकाश में बादल दृष्टिगत हो जाय तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि वर्षा अवश्य ही होगी।

(२७)

छह ग्रह इक राशी पर आवै ।
तो महा काल् ने नूंत, र लावै ।।

यदि एक ही राशि पर छह ग्रह इकट्ठे हों तो इस योग के प्रभाव को महान हानिकर माना गया है। जिस वर्ष ऐसा योग आता है उस वर्ष जनता के लिये महाकाल अर्थात् महान हानि करने वाला होता है।

(२८)

ग्रहों के योग से वर्षा ज्ञान

उदय अस्त ग्रह हुवै क बीजै मण्डल् जावै ।
शुभ ग्रह भेला हुवै, क अमा पूरणी आवै ।

उत्तर दिक्खण श्रयन समै, के भान श्रादरा जाय ।।
बिरखा होव श्रवसकर, ऐसो जोग कराय ।।

किसी ग्रह के उदय अथवा अस्त होने या किसी एक मण्डल से दूसरे मण्डल में जाने, दो शुभ ग्रहों के समागम होने, उस समय पूर्णिमा या अमावास्या का अन्त होने तथा सूर्य के उत्तरायण :मकर: दक्षिणायण: कर्क: अथवा विशेषकर आर्द्रा पर जाने के समय वर्षा प्रायः हुआ ही करती है ।

(२६)

अपणी अपणी रास पर ग्रह चालता जाय ।
विरखा होवें मोकली, शुभ फल देवे बताय ।।

जिस किसी वर्ष में सभी ग्रह अपनी अपनी राशि पर हो और वे चारानुसार हो तो यह शुभ लक्षण हैं । परिणामस्वरूप सुवृष्टि आदि शुभ फलों की प्राप्ति होती है ।

(३०)

अतीचार करूर ग्रवां, थोड़ी विरखा होय ।
सौम्य ग्रवाँ वक्री हुयां, इधकी विरखा जोय ।।

जिस वर्ष क्रूर ग्रह अतिचारी हो तो उस वर्ष, वर्षा कम होगी और यदि सौम्य ग्रह वक्री हो गये हो तो इसके प्रभाव से बहुत वर्षा होगी ।

(३१)

अतीचारी सुरगुर हुवै, शनि वक्री हो जाय ।
पूरी धरती भीजै नहिं, एहवी विरखा थाय ।।

जिस किसी वर्ष गुरु अतिचारी हो और शनि वक्री हो तो इस योग के कारण इस वर्ष इतनी भी वर्षा नही होगी कि जिससे पृथ्वी की रक्षा हो ।

(३२)

अतिचारी होवै सौम्य ग्रह, बक्री होय करूर ।
मेह नहिं दुरभिक्ख पड़ै, भौ रासटर ने जरूर ।।

जिस समय क्रूर ग्रह वक्री हो उस समय सौम्य ग्रह अतिचारी हो तो यह हानिकारक हैं। इस योग के कारण, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष एवं राजा तथा प्रजा को भय अथवा हानि होवेगी।

(३३)

छोड़ सुक्कर बुध वक्री हुयां, ए लक्खण बण जाय।
पांच सात दिन मेवलो, रोजीना बरसाय॥

बुध वक्री होकर, शुक्र को छोड़ कर उलटा चला जावे तो इस योग के प्रभाव से पांच, सात दिन तक वर्षा होती है।

(३४)

उदय अस्त होती बखत, जे देखे गुरु महाराज।
पूरी पूर्णी दृष्टि हुयां, विरखा सारे काज॥

किसी भी ग्रह को जो उदय हो रहा हो या अस्त होता हो इस समय वृहस्पति पूर्ण-दृष्टि अथवा पौन-दृष्टि से देखे तो ऐसे योग के प्रभाव से इस वर्ष अवश्य वर्षा होगी।

(३५)

सुक्कर बुध कोई ग्रह, उदय अस्त हो जाय।
बी विरिया निहचै करी, विरखा अवस कराय॥

जिस समय बुध या शुक्र में से कोई भी ग्रह उदय या अस्त होता हो तो उस समय वर्षा होती ही है।

(३६)

उदय बुध अर शुक्र अस्त, चैतर सावण मास।
अनावृष्टि तृण काल व्है, परजा पहावे त्रास॥

चैत्र अथवा श्रावण मास में बुध तो उदय हो और शुक्र अस्त हो तो इस योग के प्रभाव से अनावृष्टि-योग बन जाता है और तृण-काल हो जाता है।

(३७)

उदै शुक्र व्है वीं बिरियां, जे ग्रह होवै ग्रस्त ।
अतिवृष्टि सुभिक्ष क्षेमथकी, परजा रेव्है मस्त ।।

जब कोई ग्रह ग्रस्त हो रहा हो, उस समय शुक उदय हो तो इस योग के कारण इस वर्ष अतिवृष्टि, सुभिक्ष एवं क्षेम आदि के कारण प्रजा आनन्दित रहेगी।

(३८)

सनि सुक्कर बेऊ अगर इक राशि पर आ जाय ।
घोरकष्ट अन्न ना मिले, विग्रह भी हो जाय ।।

जिस वर्ष शुक और शनि एक ही राशि पर आकर अस्त हो तो इस योग के प्रभाव से उस वर्ष सर्वत्र अन्न-कष्ट, विग्रह एव महा कष्ट होंगे ।

(३९)

चन्द्र बुद्ध सुक्कर अगर, उदै कर्क में होय ।
मेह घणो पण मास छव, दुरभिख लेसो जोय ।।

कर्क राशि पर चन्द्रमा, बुध एवं शनि का उदय होना यह सूचित करता है कि इस वर्ष अतिवृष्टि के साथ साथ छह मास तक दुर्भिक्ष होने का योग भी है।

(४०)

आगे व्है शुभ गिरै, पाछै होय करूर ।
इण संजोगां जाणजो, विरखा व्है जरूर ।।

शुभ ग्रहों के आगे होने और इनके पीछे क्रूर ग्रह हों तो इसके फलस्वरूप वर्षा होती है।

(४१)

शुभ गिरै पाछै हुवै, अर आगे होय करूर ।
फल इणरो यूं होवसी, अनावृष्टि व्है जरूर ।।

आगे तो क्रूर ग्रह हो और इनके पीछे शुभ ग्रह का योग बनता हो तो इस के परिणाम स्वरूप इस वर्ष अनावृष्टि ही रहेगी।

(४२)

आगे पाछै कीं तरां, ग्रह होवता अस्त।
सूरज नैड़ा आयतो, परजा होवै मस्त॥

सूर्य के समीप कई ग्रह भले ही वे आगे हों या पीछे, अस्त होते समय आजाय तो ऐसे योग के प्रभाव से उस वर्ष अत्यन्त वर्षा होती है।

(४३)

ग्रह मंगल अर भान सूं, आगे बुध सुक्कर होय।
इण जोगां बिरखा नहीं जांण लेवो सब कोय॥

सूर्य और मंगल के आगे यदि बुध और शुक ग्रह आजाय तो इस योग के कारण, वर्षा नहीं होगी।

(४४)

बुध सूं आगे भान व्है, पाछे मंगल होय।
सुभिक्ष व्है इण जोग सूं, आछी बिरखा जोय॥

बुध के आगे सूर्य और पीछे मंगल ग्रह हों तो यह उत्तम योग है। ऐसे योगों से वह वर्ष, सुभिक्षकारक सिद्ध होता है।

(४५)

बुध आगल पाछे रवि, व्है चौमासा मांय।
इण लखणांसूं जाणजो, जोरां चालै वाय॥

वर्षा काल में सूर्य के आगे बुध ग्रह हो तो ऐसे लक्षणों से उस वर्ष केवल जोर का वायु ही बहेगा।

(४६)

बुध गुरू के बीच में जे मंगल आजाय।
के बुध सुवकर के लार व्है, तो बिरखा बोत कराय

मंगल यदि गुरु और बुध के बीच में हो अथवा बुध और शुक्र ग्रह के पीछे हो तो इस योग के कारण उस वर्ष अत्यन्त वर्षा होती है।

नोटः—इन योगों में यदि उपरोक्त से विपरीतता हो जाय तो उस वर्ष अनावृष्टि-योग बन जाता है।

(४७)

गुरू शनि दोन्यूं अगर, धन रासी पर आ जाय।
तो इण जोगांरे कारणे, विरखा जाय विलाय।।

धन राशि पर वृहस्पति और शनि का आना, वर्षा नही होने की अग्रिम सूचना समझें।

(४८)

बुध आगे सूरज बिच, लारै भृगुसुत होय।
नीर कुवां क बावड़ी, क समुंदरां में जोय।।

सूर्य मध्य मे हो और आगे बुध एवं पीछे भृग्र-सुत ग्रह हो तो ऐसे अवसर पर वर्षा का पूर्ण अभाव ही रहता है और जल, जलाशयों मे ही दिखाई देता है अथात कूंए, बावड़ी या समुद्र में ही मिलेगा।

(४९)

सूरज सुक्कर क बीचमें, सिह को मंगल होय।
कन्या तुल रासी हुयां, निस्चै विरखा जोय।।

जब मंगल ग्रह सिंह, कन्या या तुला राशि पर हो उस समय सूर्य और शुक्र के बीच मे भी हो तो ऐसे अवसर पर यह निश्चित है कि वर्षा सर्वत्र होती है।

(५०)

सूरज आगै सुक्कर हुवे, पाछे व्है सुरराज।
तो बीली विरखा होवसी, आछा सरसी काज।।

सूर्य के आगे शुक्र और पीछे गुरु हो तो, इस योग से उस वर्ष बहुत वर्षा होगी।

(५१)

बुध सुक्कर के बीच में, बीजो ग्रह जे आय ।
बित्ता दिना बिरखा नहीं, ऐसो जोग कराय ।।

बुध और शुक्र ग्रह के मध्य में अन्य ग्रह जब तक रहता है उतने दिनों तक वर्षा नहीं होती है, यह ऐसा योग बन जाता है ।

(५२)

गुरु आगे पीछे रवि, व्है चौमासा मांय ।
इणरो फल यूं जांणजो, अगनी भय कराय ।।

वर्षा काल में सूर्य से आगे बृहस्पति ग्रह हो तो इसके प्रभाव से इस वर्ष अग्नि-भय रहेगा ।

(५३)

आगे मंगल बुध सनि, पाछे सुक्कर जांय ।
विरखा तो होवे नहिं, जोरां चालै वाय ।।

शुक्र के आगे मंगल, बुध और शनि ग्रह हो तो ऐसे योग के प्रभाव से उस वर्ष वायु अधिक तीव्रता से बहेगा और परिणामस्वरूप वर्षा का नाश तथा दुर्भिक्ष का भय उपस्थित हो जावेगा ।

(५४)

ग्रह भृगु आगे हुवै पाछे हुवै जे भान ।
बिरखा होवे मोकली, इणरो फल यूं जांण ।।

वर्षा काल में सूर्य से आगे यदि शुक्र ग्रह हो तो इस योग के परिणामस्वरूप इस वर्ष सुवृष्टि होगी ।

(५५)

मंगल सुक्कर रे बीचमें, जे सूरज आ जाय ।
मेह हुवे नहिं एक बूंद, ऐसो जोग कराय ।।

सूर्य, यदि मंगल और शुक्र-ग्रहों के बीच में आ जाय तो इस योग के कारण इस वर्ष, वर्षा का अवरोध होगा ।

(५६)

रवि सुक्कर मंगल अगर, तीनूं साथे होय ।
तो विरखा होसी मोकली, सुखी होय सब कोय ।।

सूर्य, मंगल और शुक्र ये तीनों ग्रह एक साथ हों तो यह एक ऐसा योग है कि इसके प्रभाव से उस वर्ष, बहुत वर्षा हो जाती है ।

(५७)

सौम्य अर करूर ग्रह, घर सातवे जे होय ।
दु:ख पावेला मानवी, अनावृष्टि लो जोय ।।

सौम्य और क्रूर ग्रह परस्पर एक दूसरे से सातवें घर में हो तो यह, अनावृष्टि एवं जनता को अत्यन्त कष्टदायक योग है ।

(५८)

गुरु सुक्कर सूरज थकी, सगला ग्रह ने देख ।
घर सातवें भेला हुवे, तो मेह नहिं अवरेख ।।

सूर्य, वृहस्पति अथवा शुक्र से सातवें स्थान पर समस्त ग्रह एकत्रित हो गये हों तो इस योग के प्रभाव से इस वर्ष अनावृष्टि ही रहेगी ।

(५९)

गुरु सुक्कर परस्पर, घर सातवें जे होय ।
ई जोगां रे कारणे नहिं बरसेला तोय ।।

वृहस्पति और शुक्र परस्पर यदि सातवीं राशि पर हों तो यह योग भी अनावृष्टिकारक ही है ।

(६०)

पांच सात नवमा घरै, शुभ ग्रह देखे जोय ।
चन्दा थी सुक्कर हुवै, तो वरसै करे समोय ।।

चन्द्रमा से शुक्र वर्षा काल में पांच, सात अथवा नवमी राशि पर हो और शुभ ग्रह देखते हों तो इस योग से वर्षा होती है ।

(६१)

मंगल् सुक्कर गुरु शनि, घर सातवें जे होय ।
इण जोगां सूं जाणजो, निश्चै विरखा होय ।।

मंगल और शुक्र अथवा वृहस्पति और शनि ये ग्रह परस्पर सातवीं राशि पर हो तो यह योग वर्षा-कारक योग है ।

(६२)

चन्दो व्है जल् रास पर, ग्रर मगल् शनि ने जोय ।
सात नव घर पर हुयां, मेह घणेरो होय ।।

चन्द्रमा जल-राशि पर हो और उससे सातवीं अथवा नवमी राशि पर मंगल किम्वा शनि हो तो इन योगों के प्रभाव से भी बहुत वर्षा होती है ।

(६३)

ग्रहों की राशि पर से वर्षा ज्ञान

सूरज बुध रे साथ में ग्रावै जे गुरु महाराज ।
उदय रेव्है वीं बखत तक, बिरखा सारे काज ।।

वृहस्पति, सूर्य किम्वा बुध के साथ हो जाय तो इस योग के प्रभाव से जब तक ये उदय रहेंगे तब तक वर्षा होने का योग है ।

(६४)

धन ग्रथवा मीन पर, ग्रह मंगल् जे ग्रावै ।
नरपतियों में विरोध व्है, ऐसो जोग बतावें ।।

धन अथवा मीन राशि पर मंगल ग्रह आजाय तो यह राजाओं में परस्पर विरोधकारक योग बनता है ।

(६५)

धन ग्रथवा मीन पर,. बुध को ग्रावे जोग ।
ग्राछी विरखा होवसी, सुख पावै सब लोग ।।

धन अथवा मीन राशि पर बुध ग्रह का आना उस वर्ष, वर्षा, धान्य, पशु और तृण आदि की वृद्धि का योग बनाता है ।

(६६)

धन अथवा मीन पर, शनि राहु जे आवै ।
अलप मेह तृण नाश व्है, ऐसो जोग बतावै ॥

धन अथवा मीन राशि पर शनि अथवा राहु ग्रहों में से कोई भी ग्रह हो तो इस योग के प्रभाव से उस वर्ष अल्प-वृष्टि एवं तृण का नाश होगा ।

(६७)

धन अथवा मीन पर, शनि मंगल अर राहु ।
घोर काल पड़सी खरो, परजा होसी तबाहु ॥

धन अथवा मीन पर मंगल, शनि और राहु हों तो इस योग के कारण उस वर्ष भयंकर अकाल होगा और परिणामस्वरूप मनुष्य, पशु-पक्षी आदि का नाश होगा ।

(६८)

सुक्कर राहु मेखरा, एक साथ आ जाय ।
काल पड़ैलो जगत में, दुरभिक्ख जोग बणाय ॥

मेख राशि पर शुक्र और राहु का होना यह सूचित करता है कि इस वर्ष निश्चय ही भयंकर दुर्भिक्ष होगा ।

(६९)

मिथन भौम धन को शनि, आदरा पूर्वाषाड़ा लेव ।
राहु केत इण रिछ हुयां, चौमासे नहिं मेव ॥

मिथुन का मंगल, धन का शनि और आद्रा किम्वा पूर्वाषाढा का राहु अथवा केतु ऐसा योग वर्षा-ऋतु मे हो तो इसके प्रभाव से उस वर्ष अनावृष्टि-योग बन जाता है । अतः वर्षा नहीं होगी ।

(७०)

सूरज मंगल् सुक्कर सनि, मेख रास पर होय।
काल् पड़े झगड़ा हुवै, भय पामे सब कोय।।

ज्योतिष के आधार से यह प्रतीत होता है कि मेष राशि पर सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि ग्रह हो तो, यह देश के लिये हितकर नहीं रहता है। ऐसे योग का फल, दुर्भिक्ष, युद्ध आदि के कारण प्रजा को त्रासदायक एवं भय से व्याकुल करता है।

(७१)

मीन चन्द्र मंगल् तथा, दैत्य गुरु जे आय।
अनावृष्टि दुरभिक्ख व्है, सस्ता पशु बिकाय।।

मीन राशि पर चन्द्रमा, मंगल और शुक्र का होना अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, समस्त अन्न का महंगा होना और परिणामस्वरूप पशुओं का सस्ते मोल से बिकना इसकी अग्रिम सूचना है, ऐसा समझें।

(७२)

गुरु मंगल् मिथन व्है, तुल् को सनि जे होय।
धन को राहू हुय जाय तो, जोरां वरसे तोय।।

मिथुन राशि पर मंगल एवं वृहस्पति, तुला का शनि और धन का राहु हो तो इन योगों के कारण उस वर्ष, वर्षा बहुत जोर से बरसेगी।

(७३)

सनि राहू व्है मिथन पर, दुरभिक्ख होवण जोग।
आथूणां राजा लड़े, पावै क्लेश रो भोग।।

मिथुन राशि पर शनि अथवा राहु हो, तो इस योग के प्रभाव से पश्चिम दिशा के राजाओं में क्लेश हो और प्रजा दुर्भिक्ष के कारण कष्ट पावेगी।

(७४)

मंगल् गुरु अर शनि, वृसभ तुला पर आवै।
इण जोगां रे कारणे, विरखा अवस करावै।।

वृषभ अथवा तुला राशि पर मंगल, वृहस्पति और शनि का होना यह बताता है कि इस वर्ष, वर्षा अवश्य होगी।

(७५)

सूरज मगल् अर शनि, वृख राशि पर होय।
अनावृष्टि दुरभिक्ख व्है, जुद्ध पीड़ा पण जोय।।

वृषभ राशि पर सूर्य, मंगल और शनि ग्रहों का होना इस वर्ष के लिये भला नहीं है। इसके फलस्वरूप उस वर्ष में अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, युद्ध आदि के कारण जनता कष्ट पावेगी।

(७६)

ग्रहों के सम्मिलन से वर्षा ज्ञान

सूरज सुक्कर रा मेल् सूं, वेगां चाले वाय।।

सूर्य और शुक्र यदि किसी वर्ष कभी भी एकत्रित हो तो इस योग के प्रभाव से उस वर्ष वायु वेग से चलेगा।

(७७)

मंगल् सुक्कर अर सनि, भेला जे हुय जाय।
देव गुरु री द्रष्टि पड्यां, तो निश्चै विरखा थाय।।

जिस वर्ष, मंगल और शनि एव शुक्र एकत्रित हों और वृहस्पति उनको देखे तो ऐसे योग आने पर निश्चित है कि वर्षा होगी।

(७८)

गुरु मंगल् रो मेल् व्है, जे चौमासा मांय।
जित्ते ए मिल्या रेव्है, विरखा खंच कराय।।

वर्षा काल में वृहस्पति और मंगल एक ही राशि पर आकर एकत्रित हो जाय तो जब तक ये मिले हुये रहेंगे तब तक वर्षा नहीं होगी।

(७९)

मंगल सनि अर राहु व्है, तीन्यूं ही इक साथ।
मचे जुद्ध लोही बेव्है, धान तेज जल नाश ॥

मंगल, शनि और राहू ये तीनों एक ही स्थान पर एकत्रित हो जाय तो इस योग के प्रभाव से अन्न-नाश, दुर्भिक्ष और युद्धादि के कारण प्रजा कष्ट पावेगी।

(८०)

शनि मंगल भेला हुवै, जे चौमासा मांय।
बे महिना बरसे घणो, पाछै खंच कराय ॥

मंगल और शनि दोनों एकत्रित हो जाय तो इसके प्रभाव से दो मास तक तो इतनी वर्षा होगी कि मकान तक गिर जा सकेंगे। किन्तु, बाद में वर्षा सर्वथा बन्द हो जावेगी।

(८१)

शनि गुरु अर राहु, जे तीन्यूं भेला होय।
बिरखा तो होसी खरी, पण ओला साथे जोय ॥

शनि राहू और वृहस्पति ये तीनों एक साथ हो जाय तो इस योग के प्रभाव से ओलों सहित वर्षा होगी।

(८२)

मंगल राहु भेला हुयां करे धान रो नाश।
अनावृष्टि रे कारणे, परजा पावै त्रास ॥

मंगल और राहू यदि एक ही राशि अथवा नक्षत्र पर हों तो यह योग अनावृष्टि कारक एवं अन्न-नाश कारक है।

(८३)

मंगल सू सुक्कर तलक, जे ग्रह भेला ग्राव ।
इण जोगां रे कारणें, ग्रांधी जोर जतावै ॥

मंगल से शुक्र तक ग्रर्थात् मंगल, बुध वृहस्पति ग्रौर शुक्र ये चार ग्रह एक स्थान पर एकत्रित हो तो इसके परिणामस्वरूप ग्रांधियें बहुत ग्रावेंगी ।

(८४)

गुरु मुक्कर भेला हुयां झगड़ा रो व्है जोर ।
काल पड़े ग्रर ग्रसमय, विरखा मचावै शोर ॥

जिस वर्ष गुरु ग्रौर शुक्र एकत्रित हो जाते हैं उस वर्ष, ग्रकाल में वर्षा, दुर्भिक्ष ग्रौर युद्धादि के कारण प्रजा कष्ट पावेगी ।

(८५)

मंगल गुरु सुक्कर सनि, एक साथ हो जाय ।
ग्रनावृष्टि रे कारणें, दुरभिक्ख जोग कराय ॥

मंगल, शुक्र, गुरु ग्रौर शनि ये चारों ग्रह एक स्थान पर एकत्रित हो जाते हैं तो इसके परिणामस्वरूप उस वर्ष ग्रनावृष्टि होने के कारण दुर्भिक्ष हाता है ।

(८६)

बुध सुक्कर सूरज ग्रगर, ग्रापस में मिल जाय ।
थोड़ी बिरखा होवसी, मूघो धान कराय ॥

बुध, शुक्र ग्रौर सूर्य ये तीनों परस्पर मिल जाते हैं तो इस योग के प्रभव से उस वर्ष, वर्षा तो थोडी होगी ग्रौर ग्रन्न महंगा बिकेगा ।

(८७)

मंगल सुक्कर राहु सनि, एक साथ हो जाय ।
ग्रनावृष्टि रे कारणें, दुरभिच्छ जोग कराय ॥

मंगल, शुक, शनि और राहू ये चार ग्रह एक स्थान पर एकत्रित हो जाय तो इसके प्रभाव से अनावृष्टि और दुर्भिक्ष हो जाता है।

(८८)

गुरु सुक्कर सूरज अगर, इक रासी पर आवै।
विरला हासी मोकली, ऐसो जोग करावै॥

वृहस्पति, शुक्र और सूर्य किसी समय एक राशि पर आ जाय तो इस योग के फल स्वरूप उस वर्ष, वर्षा बहुत ही होगी।

(८९)

सूरज बुध गुरु अर सनी, साथ राह ने लेव।
सुभिक्ष क्षेम आरोग्य दे, ऐसो बरसै मेव॥

जिस वर्ष, सूर्य, बुध, गुरु और शनि तथा राहु ये एकत्रित हो तो इस योग के कारण, उस वर्ष सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य एवं जन-मन-रंजन होता है।

(९०)

सूरज चन्दर बुध गुरु, सुक्कर ने ले साथ।
मूंगो धान राजा दुखी, नेरुत परजा नाश॥

सूर्य, चन्द्रमा, बुध, वृहस्पति और शुक ये एकत्रित हों तो यह समझ लें कि, इस वर्ष अन्न महँगा बिकेगा, राजाओं में कष्ट और नैरूत्य दिशा के देश की प्रजा को नाश होगा।

(९१)

राहू केत ने छोड़कर, बाकी ग्रह जे आय।
एक जाग्यां भला हुयां, घोर काल बरताय॥

नोटः—१ कोई कोई इस योग का प्रभाव, युद्ध, महामारी आदि का उपद्रव होने का भी बताते हैं।

२ इसे गोलक-योग कहते हैं। बताया जाता है कि विक्रम सं० १९५६ में ऐसा ही योग था और उस वर्ष भयंकर अकाल पड़ा था जो ५६ के काल के नाम से प्रसिद्ध है।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक और शनि ये सात ग्रह एक स्थान पर एकत्रित हो जाय तो इस योग के परिणामस्वरूप अनावृष्टि, के कारण अत्यन्त भयानक दुर्भिक्ष का योग बनता है।

(९२)

पत्रों ले तूं इणने देख,
सूरज बुध, गुरु सुक्कर ने पेख।
इणरो फल यूं कहदे जोसी,
धान घणेरो सस्तो होसी॥

सूर्य, वृहस्पति, बुध और शुक ये सभी एकत्रित हों तो इस योग के कारण उस वर्ष, अन्न का भाव मन्दा रहेगा।

ग्रहों और चन्द्रमा की गति से वर्षा ज्ञान

(९३)

मंगल बुध अर सुरगरू, शनि सुक्कर को जोग।
चन्दो उतरादे गयां. आणन्द मांणे लोग॥
दिखणादे व्हैजाय तो, अनावृष्टि ले जांण।
काल पड़े परजां रुलं, धनरी होसी हांण॥

मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक या शनि इन ग्रहों से चन्द्रमा उत्तर में हो के निकले तो इस लक्षण से सुवृष्टि, सुभिक्ष एवं धनादि पदार्थों की वृद्धि होती है। कदाचित यह चन्द्र, दक्षिण में हो के निकले तो इसके प्रभाव से इस वर्ष अनावृष्टि, दुर्भिक्ष तथा धनादि पदार्थों का नाश होता है।

नोटः—यहाँ धन से तात्पर्य गौ, बैल आदि पशुओं से है।

गर्भ—प्रकरण

गर्भों की महिमा

(१)

बिन उत्पाती देश में गरभ अधिक रह जाय ।
निश्चै करने जांगजो, विरखा अधिक कराय ।।
मिल न आपस हैं बेउ, मालव ने मरु भूम ।
सुभाव तणी आ बात है, जैसी होवै भूम ।।
मालव में बिरखा घणी, मरू तपावै भूम ।
ग्रह स्वभाव सो फलभी हुवै, वै मचावे धूम ।।

उत्पात रहित किसी भी देश में यदि अधिक गर्भ रह जाय तो यह निश्चित है कि, वहाँ वर्षा भी अधिक ही होगी। किन्तु, यह भी ध्यान में रहे कि, स्वभाव से ही कम वर्षा वाले प्रदेश मारवाड़ (राजस्थान) और अधिक वर्षा वाले प्रदेश मालव आदि पर जैसे-जैसे ग्रहों (पाप ग्रह या शुभ ग्रह) का प्रभाव होगा, वह भी अवश्य होगा। अर्थात् कम वर्षा वाले मरुस्थल में अधिक गर्भ धारण हुऐ हों और वहां अधिक वर्षा करने वाले शुभ ग्रहों का योग आ जाय तो कम वर्षा का अपवाद नष्ट होकर शुभ ग्रहों के प्रभाव से वर्षा अधिक ही होगी। इसके विपरीत स्वाभाविक रूप से अधिक वर्षा वाले प्रदेश मालवे में कम गर्भ धारण हो और साथ ही उन देशों के नक्षत्रों को (कूर्म अथवा सर्वतोभद्र चक में) क्रूर ग्रहों का वेध आ जाय तो (अधिक वर्षा के अपवाद को छोड़कर) वहाँ भी वर्षा कम ही होगी।

(२)

बिजली बल अर बादला, मेघ गरभ उपजावै ।।

विद्युत-शक्ति एवं बादल इन दोनों के योग से जल के गर्भ धारण होते हैं।

मेघ गर्भ का समय

(३)

पूरवाखाडा होय जद, मिगसर सुकला आवे ।
गरभधारण होवण लागे गरग रुसी फरमावै ।।

गर्ग ऋषि का कथन है कि मार्गशीर्ष महीने में शुक्ल पक्ष में जिस दिन पूर्वाषाढा नक्षत्र हो उस दिन से मेघ-गर्भ समय प्रारम्भ होता है ।

(४)

जेठ सुदी आठम थकी, दिवस च्यार ले जोय ।
मन्द वाय सघन घन, जे आभा मांहे होय ।।
गर्भ धारण है जांणजो, इण विध रेव्है वरताय ।
रिछ जे होवै इण दिनां, उण रिछ बिरखा थाय ।।

ज्येष्ठ शुक्ला अष्टमी से चार दिनों तक आकाश में मन्द-मन्द वायु सघन तथा वृष्टि के बादल हो तो इस लक्षण से मेघ-गर्भ हुआ समझें। इन दिनो मे जो नक्षत्र होंगे उन पर जब सूर्य आवेगा तब उन दिनों में वर्षा होगी ।

गर्भ धारण से श्रेष्ठ बादल

(५)

घूराऊ ऊगूणवा, ईसाण बादला होय ।
इण गरभां करसण बधै, दूजी विरखा सोय ।।

उत्तर, पूर्व किम्बा ईशाण कोण में गर्भ धारण के समय बादल उत्पन्न हो तो इतनी वर्षा होगी कि, जिससे (खेती) की वृद्धि होगी ।

(६)

मोती वा चान्दी जिसा, चमकीला अर सेत ।
लीलो शोलो कृष्ण रंग, कमल सरीखो लेत ।।

वली तमाखू रंग ज्यूं, बादल् व्है इण रूप रा ।
नृक कच्छप अर केकड़ा, मच्छी सा बांदल् खरा ।।
अधिको जल् धारण करै, बादल् आंभा मांय ।
मेह घणेरो बरससी, इण में संसै नांय ।।

मोती किम्बा चांदी के समान श्वेत एवं चमकदार, हरा, पीला, कमल के समान नीला या अंजन के समान कृष्ण रंग लिये बादल हों, जिनका आकार मगर, कछुआ, केकड़ा अथवा मछली आदि जल-जन्तुओं के समान हो तो ऐसे बादल, अधिक जल को धारण करने वाले और बरसने के समय अधिक जल बरसाने वाले होंगे ।

(७)

जल पंखेरू अप्सरा, साखर झाड़ अर कूप ।
वापी सर सरिता सरिस, मंद गति अनुरूप ।।
इण लक्खण बादल् हुवै, तो गरम धारणे जोग ।
आछी विरखा होवसी, आणन्द मांणे लोग ।।

बादलों का आकार जलचर पक्षी, अप्सरा, पर्वत, वृक्ष, कूएं, बावड़ी तालाब और नदी आदि के समान हो और इनकी गति मन्द हो तो इन्हें श्रेष्ठ माना गया है, जिसके परिणाम स्वरूप अच्छी वर्षा होगी ।

(८)

कालो लीलो लाल, धोलो पीलो मिल्यो यकी ।
जे पावै गुण स्निग्ध, श्रेष्ठ मानजो थें नकी ।।

बादलों का रंग कृष्ण, नीला, लाल, श्वेत, पीला और मिश्रित रंगों वाला हो, साथ ही वे स्निग्ध हों तो ऐसे बादल श्रेष्ठ माने गये हैं ।

(९)

बादल विरखा बूंद हो, दिशा वरण आकार ।
गरम धारण के समै, तो श्रेष्ठ जमानो धार ।।

गर्भ बादलों की दिशा, वर्ण, आकार एवं वर्षा की बूंदें हों तो इन लक्षणों से युक्त बादल श्रेष्ठ समझे जाते हैं।

(१०)

तेज धूप बादल तपै, धीमो वाजै वाय।
गरम समै जे होय तो, मेह जोर को आय॥

प्रचण्ड धूप के कारण बादल तप जाय और उस समय मन्द मन्द वायु चलने लगे तो गर्भ के पश्चात बरसने के समय में ये बादल जोर से बरसेंगे।

(११)

आंसा गेरा जेहवा, गरब जर्यें अंगास।
ओ सी वदती जाणवी, मैं वरवानी मास॥

आकाश में बिखरे हुए किम्वा गहरे (घने) जैसे गर्भ होंगे, उसी के अनुसार कम या अधिक वर्षा होगी, ऐसा समझ लेना चाहिये।

(१२)

श्रेष्ठ लक्षण

सूर्यादि ग्रह बिम्बा बड़ा, स्निग्ध रहित उत्पात।
ऐसी किरणां जे हुवै, श्रेष्ठ गिणीजै बात॥
सभव रिछ उत्तर गमण, उण सू उत्तर जाय।
विरछां के बाधा बिनां, अकुर पण आजाय॥
मिनख तथा चौपाया सभी, राजी मन रा होय।
ए लक्खण सारा श्रेष्ठ है, मान लेवो सब कोय॥

सूर्यादि ग्रहों के बिम्ब बडे हो एवं उत्पात रहित तथा स्निग्ध दिखाई दे, जिन नक्षत्रों का उत्तर में जाना सम्भव हो उनसे उत्तर में होकर ही जावे, वृक्षों के नये अकुर बिना किसी बाधा के निकल आवे और मनुष्य तथा पशु प्रसन्न-चित्त प्रतीत हो तो ये लक्षण श्रेष्ठ माने जाते हैं।

चार विशेष श्रेष्ठ लक्षण

(१३)

ठण्डौ वायरौ अर बीजली, गाज कुण्डाल्यौ होय ।
ए लक्खरण आछा घरणा, जांरण लेवौ सब कोय ।।

शीतल पवन, बिजली चमकना, आकाश का गर्जना करना और कुण्डल ये चार लक्षण विशेष अच्छे माने गये हैं ।

गर्भ-पुष्टिकारक काल विशेष के लक्षण

(१४)

मिगसर पौस के मांयने सन्ध्या रागी जोग ।
बादल् कुण्डल् समेत हुयां, आछी केव्है लोग ।।

मार्गशीर्ष और पौष मास में सन्ध्या का फूलना (रागयुक्त होना), कुण्डल सहित बादलों का होना अच्छा माना जाता है ।

(१५)

माघ महीना माँयने, वायु परचण्ड होय ।
हीन तेज सूरज हुवै, मलीन चन्द्र भी होय ।।
उदय अस्त सूरज तरणो, बादल् में हो जाय ।
श्रेष्ठ जमानो होवसी, जोसी जोग बताय ।।

माघ महीने में प्रचण्ड वायु का होना, सूर्य की कान्ति शीतल एवं चन्द्रमा की मलीन होना, सूर्य का उदय एवं अस्त बादलों में होना ये श्रेष्ठ लक्षण माने गये हैं ।

(१६)

विरखा कुण्डल् बादला, वायु चैत में होय ।
गाज बीज बादल् हवा, मेह वैसाखां जोय ।।
तेज धूप लू आन्धी हुवे, जेठ महीना मांय ।
गरभ रेवरण रे वासते, आछो जोग बरणाय ।।

चैत्र मास में वर्षा कुण्डल, बादल एवं वायु का होना, वैसाख में गर्जना करना, बीजली बादल, वायु और वर्षा का होना, ज्येष्ठ मास में तेज धूप, गरम हवा (लूवें चलना), आन्धी आना, ये लक्षण गर्भ के लिये उत्तम माने गये हैं।

गर्भ-स्राव होने (गल जाने) का ज्ञान

(१७)

भाग आठवां द्रोण सूं*, अधिको बरसे मेह।
गरभाधान की बिरियां, तो गरभ नाश कर देह॥

गर्भ धारण के समय ही यदि एक द्रोण का आठवा भाग से अधिक जल बरस जाय तो उस गर्भ का नाश हो जाता है। अर्थात् यह गर्भ अपने निश्चित समय पर वर्षा नही करेगा।

गर्भ-स्राव में अपवाद

(१८)

उदय अस्त ग्रह होय के, मण्डल् बद ले जाय।
अथवा दो शुभ ग्रह, एको करके आय॥
अमावस पूनम तिथि, समयो आवै अन्त।
उत्तर दिक्खण सूरज, जे आवै होय न चिन्त॥
आदरा पर सूरज हुयां, तो विरला हो जाय।
चिन्ता री नहिं बात है, गरभस्राव नहिं थाय॥

ग्रह के उदय किम्वा अस्त होने या एक मण्डल में से दूसरे मण्डल मे जाने के समय, दो शुभ ग्रह परस्पर मिलने के समय, पूर्णमासी अथवा अमावास्या के अन्त मे, सूर्य के उत्तरायन किम्वा दक्षिणायन आने पर, सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र पर आने पर तो वर्षा प्रायः आती

* आधुनिक प्रचलित मान ३० सेण्ट के बराबर।

ही है। गर्भ-धारण के समय यदि इन उपरोक्त कारणों में से कोई भी कारण होने पर अधिक वर्षा हो जाय तो कोई चिन्ता की बात नहीं है। क्योंकि, ऐसे समय की वर्षा आकाश में की वर्षा मानी जाती है न कि; गर्भ में की।

गर्भ-धारण में नेष्ठ बादल

(१६)

कालो रूखो छिन्नभिन्न, रूखौ वली अशब्द।
बार बार बरसै जिको, आछो नहिं है अब्द॥

काले रंग के रूखे, छोटे-छोटे टुकड़े, रूक्ष-शब्द किम्वा बिना शब्द वाले, बार-बार बरसने वाले बादल गर्भ-धारण के समय हो तो ऐसे बादल अच्छे नहीं माने जाते हैं।

(२०)

अति गरमी अति शीत, बहुजल बरसणहार।
भयदायक विकृत हुवे, वे बादल नेष्ट विचार॥

अत्यन्त गर्मी वाले, अत्यन्त शीतवाले, अति जल बरसाने वाले, भयदायक एवं विकृत-रूप वाले बादल गर्भ-धारण में श्रेष्ठ नहीं माने जाते हैं।

(२१)

घरा वायु छिनभिन थका, बिना सुगन्ध अप्यार।
ए बादल आछा नहीं, जिण सूं व्है अन्धकार॥

अत्यन्त वायु से युक्त, छिन्न-भिन्न हुए, बिना सुगन्ध एवं देखने में अप्रिय तथा जिन से अन्धकार छा जाय ऐसे बादल अच्छे नहीं होते हैं।

गर्भ-नाश करने वाले बादल

(२२)

तारा टूटै बिजली पड़े, आन्धी अर दिग्दाह ।
गन्धर्व नगर कीलक तथा, चोटीला ताराह ॥

भू कम्पै ग्रह जुद्ध हुवै, ग्रहण कोई हो जाय ।
रक्त मांस अर हाड़का, केशां मेह बरसाय ॥

बिन बादल गरजन हुवै, बिनु सन्ध्या धनु होय ।
उगै आथ में सूरज जद, परिघ लेवौ जे जोय ॥

अन्तरिक्ष दिव्य भूमि तणौ, जे होवै उत्पात ।
गरभ धारण की बखत, तौ गरभ नाश हो जात ॥

गर्भ धारण के समय तारे टूटे, बिजली गिरे, आन्धी आवे, दिग्दाह हो, गंधर्व नगर, कीलक (सूर्य में काला दाग), पुच्छल तारा, दिखाई दे, भूकम्प हो, ग्रह-युद्ध, (मंगल, बुद्ध, गुरु, शुक्र और शनि इनमें से कोई से भी दो ग्रह आकाश में एक दूसरे के अत्यन्त समीप आ जावे) हो, सूर्य किम्वा चन्द्र ग्रहण हो, रक्त, मांस, हड्डियें एवं केश आदि की वर्षा हो, बिना बादलों के ही आकाश में गर्जना हो, बिना सन्ध्या-काल के इन्द्र धनुष हो, सूर्यास्त तथा सूर्योदय के समय परिघ (बादलों की तिरछी रेखा) हो, अथवा अन्तरिक्ष, दिव्य तथा भौम इन तीन निमित्त में से किसी भी पदार्थ में उत्पात हो जाय तो गर्भ का नाश हो जावेगा । अर्थात् वर्षा काल में इनके कारण वर्षा नही होगी ।

(२३)

गर्भ के दस लक्षण

* वायु वादल् वीजली, थोड़ी विरखा होय।
संध्या फूलै फूटरी, कुण्डल् लेवो जोय।।
इन्द्र धनस पालो पड़ै, आभो गाज सुणावै।
प्रति सूरज भेलो गिण्यां, दस लक्खण हो जावै।।

(२४)

गर्भ पुष्टि कारक सामान्य योग

मृदु वायरो ईसाण रो, के उत्तर पूरब होय।
चंद्र सूरज कुण्डल् बड़ो, स्निग्ध सेत लो जोय।।
आमो निरमल् होय अर, निशानाथ व्है स्वच्छ।
ऊपर देखो गौर सूं, तारा दीखै जे स्वच्छ।।
सुयी नोक सा पातला, व्है छुरा की धार।
रातो लीलो धूमलो, आभो ले निरधार।।
संध्यावेला इन्द्र धनस, आभा में बिजली खिवै।
मन्द मन्द व्है गरजना, प्रति सूरज भी हुवै।।
धूराऊ ईसांण अर, पूरब दिस के मांय।
वनचर बोले शान्त मधुर, सिरे जमानो थाय।।

उत्तर पूर्व किम्वा ईशान का आनन्ददायक-वायु बहता हो, चन्द्र किम्वा सूर्य के स्निग्ध एवं श्वेत बड़ा कुण्डल हो, आकाश निर्मल और चन्द्र एवं तारे स्वच्छ प्रतीत हो, बड़े-बड़े बादल सुई की नोक के समान पतले, छुरे की धार के समान तीक्ष्ण धार वाले, लाल, नीले और धूम्र-वर्ण वाले हों, संध्या के समय इन्द्र धनुष दिखाई दे, आकाश में बिजली चमके,

* बद्दल् वायु विज्जु बरसन्त। कड़कै गाजै उपल् पड़ंत।।
इन्द्र धनस परिवेसे मांन। हेम पड़े दस गरभ प्रमाण।।

मन्द-मन्द गर्जना होती हो, उत्तर, ईशान एवं पूर्व दिशा की ओर से पक्षी एवं वन-पशु शान्त शब्द (सूर्य की ओर मुख किये बिना मधुर स्वर) करे तो ये लक्षण श्रेष्ठ हैं।

(२५)

गर्भ पुष्टि में बाधक योग

पालो पड़ै जे पोस में, मिगसर शीत न होय ।
पुष्टि नहीं व्है गरभ री, जांरा लेवो सब कोय ।।

पौष मास मे बर्फ जमे,मार्गशीर्ष में ठण्ड नहीं पड़े तो ये लक्षण, गर्भ पुष्टि के लिये बाधक माने गये हैं। अर्थात् मार्गशीर्ष मास में अति शीत और पौष मास में अत्यन्त हिम नहीं पड़ना श्रेष्ठ माना है।

(२६)

गर्भ के पाँच निमित्त में से एक-एक की प्रधानता द्वारा वर्षा-ज्ञान

गर्भ के पाँच निमित्त

वायु बादल बीजली, अलप मेह अर गाज ।
निमित्त पांच ए इम गिरणो, भाखै सुधी समाज ।।

वायु, बादल, बिजली, अल्प-मेह और आकाश का गर्जना इन पांचों को विद्वानों ने गर्भ के पांच निमित्त माने हैं।

(२७)

वायु आदि की प्रधानता

तीन आढक विरखा हुवै, जे वायु होय प्रधान ।
व्है बादल तो नव गिरणो, छः बिजली सूं पहचांरण ।।
चार आढक अलप जल, बारह गिरणो व्है गाज ।
जैसी विरखा होवसी, वैसो निपजै नाज ।।

वायु की प्रधानता से तीन आढक, बादल की प्रधानता से नौ आढक, बिजली की प्रधानता से छः आढक, अल्प-जल की प्रधानता से चार आढक और गर्जना की प्रधानता से बारह आढक जल बरसेगा।

(२८)

गाज बीज बादल हवा, थोड़ो वरसै तोय।
गरभ धारण में सब मिलैं, तो मेह घणेरो होय॥
भूलै चूकै जे अगर, मेह घणो आ जाय।
तो बरसण री बखत, थोड़ीज बूंदां आय॥

गर्भ-धारण के समय गर्जन, बिजली चमकना, बादल, वायु और थोड़ी-सी वर्षा ये पाँचों निमित्त एकत्रित हो जाय तो वह गर्भ जब बरसेगा तब अधिक जल बरसावेगा। परन्तु उसी समय (गर्भ-धारण के समय) कदाचित अधिक वर्षा हो जाय तो उस गर्भ के बरसने के समय पर केवल थोड़ी-सी बूंदें ही पड़ेगी।

(२९)

गरभ रहे वायु तणो, तो वर्षे वायु जोर॥

वायु द्वारा धारण हुआ गर्भ जब बरसने का समय आवेगा तब केवल वात-वृष्टि (जोर से वायु का चलना) ही होगी।

(३०)

गर्भ के ५ निमित्तों के द्वारा वर्षा का स्थल निर्णय

एक पचीसां दो पचासां, तीनां दूणो जोय।
चारां पांचां निमित्त में, क्रम सूं दूणां होय॥

गर्भ धारण के समय यदि एक ही निमित्त हो तो वर्षा उस स्थान से पचीस कोस (५० मील) में होगी, दो निमित्त होने पर पचास और तीन निमित्त होने पर सौ कोस में मेह बरसता है। इसी प्रकार चार निमित्त होने पर दो सौ कोस तथा पांचों निमित्तों के एकत्रित हो जाने पर चार सौ कोस अर्थात् आठ सौ मील भूमि में जल बरसता है।

(३१)

गर्भ प्रसव होने (बरसने) का काल

गरभ धारण के समय, देखो पांचूं अंग ।
* छः महीनां साढी पनरे दिनां, मेह बतावै रंग ॥
सो तिथि सो नक्षत्र हो, वार चार वों होय ।
योग सोलवो लेखवो, करण तीसरो जोय ॥
शुक्ल पक्ष जे होय तो, कृष्ण पक्ष के मांय ।
दिन की वेला होय तो, रात समय के मांय ॥
प्रातः संध्या होय तो सायं लेवो जोय ।
जै संध्या सायं हुवैं, तो प्रातः विरखा होय ॥

गर्भ-धारण के समय, समय के पाँचों अंग (तिथि, नक्षत्र, बार, योग और करण) को देखें । गर्भ-धारण के समय से साढे छह महीने और चार प्रहर के पश्चात् वर्षा अपना रंग बतावेगी । गर्भ-धारण के समय जो तिथि हो, वर्षा के समय ठीक वही तिथि होगी और उस दिन वाला ही नक्षत्र होगा । किन्तु, वार उस दिन से चौथा तथा योग सोलहवा और करण तीसरा होगा ।

---

* (१९५) दिन, अर्थात् मार्गशीर्ष शुक्ला द्वितीया को मेघ-गर्भ धारण करे तो आषाढ कृष्णा द्वितीया को वर्षा होगी । कदाचित पौष कृष्णा पंचमी को गर्भ-लक्षण देखने में आवे तो आषाढ शुक्ला पंचमी को या उसके आगे-पीछे एक दिन वर्षा होगी ।

इसलिये मार्गशीर्ष से चैत्र तक गर्भ-धारण लक्षण देखें और इसके फलस्वरूप आषाढ से आश्विन तक दिवस-गणना कर वर्षा-ज्ञान प्राप्त करें ।

गर्भ-धारण के सम्बंध में "गर्भ-प्रकरणान्तर्गत" मेघ-गर्भ का समय देखलें ।

गर्भ-धारण के समय यदि शुक्र पक्ष होगा तो वर्षा के समय कृष्ण पक्ष और कृष्ण पक्ष होगा तो वर्षा के समय शुक्र पक्ष होगा। इस प्रकार गर्भ-धारण के समय प्रातःकालीन सन्ध्या होगी तो वर्षा के समय सायंकालीन सन्ध्या होगी और कदाचित गर्भकाल का समय संध्या (सायंकालीन) होगा तो वर्षा प्रातः काल में होगी।

(३२)

वायु बादल भी ईं तरां, होवेगा विपरीत।
गरभ धारण का बाद में, या ही बरसण की रीत॥

इसी प्रकार से गर्भ-धारण के समय बादल पूर्व में उत्पन्न हुए हों तो वर्षा के समय वे, पश्चिम से आकर बरसेंगे। कदाचित पश्चिम मे उत्पन्न हुए हों तो वर्षा के समय वे, पूर्व से आवेंगे। इसी प्रकार से अन्य दिशाओं के लिये भी समझ लें। यही बात (नियम) वायु के लिये भी है। गर्भ-काल के समय वायु यदि पूर्व का रहा होगा तो वर्षा के समय यह पश्चिम का होगा। अर्थात् जिस दिशा से ये वायु-बादल गर्भ धारण के समय उत्पन्न होंगे, वर्षा के समय ये विपरीत दिशा के होंगे।

(३३)

* जिण दिन होवै गरभड़ो, तिण थक्की छह मास।
ऊपर पनरा दीहड़ा, बरसै मेह सुगाज॥

आगामी वर्षा का गर्भ जिस दिन हो उससे ठीक छः महीने और पन्द्रह दिन पश्चात ही मेह बरसता है।

---

* गरब गया पूठै थयें, गणती मइना सोह।
दाड़ा पन्नर ऊपरे, बाट मेह नी जोह॥

आकाश में गर्भ के लक्षण जिन दिनों में प्रतीत हों उन दिनों के साढे छः मास के पश्चात ही वर्षा बरसने की प्रतीक्षा करनी चाहिये।

(३४)

पोस अन्धारा पाख में, जै दिन बादल होय ।
सावण सुद तेता दिनां, मेवलो लेशो जोय ।।

पौष मास के कृष्ण पक्ष में जितने दिन आकाश में बादल रहें और वर्षा न हो तो इस लक्षण से श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में उतने ही दिन वर्षा होगी ।

(३५)

माघ उजाले पाख में, जे दिन बादल होय ।
सावण वद तेता दिनां, मेवलो लेशो जोय ।।

माघ मास के शुक्ल पक्ष में जितने दिन आकाश में बिना वर्षा के बादल रहे तो श्रावण कृष्ण पक्ष में उतने दिन वर्षा होगी ।

(३६)

माघ अंधारा पाख में, जै दिन बादल होय ।
तेता दिन भादू सुदी, मेवलो लेशो जोय ।।

माघ मास के कृष्ण पक्ष में जितने दिन बिना वर्षा हुए बादल दिखाई देते रहे तो आगामी भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष के उतने ही दिन बरसने के होंगे ।

(३७)

फागण ऊजला पाख में, जै दिन बादल होय ।
कृष्ण भादवो के सुद आसोंजाँ, मेवलो आछो जोय ।।

फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष में आकाश में बिना बरसे जितने दिन बादल रहेंगे तो आगामी भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में अथवा आश्विन मास के शुक्ल पक्ष में उतने दिन वर्षा होगी ।

(३८)

बेऊ पख चैती तणां, जै दिन बादल छाय ।
दिनां सराधां के काती सुदी, क्रम थी बिरखा थाय ।।

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में अथवा कृष्ण पक्ष में उपरोक्त प्रकार के लक्षण आकाश में दिखाई दे तो इसके परिणामस्वरूप क्रमशः आश्विन कृष्ण एवं कार्तिक शुक्ल पक्ष में वर्षा होगी।

नोटः—यहाँ प्रथम चैत्र शुक्ल पक्ष और पश्चात् कृष्ण पक्ष आया है, यह कृष्ण पक्ष राजस्थान में प्रचलित बैसाख कृष्ण पक्ष है ऐसा समझें और वर्षा, आश्विन कृष्ण पक्ष के स्थान पर कार्तिक कृष्ण पक्ष में होगी। इसी प्रकार से सं० ३४ से ३७ तक भी समझें।

(३९)

जुआरी हातम पौहनी, रूडी आठम नौम।
गरब जये अंगास तो, मेह मसात्रै धौम॥

पौष शुक्ला सप्तमी, अष्टमी और नौमी के दिन आकाश में गर्भ के लक्षण दृष्टिगोचर हों तो यह निश्चित है कि ठीक समय पर जोर से वर्षा होगी।

(४०)

गरभै च्यारूं मास, गाज बीज बरसै नहीं।
कार्तिक सेती माघ, तो चौमासे झड़ लगै॥

कार्तिक से माघ तक इन चार महीनों में गरजना, बिजली चमकना और वर्षा होना आदि लक्षण नही हो तो आगामी चातुर्मास (वर्षा काल) में वर्षा की झड़ी लग जावेगी।

(४१)

फागण गर्भ्यो जोय, तो माहोटा माघजी।
झड़ सावण जिमिलाग, ऊनालूं अन नीपजै॥

फाल्गुन मास में गर्भ हो तो श्रावण के समान झड़ी लग कर उन्हालू साख के उत्पादन में वृद्धि कर देती है।

(४२)

चैत्र सुदी रा दस दिनां, जे करै न इन्द्र उफांण ।
तो काती सूं माघां तलक, पक्या गरभ लो जांण ॥

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष (नवरात्रि) के दसदिनों तक यदि बून्दा-बांदी न हो तो यह समझलें कि कार्तिक मास से लगाकर माघ मास तक के सारे ही गर्भ पक्के होगये हैं ।

(४३)

गर्भ प्रसव होने के समय के दस लक्षण

गाज बीज बादल हवा, मेह शीत अति होय ।
मोघ कुण्डल गरमी घणी, ऊनो मिलसी तोय ॥
दस लक्खण जो ए कह्या, ज्यूं ज्यूं इधका होय ।
मेह उसो ही होवसी, सोच करो मत कोय ॥

गर्जना, बिजली चमकना, बादल, हवा, वर्षा अतिशीत, अति उष्णता, उष्ण जल, मोघ और कुण्डल होना ये दश लक्षण गर्भ को बरसाने वाले हैं । ज्यों ज्यों ये अधिक होंगे, वर्षा भी उसी प्रकार से अधिक ही होगी ।

(४४)

नक्षत्र विशेष में धारण हुए गर्भों से वर्षा ज्ञान

दोनूं षाढा भाद्रपद, रोहण होवै साथ ।
समयसार लक्षण सभी, तो भारी व्है बरसात ॥

गर्भ-धारण के समय रोहिणी, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, पूर्वा भाद्रपदा और उत्तरा भाद्रपदा इन पांच नक्षत्रों में से कोई-सा भी नक्षत्र हो और काल विशेष के अनुसार उन लक्षणों से पुष्टि हुई हो तो इसके कारण वर्षा काल में अधिक वर्षा होगी ।

(४५)

शताभिख स्वात अर आदरा, मघा असलेखा होय ।
गरभ धारण व्है इण दिनां, तो बोहली पुस्टि होय ।।
मिगसर दिन आठ गिण, खट दिन पोस सुजांण ।
सोले ले दिन माघ का, फागण चौवीस मांन ।।
चैतर दिन बीस गिण, बैसाखां दिन तीन ।।
गरभ पक्यां सूं लेय कर, इतरा दिन लेवो गिण्ण ।।
भौम अन्तरिच्छ दिव्य थकी, जे होवै उत्पात ।
तो मत आशा थें करो, ए दिन यूं ही जात ।।

आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, स्वाति एवं शतभिषा इन पांच नक्षत्रों में से कोई भी नक्षत्र (किसी भी महीने में) में गर्भ-धारण हो तो इसकी पुष्टि करने वाले सामान्य लक्षण बहुत दिन तक चलते हैं । अतः उस गर्भ का जल बहुत दिन बरसता है । जैसे—मार्गशीर्ष के गर्भ आठ दिन, पौष के छः दिन, माघ के सोलह दिन, फाल्गुण के चौबीस दिन और चैत्र के बीस दिन तथा वैसाख के गर्भ तीन दिन बरसते हैं । अर्थात् गर्भ पकने से लेकर इतने दिनों तक विशेष वर्षा की झडी लग जाती है । यदि भौम, अन्तरिक्ष एवं दिव्य में से किसी भी उत्पात से पुष्टि होने के दिनों में गर्भ नष्ट होने का प्रसंग आ जाय तो फिर इतने दिनों तक वर्षा नहीं होगी ।

(४६)

तिथि मुहुरत नखत अर, करण दिसा जे होय ।
स्निग्ध अब्द धारण हुयां, श्रेष्ठ कहे सब कोय ।।

गर्भ चाहे जिस तिथि, मुहुर्त, नक्षत्र, करण और दिशा में धारण हो किन्तु स्निग्ध बादलों का गर्भ, सभी लोग श्रेष्ठ ही बताते हैं ।

(४७)

धारण वला पाप ग्रह, नक्षत्र युक्त जे होय ।
ओला पड़ै बिजली गिरै, मच्छी सहितो तोय ।।

धारण वेला शुभ ग्रह, देखे या मिल जाय ।
शुभ को फल शुभ ही हुवै अधिको जल बरसाय ।।

गर्भ-धारण होते समय जो नक्षत्र हो और वह पाप-ग्रहों (सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु) से युक्त हो तो मेह बरसने के समय ओले (बर्फ के पत्थर) पड़ेंगे, बिजली गिरेगी, अथवा जल के साथ आकाश से मछलियों की वर्षा होगी ।

अगर-गर्भधारण के समय नक्षत्र शुभ-ग्रह सूर्य या चन्द्र के साथ हो अथवा उन्हें देखते हो तो मेह बरसने के समय अधिक जल बरसेगा ।

(४८)

सूर्य नक्षत्रानुसार गर्भ-धारण होने और बरसने का ज्ञान

* मूल नखतां सूरज आवै । असनी तक समयो बितावे ।।
गर्भ धारण की आ है वला । आदरा सूं स्वाती बरसेला ।।
मूल गरभ आदरा पके, उत्तराखाडा पुक्ख ।
पूरवाखाडा पुनरवसु, खोले विरखा मुक्ख ।।
श्रवण असलेखा में पके, धनु मघा ले जाय ।।
सतभिखा पेली । फलगणी, भादू उत्तरा हस्त ।
पेले भादू उत्तरा, फाल्गुणी लावै प्रशस्त ।।
रेवती चित्रा आवसी, असनी स्वाती जोय ।
पांच घाट दो सौ दिनां, निस्चै विरखा होय ।।

मूल नक्षत्र पर सूर्य के आने से लगाकर जब तक सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर रहता है, तब तक गर्भ धारण होने का समय है और आर्द्रा पर सूर्य आकर स्वाति पर पहुँच कर रहेगा तब तक मेह बरसने का समय है । इसे इस प्रकार से समझें:—मूल का गर्भ आर्द्रा में पक कर प्रसव (बरसता) होता है । पूर्वाषाढा का पुनर्वसु में उत्तराषाढा का

---

* पौष मास में सूर्य मूल नक्षत्र पर आता है ।

पुष्य में, श्रवण का अश्लेषा में, धनिष्ठा का मघा में, शतभिषा का पूर्वाफाल्गुणी में, पूर्वा भाद्रपदा का उत्तरा फाल्गुणी में, उत्तरा भाद्रपदा का हस्त में, रेवती का चित्रा में और अश्विनी का गर्भ स्वाति में वर्षा करता है। इस प्रकार गर्भ-धारण के दिन से एक सौ पचानवें (१९५) दिन बाद अवश्य वर्षा होती है।

(५०)

पौसी मावस मूल पछी, भरणी चन्दो जाय।
रवि आदरा सुं स्वाती गयां, बिरखा जोग बणाय।।

पौष कृष्णा अमावस्या के समीप मूल नक्षत्र के पश्चात पूर्वाषाढा नक्षत्र की आदि से भरणी नक्षत्र तक के नक्षत्रों पर चन्द्रमा हो और इनमें से जिन-जिन नक्षत्रों के दिनों में मेघ गर्भ सम्भव (आकाश में मेघ-दर्शन, सुखद-वायु आदि चिह्न) दिखाई दे तो इसके प्रभाव से आगामी वर्ष, आर्द्रा से स्वाति पर्यंत नक्षत्रों पर सूर्य रहेगा तब तक के समय में नक्षत्र-गणनानुसार उस नक्षत्र के उन-उन दिनों में वर्षा होने की संभावना रहती है।

(५१)

चन्द्रमा के नक्षत्रानुसार गर्भ गलने का ज्ञान

चन्दो आवै अस्वनी, मूल मेह नहिं होय।
भरणी आयां पूर्वाखडां, किरतका उत्तरा जोय।।
हुवै रोहणी श्रवण गलै, धन जावै मिरगां तणौ।
आदरा सूं सतभिखा गले, वसूं सूं भादूं पेलो गिणा।।
भादूं दूजो गलसी खरो, चन्दो पुख जो आय।
असलेखा सूं रेवत गली, अर मघा अस्वनी खाय।।

पौषे मूलभरण्यन्तमार्द्रादि दश तारकाः।
चन्द्रचारेण गर्भन्ति वर्षन्ति रविचारतः।।

गर्भ-धारण के दिन चन्द्रमा का नक्षत्र अश्विनी हो तो मूल नक्षत्र में होने वाली वर्षा नहीं होगी। भरणी नक्षत्र होने से पूर्वाषाढा में, कृतिका होने से उत्तराषाढा में, रोहिणी होने से श्रवण में, मृगशिरा हो तो धनिष्ठ में, आर्द्रा हो तो शतभिषा में, अश्लेषा हो तो रेवती में और मघा हो तो अश्विनी में होने वाली वर्षा नहीं होगी और जो नक्षत्र नहीं गलेंगे वे, समय पर बरसेंगे।

(५२)

गर्भ का समय पर प्रसव न होने का कारण एवं बरसने का ज्ञान

धारण काल के सुभ लच्छणे, जो गरभ पुस्ट हुय जाय।
कुग्रह जोग निमित्त बल, वो नहीं समय पर आय।।
समय लाग गोपय कठिन, होय थनां के मांय।
यूं पांणी पण काठौ हुवे, अन्तरिच्छ में जाय।।
जीं दिन बो धारण हुयो, बरस एकके बाद।
बींज मिति में बरसी, ओला ले बरसात।।

गर्भ-धारण के समय सामान्य तथा विशेष लक्षणों के कारण जो गर्भ पुष्ट हो जाय वह यदि कुग्रहो के योग से अथवा भौम, अन्तरिक्षादि निमित्तों के कारण न बरसे तो जिस प्रकार गाय के स्तन में अधिक दिनों तक पड़ा रहने वाला दूध स्तनों को कठोर कर देता है, उसी प्रकार यह अन्तरिक्ष में (विशेष शीतल वायु आदि के कारण) कठोर रूप (ओलों के समान-रूप में) धारण कर लेता है और जिस मिति (दिन) को यह गर्भ-धारण हुआ है उसके ठीक एक वर्ष बाद (उसी तिथि को) ओलों सहित जल बरसेगा।

वर्षा के छः कारण

(५३)

वायु चालै जोर सूं, क हुय जावै बन्द ।
क तो गरमी व्है घणी, क पड़े रात ने ठण्ड ॥
क तो बादल् हुवै नहीं, व्है तो नहीं समाय ।
लक्खण छह विरखा तणां, सासतर दिया बताय ॥

वायु का अत्यधिक वेग से चलना, या इसका सर्वथा बन्द हो जाना, गरमी का अत्यधिक होना, या सर्वथा इसका अभाव हो जाना जिसके कारण रात में सर्दी लगे या तो आकाश सर्वथा स्वच्छ ही हो अथवा इसमें अत्यधिक बादल हों तो विद्वान लोग शास्त्रों का आधार लेकर इन लक्षणों से वर्षा शीघ्र किम्वा विलम्ब से आने का निश्चय कर लेते हैं ।

मेघ-वर्षण निमित्त ज्ञान

(५४)

पुष्पवती काती हुवै, मंगसर करै सिनान ।
पालो पडै जे पोस में, माघ बादला जाण ॥
फागण आछो वायरो, भीना बादल् चैत ।
आभो पंचरंगो वैसाख व्है, गरमी होवे जेठ ॥
इण विध महिना आठ जे, जिण वरसां वरताय ।
तो चौमासो आछो हुवै, चार मास वरसाय ॥

जिस प्रकार गर्भ-धारणार्थ महिला को रजोवती होना आवश्यक है और रज-प्रवृत्ति से पूर्व उसका सर्वांग विकास होना भी परमावश्यक है उसी प्रकार से विद्वानों ने भी वर्षा हेतु कार्तिक मास को पृथ्वी के लिये पुष्प-निष्पत्ति मास माना है । इसके बाद मार्गशीर्ष को रजोनिवृत्ति-स्नान का मास बताया है । तत्पश्चात् के महीनों का विभाजन इस प्रकार किया है ।

पौष मास का तुषार-पवन युक्त होना, माघ मास बादलों से युक्त होना, फाल्गुण मास पृथ्वी के यौवन का मास मानकर इसमे उत्तम वायु युक्त किंचित हिम होना, चैत्र मास में थोड़े-थोड़े शीतल बादल होना, वैशाख मास में आकाश की स्थिति पंचरंगी होना और ज्येष्ठ मास में अत्यन्त ऊष्मा अर्थात् गरमी होना, वर्षा के लिये शुभ माने गये हैं।

ये लक्षण मासाष्टक-लक्षण कहे जाते हैं। इनके नियमित होने पर आगामी वर्षा काल के अर्थात् आषाढ़ से आसोज तक के चारो महीनों मे मनोवांछित वर्षा होती है।*

---

* १. "कार्त्तिके पुष्पनिष्पत्ति मार्गे स्नानं मत किल।
पौषे, त्वत्र शुभोवतो नित्यं माघो घनान्वितः॥
फाल्गुनः फल्गुवातः चैत्रे किंचित्पयोदितम्।
वैशाखः पंचरूपी च ज्येष्ठश्चोष्मान्वितः शुभः॥
मासाष्टक निमित्तेन चतुष्टयमभीष्टदम्॥"

श्री विजयप्रभसूरि विरचित मेघमाला विचार, सामान्य माहिती श्लोक ६, ७.

२. "स्यात्कार्तिके पुष्पवती च मार्गे,
स्नानं च पौषे हि तुषार वात।
माघेतु नित्य घनमंडिता च,
× स्यात्फाल्गुने चाल्पसुवान्वितं सत्॥
चैत्रे किंचित्पयोयुक्ता, वैशाखे पचरूपिणी।
ज्येष्ठे मासे तदानून, बहुघर्मान्विता तथा॥
आकाशे पचवर्णानि श्वेतादि. पच रूपिणः।
माशाष्टक निमित्तेन, चतुष्टयमभीष्टदः॥"

पं० नारायणप्रसाद मिश्र द्वारा अनुवादित मेघमाला, मास-मास के गर्भ लक्षणान्तर्गत श्लोक ३, ४, ५.

× पाठान्तरः—
स्यात्फाल्गुनेयुवती तथैत्र।

प्रकृति से वर्षा ज्ञान

(१)

गूंज करै गोडावणां, लड़ै, सांप री मासी ।
अधिक अमूंजो माघजी, मेह तो चौकस आसी ।।

गोहों का बोलना, बिल्लियों का परस्पर लड़ना, गरमी का अधिक अनुभव होना इन लक्षणों को देख कर कवि, माघजी को सम्बोधन करते हुए कहता है कि ये लक्षण निश्चित वर्षा आने को सूचित करते हैं ।

सूर्योदय द्वारा वर्षा ज्ञान

(२)

आथम तो चकचौल, ऊगन्तो झलहल करै ।
माघा मेह अतोल, खाली सर सै भरभरे ।।

प्रातःकालीन उदय होता हुआ सूर्य अत्यन्त तीक्ष्ण गरमी देवे तो यह जोर की वर्षा होने की सूचना है ऐसा समझ लें ।

(३)

करण हवारे फूटते, आबे जे रतवाय ।
ई वरसै, पण हांजनो, रतवा कोरो जाय ।।

प्रातःकाल में सूर्य की किरण निकलते (सूर्योदय होते समय) ही आकाश के बादल लाल हो जाय तो इस लक्षण से वर्षा होती है । किन्तु, सन्ध्या के समय (सायंकाल के समय) आकाश का रंग लाल हो तो इस लक्षण से वर्षा नहीं होगी ।

(४)

पोह सविभल पेखजै, चैत निरमलो चंद ।
डंक केव्है सुण भड्डली, मण हूं ता अन मंद ।।

पौष मास में घने बादलों का होना, चैत्र शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा का निर्मल दिखाई देना अर्थात् इस पक्ष में बादल आदि न होना, इन लक्षणों से इस वर्ष अच्छी फसल होने की सूचना मिलती है। अनाज बहुत ही सस्ता होगा।

वर्षा के समय जल के बुदबुदों से भावी वर्षा का अनुमान

(५)

जेणें वर जेवा परपोटा, ग्रे णे ग्रे वो पांणी ।।

जिस वर्षा में, बरसते हुए मेह की बूंदों के जैसे बुदबुदे उठेंगे उसी प्रकार से वर्षा होगी। अर्थात् बुदबुदे कम होंगे तो वर्षा कम होगी और यदि ये अधिक होंगे तो अधिक वर्षा होगी।

(६)

ओसा वदता पाणि में, जे णे वर पर पोट ।
ओ सो वदतो में वरे, निश्चे पड़े न खोट ।।

बरसते हुए मेह की बूंदो से जल में उठने वाले वुदबुदों से यदि वे कम हो तो कम और अधिक हो तो अधिक वर्षा होने की निश्चित सूचना मिलती है।

(१)

ऋतु का निर्णय

एक मास आगे रितु जांणो। आधो जेठ असाड़ बखाणो ।।

ऋतुएं व्याप्त होने का समय निश्चित करने के लिये यह नियम है कि एक मास पूर्व मान लेना चाहिये। अर्थात् ऋतु व्याप्त होने का समय, एक मास पहले ही आ जाता है। तात्पर्य यह है कि आधा ज्येष्ठ मास व्यतीत हो जाने पर आषाढ़ माना जाने लग जाता है।

(२)

कड़ा पड़े जे णे वरे, ई वर मातो थाय ।
थई जाय जे मावटो, तरे लई ई वाय ।।

जिस वर्ष ओले गिरते हैं, वह वर्ष अच्छा होता है। अर्थात् इसके प्रभाव से दोनों फसलें रबी और खरीफ अच्छी पकती हैं। किन्तु यदि मांवटा हो जाय तो अच्छा नहीं माना जाता है। क्योंकि, इससे भूमि की तरी शुष्क हो जाती है।

(३)

पांणी पालो पादसा, उत्तर सूं आवै ॥

वर्षा, पाला (हिम) और बादशाह उत्तर दिशा से ही आते है। अर्थात् हिमालय उत्तर दिशा में हैं इसकी पहाड़ियों में बर्फ पड़ने से ही राजस्थान में शीत की लहरें आती है जिसके प्रभाव से यहाँ पाला पड़ता है और राजस्थान पर आक्रमण करने वाले यवन, अधिकतर उत्तर दिशा से ही आये है। अतः यह कहावत बन गई है।

वर्षा नहीं होने के सम्बन्ध में
गाय और भैंस के प्रसव से वर्षा ज्ञान

(१)

गऊ दोय अर महिषी दोय,
राज दुराजा विगरै होय।
तीन जणें तो परजा दण्ड,
हा हा कार मचै नव खण्ड ॥
पौस माघ जणें जे महिषी गाय,
धणी मरे के धन मर जाय ॥

गाय, भैंस के दो बच्चे हो तो इसके फलस्वरूप राजाओं में विग्रह, तीन हो तो प्रजा को क्षति होती है। चारों ओर हा हा कार मच जाता है। भैंस और गाय के पौष-माघ में प्रसव होना अशुभ माना गया है। यदि ऐसा हो जाय तो इसके प्रभाव से या तो वह प्राणी ही मर जाता है अथवा उसका स्वामी मर जाता है।

(२)

रात्यूं गाय पुकारै बांग।
काल पड़ै क उदबुद सांग॥

रात्रि के समय में गौओं का जोर-जोर से बोलना अपशकुन होता है। जिस वर्ष ऐसा दिखाई दे तो यह निश्चित है कि उस वर्ष दुर्भिक्ष होगा अथवा कोई अनहोनी दुर्घटना होगी।

(३)

गाम मयें तो कूतरा, हेम मयें हेंयार।
ई जे रोवें तो पडं, गौ हत्यारो कार॥

रात्रि के समय या दिन में गाँव में कुत्तों का और जंगल में सियारों का रोना अशुभ लक्षण है। जिस वक्त ऐसा होता है उस वक्त घोर अकाल पड़ता है।

(४)

* पेली विरखा आवतां, नदियां वेग चडाय।
तो यूं जाणो सायबा, विरखा व्हैली नांय॥

वर्षा काल में प्रथम वर्षा के होते ही नदियें उफन आवे तो समझ लें कि वर्षा की सारी ताकत इसी में समाप्त होगई। अब वर्षा या तो होगी ही नही और यदि हुई भी तो अपर्याप्त होगी।

(५)

गार पडे आकाश सूं, जमे नदी सर ताल्।
ढोर मरे वन जन्तु सब, पड़ै अचिन्त्यो काल्॥

आकाश में से ओले गिरना, नदी, सरोवर, तालाब आदि का जल जम जाना, जिस वर्ष इस प्रकार के लक्षण हों अर्थात् ऐसी सर्दी

---

* चौमासो लागतां, जे नदियाँ उफणाय।
तो जांणीजो सायबा, आगे विरखा नांय॥

पड़े तो उस वर्ष जंगल के पशु-पक्षी मर जावेंगे और अचानक ही दुर्भिक्ष हो जावेगा।

नोट—विक्रम सम्वत् १९६१ के माघ महीने में ऐसा योग आया था, जिसके परिणामस्वरूप उस वर्ष रबी की फसल नष्ट होगई और आगामी वर्ष विक्रम सम्वत्१९६२ में भी वर्षा की कमी ही रही।

वर्षा काल में सर्दी पड़ने पर वर्षा ज्ञान

(६)

जे वर सोमाहा भये, टाढ़ पड़े अदवेस।
मेंह वरे तो नें पसे, थाय धान नी खेस॥

जिस वर्ष, वर्षा काल (चातुर्मास में) बीच ही में सर्दी पड़ने लग जाय तो इस लक्षण से समझ लें कि अब वर्षा नहीं होगी जिसके परिणामस्वरूप अनाज की खींच अर्थात् तंगी हो जाने के कारण महंगाई होगी।

(७)

न भेवे काकड़ो तो क्यूं टेरे हाली लाकड़ो॥

कर्क संक्रान्ति के दिन यदि वर्षा न हो (किसी किसी का मत है कि कर्क राशि पर जब सूर्य हो तब) तो हल जोतना व्यर्थ है। क्योंकि यह लक्षण तो अकाल पड़ने का है।

(८)

सिंह गाजे तो हाथी लाजे॥

सिंह राशि पर सूर्य हो उन दिनों में बादलों की गर्जना होने से यह निश्चित है कि हस्त नक्षत्र पर जब सूर्य होगा तब वर्षा कम होगी।

परिवेश कुण्डल प्रकरण

भिन्न भिन्न ऋतुओं में विभिन्न रंग के कुण्डल द्वारा वर्षा ज्ञान

(१)

लील करण सो लीलो हुवै, शिशिर रितु के मांय ।
हुवै मोर का रंग ज्यूं, जे वसन्त रितु में आय ।।
चान्दी वरणा हुय जाय, जे उन्हालो आयां ।
तेल सरीखो रंग, विरखा रितु समायां ।।
खीर सरीखो होय जे, शरदरितु परवेश ।
पाणी सरीखा रंग को व्है हेमन्त विसेस ।।
पण व्है खण्डत नहीं, पूरण स्निग्ध जे होय ।
तो कल्याणदायक नीवड़ै, लेवो सुभिक्षकर जोय।।

सूर्य किम्वा चन्द्र के चारों ओर कुण्डल, यदि शिशिर-ऋतु में नीलकण्ठ पक्षी के रंग-सा, बसन्त ऋतु में मोर के रंग-सा, ग्रीष्म-ऋतु में चान्दी के रंग-सा, वर्षा-ऋतु मे तेल के समान, शरद-ऋतु मे क्षीर (दूध) के समान और हेमन्त-ऋतु में जल के समान रंग वाला हो एवं खण्डित नही हो अपितु पूर्ण तथा स्निग्ध हो तो कल्याणदायक और सुभिक्ष करने वाला होगा ।

(२)

इक रंगी रितु छाजती, स्निग्ध छुरी की धार ।
बादल आवै तेज सहित, पीलो रंग विचार ।।
घेरो लाग्यो भान के, ओ लक्खण परवेस गिण ।
इण दिन आवै मेवलो, नहिं लगावै एक छिण ।।

जिस दिन ऋतु के अनुकूल, स्निग्ध एवं छुरी की धार के समान तीक्ष्ण, बादलों से युक्त, तेज सहित पीले रङ्ग का सूर्य के चारों ओर कुण्डल दिखाई दे तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि उस दिन वर्षा हो जावेगी ।

सूर्य के कुण्डल द्वारा वर्षा ज्ञान

(१)

कुण्डल स्वेत सूरज के होय। निश्चै एक तथा हो दोय।
तो परचण्ड पवन चढ आवै। पड़ै वृच्छ दसूं दिस धावै॥

सूर्य के चारों ओर एक या दो श्वेत कुण्डल हो तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि जोर की वायु (आंधी) बहेगी और परिणाम-स्वरूप वृक्ष उखड़-उखड़ कर गिर पड़ेंगे।

(२)

* सूरज के कुण्डल हुवे घणा दूरो घणा रंग।
मेघ घुमण्डे माघजी, घर घर चालै गंग॥

सूर्य के चारो ओर बहुत बड़ा अनेक रंगों से युक्त कुण्डल हो तो इसे अत्यन्त वर्षा होने की अग्रिम सूचना समझ लें।

(३)

चन्द्र के कुण्डल से वर्षा ज्ञान

* चन्द्र कुण्ड जद देखलो, तो चाले पवन परभात।
चन्द्र कुण्डजुन जलहरी, तो कहैं क विरखा वात॥

चन्द्रमा के चारों ओर केवल कुण्डल ही हो तो दूसरे दिन वायु बहेगी। किन्तु चन्द्रमा के समीप यदि जलहरी हो तो वर्षा होगी।

---

* सूरज कुण्ड अर चान्द जलेरी, तो टूटा टीबा भरैली डेरी॥

जिस दिन सूर्य के चारों ओर कुण्ड एवं चन्द्रमा के चारों ओर जलेरी दिखाई दे तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि इतनी अधिक वर्षा होगी कि बालू के टीले भी पानी के साथ बह जावेंगे और तालाब जल से भर जावेंगे।

यही आगे "सूर्य किम्वा चन्द्र के कुण्डल द्वारा वर्षा ज्ञान" के अन्तर्गत सं० १० पर भी है।

(४)

धूम्र कुण्ड रजनीस के, एक नजीक एक दूर ।
माघा मेह बरसे नहीं, धरा उड़ावे धूर ।।

माघ को सम्बोधन करते हुए कवि कहता है कि, चन्द्रमा के चारों ओर धूंए के रंग के दो कुण्डल (एक चन्द्रमा के समीप और एक कुछ दूर) हो तो इस लक्षण से वर्षा नहीं होगी अपितु जोर की वायु (आंधी) चलेगी ।

(५)

चौड़ा कुण्डल तारा मांही । वाय बजावे विरखा नाहीं ।।
जे बरसे तो झड़ी लगावै । सोता नाग पताल जगावै ।।

चन्द्रमा के चारो ओर बड़ा कुण्डल हो और इसके अन्दर यदि कोई तारा दिखाई दे तो इस लक्षण से वायु चलेगी और वर्षा नहीं होगी । कदाचित वर्षा हो तो फिर झड़ी ही लग जावेगी ।

(६)

नयो चान्द ऊगे जद देखो । स्निग्ध बादली कुण्डल पेखो ।।
इण लक्खणां आव मेह । बात सही है नहिं सन्देह ।।

नवीन चन्द्रमा के उदय होने पर बादल के रंग-सा कुण्डल चन्द्रमा के चारों ओर दिखाई दे तो इस लक्षण से निःसंदेह वर्षा होगी ।

सूरज किम्वा चन्द्र के कुण्डल द्वारा वर्षा ज्ञान

(१)

ससि सूरज के कुण्डिया, नित नित नवला होय ।
कै टीडी कै कातरो, भेद बताऊँ तोय ।।

चन्द्रमा एवं सूर्य के चारों ओर नित्य नये-नये कुण्डल बनते रहें तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि इस वर्ष खेती को हानि पहुँचेगी । क्योंकि इस वर्ष टिड्डी, कातरा आदि जीवों की उत्पत्ति विशेष होगी ।

(२)

ससि के कुण्डल् एक व्है, अर रवि के व्है जो दोय।
दिवस तीसरे माघजी, निस्चै विरखा होय ।।

चन्द्रमा के एक और सूर्य के दो कुण्डल देखकर कवि, माघ को सम्बोधन करते हुए कहता है कि, आज से तीसरे दिन वर्षा अवश्य होगी।

(३)

ससि के कुण्डल् सेत हो, सूरज के हो लाल ।
ग्वाल भणै सुण माघजी, बरसै द्वादस माल ।।

ग्वाल नामक विद्वान, माघ को सम्बोधन करते हुए कहता है कि, चन्द्रमा के श्वेत कुण्डल हो और सूर्य के लाल हो तो यह, बहुत वर्षा होने के लक्षण है।

(४)

ससि के कुण्डल् लाल व्है सूरज के व्है सेत ।
उमड़ै पण बरसै नहीं, घरा उडावै रेत ।।

चन्द्रमा के चारों ओर लाल कुण्डल हों और सूर्य के चारों ओर श्वेत कुण्डल हो तो इस लक्षण से आकाश में बादल उमड़-उमड़ कर अवश्य आवेंगे, किन्तु वे बरसेंगे नहीं। इस लक्षण से तो पृथ्वी पर मिट्टी ही उड़ेगी।

(५)

चन्द्र सूरज के कुण्डल् होय। पांच पोर में बिरखा जोय ।।
निपट नजीक लाल रंग साजै। तो घड़ी पलक में मेवलो गाजै ।।

सूर्य किम्वा चन्द्रमा के चारों ओर कुन्डल हो तो पांच प्रहर में वर्षा होगी। कदाचित यह अत्यन्त समीप ही हो और लाल रंग का हो तो अत्यन्त शीघ्र ही वर्षा प्रारंभ हो जावेगी।

(६)

दो दो कुण्डल सूरज ससि, एक नजीक एक दूर ।
माघा झड़ो लगावसी, नदियां बहसी पूर ॥

कवि, माघ को सम्बोधन करते हुए कहता है कि, सूर्य अथवा चन्द्रमा के दो कुण्डल एक समीप में और दूसरा कुछ दूर हो तो इस लक्षण से वर्षा की ऐसी झड़ी लग जावेगी कि नदियें परिपूर्ण एवं जोरों से बहेगी ।

(७)

कुण्डल तीन सूरज ससि होय । भर भादरवै बरसै तोय ॥
गलै साख नदियां गरणावै । पिरथी पर पांणी नहिं मावै ॥

भाद्रपद मास में यदि सूर्य अथवा चन्द्र के चारों ओर तीन-तीन कुण्डल हों तो इस लक्षण से इतनी वर्षा होगी कि जल पृथ्वी पर नहीं समावेगा । इसके परिणामस्वरूप नदियें अपने पूर्ण जोश में बहेगी और बोया हुआ अन्न खेतों में ही गल जावेगा ।

(८)

पंच रंगो कुन्डल हुवे, निशानाथ के दोय ।
यूं ही रवि के दिन तीन लौ, पिरथी परले जोय ॥

चन्द्रमा किम्वा सूर्य के पाँच रंग के दो-दो कुण्डल लगातार तीन दिन तक होते रहे तो यह लक्षण अत्यन्त वर्षा होने का है ।

(९)

सूरज कुन्डल जलहरी, मोर मेंडक को सोर ।
तो दिन दूजे क तीसरे, मेह करेलो जोर ॥

यदि सूर्य के चारों ओर जल का घेरा-सा प्रतीत हो, मोर एवं मेंढकों का जोर-जोर से शब्द सुनाई देता हो तो इस लक्षण से दूसरे या तीसरे दिन अवश्य ही वर्षा आवेगी ।

(१०)

सूरज कुन्डाल्यो चान्द जलेरी,
टूटे टीबा भरज्जा डेरी ।।

आकाश में जल-वाष्प का घनत्व जब बहुत बढ़ जाता है तब सूर्य एवं चन्द्रमा के चारों ओर उन्ही के प्रकाश से गोल चक्र-से दृष्टिगत होने लगते हैं । इस प्रकार से ये बने हुए चक्र सूर्य किम्वा चन्द्रमा के चारों ओर दिखाई दे तो इस लक्षण के परिणामस्वरूप घनघोर-वृष्टि आने की अग्रिम-सूचना है, ऐसा समझें ।

(११)

सोमे सुक्करे सुरगुरे, जे रवि मण्डल होय ।
दूजे तीजे पांचवें, धरा रिलन्ती जोय ।।

सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार इन दिनों में यदि सूर्य के चारों ओर मण्डल (घेरा) दिखाई देवे तो इस लक्षण से दूसरे तीसरे किम्वा पाँचवें दिन इतनी वर्षा होगी कि पृथ्वी हरी-भरी हो जावेगी ।

चन्द्रोदय से वर्षा ज्ञान

(१)

अद्रा भद्रा किरतका, असलेखा अर मघाय ।
चन्दो ऊगे बीजने, सुखथी नरां अघाय ।।

चन्द्रोदय (शुक्ल पक्ष की द्वितीया के दिन) आर्द्रा, भद्रा, कृतिका, आश्लेषा, एवं मघा नक्षत्रों में से कोई-सा भी नक्षत्र हो तो इसके परिणाम स्वरूप मनुष्य सुख से तृप्त हो जावेंगे ।

(२)

भान भौम भद्रा तिथि, उदय होत है चन्द ।
तो बीजे चौथे पांचवें बादल मेह करन्त ।।

शुक्ल पक्ष की द्वितीया के दिन मंगलवार या रविवार में से कोई-सा भी वार हो तो इस लक्षण के प्रभाव से तीसरे, चौथे और पांचवें दिन सदैव वर्षा होती रहती है।

(३)

† सीयाले सूतो भलो, बैठो भलो चौमास।
ऊन्हाले ऊभो भलो, भलीबरस री आस॥

शुक्ल पक्ष की द्वितीया के दिन उदय होने वाला चन्द्रमा शीतः काल मे उदय होते समय सोया हुआ-सा, वर्षा काल में बैठा हुआ-सा और ग्रीष्म काल मे खड़ा हुआ-सा दिखाई दे तो इस लक्षण से यह शुभ उदय माना जाता है।

(४)

१ गुरु शुक्र रवि चन्द्र ने, चन्द्र दरसण जे होय।
तो विरखा होसी घणी, सिरं जमानो होय॥

यदि चन्द्र-दर्शन अर्थात् चन्द्रोदय गुरुवार, शुक्रवार, रविवार तथा सोमवार इनमे से किसी भी वार मे हो तो इसके फलस्वरूप इस वर्ष, अच्छी वर्षा होने की यह शुभ सूचना है, ऐसा समझें। इस वर्ष फसल भी अच्छी होगी।

---

† सीयाले सूतो भलो, बैठो विरखा काल।
उन्हाले ऊभो भलो, चोखो करै सुगाल॥

१ सोमां शुक्रां सुरगुरा, जो चन्दो ऊगन्त।
डंक कहै सुण भड्डली, जल थल एक करन्त॥

२ सोमा सुकरा ऊगै चान,
तो पखवाड़ा में दूणां दाम॥

यहां "चान" शब्द से चन्द्रमा को बताया गया है।

(५)

रवि ग्रस्त सित दूज दिन, नभ चन्द्र तूं भाल् ।
लंकाऊ हुयां तो काल् व्है, धुर दिस करे सुगाल् ।।

शुक्ल-पक्ष की द्वितीया को सूर्यास्त हो उस स्थान को देखो । इस दिन उदय होने वाला चन्द्रमा उदय हुया हुआ इस स्थान से उत्तर की ओर दीखे तो उस मास में सुभिक्ष और दक्षिण की ओर दिखाई तो दुर्भिक्ष-योग समझें ।

चन्द्रमा के रंग से वर्षा ज्ञान

(६)

चन्दो जे पीलो हुवै, के फीको रंग वतावै ।
तो विरखा आछी होवसी, ऐसो जोग जतावै ।।
रगत वरण चन्दो हुयां, खाली वाजै वाय ।
सेत रंग हो जाय तो, विरखा जाय विलाय ।।

आकाश में चन्द्रमा का रंग पीला या फीकापन लिये हुये हो तो इन लक्षणों से वर्षा होगी । यदि चन्द्र का रंग लाल हो तो केवल स्वच्छ वायु ही बहेगा और रजत-वर्ण के समान स्वेत होगा तो वर्षा नही होगी ।

(७)

मास वैसाखां जेठ में, धुरदिश ऊगे चन्द ।
अन्न निपजैला मोकलो, विरखा करै अणन्द ।।

वैशाख अथवा ज्येष्ठ मास में उत्तर दिशा में चन्द्रोदय हो तो धान्य की बहुत उत्पत्ति होगी और वर्षा भी अच्छी होगी ।

चान्द ऊगबाको बखत, देखो ध्यान लगाय ।
दोन्यूं नूंकां सम हुवै, तो विगरै जोग कराय ।।
लंकाऊ ऊंची हुयां, दुरभिख जोग बणाय ।
तीखी सूली ज्यूं हुयां, रोग चोर बे सताय ।।

धूराऊ ऊंची हुयां लोग खुशी हो जाय।
अन निपजैला मोकलो, सस्ता भाव बिकाय॥

चन्द्रोदय के दिन चन्द्रमा के दोनों किनारे समान हों तो विग्रह-कारक, दक्षिणोन्नत हो तो दुर्भिक्ष, तीक्ष्ण-शूलवत् हो तो, व्याधि एवं चोर का भय, और यदि उत्तर की ओर से चन्द्रमा की नौक ऊंची दिखाई दे तो यह शुभ है। इसके प्रभाव से अन्न सस्ता बिकेगा।

उद्‌भिज पदार्थों द्वारा वर्षा ज्ञान

(१)

ऊंट कण्टालो अर रींगणीं, संखाहूली फूलै।
माय बिसारै डीकरा, अर गाय बाछड़ा भूलै॥

वर्षा-ऋतु में यदि ऊंटकटेले, रींगणी एवं शंखपुष्पी पर पुष्प लगे तो इस लक्षण से यह एक ऐसे दुर्भिक्ष का सूचक है जिसमे माताएं अपनी संतति का और गौएं अपने वत्सो का मोह छोड कर इन्हें भूल जावेगी।

(२)

भू पसरी बूंटी फल फूल। पाकै अरक उडावै तूल॥
तो उपजै अड़क धान कहूं तोय। चंवला चिणा मोठ तिल होय॥

भूमि पर फैलनेवाली जड़ी बूंटियों में यदि पुष्प लगे और आक के फल पक कर फूटे जिनमें से रुई निकल कर उडने लगे तो इन लक्षणों से इस वर्ष जगली धान अर्थात् चौले, चने, मोठ और तिल आदि अधिक होंगे।

(३)

गरजा फूटे नत नव, वड़ला में वड़वाय।
मे ओ मे ओ मोरिया, बोल्यें में बरसाय॥

वट-वृक्ष के सुकोमल नई-नई वड़वाइयां निकलना, मोर का मे ओ-मे ओ बारबार अलापना, इन लक्षणों से अवश्य वर्षा होने की सूचना मिलती है।

(४)

जिण दिन लीली बल़े जवासी । मांडै राड़ सांप की मासी ।।
बादल़ रेव्है रात रा बासी । तो यूं जाणौ चौकस मेह आसी ।।

हरा जवासा जल जाय, बिल्लियें परस्पर लड़ती हुई दिखाई दें और रात्रि के बादल प्रातःकाल तक बिना बरसे ही रह जाय तो ये लक्षण अवश्य वर्षा करने वाले माने गये हैं।

(५)

फूल झड़ै वनराय के, अफल्या वृच्छ रह जाय ।
झोलो लागै साख में, अन्न महंगो हो जाय ।।

वृक्षों में फूल लगकर झड़ जाना और उनमें फलों का न लगना जिस समय यह लक्षण दिखाई दे तो समझ लें कि इस वर्ष, अन्न का भाव महंगा रहेगा ।।

(६)

अरध वृक्ष फूलै फल़ै, आधो अफल़ रहाय ।
तो जाणीजै माधजी, बरस करवरो जाय ।।
फूल मार तो करवरौ, फल सूख्यां कण हांण ।
भेद बताऊं माधजी वृच्छा सूं पहचाण ।।

बसन्त-ऋतु में आधे वृक्षों में फल-फूल लगे और आधे वृक्ष में बिना फल एवं फूल के रह जाय तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि इस वर्ष फसल आधी होगी यदि फूल कम लगेंगे तो फसल आधी होगी और फल लगकर वृक्ष पर ही सूख जाय तो इस वर्ष, अन्न नहीं होगा।

(७)

पत्रन में जाल़ो पड़े, फल़ फूलन में कीट ।
झोलो लागे साख में, समयो जासी सीठ ।।

वृक्षों के पत्तों में जाले पड़ जाना, फूल और फलो में कीड़े लग जाना और वृक्षों की शाखाओं में बन्दे लग जाय तो इन लक्षणों

से यह विदित होता है कि इसे खराब वर्ष और दुर्भिक्ष की अग्रिम सूचना समझें ।

(८)

फूले सोहो वनराय, पात वसन्तां झाड़ियां ।
निपजे सातूं नाज, कहै फोगसी सुण माघजी ।।

पतझड़ के पश्चात वसन्तागमन पर समस्त वृक्षादि फलें फूलें तो इस लक्षण से यह वर्ष अच्छा होगा । इस वर्ष समस्त अनाज उत्पन्न होंगे ।

(९)

जूना जल सूं मोथ गेह, आगर मोंझ अंकूर ।
दिन चौथे के पांचवें, नाल़ खाल़ भरपूर ।।

खारी नमक के आगारों में बिना वर्षा, कूएं आदि के जल से नागरमोथे के अंकुर निकल आवे तो इस लक्षण से चार पाच दिन में ही जोरदार वर्षा होगी ।

(१०)

फोंगां निपजे बाजरो, सांगर मोठ सवाय ।
बांवल चंवला नीम तिल, बड़ां ज्वार केवाय ।।

फोग का वृक्ष फले तो बाजरी, खेजडी (शमी-वृक्ष) फले तो मौठ, बबूल फले तो चौले, नीम फले तो तिल एवं बड़ (बरगद) फले तो इस वर्ष जवार उत्पन्न होगी ।

(११)

पान झड़ै भू पर पड़ै, वृच्छ नगन हो जाय ।
तो निश्चै कर जांणजो, सही जमानो थाय ।

माघ, फाल्गुन और चैत्र मास में वृक्षों के पुराने पत्ते (इस पत-झड़ के दिनो में) भूमि पर गिर पड़े तो इस वर्ष अन्न और घास बहुत होगा ।

(१२)

माघ फागण अर चैत में बिरछां झड़ै न पांन ।
तो गायां तरसै घास बिन, नर तरसै बिन धान ।।

माघ, फाल्गुण और चैत्र में यदि वृक्षों के पत्ते नहीं झड़े तो यह वर्ष अकाल का वर्ष होगा। गौएं घास को और मनुष्य अन्न को तरसते रहेंगे।

(१३)

कहै फोगसी सुण माधजी, पीपल फलियो जोय।
तो मोठ बाजरा थोड़ा होसी, अड़क नाज कछु होय ।।

फोगसी नामक कवि माधजी को सम्बोधन कर कहता है कि, जिस वर्ष पीपल वृक्ष अधिक फलता है उस वर्ष यह समझ लेना चाहिये कि मोठ, बाजरी तो कम होंगे परन्तु जंगली अनाज बहुत होगा।

(१४)

वृक्षन फल, विपरीत, जब उलट पुलट लागन्त ।
पड़े काल भयभीत यूं, आगम लखियो मीत ।।

यदि वृक्षों पर एक दूसरे के विपरीत फल लगे तो ऐसे लक्षण भयंकर दुर्भिक्ष के आगमन के समय होते हैं, ऐसा समझ लेना चाहिये।

(१५)

रुत बिना फूले फल, के रुत पलटो देखाय ।
घोर काल आयो गिणो, बिन पांणी तड़फाय ।।

जिस वर्ष असमय में ही वृक्षों के फल फूल लगे अथवा ऋतु पलटी हुई (जो ऋतु होनी चाहिये वह न होकर कोई अन्य ऋतु का ढंग हो) हो तो यह, भयंकर दुर्भिक्ष होने की अग्रिम सूचना है। वर्षा के अभाव में प्राणी जल बिना छटपटाते रहेंगे।

(१६)

बन में जाकर ध्यान सूं देखो। पेड़ बेल का पत्ता पेखो ।।
बिना छेद चीकरणा जो पावो। तो बिरखा आछी यूं जताओ ।।

वर्षा काल में जंगल मे जाकर वृक्ष एवं लताओं के पत्तों को भली प्रकार से देखो। यदि ये छिद्र रहित और चिकने हों तो इस

लक्षण से यह निश्चित है कि इस वर्ष अच्छी वर्षा होगी और कदाचित इसके विपरीत यदि ये रूखे तथा इनमें छेद हों तो यह, वर्षा कम होने की सूचना है।

(१७)

जो वृक्षों के सूखी लाख। रोली पोल्यो बिगड़े साख ।।
लचपच गूंद लाख रस चूवे। तो आफू तेल घी गुड हूवे ।।

लाख, गौन्द एवं गूगल आदि, वृक्षों पर ही सूख जाय तो इस लक्षण से यह समझना चाहिये कि कृषि को रोली, पीलिया आदि रोगों के कारण हानि होगी। कदाचित उक्त रस वृक्षों पर न सूख कर टपक-टपक कर पृथ्वी पर गिरने लग जाय तो यह निश्चित है कि अफीम, तेल, घी एवं गुड़ सस्ते ही बिकेंगे।

(१८)

विरछां लाम्बी कूंपलां, जे फल फूल ना होय ।
घास घणां सुण माघजी, अन्न न निपजै कोय ।।

वृक्षों के कौपले तो लम्बी-लम्बी निकल आये किन्तु उन पर फल या फूल का न होना, अन्न का उत्पादन न होकर घास की बहुलता को सूचित करता है।

(१९)

बन बेरी फूले फले, यूं खेजड ढहगट्ट ।
नहीं अंकुरे बड जटन, व्है दुरभिक्ख हगट्ट ।।
अंकुर फूटे वट जटा, वैसाख जेठ के माय ।
बेंत डोढ परमाण तो, समयो आछो थाय ।।
जे लाम्बी आ होवे नहीं, के बेगी ही वध जाय ।
तो अलप मेह के विरखा घणी, या देरी करके आय ।।

बन-बेरियो पर एवं खेजड़ियों (शमी-वृक्षों) पर आषाढ मास में अत्यन्त पत्ते लगे और फल फूल भी बहुत हो, साथ ही बरगद के पेड़

की जटाएं अंकुरित नही हो तो इन लक्षणों से इस वर्ष, वर्षा का अभाव रहेगा और भयानक दुर्भिक्ष होगा।

कदाचित बरगद की जटाएं बैशाख-जेठ मास में अंकुरित हों और इनमें लम्बे अंकुर उत्पन्न हो जाय तो इस लक्षण से अच्छी वर्षा होने की सूचना मिलती है अतः इस वर्ष सुभिक्ष होगा। किन्तु यही अंकुर (जटाएं) बहुत लम्बी न हो तो इस वर्ष, वर्षा कम होगी और यदि ये नियमित समय से पूर्व ही बढ़ने लग जावेगी तो या तो वर्षा काल शीघ्र ही प्रारम्भ हो जावेगा या इसमें विलम्ब हो जावेगा।

(२०)

बन बेरी अर खेजड़ी, सकल पात झड़ जाय।
सुख आरख असाड़ जे, तो समयो सरस निपजाय॥

आषाढ मास में जंगली बेर (झड़बेर—छोटे छोटे बेर का वृक्ष) और खेजड़ियों के पत्ते झड़ जाय तो यह समझ लेना चाहिये कि इस वर्ष अच्छी वर्षा होगी जिसके परिणाम स्वरूप सुभिक्ष होगा।

(२१)

चन बेरी अर खेजड़ी, अरध पात झड़ जाय।
अरध पात साबत रह्यां, करसण समो केव्हाय॥

झड़बेरी और खेजड़ियों के पत्ते आधे तो पृथ्वी पर गिर पड़े और आधे वृक्षों पर ही लगे रहे तो इस लक्षण से यह समझना चाहिये कि इस वर्ष इतनी ही वर्षा होगी कि जिससे साधारण कृषि ही हो सकेगी।

(२२)

अपणां अपणां देस में, देखो आम फल फूल।
जिण दिस डाली निरफली, उण दिस मेह न मूल॥

---

* बन बेरी अरु खेजड़ी: अर्धपात झड़जाय।
अर्धपात साबत रयां, करसण समी कहाय॥

अपने-अपने देश में व्यक्ति, आम के वृक्षों की ओर देख कर वर्षा का निर्णय करलें। जिस दिशा में इस आम की शाखाएं फल फूल हीन दिखाई दे तो इससे यह निश्चय समझें कि उस दिशा में वर्षा का अभाव रहेगा। इसके विपरीत जिस ओर फल फूल लगे होंगे उधर वर्षा अच्छी होगी।

(२३)

आम आमला सुरजणो, मोलसिरी झड़ जाय।
तो ऊनाली झोलो लगै, कातिक साख न थाय॥

आम, आमला, सहंजने और मौलसिरी के फूल वृक्ष पर से झड़ जाय तो इस लक्षण से यह समझना चाहिये कि गरमी के दिनों में आने वाली रबी की फसल गेहूं, चने आदि को हानि पहुंचेगी और कातिक में प्राप्त होने वाले अन्न जवार, बाजरा (खरीफ की फसल) उत्पन्न ही नहीं होगी।

(२४)

गूने मूल पलास को, सिमट गैन्द सम होय।
ओड खरोली यूं केव्है, मेंहां कमी न कोय॥

पलाश वृक्ष की जड़ सिमिट कर पृथ्वी के भीतर गोल गेन्द के समान हो जाय तो यह लक्षण इस वर्ष अधिक वर्षा होने की अग्रिम सूचना है, ऐसा समझना चाहिये।

(२५)

सांगां गहूं कैर तिल, आकां घणी कपास।
फोगज फूल्यां भड्डली, बंबी समै री आस॥

भड्डली कहता है कि सांगरियें प्रचुरता से हों तो गेहूं की फसल अच्छी होना सूचित करती हैं और कैरों की प्रचुरता तिलों को अधिक उत्पन्न होने की सूचना है। कदाचित आक भली प्रकार से फूले तो इस वर्ष कपास अधिक हो और फोग के फूलने से तो यही प्रतीत होता है कि इस वर्ष, वर्षा अच्छी होगी और सुकाल होगा।

(२६)

निरमल् बीज पलास का, तो अन्न निरमलो होय।
कीड़ो लागे डाण्ड के, थोथे थोथो जोय॥

पलाश के बीज स्वच्छ मिले तो समझ लेना चाहिये कि इस वर्ष अन्न भी स्वच्छ उत्पन्न होगा। किन्तु पलाश के बीजों में कीड़े लगे हुए हों या ये इन कीड़ों के कारण सर्वथा खाली होगये हों तो उसी प्रकार से ही इस वर्ष की फसल में कीड़े लग जाना या अन्न का सर्वथा नष्ट हो जाने की सम्भावना रहेगी।

(२७)

पतझड़ फले पलास, निज सातू अन्न नीपजे।
कैरां घणौ कपास, कूरी मंडवो कांगणी॥

पलाश (ढाक) वृक्ष के समस्त पत्ते गिर जायं और पत्तों से हीन इस वृक्ष के फूल एवं फल लगे तो समझ लेना चाहिये कि इस वर्ष सातों ही अन्न उत्पन्न होंगे। इसी प्रकार करीर-वृक्ष के अधिक फलने से कपास, कूरी, मंडवा, कांगणी आदि धान्य की उत्पत्ति अच्छी होगी।

(२८)

नीची नेपे गलित सव, निपजै साकर शाल्।
भये किरात निःशंक यूं, गहूं चिणां संभाल्॥

गन्ने एवं चावलों के अधिक उत्पन्न होने पर यह समझ लेना चाहिये कि, इस वर्ष गेहूं और चने भी अधिक ही उत्पन्न होंगे।

(२९)

यूं सालर समसत फलै, निपजै सातूं तूर।
भील भाव यूं निरखके, भयो मगन भरपूर॥

सालर वृक्ष को सम्पूर्ण फलते हुये देखकर भील, भावनाओं में मग्न हो जाता है क्योंकि यह लक्षण दोनों फसलों (रबी और खरीफ) की खेतियें अच्छी होगी जिनसे समस्त अन्न (सातों प्रकार के अन्न) उत्पन्न होंगे।

(३०)

१ कैर बोर पीलू पकै, नीम आम पक जाय ।
दूध दही रस कस घणा, कातिक साख सवाय ।।

कैर, बेर, पीलू, नीम एवं आम जिस वर्ष अधिक फलै तो इससे यह समझ लेना चाहिये कि इस वर्ष दूध, दही आदि रस-कस पदार्थ की वृद्धि होगी और खरीफ की फसल भी अच्छी होगी।

(३१)

कैर केरूंदा गूदा पाके । दुनिया सरस छहूँ रस चाखै ।।
पाकै जाम्बू आम खजूर । माधा निपजै सातूं तूर ।।

कैर, कैरूंदे एवं गूंदों (ल्हसोड़े) का पकना यह सिद्ध करता है कि इस वर्ष छहों रसो की वृद्धि होगी। जामुन, आम एवं खजूर का पकना यह सिद्ध करता है कि इस वर्ष फसल द्वारा समस्त अन्न (सातो प्रकार के अन्न) प्राप्त होगे।

(३२)

जं वसन्त फूलै नहीं, फलै नहीं बनराय ।
राजा परजा सहु दुखी, दुखिया गोधा गाय ।।

वसन्त-ऋतु (चैत्र-वैशाख) मे यदि वनस्पति समुचित रूप से फूले-फले नही तो इस से इस वर्ष अकाल पडने की सूचना ही मिलती है। अत: समस्त प्राणी कष्ट का अनुभव करेंगे।

इसके विपरीत:—

१ कारे पाकें बोर घणें, जारे पड़े दकार ।
कोरा एणा वर मयें, जारे होय हगार ।।

जिस वर्ष बेर अधिक होते हैं तो उस वर्ष, वर्षा के अभाव से अकाल पड़ता है और जिस वर्ष कद्दू की उपज अधिक होती है, उस वर्ष प्रचुर वर्षा होने के कारण सुकाल अच्छा वर्ष,-अच्छी फसल होना-होता है।

(३३)

चैत अर वैसाख मे सब फूलं वनराय ।
राजा परजा सहु सुखी, सुखिया गौधा गाय ।।

चैत्र-वैशाख मास (वसन्त-ऋतु) में जंगल की वनस्पतियों का फूलना- फलना शुभ-वर्ष का सूचक है । इस वर्ष, वर्षा पर्याप्त होगी और समस्त प्राणी सुखी होंगे ।

(३४)

‡ काले केरड़ा अने सुगाले बोर ।।

कैर अधिक उत्पन्न होना अकाल को सूचित करता है और इसके विपरीत बेर अधिक होना, अच्छे वर्ष की सूचना है ।

(३५)

विरखा आरम्भ जाणजे निकल्यां थूहर पात ।।

वर्षा काल मे थूहर-वृक्ष के नये पत्ते निकलने लग जाय तो यह समझलें कि अब वर्षा प्रारम्भ होने वाली है ।

(३६)

आकन घोड़े सब्ज अति, बिच्छु थलन अपार ।
अण पढियो इण आरखन, नेपे कंव्है जवार !!

आक के वृक्ष पर हरे रंग की टिड्डियें जैसे जानवर अधिक बैठें अथवा भूमि पर बिच्छू अधिक दिखाई दे तो यह समझ लें कि इस वर्ष पैदावार अधिक होगा ।

(३७)

* आकां गेहूँ नीम तिल, अरजे अरस सवाय ।
आमा आफू नीपजै, गुड़ गूलर सूं थाय ।।

---

* इसके विपरीत:—

‡ काल् काचरा, सुकाल् बोर ।।

आंक से कोदों नीम जवा । गाडर गेहूँ बेर चना ।।

(मदार) आक के खूब फलने से कोदो, नीम के अधिक फल फूल लगने से जौ, गाडर (एक प्रकार का घास जिसे खस भी कहते हैं) से गेहूँ और बेर से चने की फसल अच्छी होती है ।

आक के अधिक फलने पर इस वर्ष गेहूं अधिक होंगे। नीम के अधिक फलने पर तिल, अरज फले तो अरस आम अधिक फलने पर अफीम एव गूलर के अधिक फलने पर गुड़ की अधिक उत्पत्ति होगी।

(३८)

समय चूक फल फूल हुवै, ऊसर बरसै मेह।
समय चूक ब्यावै पशु, धरा उडावै खेह॥

उचित समय पर फल फूल का न होना, ऊसर भूमि में मेह बरसने के समान ही है। पशुओं के प्रसव के निश्चित महीनों में प्रसव नहीं होकर इसके विपरीत हो तो ये सभी लक्षण अशुभ है। जिस वर्ष ऐसे लक्षण दिखाई देंगे, उस वर्ष पृथ्वी पर वर्षा न होकर केवल मिट्टी ही उड़ेगी।

(३९)

गुट्टा पाकै नीम का आमां टपकै साख।
पाकै जाम्बू आमली, पाकै दाड़म दाख॥
फल पाके नीचे झड़े, रस सूखे नहीं मास।
अन्न नीपजै माधजी, भरसी खाई खास॥

कवि, माधजी को सम्बोधन कर कहता है कि, यदि नीम के वृक्ष पर से गुट्टे (नीम्बोलियें) पक कर नीचे गिरे, आम, जामुन, इमली, अनार और दाख (अंगूर) पक कर रस से परिपूर्ण हो पृथ्वी पर गिरे तो इतना अन्न उत्पन्न होगा कि, इसके रखने के लिये जो स्थान खाई -कोठा आदि हों, वे सब भर जावेंगे।

(४०)

नीम्बोली सूखे नीम पर, पड़ न नीचे आय।
अन्न निपजै नहीं एक कण, काल पड़ैलो आय॥

यदि नीम्बोलियें नीम के वृक्ष के ऊपर ही पक कर सूख जायं तो इस वर्ष अन्न का एक कण भी उत्पन्न होना कठिन है। अर्थात् दुर्भिक्ष होगा।

(४१)

पको नीम्बोली नीचे आवे,
आधी डाल्यां मांय सुखावे ।
इणरो फल इण भांत बतावे,
कठेक निपजे कठेक गुमावे ।।

यदि नीम के वृक्ष परसे कुछ नीम्बोलियें पक कर नीचे गिर पड़े और कुछ डालियों (शाखाओं) पर ही सूख जाय तो, इन लक्षणों से ऐसा प्रतीत होता है कि, इस वर्ष, कहीं तो अन्न उत्पन्न होगा और कहीं कुछ भी उत्पन्न नहीं होगा। अर्थात् बोया हुआ अन्न भी यों ही (व्यर्थ) जावेगा।

(४२)

पवन गिरी छूटै परवाई,
उठे घटा छटा चढ आई ।
सारो नाज करै सरसाई,
तो घर गिर छोलां इंद्र धपाई ।।

यदि पूर्व दिशा की वायु हो और आकाश में काली-काली घटाएं चढ आई हो तो इस लक्षण से ऐसी वर्षा होगी कि, पृथ्वी, पहाड़ दोनों तृप्त हो जावेंगे जिसके परिणाम स्वरूप भूमि सरसब्ज होगी और अन्न बहुत उत्पन्न होगा ।

अन्य प्राणियों एवं प्राकृतिक साधनों द्वारा वर्षा ज्ञान

(४३)

पवन थक्यो तीतर लवै, चिड़ियां दवे नेह ।
भद्रबाहु गुरु यूं केव्है, ता दिन बरसै मेह ।।

भद्रबाहु गुरु कहते हैं कि वर्षा, उस दिन होगी जिस दिन चलता हुआ पवन एकाएक रुक जाय, तीतर, लवा, चिड़ियें आदि पक्षी बहुत स्नेह-पूर्वक चहकते हुए दिखाई दें ।

(४४)

तपै सूरज अति तेज, जद अम्बर ताणें मच्छ ।
उदय अस्त मोघन रवि, तो वरखा करै सुलच्छ ।।

सूर्य अत्यन्त तेज तपता हो, उस समय आकाश में मच्छ दिखाई दे, प्रातः एवं सायं संध्याओं के समय मोघे खिची हुई दिखाई दे तो ये लक्षण अत्यधिक वर्षा के हैं, ऐसा समझें ।

(४५)

* कलसै पांणी गरम हुवै, चिड़ियां न्हावे घूर ।
अण्डों ले कीड़ी चडै, तो विरखा भरपूर ।।

---

१ पवन थके तीतर सुवा, चिड़ियां चहके जोय ।
कहै सहदेव अवश्य हो, ता दिन विरखा होय ।।

२ पवन थक्यो तीतर लवै, गुर्रहि सुदेवे नेह ।
कहत भड्डरी जोतिसी, ता दिन बरसै मेह ।।

३ पवन थम्भ्यो ध्वज थिर भई, अंग पसीना आय ।
माखी चटकै माघजी सांझ मेह बरसाय ।।

भड्डरी कहते हैं कि जब हवा चलते-चलते रुक जाती है, तीतर जोड़ा खाने लगते हैं और उस दिन गुरु-पुष्य योग हो तो उसी दिन वर्षा होगी ।

* कलसै पांणी गरम हुवै, चिड़ियां न्हावै धूड़ ।
इंडा ले चिमटी चढै, तो विरखा भरपूर ।।

जल-पात्र (घड़े) में पड़ा-पड़ा जल गरम हो जाय, चिड़ियाँ मिट्टी में स्नान करे और अकारण ही चिउंटियें अपने अण्डों को लेकर इधर-उधर चढ़ती हुई दिखाई दे तो ये, वर्षा आने के लक्षण हैं। अर्थात भली-भाँति वर्षा होगी।

(४६)

चिड़ी ज न्हावे धूल में, मेहा आवणहार।
जल में न्हावै चिड़कली, मेह विदा तिणवार॥

चिड़ियों का मिट्टी में (धूल में) नहाना, वर्षा आने का और इन्हीं चिड़ियों का जल से नहाना वर्षा जाने का लक्षण माना गया है। अत: यदि ये मिट्टी मे नहाती मिले तो समझ लें कि अब वर्षा आवेगी और कदाचित ये जल से नहाती हुई दिखाई दे तो ऐसा समझें कि अब वर्षा नही होगी।

(४७)

सकली झीलै चेउड़े, अगन उठे जे पांक।
धान खेतरे पैयरें, होर करसका हांक॥

गरमी के कारण चिड़ियों की पांखों में जलन होने से वे धूल में नहाती हैं। इस लक्षण के आधार पर यह माना जाता हैं, वर्षा होगी। अत: कृषक लोग खेतों में हल चला कर अनाज बो देते है।

(४८)

* कीड़ी मुख में अण्ड ले, दरतज भूमि भ्रमन्त।
विरखा आवै जोर सूं, जल थल एक करन्त।
याम दोय क तीन में, क यूं दिनां प्रमांण।
मेघ करै वृष्टि अति, केव्है नन्द निरवाण॥

---

* पांखानी जे नेहरे, लई कीड़िये अड।
तो गऊ नी वारे बरे, मनक थईग्यो बड॥
पांखों वाली चिऊंटियां अण्डे लेकर अपने बिल से बाहर निकले तो इस लक्षण से मनुष्य के लिये तो नही किन्तु गौओं के लिये अवश्य ही मेह बरसता है।

कोई नन्द निरवाण नामक कवि कहता है कि यदि चिउंटियें अपने अण्डे लेकर बिल से बाहर इधर-उधर घूमती है तो इस लक्षण से दो तीन घड़ी अथवा दो तीन दिन में ऐसी वर्षा आवेगी कि, जल एवं स्थल एक हो जावेंगे।

(४९)

कीड़ी कण असाड़ में बारे न्हाखै लाय।
भील केव्है सुण भीलणी, मेह घणेरो थाय॥

आषाढ़ मास में चिऊंटियां अपने (बिल) में से अन्न के कण बाहर ला कर डाले तो इस लक्षण से इस वर्ष, वर्षा अधिक होने की सूचना मिलती है।

(५०)

कीड़ी कण असाड़ में, म्हांय ले जाती देख।
तो अन्न त्रण रो काल है, इण में मीन न मेख॥

आषाढ़ मास मे यदि चिउंटिये अपने मुंह मे अन्न का कण लिये अपने बिलों में जाती हुई दिखाई दे तो इस लक्षण को अकाल की अग्रिम सूचना समझे।

(५१)

अधिक अमूज्यो अंग, रंग रोली किरकांट्यो।
डाढी कवंला केश, वली कूपल रे बाठ्यो॥
बड़ा सुरंगी साख, आक, कूंकल टहकाई।
चन्द्र पूडियो चक्र, तेज तारां निस तांई॥
उकीरो ऊउ गोबर गिल्यो, भ्रमर पांख भणणणभणा।
पण्डत जोतस देख मत, घण बरसै इतरा गुणां॥

अत्यन्त गर्मी से शरीर व्याकुल होता हो, गिरगट का रंग रोली (लाल) सा हो जाय, दाढी के केश कोमल प्रतीत हो, छोटे-छोटे वृक्षों की कौंपलें जल जाय, बरगद के पेड़ पर लाल शाखाएं दिखाई दें,

आक के नवीन कोंपलें प्रकट हो, चन्द्रमा के चारों ओर चक्राकार कुण्डल दिखाई दे, रात्रि में तारों में अधिक तेज दिखाई दे, गोबर में कीड़े पड़ जाय, भौरों की पांखों से भिनभिनाहट (भन-भन सा स्वर) होता हो तो कवि पण्डितजी से कहता है कि, आप ज्योतिष-ग्रंथों को क्यों टटोलते हो, उपरोक्त लक्षणों को देखने पर यह निश्चित है कि, वर्षा अवश्य होगी।

(५२)

वींभरियां भणकायः बकै पिक अमृत वाणी ।
नाडी तत्ता नीर, पिघल आफू गुड़ पांनी ।।
श्वान उभकि मुख श्वास, भ्रमर गौबर गुड़कावै ।
जलजन्तु अकुलाय गीत गोहां जुड़ गावै ।।
वादल रेण बासी रव्है, ऊगीवै अरक झलहल जणां ।
पण्डत जोतस देख मत, घण बरसै इतरा गुणां ।।

वींभरियां (भिंगुर) रात भर भिनभिनाहट करे, कोयल की मीठी वाणी सुनाई दे, छोटे-छोटे तालाब और तलैयाओं का जल गरम हो जाय, अफीम , गुड आदि पदार्थ गलने लग जाय, कुत्ते मुंह फैलाकर (खोलकर) श्वास लेवें, जल मे रहने वाले जन्तु व्याकुल हो जाय गोहें (जलचर-प्राणी) एक स्थान पर एकत्रित होकर शब्द करे, आये हुए बादल रात्रि भर जमे रहे और सूर्य अपनी तेजी के साथ उदय हो तो इन लक्षणों को देख कर कवि, पण्डितजी से कहता है कि, आप ज्योतिष-ग्रन्थों को अब मत टटोलिये। वर्षा आने के लिये ये लक्षण ही पर्याप्त है ।

(५३)

साण्डा रोक्या द्वार, जम्बु बोले भड़वाया ।
कीड़ी काढै अण्ड, पांख माखी भणकाया ।।
आलस अंग अपार, नैन निद्रा अलुवावै ।
बकै पपैयो पीव, मोर मल्हार सुणावै ।।

कूकडो अरध निस बांग दे, आभै बादल छिणछिणा ।
पण्डत जोतस देख मत, घरा बरसै इतरा गुणां ।।

साण्डे (एक प्रकार छोटा-सा जानवर) अपने बिलों के मुंह पर रुकावट कर दे, सियार बार-बार जोर से शब्द करे, चिउंटियें अण्डे ले-ले कर बाहर निकलें, मक्खियें भिनभिनाहट करे, मनुष्यों के अंगों में आलस्य बहुतायत से हो, प्रस्वेद भी हो, अधिक निद्रा आती हो, आधी रात के समय मुर्गा जोर-जोर से बोलता हो, पपीहा पीव-पीव की रट लगा दे, मोर भी बारबार बोलता हो, और आकाश में बादलों का रंग छिण-छिण अर्थात् तीतर पक्षी के रंग के समान हो तो कवि, पण्डितजी से कहता है कि, ज्योतिष के ग्रन्थों को मत टटोलिये । इन लक्षणों के देखते हुए यह निश्चित है कि, वर्षा अवश्य आवेगी ।

(५४)

सुरमा जिसो कालो डूंगर भाप गुफा सूं आवै ।
लाल कुण्डालै चन्दो घिर्‌यो, चिडी रेत में न्हावै ।।
अगलो भाग घास को देख्यां, सांप निजर में आवै ।
नूंवी कूपल वेलडियां री, सामें आभै हो जावै ।।
धर धीर वरसै धरण, गयण घोर घणाणणघणां ।
पण्डत जोतस देख मत, घण वरसे इतरा गुणां ।।

पर्वत का रंग सुरमे के समान काला हो, गुफाओं में से भाप निकलती हुई दिखाई दे, मुर्गे की आँख के समान चन्द्रमा के चारों ओर लाल कुण्डल दिखाई दे, चिडिये आदि पक्षी रेत में स्नान करे, घास का अग्र-भाग देखने पर वहां सर्प आदि कीडे दिखाई दे, बेलो की नवीन कोपलें (पत्ते) आकाश की ओर हो जावे, तो कवि इन लक्षणों को देख-कर ज्योतिषीजी को कहता है कि, आप ज्योतिष-ग्रंथो को न टटोलें और धैर्य धारण करे, ये लक्षण शीघ्र वर्षा आने के हैं ।

(५५)

पवन चले परचण्ड, क झट पट थम जावै ।
क च्यारूं दिस में चालती, घन उमंग्यो चढ आवै ॥
वेहद गरमी कारणे, अंग पसीनो आवे ।
घन गरजे बहु जोर, मोर प्रसन्न हो जावे ॥
धर धीर नीर वरसै धरण, गयण घोर घणणणघणां ।
† पण्डत जोतस देख मत, घण वरसे इतरा गुणां ॥

यदि पवन अत्यन्त जोर से चलते-चलते एक दम रुक जावे अथवा पवन चारों दिशाओं में घूमता हुआ चले, शीघ्र ही आकाश में बादल आते हुए दिखाई दे, अत्यधिक गरमी हो और पसीने के कारण शरीर अत्यन्त भीगा-सा रहे, बादलों का जोर हो, मोर प्रसन्न होकर आतुरता पूर्वक इन्द्र का आवाहन जोर-जोर से करें, तो इन लक्षणों को देखकर कवि, पण्डितजी से कह रहा है कि, आप ज्योतिष-ग्रंथों को क्यों टटोलते हैं जरा धैर्य धारण करें । अभी-अभी ही में जोर से बादल गरजेंगे, और पृथ्वी पर अत्यन्त जल आ जावेगा ।

(५६)

सूरज तेज सूं तेज, आड बोले अनयाली ।
मही माट गलजाय, पवन फिर बैठे छाली ॥
कीड़ी मेले इण्ड, चिड़ी रेत में न्हावै ।
कांसी फीकी होय, आभो लीलो हो जावै ॥
डेडरियो डहकै वाड़ां चढ़ै, विसधर चढ़बैठे वड़ां ।
पण्डत जोतस देख मत, घण वरसै इतरा गुणां ॥

धूप का अत्यन्त तीक्ष्ण होना, आड नामक जल-पक्षी का बार बार बोलना, घृत का अपने बरतन में ही पड़े-पड़े पिघल जाना, जिस

† एक स्थान पर यह पंक्तिः—
"पांडिया जोतिस झूठा पड़ै घण बरसै इतरा गुणां" है ।

ओर से पवन आता हो उस ओर बकरी का अपनी पीठ देकर बैठना, चिउंटियों का अण्डे लेकर इधर-उधर जाना, चिड़ियों का मिट्टी में नहाना, कांसे का रंग फीका हो जाना, आकाश का रंग गहरा आसमानी-(नीला) हो जाना, मेंढकों का चिल्लाना और उनका जल में से बाहर आ जाना, आदि-आदि देख कर कवि, पण्डित जी से कह रहा है कि आप ज्योतिष-ग्रन्थों को मत देखें। वर्षा आने के लिये ये लक्षण ही पर्याप्त हैं।

(५७)

काहरि बोले रातरे, गौह करे फोफाट।
तमझड़ी लागे मेंह नी, वने हुजे नें वाट॥

रात्रि के समय झिंगुरों का बोलना, गौहों का बोलना, इन लक्षणों को देख कर यह निश्चित कर लेना चाहिये कि, वर्षा सतत होगी और बादलों के कारण इतना अंधेरा हो जावेगा कि दिन में भी मार्ग नही दिखाई देगा।

(५८)

बीम्हर अति बोले रात निवाई,
गोहां गीत रेदें में गांई।
छाली वाड़ चढ़े छू काई,
जोरां मेह मोरां अज गाई॥

झिंगुर रात में बोले, गौहें, भी शब्द करे, बकरी बाड़ पर चढने की चेष्टा करे और मोर जोर-जोर से बोलते हो तो इन लक्षणों से वर्षा आ जाना निश्चित है।

(५९)

गूंज अडै गोपाटड़ा, तीतर गूंगा थाय।
मछली उथली नीर में, इन्द्र महोत्सव आय॥

गौहे जोर-जोर से आवाजे करें, तीतर की आवाज आवे ही नही अर्थात् वे बोलें ही नही, मछलिये जल पर उतरा कर आ जाय तो इन लक्षणों से यह निश्चित है कि शीघ्र ही वर्षा आवेगी।

(६०)

पलोट्या रूखन चढ़ै, अम्बर गोरे हुन्त।
परे परल पानी अति, जद सन्ध्या फूलन्त॥

छोटे-छोटे सर्प पेड़ों पर चढ़े, आकाश का रंग गोरा हो, संध्या फूली हुई-सी दिखाई दे तो इन लक्षणों से यह निश्चित है कि बहुत वर्षा होगी।

(६१)

हांप सड़े रौंकड़े, में नी मांडे राड़।
तो वरसे मे हो घणो, नदियें आवे बाड़॥

सर्प का वृक्ष पर चढ़ना, बिल्लियों का परस्पर लड़ना, इन लक्षणों से यही प्रतीत होता है कि इस वर्ष, वर्षा बहुत होगी और परिणामस्वरूप नदियों में बाढ़ आ जाती है।

(६२)

नाग चीस सुनि रूंख पर, अम्बर धनुस भरक्क।
खुररी समय दिन तीन में, माधव करै करक्क॥

सांप वृक्ष पर चढ़ कर जोरदार राग (आवाज) करे, आकाश में इन्द्र-धनुष दिखाई दे तो जिस दिन ऐसे लक्षण दिखाई दे उससे तीन दिन में गर्जना करती हुई वर्षा होती है।

(६३)

ऊंचो नाग चढे तर ओडे। दिस पिछांमरण बादला दौड़े॥
सारस चढ असमांन सजोड़े। तो नदियां ढाहा जल तोड़े॥

सांप का वृक्ष की चोटी पर चढ़ जाना, बादल पश्चिम दिशा को ओर दौड़े, सारस के जोड़े आसमान में उड़ते हुए दिखाई दे तो इन लक्षणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि, इस वर्ष इतनी वर्षा होगी कि, नदियों का जल, किनारों को तोड़ कर बह निकलेगा।

(६४)

मोटे पुरतन बादलें, अम्बर लेसर हुन्त ।
पवन बन्द चौफेर जद, जल थल ठेल भरन्त ।।

अनेक तह वाले बादलों से आकाश ढंका हो, चारों ओर से वायु सर्वथा बन्द हो तो ये लक्षण बहुत वर्षा होने के माने गये हैं ।

(६५)

खग पांख्यां फैलाय, उझकी चोंच पवना भखै ।
तीतर गूंगा थाय, इन्द्र धड़ूकै माघजी ।।

यदि बगुले आदि पक्षी अपने परों को फैला कर बैठे हों और चोंच खुली रख कर पवन का भक्षण कर रहे हों, तीतर नामक पक्षी बोलना बन्द कर दे तो इन लक्षणों को देख कर कवि माघजी को सम्बोधन करते हुए कहता है कि, वर्षा आने वाली है ।

(६६)

डेडरियो पांणी सूं निकल, बारे बैठे आय ।
अथवा कूके जोर सूं तो विरखा दौड़ी आय ।।

यदि मेंढक जल से बाहर निकल कर आ बैठें, अथवा ज़ोर-ज़ोर से आवाजें करे तो यह वर्षा के आगमन कि शुभ सूचना है । अर्थात् वर्षा दौड़ कर शीघ्र ही आने वाली है ।

(६७)

टीटोड़ी के ईण्डो एक । केव्है फोगसी काल विसेक ।।
इण्डा दो जे टीटोड़ी धरे । तो निश्चै आधो काल पड़े ।।
जे होवै इन्डा तीन । तो रोग दोख सूं परजा छीन ।।
जे मिल जावै इन्डा च्यार । नव खन्ड निपजै नाज विचार ।।
असाड़ महीना मांयने, जे देवे इन्डाच्यार
च्यार महीना बरखसी, इण सूं करो विचार ।।

† ऊगूणी असाड़ गिण, दिखणादी सावण धार।
आथूणी गिण भादवै, धुराऊ आसू विचार॥

टिटहरी के एक अण्डा हो तो इस वर्ष अकाल होगा। दो अण्डे हों तो आधा अकाल, तीन हों तो प्रजा में रोगोत्पत्ति और चार हों तो इसे शुभ लक्षण समझें। इस वर्ष सर्वत्र अच्छी फसल होगी।

चार अण्डों के आधार पर जितने जिस दिशा की ओर हों उसी के अनुसार वर्षा का क्रम मानें। पूर्व में हो तो आषाढ़ में, दक्षिण में हों तो श्रावण में, पश्चिम में हों तो भाद्रपद में, और उत्तर दिशा में हों तो आश्विन में वर्षा होगी।

---

† एक स्थान पर इस प्रकार से मिला है:—

ईसाण कूँण असाड़ ने मांन। सावण अगनी सूं पहचांण॥
नेरुत भादरवो निरधार। आसोजां वायव विचार॥

अंडों का ईशान कोण में होना आसाढ़ मास में, अग्नि कोण में होना श्रावण मास में, नैऋत्य कोण में होना भाद्रपद मास में और वायव्य कोण में होना आसोज में वर्षा होने को सूचित करता है।

टीठोड़ी के इंडो एक। केव्है फोगसी काल विसेक।
ईंडा दो टीटोडी धरै। अर्ध काल परजा अनुसरै॥
टीटोड़ी के ईंडा तीन। रोग दोष में परजा छीन॥
टीटोड़ी के ईंडा च्यार। नव खंड निपजै माघ विचार॥
जे ईंडा का ऊंचा मूंडा। नीर निवाण लावे ऊंडा॥
ऊंधौ मुख ईंडा जे धरै। मास च्यार मांग्या मेंह करै॥
मेले ईंडा नदी निवाण। कहै फोगसी मेह की हाँण॥
जे आ ईंडा ऊंबा धरै। च्यार महीना नीझर झरै॥

च्यारूं ईंडा चित्रवत, धरै ऊर्ध्व मुख जोय।
कहै फोगसी माधजी, समयो सखरी होय॥
टीठोड़ी ईंडा धरै, नाडी नदी निवांण।
पंच कूट सूं उड़ै, तीवरसे मेहलो जांण॥

(६८)

एंड जणै जे टेंटुड़ी, कांठे नदी तराव।
तौ कांठा एगा हुदी, पाणी करै सड़ाव॥
महना वरसे एटला होंय जमी में प्रोंद।
प्रौसां एंडा होंय तो, पाणी पडै नें बोंद॥

टिटहरी जब अण्डे देती है तो वह नदी या तालाब के किनारे ही देती है। ये अण्डे जल से जितनी दूरी पर होते हैं वहां तक वर्षा आने पर जल पहुँच जाता है।

इसके जितने अण्डे वहाँ (उल्टे) पड़े मिलेंगे, वर्षा उतने ही महीनों तक होगी कदाचित सभी अण्डे सीधे (ऊँचे) हों तो इस लक्षण से इस वर्ष, वर्षा द्वारा जल की एक बून्द भी नहीं गिरेगी।

(६९)

दिन में गीध शब्द जो करै,
तो विद्यन उपावै अर-काल पड़े॥

दिन में गीध का बोलना अशुभ माना गया है। यदि ऐसा हो तो उस वर्ष, अकाल किम्वा किसी प्रकार की दैवी-आपत्ति के आगमन की यह अग्रिम सूचना है, ऐसा समझें।

(७०)

पपीहा पिउ पिउ करै, मौरां घणी अजग्ग।
छत्र करै मोर्यो सिरै, तो नदियां बहै अथग्ग॥

चातक का पिउ-पिउ शब्द करना, मोर का बारबार बोलना एवं इसका अपने पंखों द्वारा छत्र बनाकर नाचना ये लक्षण अधिक वर्षा के होने के सूचक हैं।

(७१)

पपियों तो पी पी करै, ओडें उडें हरोड़।
कर डराटा डेडका, तौ वरसै धरती तोड़॥

चातक पक्षी का पिउ-पिउ करना, सारस पक्षी का जोड़े सहित आकाश में उड़ना और मैंडकों का डरड़-डरड़ शब्द करना इन लक्षणों से यह सिद्ध होता है कि इस वर्ष, इतनी वर्षा होगी कि पृथ्वी टूट जावेगी।

(७२)

भल भल बकै पपइयो वांणी,
कूंपल् केर तणी कुम्हलांणी।
जलहलतौ ऊगे रवि जांणी,
तौ पौरां मांहे अवसरे पांणी॥

पपीहा आकाश में पी पी की रट लगाता हुआ उड़ता ही रहे, कैर की ताजी कोंपलें कुम्हला जाय साथ ही इस दिन सूर्योदय के समय अत्यधिक तीव्र धूप हो तो ये समस्त लक्षण जिस दिन एक साथ मिल जाय तो उस दिन वर्षा, कुछ घन्टों में ही आ जावेगी।

(७३)

असाड़ महीना मांयने, कागो जे घर करै।
देखौ ध्यान लगाय किण विध लकड़ी मुख धरै॥
जे अधबिच पकड़े लाकड़ी, तो दौनूं साख सवाय।
छैटे सूं पकड़ियां साख इक, ऊभी काल् बताय॥

आषाढ़ महीने में कौवे अपना घर बनाने हेतु अपनी चोंच में पकड़कर जो लकड़ी के टुकडे ले जाते हैं, इसे देखें। यदि यह उस लकड़ी को मध्य में से पकड़ता है तो इस लक्षण से इस वर्ष दोनों फसलें (सावण और उन्हालू अर्थात् खरीफ और रबी) होगी। कदाचित यह उस लकड़ी को एक ओर से ही पकड़ कर ले जावे तो इस लक्षण से केवल एक ही साख (फसल) होगी और यदि यह लकड़ी को खड़ी ही पकड़ कर ले जाता दिखाई दे तो यह लक्षण इस वर्ष दुर्भिक्ष की अग्रिम सूचना है, ऐसा समझें।

(७४)

सारस तो भ्रिगन भ्रमै, लख्यारी कुरलेह ।
प्रति तरणावै तीतरी, तो जोरां बरसै मेह ।।

सारस नामक पक्षी पर्वत-शिखरों पर उड़ते हुए दिखाई दें, लख्यारी नामक पक्षी बारबार बोलते हुए सुनाई दे और साथ ही उस दिन तीतरी का शब्द भी अत्यन्त जोरदार सुनाई दे तो इन समस्त लक्षणों से यह समझ लेना चाहिये कि वर्षा आवेगी।

(७५)

खगां पांख पसार, उभकि चूंच पवना भखै ।
लट लटकै बट डार, माघा इन्द्र धड़ूकसी ।।

पक्षी-वर्ग अपने पखों (परो) को फैला कर अपनी चोंच खुली रख कर पृथ्वी पर बैठे-बैठे वायु-भक्षण करते हुए दिखाई दे, वट-वृक्ष की डालो (शाखा) में से लट (एक प्रकार का रेंगने वाला कीड़ा) लटकता हुआ दिखाई दे तो इस लक्षण को देखकर कवि, माघ को सम्बोधन करते हुए कहता है कि, वर्षा आने वाली ही है।

(७६)

काल चिड़ी रे इण्डो एक। रस कस सस्तो नाज विसेक ।।
काल चिड़ी रे इण्डा दोय। खड़ थोड़ो नाज कछु होय ।।
काल चिड़ी रे इण्डा तीन। आधो काल माघजी चीन ।।
जे इण्डा च्यार कालकी धरै। भूंभै राव अर काल पड़ै ।।

वर्ष के शुभाशुभ हेतु, काली चिड़िया के घोसले को देखें। इसमें एक अंडा हो तो इस वर्ष सुभिक्ष और रस-कस मन्दे होंगे। दो हो तो अन्न कुछ हो जावेगा किन्तु इस वर्ष घास कम ही होगा। तीन अण्डे हो तो इस वर्ष फसल सदा से आधी ही होगी। दुर्भाग्य-वश यदि इस घोंसले में चार अण्डे मिल जाय तो देश में विग्रह होगा और बड़ा भारी दुर्भिक्ष होगा।

(७७)

काल् चिड़ी के अन्ड तल् ऊन केस जट होय ।
जिण जिण रा जे केश व्है, मरी रोग अति होय ॥
सूत रुई नालेर जट, मकी शिखा जो होय ।
सिण रेशम अम्बाड़ी तृण, सो ही मूंघा होय ॥
घास फूस जड़ तूल हो, तो जांणो तृण की हांण ।
ग्वाल् केव्है सुण माघजी, ए काल् चिड़ी सहनांण ॥

काल चिड़ी के अण्डों के नीचे जिन जिन प्राणियों के केश, ऊन-जट आदि हों उन-उन प्राणियों में मरी आदि रोग होंगे । इन अण्डों के नीचे सूत, रुई, नारियल किम्वा मक्की की जटा, शण, रेशम, अम्बाड़ा घास, और फूस आदि जो जो वस्तुएं पडी मिले, वे-वे वस्तुएं महंगी हो जावेंगी ।

(७८)

जेइण्डा ऊंचा धरै, तीन हाथ परमांण ।
इण सूं नीचा होय तो, वरतावेला हांण ॥

काल चिड़ी के अण्डे पृथ्वी से तीन हाथ से ऊपर हों तब वो वर्ष अच्छा और कदाचित इससे नीचे मिल जाय तो यह लक्षण हानिकारक समझा गया है ।

(७९)

काबेरे ने कागला, जे बोले घघौड़ ।
कण नें पाके धान नो, कार पड़े कई ठोड़ ॥

काली चिड़ियों का, कौवों का और उल्लू का रात में निरन्तर शोर मचाना अकाल को सूचित करता है । ऐसे वर्ष में अन्न का एक दाना भी उत्पन्न नहीं होता है ।

(८०)

† बोले मोर महातुरो, खाटी होवे छाछ ।
पड़ै मेघ महि ऊपरै, राखो रूड़ी आश ।।

मोर अत्यन्त आतुरता पूर्वक बार-बार बोलता रहे, प्रातः काल बिलोई हुई (तैयार की हुई) छाछ मध्यान्ह-काल में खट्टी पड जाय तो इन लक्षणों को देख कर कवि कहता है कि ये अच्छी आशा के शकुन हैं अर्थात् पृथ्वी पर वर्षा होगी जिससे लोग आनन्दित होंगे ।

(८१)

धरी छाछ खाटी पड़ै, उत्तर बोले मोर ।
तो जांणो दो एक दिन, विरखा हो घनघनोर ।।

बरतन मे रखी हुई छाछ पडे-पडे खट्टी हो जाय, उत्तर दिशा की ओर से मोर की आवाज सुनाई दे तो समझ लें कि, एक दो दिन ही मे जोर से वर्षा आवेगी ।

(८२)

सिझ्या धनस दिनुग्यां मोर,
तो थोड़ो घणो पांणो रो जोर ।।

सायंकाल को इन्द्र-धनुष दिखाई दे और प्रातः काल मोरों की आवाज सुनाई दे तो इन लक्षणों से यह सूचित होता है कि थोडी बहुत वर्षा अवश्य ही होगी ।

(८३)

नें वगड़े नें डोंगरे, ढाल झुलावे मोर ।
रमत रमे नें ढेलड़ी, तो वर नें रे सोर ।।

---

† बोले मोर महातुरो, खाटी होयजु छाछ ।
मेह मही पर पड़न कूं, जाणो काछे काछ ।।

तात्पर्य यह है कि, वर्षा गिरने के लिये काछों में कछनी लगाये ही मेह खड़ा है ।

चातुर्मास में चाहे जंगल हो या पहाड़, कहीं भी मोर अपनी पांखों को ढाल के समान फैलाता है और मोरनी उसके सम्मुख नृत्य करती है। यदि किसी वर्ष ऐसा न दिखाई दे तो वह वर्ष, चोर निकलता है। अर्थात उस वर्ष, वर्षा नहीं होती है।

(८४)

मकड़ी जाल गुम्भार में, मेघ वृष्टि अति होय।
जाला बिरछां ऊपरै, तो मेह अलप लो जोय।।

वर्षा काल के प्रारम्भ में यदि मकड़ी अपना जाला मकान के अन्दर कोठों, एवं तहखानों में बनावे तो इस वर्ष, वर्षा बहुत होगी। यदि ये जाले मकान के बाहिर वृक्ष आदि पर बनाये हुए दिखाई दे तो इस वर्ष, वर्षा कम होगी। यहां यह भी ध्यान में रखें कि वर्षा काल के अन्त में वृक्षादि पर यह अपना जाला बनाने लग जाय तो यह समझ लेना चाहिये कि, अब वर्षा बन्द होगई है। अर्थात् अब मेह नहीं होगा।

कौवों के घोंसलों से वर्षा ज्ञान

(८५)

मास वैसाखां मांयने, काग माल ले देख।
आछा रूंखां होय तो, मेह घणेरो पेख।।
कागो जे घर करै, वो रूंख भलो ना होय।
भूंडो अर कंटीलो हुवै, तौ निस्चे काल समोय।।

वैसाख मास में कौवों के घोंसले को ध्यान पूर्वक देखें। यदि वह किसी उत्तम वृक्ष पर बनाया गया है तो इस लक्षण से इस वर्ष अच्छी वर्षा होगी। कदाचित यह घोंसला किसी निन्दित किम्वा सूखे वृक्ष पर अथवा कांटों वाले वृक्ष पर हो तो ये लक्षण इस वर्ष दुर्भिक्ष होने की सूचना देते हैं।

कौवे के घोंसले की दिशा पर से वर्षा ज्ञान

(८६)

कागो जीं दिश घर करं, बीं दिस ने लो जोय ।
पूरब धुर ईसांण व्है, तौ मेह घणेरो होय ॥
लंकाऊ आथूण अर, नागोरण दिस जे होय ।
अगला विचला पाछला, बे महिना मेवलो जोय ॥
अगन कूंण सूं थोड़ो मेह । वायव वाय अर थोड़ो मेह ॥

कौवा यदि अपना घोंसला पूर्व, उत्तर और ईशाण-कोण इन दिशाओं मे से किसी एक मे बनावे तो ये लक्षण शुभ हैं और परिणामस्वरूप इस वर्ष श्रेष्ठ वर्षा होगी। यदि अग्नि-कोण में बनावे तो इस वर्ष, वर्षा थोड़ी होगी और वायव कोण में बनाये तो इसके परिणाम स्वरूप इस वर्ष वर्षा तो होगी किन्तु वह वायु सहित और अल्प होगी। कदाचित दक्षिण-दिशा में घोंसला हो तो वर्षा-काल के प्रारम्भ से दो महीनों में वर्षा होगी, नेऋत्य-कोण में बनावे तो वर्षा-काल के अन्तिम दो मास मे वर्षा होगी और यदि पश्चिम-दिशा में बनावे तो इस लक्षण से इस वर्ष वर्षा, वर्षाकाल के मध्य के दो महीनों में होगी।

कौवे के घोंसले के स्थान पर से वर्षा ज्ञान

(८७)

रूखां चोटी ऊपरै, जे कागों घर कर लेवं ।
इण लखणां सूं जाणजो, घणो हुवेला मेंव ॥
अधबिच जे घर करं, तो मध्यम समयो होय ।
जे नीचे कर जाय तो, अलप होय के ना होय ॥
अनावृष्टि दुरभिच्छ व्है, वधै शत्रु अर रोग ।
भौ उपजे इण लक्खणां, जे घर धरती री जोग ॥
रूंखां सूंखा ऊपरै, तो शस्त्र कलह अम नास ।
व्है परकोटा री छेद में, तो शत्रु करै विणास ॥

कौवा यदि अपना घोंसला किसी वृक्ष की चोटी पर (अग्र-भाग पर) बनावे तो इस वर्ष बहुत वर्षा होगी, वृक्ष के मध्य भाग में बनावे तो वर्षा मध्यम और नीचे के भाग में बनावे तो या तो वर्षा होगी ही नहीं, यदि होगी तो थोड़ी ही होगी।

दुर्भाग्य से कौवा यदि पृथ्वी पर ही अपना घोंसला बना ले तो इस वर्ष अनावृष्टि और दुर्भिक्ष होगा। साथ ही रोग एवं शत्रुओं के भय की भी वृद्धि होगी। कदाचित सूखे वृक्ष पर बनाले तो इस वर्ष शस्त्र कलह परचक्र-भय, एवं अन्न के नाश का योग है। शहर-पनाह अर्थात् परकोटे की दीवार के छिद्र में बनावे तो इस वर्ष शत्रु द्वारा हानि होने का योग है।

(८८)

रूंख खोखालां मांयने, क बम्बी मुख जे होय।
अनावृष्टि दुरभिच्छ व्है, रोग दोख सहु जोय॥

वृक्ष की खोह अथवा सर्प की बाम्बी के मुख पर यह घोंसला हो तो इस वर्ष माहमारी आदि भयंकर रोग, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष आदि के कारण देश शून्य होगा।

कौवे की चेष्टा से वर्षा ज्ञान

(८९)

रेती में न्हायां पछी, कागी जल ने देख।
करै शब्द जे बींवलत,तो निस्चै विरखा पेख॥
जे जल में न्हावां पछी, बोले भूमी देख।
चौमासो व्है तो बिरखा हुवै,नहिं तो भौ विसेख॥

कौवा यदि रेती में स्नान कर जल की ओर देख कर बोले तो इस लक्षण से अवश्य वर्षा होने की सूचना मिलती है। यदि यह जल में स्नान कर बाद में पृथ्वी की ओर देखकर बोले तो, वर्षा-काल होगा तब तो वर्षा होवेगी और कोई अन्य काल होगा तो देश में किसी प्रकार के भय के आने की यह अग्रिम सूचना है।

(६०)

अति काली भूमक्कड़ी, बांबी देख सुकण्ठ।
वर्ष भलौ विरखा घणी, हुयौ किरात निस्संक॥

जिस वर्ष काले रंग की मकड़ियें अधिक दिखाई दे तो इस एक मात्र लक्षण को देख कर किरात (एक जंगल में रहने वाली जाति का पुरुष) अकाल की ओर से निःशंक हो जाता है। क्योंकि, वह इस लक्षण को इस वर्ष सुभिक्ष होने की अग्रिम सूचना मानता है।

(६१)

[1]बिरखां चढ़ किरकांट बिराजै,
स्याह सपेत लाल रंग साज।
विजनस पवन सूरियौ बाजं,
तौ घड़ी पलक मांहै मेह गाजे॥

गिरगट का पेड़ पर बैठ कर विभिन्न (काला, श्वेत, और लाल) रंग धारण करे, इस समय वायु वायव्य कोण का चले तो इन लक्षणों से घड़ी भर में ही अर्थात् शीघ्र ही वर्षा होने की यह अग्रिम सूचना है।

(६२)

उर्द्दई ऊठे घणी, कस्यारी चमचाय।
रात्यूं बोले बिसमरी, इन्द्र महोत्सव आय॥

---

१ किरकांट्यौ नीचै मुख कियां, चढ जो रूंखां जाय।
मेघां परचण्ड जोर है, इण मे संसय नांय॥

* २ नीचे मूंडे किरकांटियो, जे रूंखा चढ़ जाय।
तो यूं जाणो सायवा, मेह घणेंरो आय॥

यदि गिरगट नीचे की ओर मुंह किये (उल्टा ही) पेड़ पर चढ़ता दिखाई दे तो यह लक्षण अत्यन्त वर्षा होने के समझें।

दीमक का अधिक निकलना, कसारी का अधिक बोलना, रात्रि में छिपकली का बारबार शब्द सुनाई देना ये वर्षा आने की शुभ सूचना है।

(६३)

*गिरगिट रंग विरंग व्है, माखी चटके देह।
माकड़ियाँ चहचह करै, तब अति जोरे मेह॥

गिरगट बारबार अपना रंग बदले, मक्खियें मनुष्य की देह पर चिपके (चटके) और तिवरी लगातार शब्द करती रहे तो ये लक्षण जोर से वर्षा आने को सूचित करते हैं।

(६४)

माखी माछर डांस व्है, माघ जमानों जांण।
उपज्यां जहरी जिनावरां, काल तणौ सहनांण॥

मक्खी, मच्छर डांस का अधिक होना सुभिक्ष का चिन्ह माना गया है। और विषैले जन्तुओं का अधिक उत्पन्न होना दुर्भिक्ष का लक्षण बताया गया है।

(६५)

स्थिर चंचल ऊपर चढै, जे जल में की जोख।
शान्त तुफानी वृष्टि को, क्रम सूं जाणो जोग॥

जौंक यदि जल के पेंदे में स्थिर पड़ी रहे तो इससे यह समझें कि वायु शान्त रहेगा। यदि वही जौंक अति चंचलता पूर्वक जल में ऊपर नीचे चक्कर लगाती दिखाई दे तो यह लक्षण तूफान आने को सूचित करता है। कदाचित यह, जल के ऊपर आ बैठे तो इस लक्षण से यह समझ लें कि अब वर्षा का आगमन है।

नोट :—जौंक के द्वारा यहां एक साधु वर्षा के सौदे करने वालों को वर्षा आगमन आदि सूचनाएं दे कर अर्थ-प्राप्ति करता रहता

था। हमारे एक मित्र स्वर्गीय शंकरलाल रत्ताणी व्यास, जिनकी बगीची में उक्त साधु रहता था, उनसे विदित हुआ कि, इसके द्वारा वर्षा आदि का ज्ञान प्राप्त करने के लिये किसी चौड़े मुंह की बड़ी बोतल में जल भर कर उसमें कुछ काली मिट्टी और थोड़ी-सी शक्कर डाल देना चाहिये। ऐसा करने से उस जोंक को आहार मिलता रहेगा। लेकिन इस जल को प्रति सप्ताह बदलते रहना भी परमावश्यक है। इस बोतल को एक स्थान पर रखकर इस (जोंक) की चेष्टा देखते रहने से उक्त हवा-मान एवं वर्षा का सही ज्ञान हो जाता है।

(९६)

जीं बरस रेलियो, नर देखे चहुं ओर।
तो चौमासा के मांयने मेह करैलो जोर॥

रेलिया नामक सर्प जिस वर्ष अधिक दिखाई दे, उस वर्ष वर्षा-ऋतु में जोर-जोर से वर्षा होगी।

(९७)

सर्प जु निगलै सर्प ने, श्याम स्वेत को भेद।
काल पड़ै कालो गिल्यां, सम्वत करै सफेद॥

दो सांप, जिनमे से एक काले रंग का और दूसरा श्वेत रंग का हो और यदि काला सर्प श्वेत सर्प को निगल जाता है तो इससे यह निश्चित है कि इस वर्ष दुर्भिक्ष होगा। कदाचित श्वेत सर्प काले को निगल जाय तो इससे यही प्रतीत होता है कि इस वर्ष, सुभिक्ष होगा।

(९८)

सांप गोहिड़े डेडुरे, कीड़ी मकोड़े जांण।
दर छोड़े थल पर भ्रमै, तो मेहां मुक्ति बखाण॥

सर्प, गोहिड़, मेंडक, चिड़ियें एवं मकोड़े आदि अपने-अपने घर (बिल) में से निकल कर इधर-उधर भटकते हुए दिखलाई दे तो ये लक्षण वर्षा शीघ्र आने की सूचना देते हैं ।

(९९)

चिड़ियां जे मालौ करै, कोठां कमरां मांय ।
विरखा आयां आगमच, तो च्यार मास बरसाय ॥

वर्षा-ऋतु के प्रारम्भ होने से पूर्व ही यदि चिड़ियें अपने घोंसले मकान के अन्दर के कमरों मे बनाने लग जाय तो समझलें कि इस वर्ष अच्छी वर्षा होगी । चार मास मेह बरसेगा ।

(१००)

पोते आफू पीगल्यौ, गुल री व्है गई गार ।
कूक मचाई डेडकां, तौ आशी मेह अपार ॥

संग्रह किया हुआ अफीम और गुड़ पड़े-पड़े स्वयं ही गीले हो जाय और मेंडक शोर मचावे तो इन लक्षणों से यह निश्चित है कि वर्षा आने वाली है ।

(१०१)

गलैं अमल गुड़री व्है गारी,
रवि ससि दौली रेव्है कुण्डाली ।
सुरपति गाज करे विध सारी,
तौ मघवा ऐरावत असवारी ॥

अफीम और गुड़ पड़े-पड़े गीले हो जाय, सूर्य और चन्द्रमा के चारों ओर गोल कुण्डल हो, बादल खूब गरजते हों, और बिजली चमकती हो तो इन लक्षणों से यह निश्चित है कि वर्षा शीघ्र आ जाती है ।

(१०२)

उकीरौ ऊंठ गोबर गिल्यौ, गुड़ री हुय गई गार ।
माघा मेह पधारसी, ऊगन्ते परभात ॥

ऊंठ की विष्ठा अकारण ही गीली हो, गुड़ भी पड़ा-पड़ा ही गीला हो जाय तौ इन लक्षणों के आधार पर कवि, माघ को सम्बोधन करते हुए कहता है कि, प्रातःकाल होते ही वर्षा होगी ।

(१०३)

उकीरैं गोवर गिल्यौ, कस्सारी चमचाय ।
एकां दोया माघजीं, इन्दर धड़ूकै आय ॥

गोबर का अकारण गीला हो जाना, कस्सारी का रात्रि में बहुत शोर करना ये दो लक्षण ही एक दो दिन में वर्षा आने की अग्रिम सूचना के लिये पर्याप्त माने जाते हैं ।

(१०४)

ऊंचौ विल जे लूंकड़ी, अग्गम चौमासे जोय ।
के भेली हो क्रीड़ा करै, तो मेह घणौरो होय ॥

चातुर्मास (वर्षा-काल) के पहले ही यदि लोमड़ी अपने रहने के लिये किसी ऊंचे स्थान पर दर (गुफा-घूरी) बनाले, अथवा बहुत-सी लौमड़ियें परस्पर एकत्रित होकर आनन्दपूर्वक क्रीड़ा करती हुई दिखाई दे तो ये, बहुत वर्षा होने के शुभ लक्षण हैं ।

(१०५)

अग्गम चौमासे लूंकड़ी, जे नहि खोदे गेह ।
तौ निस्चै करने जांण जो, नहिं बरसेलौ मेह ॥

वर्षा काल से पूर्व यदि लोमड़ी अपना बिल नहीं खोदे तो इससे यह समझलें कि इस वर्ष, वर्षा नहीं होगी अर्थात् वर्षा का अभाव ही रहेगा ।

(१०६)

सिझ्या पड़ती बखत, जे देवे कूकड़ो बाँग ।
छत्र पड़े दुर्भिच्छ करै, लावै मरी को साँग ।।

सूर्यास्त के समय मुर्गे का बोलना अशुभ माना गया है । जिस समय ऐसा हो तो इस लक्षण से राजा की मृत्यु, दुर्भिक्ष एवं महामारी होने की सूचना मिलती है ऐसा समझना चाहिए ।

(१०७)

* घुर असाडे दूबरे, सांडा जाय पंयाल ।
दर मुख दपटै गारसूं, तो विरखा होय विशाल ।।

वर्षा काल के प्रारम्भ में यदि सांडे दुर्बल हो जाय, अपने-अपने दरों में घुस कर मिट्टी के द्वारा उन दरों (बिलों) के मुंह बन्द करले तो यह, वर्षा आगमन सूचक लक्षण माना गया है ।

(१०८)

* सांडा शीतल भय थकी, पैठे जाय पंयाल ।
दर मुख मूंदन कठिन दे, ले घासन की गाल ।।

वर्षा काल के प्रारम्भ की शीतल-पवन से भयभीत हो सांडा यदि पृथ्वी के अन्दर अपने दर में घुस कर उस (दर) के मुंह को घास मिट्टी आदि से दृढ़तापूर्वक बन्द कर देवे तो इस लक्षण को अत्यंत वर्षा होने की अग्रिम सूचना समझें ।

---

* सांडा बिल मुख मीडिया, टीटोड़ी टहुकाय ।
नैणां निदरा आलसै, तो इन्दर महोत्सव आय ।।

साण्डा नामक जानवर अपने बिल(दर)का मुंह बन्द करले, टिटिहरी बार-बार बोले, आंखों में नींद की खुमारी-सी बनी रहे और आलस्य प्रतीत हो तो ये समस्त लक्षण शीघ्र वर्षा आने को सूचित करते हैं ।

(१०९)

सांडा दर दपटे नहीं, काया मे मस्त होय ।
तो निसचै दुरभिक्ख जाणजो, केव्है भील सब कोय ।।

जंगल मे रहने वाली भील जाति का प्रत्येक व्यक्ति इस बात को भली प्रकार जानता है, अतः वह कहता है कि, कदाचित वर्षा काल प्रारम्भ होने पर साडे अपने बिल (दर) का मुंह बन्द नहीं करै और वे शरीर में हृष्ट-पुष्ट प्रतीत होते हों और इधर-उधर दिखाई दें तो निश्चय-पूर्वक यह समझले कि इस वर्ष, वर्षा नही होगी और परिणाम-स्वरूप दुर्भिक्ष होगा ।

(११०)

‡ शिवजी का वाहन अगर बोले रात के माँय ।
अन धन उपजै मोकलो, लोग सुखी हो जाय ।।

रात्रि के समय यदि साण्ड (बैल) बार-बार बोले तो यह शुभ लक्षण है । इस वर्ष संसार में अन्नादि पदार्थ बहुत उत्पन्न होंगे, जिससे प्रजा की सुख-समृद्धि की वृद्धि होगी ।

(१११)

गोबर कीड़े देख अति, मेह केव्है ग्वाल ।
तब असवारी मेघ की, जब कोकिल मोर कुरलाल् ।।

गोबर गल जाय और इसमें बहुत से कीड़े पड़ जाँय । कोयल या मोर बार-बार बोलते सुनाई दे तो इन लक्षणों से वर्षा होने की सूचना मिलती है ।

---

‡ रात्रू साण्ड जे शब्द करे.
तो सुख सम्पत्ति की आशा सरे ।।

यदि रात में सांड (बैल) जोर-जोर से आवाज करें तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि संसार में सुख एवं सम्पत्ति की वृद्धि होगी ।

(११२)

राते कारे पीयरे, काकेड़ो रंगाय ।
अमल गौर करवाय तो, निस्चै वरसा थाय ।।

गिरगट का लाल, काला और पीले रंग का हो जाना (इन रंगों में बदल जाना) अफीम एवं गुड़ का पड़े-पड़े गीला हो जाना लक्षण, निश्चय ही वर्षा आने के हैं ।

(११३)

कीड़ा पड़े गोबर के मांय,
चातक मीठो वोल सुणाय ।
अमल चामड़ो गीलो थाय,
तो विरखा होवै संसै नाय ।।

यदि गोबर में कीड़े पड़ जाँय, पपीहा सुन्दर वाणी में शब्द करता रहे, अफीम में गीलापन आ जाय और इसी प्रकार से चमड़े में भी गीलापन आ जाय और जिसके कारण उस पर लेई नहीं चिपके तो इन लक्षणों को देखते हुए कवि कहता है कि, निःसन्देह वर्षा होगी ।

(११४)

नमक नौसादर अफीम अर, गुड़ गीलो जे होय ।
तो निस्चै विरखा होवसी, सोच करो मत कोय ।।

नमक, नौसादर, अफीम, गुड़ आदि पदार्थ यदि पड़े-पड़े अपने आप गीले हो जाय (जल छोड़ दे) तो यह निश्चित है कि, वर्षा अवश्य होगी । इसके लिये चिन्ता मत करो ।

(११५)

इणगी उणगी दौड़ती, ऊंटणी दीखे जोय ।
पग पटकै बैठे नहीं, तो झटपट विरखा होय ।।

यदि ऊंटणी इधर-उधर दौड़ती हुई और अपने पांवों को पृथ्वी पर पटकती हुई दीखे और जमीन पर नहीं बैठे तो इन लक्षणों से यह समझलें कि, वर्षा शीघ्र ही आने वाली है।

(११६)

† टोलो करके चीलक्यां, बैठे धरती आय।
दिन चौथे के पांचवें, मेह घणेरो आय॥

यदि पृथ्वी पर बहुत-सी चीलें झुंड बनाकर बैठी हुई दिखाई दें तो यह समझलें कि चौथे या पांचवे दिन यहाँ अत्यन्त वर्षा होगी।

(११७)

रात समय के मांयने जुगनूं चढै अकास।
निस्चै करने जाण जो, भल विरखा की आस॥

यदि रात्रि के समय जुगनू आकाश में (ऊपर की ओर) उड़ते हुए दिखाई देवें तो यह निःश्चत है कि अच्छी वर्षा होने के ये शुभ लक्षण हैं।

बिल्ली और कुतिया के प्रसव से वर्षा ज्ञान

(११८)

मंजारी के एक सुत, माघ जांणिये काल।
दोयां होसी करवरो, तीनां होय सुगाल॥
च्यार जणं जे मंजारड़ी, च्यार श्वानड़ी जोय।
केव्है फोगसी माघजी समयो सखरो होय॥

---

† टोलो मिलके कांवली, आय थलन बैठन्त।
अथवा बहु ऊंची चढे, विरखा केव्हो अनन्त॥
यदि चीलें बहुत-सी इकट्ठी होकर पृथ्वी पर बैठें या आकाश में बहुत ही ऊंची उड़ें तो ये लक्षण बहुत वर्षा होने के हैं।

जिस वर्ष बिल्ली एक ही बच्चे को प्रसव करे तो इससे यह समझें कि उस वर्ष अकाल पड़ेगा। दो होने से साधारण, तीन होने से सुभिक्ष और यदि बिल्ली और कुतिया के चार-चार बच्चे हों तो उस वर्ष बहुत अच्छा सुभिक्ष होगा (कहा जाता है कि इनसे अधिक बच्चे ५-६-७-८ हों तो उस वर्ष युद्धादि उपद्रव होते हैं। *)

(११९)

काती में जे कुतिया जणै। तो रोग दोख कछु मांणस हणै ॥
मंगसर पौस करे सुभिक्ष। माहा फागण मधु भेद अलक्ष ॥
जणै वैसाखां जेठ असाढ़। तौ दुनिया पड़े काल की डाढ़ ॥
सांवण भादूं आसौजां ब्यावै। सही मेदिनी चाक चढावै ॥

कातिक मास में यदि कुतिया के बच्चे हों तो उस वर्ष रोगादि उपद्रव से जन-हानि होगी। मार्गशीर्ष और पौष मास में कुतिया के बच्चे हों तो इस वर्ष सुभिक्ष होगा। माघ, फागुन और चैत्र इन महीनों में यदि कुतिया के बच्चे हों तो इन महीनों का कोई निश्चित प्रभाव नहीं है। वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ में यदि कुतिया के बच्चे हों तो प्रजा काल के मुंह में फंस जावेगी अर्थात इस वर्ष अकाल होगा। दुर्भाग्यवश यदि कुतिया के श्रावण, भाद्रपद और आसौज महीनों में से किसी भी महीनों में बच्चे हों तो यह निश्चित है कि इस वर्ष भयंकर संकट का सामना प्रजा को करना पड़ेगा।

---

*श्वान मंझारी पांच अर छब्ब। काल पड़े सुण रौरब्ब ॥
कठैक खाण्डो चलै दुधार। सात आठ जण्या नृप की हार ॥

श्वान या बिल्ली यदि पांच-छह (बच्चे प्रसव करे तो यह अकाल (भयंकर) की सूचना है। सात-आठ बच्चे हों तो कहीं तलवार चलेंगी (युद्ध होगा) और राजा की हार होगी।

कुत्ते की चेष्टा से वर्षा ज्ञान

(१२०)

आंख जीमणी खोल श्वान, नाभी चाटतो जोय ।
जे छत ऊपर सुयजाय तो, इधको बरसै तोय ।।
विरखा रुत रे मांयने, जल में झीलै श्वान ।
तो विरखा आछी होवसी, यूं लो मन में जांण ।।
चक्कर ज्यूं पांणी में फिरै, तो मेह घणेरो होय ।
इं पांणीने पी जाय क, डील कम्पातो जोय ।
तो आधो महीनो बीतियां, मेंह बेगाणे होय ।।
जल बारे आय कर, जे ऊंची जाग्यां जाय ।
जे कम्पावै डीलने, तो करसण धाप कराय ।।

श्वान यदि अपनी दाहिनी आंख खोलकर अपनी ही नाभि को चाटता हुआ दिखाई दे, अथवा वह मकान की छत पर जाकर सोवे तो यह बहुत वर्षा होने के लक्षण हैं। यदि श्वान वर्षा-काल में जल के अन्दर निमग्न रहे तो अच्छी वर्षा होगी। यदि यह जल में चक्कर लगाने के समान फिरे, गोल घूमे तो यह लक्षण विशेष वर्षा होने के हैं। कदाचित वह इस जल को पीने की चेष्टा करे या अपने शरीर को कम्पावे तो इन लक्षणों से यह निश्चित है कि १५ दिन पश्चात किसी अन्य स्थान में वर्षा होगी।

श्वान कदाचित जल में स्नान कर बाहर आकर किसी ऊंचे स्थान पर खड़ा होकर अपना अंग कम्पावे तो इससे यह समझ लेना चाहिये कि इस वर्ष इतनी ही वर्षा होगी कि जिससे केवल कृषि ही हो सकेगी।

(१२१)

लेय उबासी कूतरो जद आंख्यां बरसावे तोय ।
आभा सामो जोय तो, मेह घणेरो होय ।।

वर्षा-काल में श्वान यदि जम्भाई खाते समय अपनी आंखों से आंसू गिराता और आकाश की ओर देखता हुआ मिले तो इन लक्षणों से कृषि-कर्म के उपयोगी अत्यन्त उत्तम वर्षा होगी।

(१२२–२३–२४)

ढेर घास को होय क, ऊंची जाग्यां देख।
कूके कुत्तो जोर सूं, तो मेह मोकलो पेख॥
चौमासा की रुत बिनां, जे ए लक्खरण देखाय।
तो अगन उपदरो होवसी, अर रोग भयंकर थाय॥
चौमासा के मांयने, इण लखणां थकि नहिं मेह।
तो चोर अगन अर मांदगी, उपदरो अवस करेह॥

वर्षा-काल में श्वान यदि घास के ढेर, महल अथवा इसी प्रकार का कोई उत्तम स्थान पर चढ़ कर जोर-जोर से शब्द करें तो ये लक्षण भी बहु-वर्षा को सूचित करते हैं। परन्तु यह ध्यान में रखना चाहिये कि यदि कुत्ते की ये चेष्टायें बिना वर्षा-काल के हो तो यह महामारी आदि जन-संहारक रोगों एवं आग लगने की दुर्घटनाओं की अग्रिम सूचना समझी जाय।

(१२५)

जणै उभयमुख अष्ट खुर, बकर गाडर गाय।
धणी मरै क धन मरै, छत्रपती पिण नसाय॥

उभय- मुख (आठ खुर) बकरी, भेड़ एवं गा प्रसव करे तो इसके फलस्वरूप उस पशु का स्वामी मर जाता है या वह पशु स्वयं मर जाता है। इस लक्षण का एक यह भी प्रभाव है कि उस देश के राजा का भी नाश करता है।

स्त्री, बकरी एवं घोड़ी के प्रसव पर से

(१२६–२७–२८)

एक जणै शिशु अस्तरी, अजिया के सुत दोय।
फोग केव्है सुण माघजी, समयो सखरो होय॥

तीन जणै शिशु बाकरी, दो जणै जे बाम ।
घृत मूंघो होसी माघजी, दूणां बधसी दाम ।।
नारी के व्है तीन सुत, अजिया के व्है च्यार ।
दोय जणे जे अश्विनी, छत्रपती शिर भार ।।

स्त्री के एक संतान और बकरी के दो संतान होना शुभ माना गया है। इस लक्षण से वर्ष अच्छा होगा। बकरी के तीन बच्चे एवं स्त्री के दो शिशु होना, घी महँगा होने की सूचित करता है। कदाचित स्त्री के तीन हों, घोड़ी के दो हों और बकरी के चार बच्चे हों तो वह वर्ष, राजा के लिये भारस्वरूप होता है।

(१२६)

तीतर वरणी बादली, बिधवा काजल रेख ।
आ वरसै वा घर करै, इण में मीन न मेख ।।

बादलों का रंग तीतर-पक्षी के रंग के समान देख कर कवि कहता है कि, जिस प्रकार स्व-शृंगारप्रिय विधवा निश्चय ही वैधव्य-धर्म का पालन नहीं कर सकती अर्थात् संयम से नहीं रह सकती और उसे नवीन घर (पति) करना ही पड़ता है, उसी प्रकार ही इन बादलों को भी बरसना ही पड़ेगा।

(१३०)

तीतर पंखी बादला, पंछी करै आनन्द ।
भोर हुयां तो दिन में हुवै, सिंझ्या रात बरसंत ।।

तीतर पक्षी की पांखों के समान चित्र-विचित्र बादल हों और पक्षी एकत्रित हो आनन्द मनाते हों यदि ये लक्षण प्रातःकाल की सन्ध्या-काल में हो तो दिन में और सायंकालीन संध्या-काल के समय हो तो रात्रि में शीघ्र वर्षा होगी।

(१३१)

तीतर पंखी बादला, अपणो भेद बतावै ।
जे आभा में हो जाय तो, बिन वरस्यां नहिं जावै ।।

तीतर-पंख के समान रंग के बादल यदि आकाश में हो तो यह निश्चित समझें कि वे बरसे बिना नहीं रहेंगे ।

(१३२)

तीतर पंखी बादला, लोहू काट हो जाय ।
माख्यां होवैं मोकली, मोर शब्द कर जाल ।।
अधरात्यां मुरगो करैं, बार बार जो शोर ।
बेगी बिरखा आय कर, बरसै च्यारूं छोर ।।

बादलों का रंग तीतर के पंख के समान हो, लोहे को जंग चढ़ जाय, मक्खियें अधिक हों, मोर बार-बार बोलते हों, आधी रात के समय मुर्गे की भी बार-बार जोर की आवाज सुनाई दे तो ये सब वर्षा आने की सूचना देते हैं । इन लक्षणों से शीघ्र ही वर्षा आवेगी और वह चारों ओर बरसेगी ।

(१३३)

जल बारै मछली हुवै, मेंडक बोल सुणावै ।
बस्वादो पांणी हुवै, पड्यो लूण गल जावै ।।
भूमि नख सूं खोदती, जे मिन्नी दिख जावै ।
कांसी में दुरगन्ध हुयां, मेह घणेरो आवै ।।

यदि मछली जल में उछल कर बाहर आ जाय, मेंढक बार-बार बोलते रहें, जल का स्वाद बिगड़ जाय, नमक अपने आप पड़ा-पड़ा गलने लग जाय, अपने पंजों से बिल्ली पृथ्वी खोदती हुई दिखाई दे, काँसे के बरतन में दुर्गन्ध आने लगे तो समझ लें कि शीघ्र ही जोरों से वर्षा आने वाली है ।

(१३४)

मूंज अम्बाड़ी जेवड़ी, मांचो लीजो जोय ।
बिन कारण बलखाय तो, अवशै विरखा होय ।।

मूंज, अम्बाड़ी आदि की रस्सी और खाट (चारपाई) के अकारण ही (बिना जल से भिगोये ही) ऐंठने (बलखाने) लग जाय तो इससे यह जान लेना चाहिये कि शीघ्र ही वर्षा आने वाली है।

(१३५)

घरा गरमी घरा वायरो, के नहीं होवे कोय ।
घरा च्यारूं दिस में रहै, के आभो लीलो होय ।।
लक्षरा सारा ए कह्या, जे केहां मिल जाय ।
तो मत चिन्ता कर तूं मानवी, झट विरखा हो जाय ।।

या तो अत्यन्त गरमी पड़े, या गरमी नहीं हो। वायु तेज चले या सर्वथा बन्द हो जाय। बादल चारों दिशाओं में हों या आकाश नीला हो जाय। कवि कहता है कि उपरोक्त लक्षण यदि कहीं मिल जाय तो मनुष्य को चिन्ता नहीं करनी चाहिये। क्योंकि, शीघ्र ही वर्षा होने के ये लक्षण हैं।

(१३६)

ऊमस कर घृत माढ गमावै,
इण्डा कीड़ी ले बाहर आवै ।
नीर विनाँ चिड़ियां रज न्हावै,
तो मेह बरसै घर मांह न मावै ।।

गरमी के कारण घृत का पिघल जाना, चिऊंटियों का अण्डे ले कर अपने दर में से बाहर आना, जल के अभाव में चिड़ियों का रेत में स्नान करना, ये लक्षण यदि दिखाई दे तो यह निश्चित है कि,वर्षा इतनी जोर से होगी कि, जल पृथ्वी पर नहीं समावेगा।

(१३७)

१ नाडा नाडी जल तपै, गुड़ गीलो हो जाय ।
तो निश्चै करजांणजो, विरखा भाछी थाय ।।

छोटे-छोटे तालाब-तलैयाओं का जल गरम हो जाय, सुरक्षित रखा हुआ गुड़ भी पड़े-पड़े गीला हो जाय (नरम हो जाय) तो इन लक्षणों से अच्छी वर्षा होना निश्चित है, ऐसा समझ लेना चाहिए ।

---

१ नाडो द पग तातो न्हाली,
फिर नीले करवै रंग थाली ।
कांठल बन्धै उत्तर दिस काली,
तो असवारी ऐरावत वाली ।।

तालाव-तलैया में पाँव रखते ही उसमें का जल गरम प्रतीत हो, कांसी की थाली का रंग नीला हो जाय, उत्तर दिशा से बहुत से काले बादल आकर जमा हो जाय तो इन लक्षणों से यह प्रतीत होता है कि, वर्षा अवश्य होगी ।

२ नाडी जल तातो व्है आली
नीली होवें कांसी री थाली ।
रू'खां बैठी चहकै चूवाली,
कांधल बान्धै उत्तर दिस काली ।।

तालाव आदि का जल गरम प्रतीत हो, कांसी का बरतन नीला हो जाय, पनडुब्बी चिड़िया पेड़ पर बैठ कर आवाज करती रहे तो उत्तर दिशा से बहुत से काले रंग के बादल आकर अच्छी वर्षा होगी ।

३ पाणी ओनो माटले बाव तरावे थाय ।
डीलें वसतर नें खटें, तो वरात वराय ।।

यदि जल-पात्र (मटके-मटकी) में बावड़ी एवं तालाव में के जल गरम होजाय, मनुष्य को अपने शरीर पर वस्त्र नहीं सुहांवे तो इन लक्षणों से वर्षा होने की सूचना मिलती है ।

(१६८)

झांगरियां बोले घणी, नाडी तत्ता नीर।
मेघ घुमण्डे माघजी, पूरब बहै समीर॥

रात्रि में झिंगुरों की निरन्तर आवाज आती रहे, दिन में छोटे-छोटे ताल एवं तलैयाओं का जल उष्ण प्रतीत हो और पूर्व दिशा का वायु बहता हो तो इन लक्षणों के आधार पर यह निश्चित कहा जा सकता है कि वर्षा शीघ्र ही आवेगी।

(१३६)

नारी होय उदास, बीलाणों दुख देय घणो।
मांखण री नहिं आस, है असवारी मेघरी॥

दही का मंथन करते-करते स्त्री थक गई किन्तु मक्खन हाथ नहीं आया। इसलिये उसे उदास देख कर सान्त्वना देते हुए पति कहता है कि, वर्षा आने ही वाली है, इसलिये आज मक्खन की आशा छोड़ दो।

(१४०)

माखण टरियो माट, छिण-छिण छायो छाछ पर।
खंजन शिखा उतार, वृद्ध हुयो मेह माघजी॥

दही बिलौने वाले बरतन में मक्खन ठर कर ऊपर आगया हो और वह छाछ पर छितराया हुआ हो, खंजन-पक्षी के शिर पर शिखा नहीं दिखाई देती हो तो इन लक्षणों के आधार पर यह निश्चित है कि अब मेह नहीं आवेगा। अर्थात् मेह अब वृद्ध हो गया है।

(१४१)

* उठे खमीर दही दूध में, छाछ जु खाटी होय।
मत चिन्ता पिवजी करौ, बिरखा जल्दी होय॥

---

* खाटी हुय गई छाछ, दूध बिचल दही बी चलै।
आसी मेह अपार, घड़ियां पलकां माघजी॥

दही, दूध में खमीर उठाता देख कर, छाछ खट्टी हुई देख कर कृषक-पत्नी अपने पति से कहती है कि, अब आप चिन्ता न करें। आज के ये लक्षण ऐसे हैं कि, वर्षा अब आने ही वाली है।

(१४२)

पीतल कांसी लोह ने, पड्यौ काट चढ जाय ।
जलधर आवे दौडतौ, इण में संसै नांय ॥

नित्य उपयोग में आने वाले पीतल, कांसी और लोह के बरतनों पर यदि जंग चढ़ा हुआ दिखलाई दे तो यह समझलें कि बादल, वर्षा को लिए हुए दौड़ते-दौड़ते आ रहे हैं।

(१४३)

गूंद सरीखी चीकणी, साबण केरा झाग ।
पवन सामने दौड़ती, भेड़ी जावे भाग ॥
ए लक्खण विरखा तणां, इण में संसै नांय ।
इन्दर आवै दौडतौ, लोग सुखी हुय जाय ॥

भेड़ यदि गौन्द के समान चिकनी प्रतीत हो, उसके मुंह में से साबुन के झाग के समान झाग आवे (फेन निकले), जिस ओर से पवन आता है उस ओर ही यह मुंह करके भागे तो ये समस्त लक्षण देख कर कवि कहता है कि इसमे संशय करने की कोई गुंजाइश ही नही, ये लक्षण तो वर्षा आने के हैं।

(१४४)

*जब लग जल शीतल नहीं, उमच मिटी नहीं दह ।
अणपढिया सब यूं केव्है, तब लग जौरां मेह ॥

पिछले पृष्ठ के फुट नोट का शेषांश—

मथने पर भी दही से मक्खन न निकले, छाछ बहुत खट्टी हो जाय, दूध किम्बा दही में खमीर आ जाय तो ये लक्षण शीघ्र वर्षा आने के होते हैं।

* जब लग जल सीतल नही उनेब मिटी नहिं देह ।
अणपढिया सब यूं कहै, तब लों जोर है मेह ॥

तालाब आदि का जल शीतल न हो अथवा पीने पर स्वादिष्ट न लगे और गर्मी के कारण शरीर व्याकुल हो तो ये सब लक्षण जोरों के साथ वर्षा होने के हैं।

(१४५)

अति पित वारौ आदमी सौवें निदरा घोर ।
अण पढियौ अप देह ते, केव्है मेघ अति जोर ॥

वर्षा काल में, वर्षा के आगमन से पूर्व पित्त-प्रकृति वाले पुरुषों को अत्यन्त निद्रा आया करती है। अतः कवि ऐसे लक्षण देख कर कहता है कि, वर्षा का जोर है।

(१४६)

डीलें भली अराइये, नैरये बरसे मेह ।
नें से वन्दे गायड़ी, ओंसे मोंडे भह ॥

मनुष्य के शरीर पर अलाइयें (अम्होरी) निकलना भी वर्षा शीघ्र आने की सूचना देती है। वर्षा-आगमन के समय गौवें अपना शिर नवां कर (नीचा किये हुए) और भैंसें अपना मुंह ऊंचा करके इन्द्र राजा का अभिनन्दन करती हैं।

(१४७)

*नरां पसीना होय नींदालू आलस घणा ।
ए साचा संजोग, चहुँ दिस अम्बु घणां ॥

---

* १ आलस भौत शरीर हो, अंग पसीनो जांण ।
निन्दरा जै आवे अधिक, तौ बिरखा पहचांण ॥
२ आंक मये तो नेवड़ी, आवे आरस डील ।
थाये राजी मानवी, खूब बराते भील ॥

मनुष्य के शरीर में प्रस्वेद का बहुत होना, निद्रा का आना, आलस्य का आना, देख कर कवि कहता है कि ये सभी संयोगवश एक साथ प्रतीत हों तो यह निश्चित है कि, चारों दिशाओं में वर्षा बहुत होगी।

(१४८)

वात पित्तयुत देह जो, रहै मेघ सौ घूम।
अण पढियो आतम थकी, केव्है मेघ अति घूम॥

वात-पित्त प्रकृति वाले व्यक्ति को गर्मी अधिक प्रतीत हो, शिर घूमने लग जाय तो कवि कहता हैं कि ये लक्षण अत्यन्त वर्षा होने के हैं।

(१४६)

घणा उकारा कारणे, जक नें पडै जराय।
डीलें थाय परेवड़ौ, तरत मेह बरसाय॥

अत्यधिक गर्मी के कारण सारे शरीर में पसीना हो और किंचित भी शान्ति न पड़े तो यह लक्षण तुरन्त वर्षा आने के माने जाते हैं।

(१५०)

दुशमण री किरपा बुरी, भली सैण री त्रास।
आड़ंग कर गरमी करै, जद बरसण री आस॥

शत्रु यदि कृपापूर्वक व्यवहार करे तो उसे लाभदायक नहीं समझना चाहिये और मित्र यदि कटुक्ति (डांट-फटकार करे) कहे तो इसे सभ्य पुरुष हितकर ही मानते हैं। कवि ने इस उक्ति को वर्षा पर इस प्रकार से घटाया है कि, जब अत्यन्त तेज गरमी पड़ती है और इसके कारण शरीर पर का पसीना सूखता ही नहीं है अर्थात् प्रकृति द्वारा यह हितकारक त्रास दिया जाता है तभी, वर्षा की आशा होती है।

(१५१)

÷तीतर वरणी बादला, रेव्है गगन पर छाय ।
डंक कहै सुण भडुरी, विन वरस्यां नहिं जाय ॥

तीतर पक्षी के पंखों के रंग वाली बदली अगर आकाश में दिखाई दे तो डंक कवि भड्डली से कहता है कि वह, बरसे बिना नही जावेगी।

(१५२)

मोर पांख बादल उठै, रांड़ां काजर रेख ।
वा बरसै वा घर करै, इण में मीन न मेख ॥

मोर की पांखों के समान आकाश में बादल दिखाई दे, विधवा अपनी आंखो मे काजल डारे दिखाई दे तो कवि कहता है कि, निश्चय ही ऐसे बादल बरसेंगे और ऐसी स्त्री, अपना दूसरा विवाह कर किसी पर पुरुष के साथ बस जावेगी।

(१५३)

ओस जमै सिर घास, मोती सा झलमल करै ।
शीतल मन्द सुवास, वृद्ध हुयो मेह माघजी ॥

प्रातःकाल के समय घास पर ओस की बूंदें मोती के समान चमकती हुई दिखाई दे, वायु शीतल प्रतीत हो तो कवि कहता है कि वर्षा अब बरसने मे असमर्थ हो गई है। अर्थात् अब मेह नही आवेगा।

÷१ तीतर पंखा भेद बतावै,
विन बरस्यां ए कदी न जावे ॥
२ करे अकासे काबरी, तरे तरे नी भांत ।
ठाली होय नवाण तो, भरे बरी वरहात ॥

आकाश मे काबरी तीतर के पखों के समान बदली होकर विविध प्रकार के चित्र बनावे तो इस लक्षण से इतना मेह बरसेगा कि निवाण जलाशय भर जाते हैं।

(१५४)

+कुरज उड़ी कुरलाय, मकड़ी जालौ मैलियौ ।
माघा मेह न थाय, दस दिन पवन झकोयले ।।

कुरज नामक पक्षी अपने निवास स्थान (ताल-तलैया) को छोड़ते समय विलाप (दुखपूर्ण वाणी द्वारा चिल्लाते हुए) करते हुए अन्यत्र जाते हुए दिखाई दें, मकड़ी अपना जाला बनाने लग जाय तो इन लक्षणों को देख कर वर्षा-ज्ञान विशेषज्ञ-कवि, माघ को सम्बोधन करते हुए कहता है कि, अब वर्षा नहीं होगी अपितु दश दिन तक तो पवन ही चलेगा ।

(१५५)

उड़ी कुरज कुरलाय, पाछी अब आवे नहीं ।
मेह गयौ नहिं आय, ए लक्खण है नहि मेह रा ।।

कुरज नामक पक्षी आकाश में बोलते हुए अन्यत्र चले जांय और वापस नहीं आवे तो समझ लेना चाहिये कि, अब वर्षा समाप्त हो गई ।

बादलों के द्वारा वर्षा ज्ञान

(१५६)

वासी बादल रुक्या रहै, जल उष्ण हो जाय ।
रात में चमके आगिया, तौ मेह होवेलो आय ।।

+कुरज उड़ी करलाय, मकड़ी जाल जूं रोपिया ।
बून्द अवें नहीं आन, वृद्ध हुयौ मेह माघजी ।।
३ तीतर पंखा छिण छिण होय, तो दिन काढ़े एक अर दोय ।।
४ तीतर वरणी बादली, दिस आथूणी होय ।
वरसै सोले पौर जल, जल थल एक लो जोय ।।

रात्रि के बादल दिन में बासी रहे, जल पड़ा-पड़ा ही गरम हो जाय, रात्रि में जुगनू आकाश में चमकते हुए दिखाई दे तो ये लक्षण वर्षा आने की सूचना देते हैं।

(१५७)

आदल् सूं वादल् लड़े, बुग बैठे पंख बिखेर ।
याम दोय क तीन में, चढ़े घटा चौफेर ।।

आकाश में बादल से बादल टकराते हुए दिखाई दें, बगुले अपने पंखों को फैलाकर बैठे हुए दिखाई दें तो इन लक्षणों के आधार पर यह निश्चित है कि दो अथवा तीन प्रहर में चारों ओर वर्षा की घटा छा जावेगी।

(१५८)

वासी बादल् रुक्या रेव्है, गरमी जी दुखपाय ।
भोर हुयां गरजन हुवै, तो विरखा झड़ी लगाय ।।

कल के बादल रात्रि भर ज्यों के त्यों रहें, रात्रि में गर्मी के मारे चित्त व्याकुल हो और प्रातःकाल के समय बादलों में गर्जना होने लगे तो इन लक्षणों से यही समझें कि, अब वर्षा की झड़ी लगेगी।

(१५९)

पूरब ठण्डौ वायरौ, दिन में बिजली लाल ।
आभौ गाजै रात ने, तो मेह आवे तत्काल ।।

पूर्व दिशा का शीतल पवन हो, दिन में लाल डण्डे के समान बिजली चमके और रात्रि में आकाश में बादलों की गर्जना हो तो ये लक्षण शीघ्र वर्षा आने की सूचना है ऐसा मानें।

(१६०)

आभौ ढक्यौ है खूब हो, घटाटोप हुय जाय ।
च्यारूं दिस वायु नहीं, आवै विरखा धाय ।।

आकाश बादलों से ऐसा ढंका हो मानो घटाटोप हो और चारों ओर की दिशाओं में से किसी भी ओर से पवन नहीं आता हो तो ये लक्षण वर्षा आने की सूचना है।

(१६१)

आमा सामा बादला, उत्तर दिक्खण जाय।
के तौ विरखा व्है नहीं, व्है तौ झड़ी लगाय॥

यदि उत्तर से दक्षिण की ओर और दक्षिण से उत्तर की ओर इस प्रकार से बादल आमने-सामने आकाश में चलते दीखे तो समझलें या तो वर्षा होगी ही नहीं और यदि हो गई तो फिर झड़ी लग जावेगी।

(१६२)

बादल रंग सौनलिया हुवै अरुण झलक पण होय।
श्याम घटा के शिखर पर, तौ माघा बरसै तोय॥

काली घटाएं छाई हो, आकाश में बादलों का रंग सुनहरा जिस पर लाल रंग की झलक-सी हो तो इस लक्षण से वर्षा होने की सूचना मिलती है।

(१६३)

काला बादल सिरफ डरावै। धौला बादल पाणी लावै॥

आकाश में काले बादल दिखाई दें तो इनसे वर्षा की आशा नहीं। ये तो केवल भयभीत ही करते है। किन्तु श्वेत बादलों से तो जल बरसता ही है।

नोटः—एक स्थान पर भूरे बादलों से वर्षा होना बताया गया मिला है।

(१६४)

दिनुग्यां व्है चीतरी, सिंझयारां गड़मेल।
रात्युं तारा निरमला, ए कालां रा खेल॥

प्रातःकाल में आकाश में बादल छितराये हुए हों, सायंकाल के समय में गहरे बादल हो और रात्रि में आकाश निर्मल होकर तारे निकल आवे तो इन लक्षणों से इस वर्ष, अकाल होगा।

(१६५)

रात ऊजली बादल दिन में,
पूरब वायु व्हैवै छिन छिन में।
तौ धोवी कपड़ा धोसी घर में,
बाधा पड़गी मेह बरसण में॥

(१६६)

वर्षा काल में; दिन में बादल रहे और रात्रि में तारे स्वच्छ दिखाई दे, साथ ही रुक-रुक कर पूर्व दिशा का वायु बहे तो इन लक्षणों से यह समझलें कि, इस वर्ष, वर्षा नहीं होने के कारण नदियें सूखी ही रहेंगी और धोबी अपने कपड़े नदी पर नही अपितु कूए के जल से घर घर ही धोवेगा।

÷अम्बर राच्यौ तौ मेह माच्यौ॥

आकाश का वर्ण लाल होना, वर्षा के आगमन को सूचित करता है।

(१६७)

※ दिन में काढे दुवाला अर रात में काढे तारा।
आणन्द केव्है सण परमाणन्दा, ए छप्पनियारा चाला॥

वर्षा काल मे दिन में बादल और रात मे तारे आकाश में दिखाई दे तो इसे अकाल के लक्षण समझें।

पाठान्तरः—

÷बादल रातो तो मेह मातौ॥

※ दिन को बादर, रात को तारे। चलो कन्त जहं जीवें वारे॥

(१६८)

+दिन में गरमी अर रात में ओस,
तो विरखा पूगी अब सौ कोस ।।

वर्षा काल के दिनों में दिन में गरमी प्रतीत हो और रात्रि में ओस पड़े तो इस लक्षण से यह समझ लें कि, अब वर्षा यहां से सैंकड़ों कोसों दूर चली गई है । अर्थात अब वर्षा बन्द हो गई है ।

(१६९)

रातौ पीलौ हुवै अकास, तौ मत करजो विरखा की आस ।।

वर्षा काल में आकाश का वर्ण-लाल पीला दिखाई देने लग जाय तो इस लक्षण से यह निश्चित होता है कि अब वर्षा बन्द हो गई है ।

(१७०)

छिण छाया छिण तावड़ो, विरखा रुत रे मांय ।
इण लखणांसूं जाणजो, विरखा गई विलाय ।।

वर्षा काल में कभी धूप निकले, कभी छाया हो तो इस लक्षण से ऐसा समझलें कि, अब वर्षा बन्द हो गई है ।

(१७१)

* भोर समै डर डम्बरा, रात ऊजली होय ।
दोपारां सूरज तपै, तौ दुरभिक्ख लेसो जोय ।।

प्रातःकाल आकाश में बादल छाये रहें और रात्रि में आकाश स्वच्छ हो जाय और दिन में (मध्यान्ह समय में) खूब गर्मी पड़े तो इन लक्षणों से दुर्भिक्ष होने की सूचना मिलती है ।

+दिन में तपै रात में ओस । भाघ केव्है विरखा सौ कोस ।।

* दिवस करै गहडम्बरी, बादल रेण बिलाय ।
पुनि छतीसी यूं केव्है, ए दुरभिक्ख दरसाय ।।

(१७२)

ऊंधा बादल जे चढे, विधवा ऊभी न्हाय ।
घाघ केव्है सुण भड्डरी, बै बरसे वा जाय ।।

वायु पूर्व दिशा का हो और बादल पश्चिम दिशा की ओर से चढे, विधवा स्त्री खड़ी-खड़ी स्नान करे तो इन लक्षणों को देखकर कवि घाघ, भड्डरी को सम्बोधन करते हुए कहता है कि वे बादल तो बरसेंगे और इस लक्षण वाली स्त्री पर-पुरुष के साथ भाग जावेगी।

(१७३)

* दिन ऊगां गह डम्बरा, आथण भीणी वाल् ।
डंक केव्है सुण भड्डली, ए अहनांणां काल् ।।

प्रात:काल आकाश में मेह का आडम्बर हो और सायंकाल को वे बादल कम हो जाय तो इन लक्षणों के आधार पर डंक नामक कवि भड्डली से कहता है कि, इस वर्ष अकाल होगा।

(१७४)

परभाते बादल् हुवै, रात उजेरी होय ।
तो तुम जाणौ चतरनर, बिरखा कदी न जोय ।।

प्रात:काल आकाश में बादलों का होना और रात्रि में स्वच्छ (ऊजली) रात का होना यह सिद्ध करता है कि अब वर्षा होने की आशा छोड़ देना ही चाहिये।

---

* १ परभाते गेह डम्बरा, सांजे सीला वाव ।
डंक कहै सुण भड्डली, काल् तणा सुभाव ।।

* २ दाडे काडे डेरं ने, रात रे काडे तारा ।
गड़ला बडला कई गया, ई खोटा है सारा ।।

(१७५)

+आबे ऊठ्यो बादरो आथमणौ दखणाऊ ।
करमा बरमै ई वर, वरै ने थाय धपाउ ।।

आकाश में पश्चिम और दक्षिण दिशा से उठा हुआ बादल, पूर्व एवं उत्तर की ओर जाय तो इन लक्षणों से वर्षा नहीं होने की सूचना ही मिलती है। यहाँ कर्म एवं धर्म के संयोग को भाग्यपरक मान कर कवि कहता है कि, ऐसा बादल भाग्य से ही बरसता है।

(१७६)

÷ऊगूणा बादल् आथूणा जाय,
मिनख पराई नार हंसाय ।
वे बरसै वा ऊदल् जाय,
इण में फरक रती नहिं आय ।।

पूर्व दिशा के बादलों का पश्चिम में जाना वर्षा के लिये बरसना निश्चित है। जिस प्रकार पर-पुरुष और पर-स्त्री का एकान्त में परस्पर हंस-हंस कर बातें करना, उस स्त्री के लिए दूसरा पति कर लेना निश्चित है।

(१७७)

रात निरमली दिन में छाया,
तो मेह नहिं बरसेलो भाया ।।

×जो आथूणो ऊगूणो जाय । तो जांणौ विरखा गई विलाय ।।

÷ऊगूणां बादल् आथूणां जावे । इण लखणां सूं विरखा आवे ।।

÷उठी उगमणौ बादरौ, आथमणो जे जाय ।
तौ वरखा निश्चै करी, मोटे छांटे थाय ।।

पूर्व दिशा से बादल उठ कर पश्चिम की ओर जाते दीखे तरो इस लक्षण से यह निश्चित है कि वर्षा होगी और बड़ी-बड़ी छांट अर्थात् बड़ी-बड़ी वर्षा की बूंदें पड़ेंगी।

रात्रि में आकाश का स्वच्छ रहना और दिन में आकाश का बादलों से छाया रहना, वर्षा नहीं होने की सूचना है।

(१७८)

परभाते गेह डम्बरा, दोफारा तपन्त ।
रात्यूं तारा निरमला, चेला करो गछन्त ।।

प्रातःकाल मेघ के बादल दौड़ते दीखें, मध्यान्ह में गर्मी प्रतीत हो और रात को स्वच्छ निर्मल तारे दिखाई दें तो इन लक्षणों को देख कर गुरु अपने शिष्य से कहता है कि, इस वर्ष यहाँ अकाल पड़ेगा, अतः यहाँ से रवाना हो जाना चाहिये।

(१७६)

दोफारां गहडम्बर थाय,
सांझे सीला वाय चलाय ।
रात्यूं तारा तट्टमतट्ट,
माघ दिसन्तर चालो चट्ट ।।

मध्यान्ह में आकाश में गहरे बादल छाये रहें और सायंकल को शीतल पवन चलने लग जाय, रात्रि में आकाश निर्मल होकर तारे स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे तो इन लक्षणों से यह स्पष्ट है कि इस वर्ष अकाल होगा।

(१८०)

सवार रो गाजियो ने सा पुरुस रो बोलियो-एलो नहिं जाय ।।

प्रातःकाल का बादलों का गरजना और सत्पुरुष-वचन व्यर्थ नही जाते। अर्थात वर्षा होगी।

(१८१)

दिन रा बादल अर सूम रो आदर बराबर है सा ।।

दिन में बादलों का रहना सूम के द्वारा किये गये आदर के समान व्यर्थ है।

(१८२)

दिन में बादल रात तारलिया,
चालो कन्त जठे जीवे टाबरिया ।।

दिन में बादल और रात में स्वच्छ तारे निकलते हुए देख कर एक दिन पत्नी अपने पति से कहती है कि ये अकाल के लक्षण हैं । अतः हमें ऐसे स्थान पर चलना चाहिये जहाँ बच्चों का पालन-पोषण भली प्रकार से हो सके ।

(१८३)

रात्यूं रेव्है बादला, दिन में दौड्या जाय ।
घाघ केव्है सुण भड्डली, विरखा गई विलाय ।।

रात को तो घनघोर घटा छाई रहे और दिन में ये बादल दौड़ते हुए चले जांय तो इस लक्षण को देखकर कवि घाघ, भड्डली से कहता है कि अब वर्षा चली गई है । ऐसा समझ लेना चाहिये ।

(१८४)

आवे वाही वादरो, रातर नौ जे रेय ।
जाये ई कारेय तौ, वर्‍या बिना नौ रेय ।।

आकाश में रात के बादल वासी रह जांय अर्थात दूसरे दिन भी ज्यों के त्यों ही रहें तो यह निश्चित है कि वे बरसे बिना नहीं जावेंगे ।

(१८५)

आवे झैंणी वादरी, थाये करवा लोण ।
मेंह वरे ने मानवी, ने वे भरेंय दोण ।।

आकाश में पतली-सी बदली हो और नमक में पड़े-पड़े ही तरी (सील) आ जाय तो इन लक्षणों से यह निश्चित है कि वर्षा आवेगी ।

(१८६)

अम्बर तर हरियोह, फरहरियो चौथां पवन ।
आसी जलधरियोह, पुहमी पेले माधजी ।।

आकाश का रंग गहरा नीला हो, वायु चारों दिशाओं का हो तो इन लक्षणों से यह निश्चित है कि वर्षा बहुत आवेगी।

(१८७)

बादल् ऊपर बादल् धावे, केव्है भड्डरी मेह बरसावे ॥

आकाश में बादल एक दूसरे पर, इस प्रकार से दौड़ते हुए दिखाई देने पर भड्डरी कहता है कि ये लक्षण शीघ्र ही वर्षा होने के हैं।

(१८८)

आवे लीलो श्याम जे, स्यारे खोंटे थाय।
करी ऊबरौ मेंह तो, तरत घड़ी बरसाय ॥

आकाश चारों दिशाओ मे गहरे नीले रंग का हो जाय तो मेह उभाड़ करके उसी क्षण बरसता है

(१८९)

गरजे सो बरसे नहीं, बरसे घोर अन्धार ॥

गरजने वाले बादल बरसते नही हैं। जो बादल अत्यन्त काला होता है वह बिना गरजना किये ही चुपचाप आता है और बरस जाता है।

(१९०)

तारा अत तग तग करे, अम्बर नीला हुन्त।
पड़ै परल् पांणी तणी, जद सन्ध्या फूलन्त ॥

आकाश में तारे अत्यन्त जगमगाहट करें और आकाश का रंग नीला हो जाय, इस दिन सायं-सन्ध्या फूली हुई हो तो इन लक्षणों से वर्षा जोर के साथ बरसेगी।

(१६०)

-:-कारी कांठी पातरी, आवे जे बन्दाय ।
तो सरवर फूटे घणां, जल् थल् एक कराय ।।

आकाश में यदि काले बादलों की पतली किनारी बन जाय तो इस लक्षण से इतनी वर्षा होने की सूचना होती है कि तालाबों के बांध टूट जाने से जल और स्थल एक समान हो जाते हैं ।

(१६१)

बादल् पीत जल् दूरो, सुरंग जलद जल् बरसै ।
बादल् हरियो चवै छपरियो, श्याम घटा मन हरसै ।।

बादल का रंग पीला हो और ठण्ड पड़ती हो तो वर्षा दूर चली गई, ऐसा समझें । बादलों का रग सुन्दर प्रतीत हो (गहरे काले हों) तो वर्षा होगी । बादलों का रंग हरा हो, काली घटाएँ छाई हों तो तुरन्त वर्षा होगी, यह निश्चित है ।

(१६२)

बादल् पीलो (तौ) मेह सीलो ।।

बादल का रंग पीला देख कर वर्षा-विशेषज्ञ कहता है कि इस लक्षणों से वर्षा नहीं होगी ।

(१६३)

बादल् कालो, (तो) मेह मतवालो ।।

काले बादलों की घटा को देखकर यह समझ लेना चाहिए कि, वर्षा होने की यह सूचना है ।

-:-पाणी लावे पातरी, होय बादरी आब ।
ई नारी निश्चै जणे, जे ने पेटे गाब ।।

आकाश में पतली बदली हो तो जिस प्रकार सगर्भा-स्त्री के निश्चय ही सन्तान होती है, उसी प्रकार से वर्षा भी निश्चित ही समझें ।

(१९४)

रात्यूं बादल वासी रहै, दिहां ताप अति तन ने दहै ।
इण बिध दिन सात चलावैं, तो माघा मेह गयोड़ो आवैं ॥

रात के बादल ज्यों के त्यों ही रहें और दिन में अत्यन्त गर्मी पड़े। यदि इस प्रकार से सात दिन व्यतीत हो जाय तो इस लक्षण से गया हुआ मेह भी वापस आ जाता है।

(१९५)

जे बादल बादल में धमसे तो केव्है भड्डरी पाणी बरसैं ॥

यदि एक बादल में दूसरे बादल आ-आकर घुसे तो इस लक्षण से पानी बरसेगा।

(१९६)

सूर्योदय के साथ ही, मेह गरजना होय ।
पहर दोय या एक में, विरखा आछी होय ॥
दैव योग बरसे नहीं, तो बाजै जोर को वाय ।
फल इणरो यो हो बणै, अग्गम दियो बताय ॥

प्रात:काल सूर्योदय के साथ ही यदि बादल गर्जना करे तो एक या दो प्रहर में ही अच्छी वर्षा हो जावेगी। कदाचित वर्षा न हो तो जोर का वायु बहेगा ऐसा भविष्य-वेत्ता ने कहा है।

दिशाएँ और बादलों से वर्षा ज्ञान

(१९७)

ऊगूणे बादल घणां, धूंआं सा जो होय ।
सिंझ्यारा काला हुवै, तो विरखा आछी होय ॥

पूर्व दिशा में बादल अधिक हो और उनका रंग धूंएं के जैसा हो। यही बादल यदि सायंकाल में काले हो जाँय तो इन्हें अच्छी वर्षा करने वाले समझें।

(१६८)

धोलो पीलो लाल अर कृष्ण बादला जोय ।
स्निग्ध मन्द गति शान्तदिस, तो आछी विरखा होय ।।
स्निग्ध वरण अर मुधरो गाजै । मंदगति जीं बादल ने छाजै ।।
आछा पोहरां एहवो होय । तो सगली जाग्यां मेवलो जोय ।।
आछो वरण सुगन्ध अर, बिजली गरजन जोय ।
आछो वाजै बायरो, तो मेह घणेरो होय ।।

आकाश में सुफेद, लाल और पीले एवं कृष्ण-वर्ण के स्निग्ध और मन्द-गति वाले बादल यदि शान्त दिशा में हों तो इस लक्षण से श्रेष्ठ वर्षा होगी । ये बादल स्निग्ध वर्ण वाले, मधुर गरजना करने वाले या मन्द-गतिवाले अच्छे मुहूर्त में उत्पन्न हों तो इनसे सर्वत्र वर्षा होगी । बादल, बिजली से युक्त सुगंधिवाले, श्रेष्ठ गरजना करने वाले, शुभ वायु से युक्त हों और मीठा जल बरसाने वाले हों तो उत्तम वर्षा होगी ।

मास तिथि वार आदि से वर्षा ज्ञान

(१६६)

* शनि रवि क मंगल, जे पौडे सुरराय ।
तो चाक चडावै मेदनी, अर करकै पाल बंधाय ।।

देव-शयनी एकादशी (आषाढ शुक्ला ११ का दिन) को शनि रवि किम्बा मंगलवार आ जाय तो पृथ्वी चक्कर पर चढ़ जावेगी । अर्थात् इस पर के प्राणी, संकट में पड़ जावेंगे और परिणामस्वरूप

---

* शनि अदीतां मंगला, जे पौडे सुरराय ।
अन्नज मूंघो होवसी, जोरां चालसी वाय ।।

देव-शयनी एकादशी के दिन शनिवार या रविवार इनमें से कोई-सा भी अथवा मंगलवार भी हो तो अन्न महंगा बिकेगा और प्रचंड वायु चलेगी ।

मरे हुए प्राणियों के अस्थि-पंजर (करक) इतने इकट्ठे हो जावेंगे कि, इनका एक बहुत बड़ा ढेर (पाल) हो जावेगा। अर्थात् इस वर्ष भयंकर दुष्काल होगा।

(२००)

सोमां सुकरां सुरगुरां, जे पौढ़े सुरराय।
अन्न बहोलो नीपजै, पुंहमी सुख सरसाय॥

देव-शयनी एकादशी के दिन सोमवार, गुरुवार अथवा शुक्रवार इनमें से कोई-सा भी वार आ जाय तो इसके परिणामस्वरूप पृथ्वी पर निवास करने वाले समस्त प्राणी सुखी होंगे और अन्न भी बहुत ही उत्पन्न होगा।

(२०१)

रवि टिड्डी बुध कातरा, मंगल मूसा जोय।
जे हर पौढ़े सनीचरां, तो विरला जीवै कोय॥

देव-शयनी एकादशी के दिन रविवार हो तो इस वर्ष टिड्डियों की बहुतायत होगी। इस दिन बुधवार होगा तो कातरा (एक प्रकार का वर्षा-काल का कीडा) अधिक होगा। यदि इस दिन मगलवार हो तो चूहे अधिक होगे और कदाचित इस दिन शनिवार होगया तो पृथ्वी पर ऐसा सकट आवेगा कि विरले व्यक्ति ही जीवित रहेगे।

(२०२)

ताते वारे वर नवो, बे जे माह अहाड़।
खेंस करे तो मेउलो, थाय रोग ने राड़॥

राजस्थान प्रदेश मे कहीं-कहीं नव-वर्ष आषाढ शुक्ला प्रतिपदा से माना जाता है। अतः इसे वर्ष-प्रवेश का दिन मान कर ही यह बतलाया गया है कि इस दिन यदि कोई क्रूर वार (ताता वार) जैसे रविवार मंगलवार इन मे से कोई आ जाय तो इस लक्षण से यह धारणा निश्चित हो जाती है कि इस वर्ष, वर्षा का खिचाव (अल्प-वर्षा), रोग और युद्ध आदि संकट आवेंगे।

(२०३)

आसोज वदी अमावसे, जे आवै सनिवार ।
धन कण राखी संग्र हो, सहु जग ना नर नार ।।

आश्विन कृष्ण अमावास्या को शनिवार का आजाना अकाल की सूचना देता है । अत: कवि, संसार के समस्त मनुष्यों को कहता है कि, वे जीवन-निर्वाहार्थ धन एवं अन्न का संग्रह कर के रखें ।

(२०४)

दीवाळी जे हुवै मंगलवारी,
तो हँसे करसो रोवै बौपारी ।।

मंगलवार की दिवाली उत्तम कृषि होने की सूचना है । अधिक अन्न उत्पन्न होने के कारण कृषक प्रसन्नतापूर्वक हँसेगा परन्तु अनाज सस्ता हो जाने के कारण घाटा लगने या कम मुनाफा होने के कारण व्यापारी पछतावेगा ही ।

(२०५)

माह मंगळ जेठ रवि, भादरवै सनि होय ।
डक्क कहै सुण भड्डली, विरला जीवै कोय ।।

डक्क कवि, भड्डली को सम्बोधन कर कहता है कि माघ मास में पांच मंगलवार, ज्येष्ठ मास में पांच रविवार और भाद्रपद मास में पांच शनिवार आ जाना अशुभ-योग है । इसके परिणामस्वरूप, पृथ्वी पर विरले ही जीवित रहेंगे ।

(२०६)

* पांच सनीचर पांच रवि, पांचूं मंगळ होय ।
करै उपद्रव भूमि पर, विरला जीवै कोय ।।

---

* इसकी दूसरी पंक्ति, एक स्थान पर प्रकार से मिली है :—
छत्र टूटि धरती परै, की अन्न मुहंगो होय ।।

किसी भी महीने में पांच शनिवार या रविवार अथवा पाँच मंगलवार आजाय तो इसका प्रभाव उत्तम नहीं है। इसके फलस्वरूप पृथ्वी पर उपद्रव होंगे और विरले व्यक्ति ही जीवित रह सकेंगे।

(२०७)

रोग घणो रवि पांच सूं, मंगल् बहु भयदाय।
शनि पांच इक मास व्है, तो रस कस मूंघा थाय ।।

किसी भी महीने मे पांच रविवार का होना रोगोत्पादक, पाँच मंगलवार का होना भयदायक और पाँच शनिवार का होना रसादि खाद्य-पदार्थों की महँगाई का द्योतक है।

(२०८)

सोम शुक्र गुरु बुद्ध दिन, पांच वार जे आय।
राजा परजा सब सुखी, जग मंगल् वरताय ।।

किसी भी मास मे पांच सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार इनमें से कोई भी आजाय तो यह संसार के कल्याणकारक एवं मंगल-दायक होते हैं। इस योग से राजा, प्रजा आदि सभी लोग सुख का अनुभव करेंगे।

(२०९)

पेले महीने पांच सनि, बीजा में व्है भाण।
तीजा में जे भौम व्है, इण रो फल यूं जाँण ।।
फिरे चक्र ज्यूं मेदनी, मचै घणो सगराम।
रुण्ड मुण्डथी जग दुखी, मिले न क्युंहि विश्राम ।।

वर्ष के प्रथम मास मे पाँच शनिवार, दूसरे में पांच रविवार और तीसरे में पांच मगलवार आ जाय तो उस वर्ष संकट के मारे प्रजा वर्ग इधर-उधर चक्र के समान घूमता रहेगा, भयंकर संग्राम होते रहने के कारण नर-संहार से लोग दुःखी होंगे, लोगों को कहीं भी विश्राम का स्थान नहीं मिलेगा।

(२१०)

तेरसियौ पख होय तो, झगड़ा टण्टा होय ।
सुख नहिं पावे मानवी, लोही नदियां जोय ।।

यदि किसी मास का पक्ष तेरह दिनों का हो तो इसके फल-स्वरूप लोगों में परस्पर लड़ाई-झगड़े होंगे, मनुष्य सुख से वंचित ही रहेंगे और युद्धादि के कारण रक्त की नदियां बहेंगी ।

(२११)

तेरह दिनां रो देखो पाख,
तो अन्न मूंघौ समझौ बैसाख ।।

किसी भी मास के किसी भी पक्ष में तेरह ही दिन हों तो इसके फलस्वरूप वैशाख में अन्न की महंगाई रहेगी ।

(२१२)

शुक्ल पक्ष की तिथि बध्यां, सुख वृद्धि हो जाय ।
घट्यां सूं दु:ख ऊपजै, सम सुखदायी थाय ।।

किसी भी मास के शुक्ल-पक्ष में तिथियें समान ही रहें तो यह पक्ष सामान्यतया सुखदायी रहता है । किन्तु, इसमें तिथि का बढ़ना तो सुख की वृद्धि कारक होता है परन्तु तिथि का घटना दु:खों के बढ़ने की सूचना देता है ।

(२१३)

* कृष्ण पक्ष की तिथि बधै, शुक्ल पक्ष घट जाय ।
एक चीज तो कंई बधे, सभी चीज बध जाय ।।

---

* तिथि घट्यां सुख ऊपजै, पक्ख अन्धारा मांय ।
जे बध जावै तो गिणौ, राज प्रजा दुख थाय ।।

कृष्ण पक्ष में तिथि का घटना तो सुखदायक माना गया है। किन्तु इस पक्ष में तिथि का बढ़ना, राजा एवं प्रजा के लिए कष्टदायक होता है ।

कृष्ण पक्ष में तिथि का बढ़ना, शुक्ल पक्ष में तिथि का घटना, ये लक्षण इस वर्ष अनाज के भाव महंगे होने की अग्रिम सूचना देते है।

(२१४)

बीजै हप्ते शुक्ल पक्ष, होवे आरम्भ मेह।
लगातार दिन सात तक, मेह न देवे छेह॥
बीजै हप्ते कृष्ण पक्ष, होवै आरम्भ मेह।
झटपट ही खुल जावसी, नहीं टिकैलो मेह॥

किसी भी चातुर्मासिक महीने शुक्ल के पक्ष के द्वितीय सप्ताह में वर्षा प्रारम्भ हो जाय तो वह मेह एक सप्ताह तक बरसेगा। किन्तु यही वर्षा यदि कृष्ण पक्ष के द्वितीय सप्ताह मे प्रारम्भ हो तो वह शीघ्र ही खुल जावेगा अर्थात् अधिक नही टिकेगा।

(२१५)

पूनम दिन विरखा हुयां, लो मास आगलो जोय।
घी अन्न गोधूम भी, निसचै मूंघा होय॥

किसी भी महीने की पूर्णिमा के दिन यदि वर्षा हो जाय तो इससे अगले महीने में घी, गेहूँ आदि अन्न निश्चय ही महगे होगे।

(२१६)

दो असाढ़ दो भादवा, दो आसौज जे आय।
सोना चाँदी बेच कर, नाज विसावौ साय॥

जिस वर्ष दो आषाढ़, दो भाद्रपद, दो आसौज इनमें से कोई भी हो तो उस वर्ष, वर्षा का अभाव रहेगा। अतः सोना चाँदी बेच कर अन्न का संग्रह कर लेना चाहिये।

(२१७)

दो सावण दो भादवा, दो काती दो माह।
ढांढा घोरो बेच कर. नाज विसावण जाह॥

जिस वर्ष दो श्रावण, दो भाद्रपद, दो कार्तिक एवं दो माघ महीनों में से कोई भी हो तो कवि सम्मति देता है कि अपने चौपायों को बेच कर अन्न संग्रह करे चले जाओ। क्यों कि इस वर्ष अकाल पड़ेगा।

(१२८)

चैत्र वैसाख असाढ़ अर माघ फागण का मास।
सातम स्वाती नखत हुयां, शुभदायी फल आस॥

चैत्र, बैशाख, आषाढ़, माघ और फाल्गुण इन पांच महीनों की सप्तमी को यदि स्वाति नक्षत्र हो तो वर्ष भर के लिये यह योग अत्यन्त शुभदायक है।

पृथक् पृथक् दिशाओं के मेघों से वर्षा ज्ञान

(१)

दिक्खण सूं अगनीकूंण में बादल व्है तो जाय ।
जे लीला पीला होय तो, विरखा अवस कराय ।।

दक्षिण दिशा की ओर अग्नि कोण की ओर नीले-पीले रंग के बादल जाते हुए दिखाई दे तो इस लक्षण से अवश्य वर्षा होने की सूचना मिलती है ।

(२)

लंकाऊ का बादला, जे धुराऊ हो जाय ।
अर चौवाया वायु चाले, तो विरखा दौड़ी आय ।।

दक्षिण दिशा की ओर के बादल यदि उत्तर दिशा की ओर आ जाय तो इस लक्षण से तत्काल चारों ओर का वायु बह कर वर्षा कर देते हैं ।

(३)

नैरुत कूणका बादला, जे फुरती सूं आवे ।
थोड़ी विरखा होवसी, क पूरो खंच करावै ।।

नैऋत्य-कोण के बादल (उतारू बादल) यदि अत्यन्त शीघ्र गति से आते हों तो इस लक्षण से या तो अल्प-वर्षा होगी या होगी ही नहीं ।

(४)

आथूणी दिस का बादला, लेण बन्ध्या जे आवे ।
एक दिन वाजै वायरो, तो पछै मेह बरसावे ।।

पश्चिम-दिशा की ओर से लगातार एक के बाद एक बादल आते हुए दिखाई दें तो इस लक्षण के प्रभाव से एक दिन वायु चलेगा और तत्पश्चात वर्षा होगी ।

(५)

भाखर सा भूरा बादला, मन्द गती सूं आवे ।
शान्त खूंट सूं आय कर, बन्द खूंट कूं जावे ।।

भूरे रंग के तथा पहाड़ के समान बड़े-बड़े (जिस प्रकार ज्येष्ठ-मास में होते हैं) बादल, जिस ओर से आते हैं उस ओर की मौसमी हवा शान्त है और ये जिस ओर जाते हैं उधर का मौसम तूफानी है, ऐसा समझें।

(६)

रुई सरीखा बादला, तूफान खूंट सूं आवे।
शान्त हवा जिण देस में, उणीज खूंट में जावे॥

धुनी हुई रुई के समान हलके एवं श्वेत रंग के बादल जो अधिकतर चैत्र-वैशाख में होते हैं जिस ओर से आते हैं उधर का मौसम तूफानी है और ये बादल जिस ओर जाते हैं, उधर की मौसमी हवा शान्त होने को सूचित करते हैं।

(७)

रुई सरीखा बादला, शीघ्र गती सूं आवे।
उत्तर वायव कूंण सूं, तो निस्चै जल बरसावे॥
भूले चूके जे कदी, नेरुत दिक्खण सूं आवे।
भर सियाले तो ओला बरसै, चौमासे जल वरसावै॥

धुनी हुई रुई के समान हलके और श्वेत बादल एक के बाद एक अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक उत्तर अथवा वायव्य-कोण से आने लगें तो ८ प्रहर के भीतर-भीतर ही अवश्य वर्षा होगी। कदाचित यही बादल दक्षिण या नैऋत्य-कोण से आवें तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि जब शीतःकाल होगा तब ओले गिरेंगे और वर्षा काल हो तो मेह बरसेगा।

(८)

श्वेत कोट रुत पहल ज्यूं, गजघड़ बान्धे जोय।
अग्नि पवन वायव चल्यां, नहि बरसेलो तोय॥

श्वेत रुई के पहल के समान हलके बादल हों और अग्नि या वायव्य-कोण का वायु हो तो, इन लक्षणों से वर्षा नहीं होगी।

बिजली से वर्षा ज्ञान

(१)

पिच्छम ऊत्तर क्रूण की बिजली लावे मेह ॥

जब पश्चिम और उत्तर कोण की ओर बार-बार बिजली चमकती हुई दिखाई दे तो इस लक्षण से यह समझ लें कि वर्षा होना निश्चित है।

(२)

ईसानी, बीसानी ॥

ईशाण-कोण की ओर बिजली चमकना अच्छी वर्षा होना सूचित करता है।

(३)

ईसाण क्रूंण की बीजली शीघ्र गति सूं जाय ।
दक्खण उत्तर तिर्जक व्है तो मेघां झड़ी लगाय ॥

ईशाण-कोण की बीजली की गति अति शीघ्र हो, वह दक्षिण, उत्तर किम्वा तिर्यंक (तिरछी) हो तो इस लक्षण से यह समझें कि, वर्षा शीघ्र आवेगी।

(४)

थाय नना नी वीजरी, नन्ना नी गाज ।
तो निश्चै दन ऊगते, वरसें में माराज ॥

प्रात:कालीन (४-५ बजे के समय) आकाश में बिजली का चमकना, अथवा मेघ का गरजना, सूर्योदय होते ही अवश्य वर्षा होके को सूचित करते हैं।

(५)

* उत्तर चमकै बीजली, वहै जे पूरब वाय ।
घाघ केव्है सुण मड्डली, बलद घरां में लाय ॥

---

*उत्तर चमकै बाजली, पूरब बहे जो बाव ।
घाघ कैव्है सुण भड्डरी बलद मांयने लाव ॥

उत्तर दिशा में बिजली चमकती हो, और पूर्व दिशा का वायु हो तो इन लक्षणों के आधार पर भाघ नामक कवि, भड्डली को सम्बोधन करते हुए कहता है कि, कृषक को चाहिये कि, बैलों को अपने घरों में बान्ध दे (खुली जगह न बान्धे) । क्योंकि, वर्षा आने का योग है ।

(६)

घणो वरावे मेउलो, थाये धराऊ बीज ।
थाय दशा भूखी मये, तो नें ऊगे बीज ॥

उत्तर दिशा में बिजली का चमकना बहुत वर्षा होने को सूचित करता है । इसके विपरीत यदि दक्षिण दिशा में बिजली की चमक दिखाई दे तो वर्षा के अभाव में पृथ्वी में बोया हुआ बीज भी व्यर्थ जाता है ।

(७)

धुर पूरब दिस बीजली, चातक लवतो रंत ।
सूरयो परवाई पवन, विरखा करै अचिन्त ॥

उत्तर अथवा पूर्व का वायु हो, किम्वा उस ओर बिजली चमकती हो, पपीहा बोलता हो तो ये समस्त लक्षण अचानक वर्षा आने को सूचित करते हैं ।

(८)

थाय झपाझप वीजरी, आव दसा जे स्यार ।
गाजे अंदारे, घणो, तो वरसै एकज धार ॥

आकाश में चारों दिशाओं में द्रुत-गति से बिजली का चमकना यह लक्षण मेघ का गरज कर अन्धेरा करते हुए एक ही धारा में (अविच्छिन्न रूप से) बरसने को सूचित करता है ।

(९)

ऊगुणी बीज आछी बाजै । अग्नि कूण मेह नहीं निवाजै ॥
लंकाऊ की हो तो थोड़ो मेह । नेऋत हुयाँ देवेलो छेह ॥

आथूणी रौ मेवलो सारो। वायव हुयां वा परबारो॥
उत्तर उत्तम विरखा छाजै। ईशाण कैव्है मेह झट आजै॥

पूर्व दिशा में बिजली हो तो उत्तम वर्षा होगी। अग्नि-कोण की बिजली वर्षा का नाश करती है। दक्षिण दिशा की बिजली स्वल्प-वर्षा की सूचना देती है। *नैऋत्य दिशा की बिजली से वर्षा नहीं होने की* चिन्ता रहती है। पश्चिम दिशा की बिजली हो तो सम्पूर्ण खेतियों को वृद्धि करने लायक पर्याप्त वर्षा की सूचना देती है। वायव्य-कोण की बिजली केवल वायु की ही वर्षा करती है। किन्तु उत्तर दिशा की बिजली उत्तम वर्षा तथा ईशान-कोण की बिजली तुरन्त वर्षा होने की सूचना देती है।

(१०)

कंचन जैसी ऊजली, उत्तर वीज सुहाय।
अग्गम देवे सूचना, बेगी विरखा आय॥

सोने के समान रंग एवं आभा वाली उत्तर दिशा मे चमकने वाली बिजली से यह विदित हो जाता है कि, अब वर्षा शीघ्र ही आने वाली है।

(११)

लीली धोली तामड़ी, गौरी बिजली होय।
एक बादल सूं दूसरे, जाती लेवो जोय॥
मीठी गरजन जो करे, तो ऐसो जोग बतावै।
आवै विरखा मोकली, लोग सुखी हो जावै॥

एक बादल से दूसरे बादल में जाने वाली बिजली का रंग यदि श्वेत, नीला, ताम्र और गौर हो और साथ ही मधुर-गर्जना भी हो तो यह अत्यन्त वर्षा होने की सूचना देती है।

(१२)

* चन्नण बरणी वीजली, लावै जोर रो वाय।
ऊमस होवै मोकली, जे लाल वरण हो जाय॥
काल पड़े ग्रन्न ना मिलै, सेत वरण जे होय।
विरखा होवै मोकली, जे पीलो लेवो जोय।

ग्राकाश में चन्दन के समान (कपिल वर्ण) रंग की बिजली चमकती हुई दिखाई दे तो इसके प्रभाव से केवल वायु ही बहेगी। यदि बिजली का रंग लाल हो तो गर्मी बढ जावेगी। बिजली का रंग पीला होना वर्षा होने को सूचित करता है। कदाचित बिजली का रंग श्वेत (सुफेद) हो तो यह निश्चित ही समझ लें कि, इस वर्ष, वर्षा का ग्रभाव रहेगा। ग्रकाल होगा।

(१३)

कपिला सूं वायु चलै, घाम ताप जो है लाल।
सर्वनाश काली करै, धोली करै बेहाल॥

कपिल रंग की बिजली से ग्रधिक वायु, लाल रंग की बिजली से तेज धूप ग्रौर गर्मी, काली बिजली से सर्वनाश एवं श्वेत रंग की बिजली से दुर्भिक्ष होने की सूचना मिलती हैं।

(१४)

थाय इसाणी वीजरी, हुंज्या फूले हवार।
तीजै दन तीजी घड़ी, वरसै मूसलधार॥

ईशान दिशा में बिजली चमकना ग्रौर प्रातःकालीन सन्ध्या खिली हुई प्रतीत हो तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि, तीसरे दिन या तीसरी घड़ी (लगभग साढे सात घण्टे) में मूसलाधार वर्षा होगी।

---

* वाताय कपिला विद्युत्, ग्रातपायाति लोहिनी।
पीता वर्षाय विज्ञेया, दुर्भिक्षाय सिता भवेत्॥

पृथक-पृथक ऋतुओं में वर्षा न करने वाली बिजली

(१५)

राती पीली बीजली, शिशिर ऋतु में होय ।
नीली धोली वसन्त में, नहिं वरसेलो तोय ।।
मूंगी मधु वरणी तथा लूखी निश्चल होय ।
विरखा तो आवै नहीं, ग्रीष्म ऋतु जो होय ।
ताम्बा वरणी बीजली, व्है विरखा रुत के मांय ।
गोरी भी हुय जाय तो, विरखा आवै नांय ।।
ताम्बा वरणी बीजली, या कालो रंग बतावै ।
हेमन्त ऋतु जे होय तो, मेह नहीं बरसावै ।।
शरद ऋतु नीली हुयां, लाभ नहीं है कोय ।
विरखा तो आवै नहीं, रूड़ो बादल जोय ।।

लाल व पीली शिशिर-ऋतु में, नीली व श्वेत वसन्त-ऋतु में, हरी किम्बा शहद के समान रंग वाली रुक्ष एवं निश्चल ग्रीष्म-ऋतु में, गौर एवं ताम्र वर्णवत् वर्षा-ऋतु में, कृष्ण एवं ताम्र वर्णवत् हेमन्त-ऋतु मे तथा केवल नीले रंग की बिजली शरद-ऋतु में हों तो इन्हें निर्जल-बिजलियों की उपमा दी गई है । अर्थात् इनसे वर्षा नहीं होगी ।

(१६)

लाली में लाल ही वसै, हरी हरे में होय ।
नीला में नीली वसै, तो पांणी लेवो जोय ।।
नहीं वरसण ऋतुवां तणी, एतो होय सुधार ।
आभो बिजली एकसा, दोष हुया सहु गार ।।

यदि उपरोक्त निर्जल-बिजलियों की ऋतुओं में यदि लाल रंग की बिजली लाल रंग के बादल में और हरे रंग की बिजली हरे रंग के

बादल में, नीले रङ्ग की बिजली नीले रङ्ग के बादलों में चमके अर्थात् इतना सुधार हो जाय कि, बादल और बिजली का रङ्ग एक सा हो तो उपरोक्त समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं। अर्थात् तब उक्त बिजलियें निर्जल न रह कर सजल हो जाती हैं।

(१७)

चैत महीने बीज लुकोवै, तो धुर बैसाखां केसू धोवै ॥

यदि चैत्र मास में आकाश में बिजली की चमक दिखाई नहीं देती है तो यह निश्चित है कि, बैसाख मास में वर्षा प्रारम्भ होने की यह अग्रिम सूचना है।

(१८)

बिजली चमक्यां बाद में, देवो गाज को ध्यान ।
जितना छिण के बाद में, भनक पड़े जे कान ॥
ग्यारा सौ बेतालीस रो, गुणा देवो चित लाय ।
दूरी बतावे फीट सूं, बठे मेह बरसाय ॥

जिस समय बिजली चमके उसी समय घड़ी देख लें। इसके जितने सैकिण्ड बाद आकाश में गर्जना सुनाई दे उन क्षणों (सैकिण्डों) को एक हजार एक सौ बयालीस में गुणा करें। जो गुणनफल आवेंगे, वे इस बात के सूचक हैं कि इस स्थान से इतने फीट की दूरी पर वर्षा हो रही है।

इन्द्र-धनुष से वर्षा ज्ञान

(१)

इन्द्र धनस पूरब दिस होय,
प्रात समय तो मेघ समोय।
जो उतर दो धनस मण्डावै,
तौ बिरखा उठ अचानक आवै ।।

प्रात:काल के समय पूर्व दिशा में धनुष दिखाई दे अथवा उत्तर दिशा में दो धनुष दिखाई दें तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि, वर्षा अचानक उठ आती है।

(२)

सूर्योदय या अस्त में. इन्द्र धनुष जे होय।
बिरखा आछी होवसी, जे बिजली कुण्डल् होय ।।

सूर्योदय अथवा सूर्यास्त के समय आकाश में इन्द्र-धनुष दिखाई दे, बिजली चमके, कुण्डल-सा प्रतीत हो तो ये समस्त लक्षण अच्छी वर्षा होने की सूचना देते हैं।

(३)

आधा आभा मांयने, इन्द्र धनुष जे होय।
बिरखा आछी होवसी, सोच करो मत कोय ।।

आकाश के आधे भाग मे इन्द्र-धनुष का दिखाई देना अच्छी वर्षा होने की सूचना है। अत: वर्षा के लिये अब किसी को चिन्तित नही रहना चाहिये।

(४)

* मेघ करत रवि अत्थमरिग, इन्द्र धनुष जु कराइ।
रक्त रंग आकाश नो, तत् छिरण घन बरसाइ ।।

---

* ऊगन्ते रो माछलो, अथवन्ते री मोग।
डंक केहै सुरण भड्डली, नदियां चढसी गोग ।।

नोटः—एक स्थान पर 'मोख' और 'गोख' शब्द मिले हैं।

सूर्यास्त के समय बादल हो, पश्चिम दिशा में इन्द्र धनुष हो, आकाश का रंग लाल हो तो इन लक्षणों से वर्षा तत्काल प्रारम्भ हो जाती है।

(५)

रवि अथमनिहुँ के समय, पूरब दिसा महं देख।
इन्द्र धनुष हुई पंचरंग, आयो घन छिन पेख ॥

सूर्यास्त के समय पूर्व दिशा की ओर देखें। इस दिशा में पांच रंगों से पूर्ण इन्द्र-धनुष दिखाई देने पर क्षण भर में ही (शीघ्र ही) वर्षा प्रारम्भ हो जाती है।

(६)

दिनकर ऊगमते समे, गाजै धनुष करेह।
बरसै सोला याम लों, मेह न देवे छेह ॥

सूर्योदय के समय आकाश में गर्जना हो, इन्द्र धनुष हो तो इन लक्षणों से यह निश्चित है कि सोलह प्रहर तक मेह बरसेगा।

(७)

* उगै सूर्य पच्छम दिसा, धनुस ऊगन्तो जांण।
तो दिन चौथे पांचमे, रुडा मूल महिमांन ॥

सूर्योदय के समय पश्चिम दिशा की ओर इन्द्र धनुष दिखाई दे तो, इस लक्षण से कवि कहता है कि आज से चौथे या पांचवें दिन वर्षा हो जावेगी।

(८)

धनुष पड़ै बंगाली, बरसै सांझ सकाली ॥

---

* सूरज उग्यां पच्छिम दिसा, धनस ऊगतौ जांण।
दिवसु चौथे पांचवें, रुण्ड मुण्ड मह्रि मान ॥

यदि बंगाल की ओर (पूर्व दिशा में) इन्द्र धनुष हो तो इस लक्षण से सायंकाल अथवा प्रातःकाल तक वर्षा हो जावेगी।

(९)

+ऊगूणी दिस सिंझ्या समैं, इन्द्र धनुष जे होय।
बारे पौरां मांयने, मेवलो आयो जोय।

सायंकाल के समय पूर्व दिशा में इन्द्र धनुष दिखाई दे तो इस लक्षण से बारह प्रहर के अन्दर वर्षा होना सूचित होता है।

(१०)

सांझ पड्यां धनु पच्छम जोय। दिवस तीसरे बरसे तोय॥

सायंकाल के समय पश्चिम दिशा में इन्द्र धनुष दिखाई देना, तीसरे दिन वर्षा होना सूचित करता है।

(११)

आथूणो दीखै धनुष, शतभिखा के मांय।
चिंता थें अब क्यूं करौ, बिरखा दौड़ी आय॥

शतभिषा नक्षत्र के समय पश्चिम दिशा में इन्द्र धनुष दिखाई दे तो इस लक्षण से यह समझ लें कि वर्षा दौड़ती हुई आ रही है।

+१ जे इन्द्र आयुध पुब्ब दिसि, रवि आथमते थाय।
बारह पुहरे भड्डली, पुंहवी नीर न माय॥
२ पूरब धनुहीं पच्छम भान। घाघ कहै बरखा नियरान॥

व्यवसायियों के व्यवसाय द्वारा वर्षा ज्ञान

(१)

धोबी री धोखौ मिट्यो, मन में हुयौ हुलास ।
खमीर उठ्यौ है देग में, हुई मेह री आस ॥

धोबी ने अपने कपड़ों की देग में खमीर उठा हुआ देखा तो उसके दिल में से वर्षा न आने का संदेह मिट गया और वह प्रसन्न हो गया । क्योंकि, कपड़ों वाली खूम (देग) में जब खमीर उठ आता है तो यह वर्षा के आगमन की सूचना है ।

(२)

कोरा कपड़ा खूम में, पांणी दियौ मिलाय ।
गरमी अर कीड़ा हुयां, मेह बरसैलौ आय ॥

धोबी के कपड़े धोने की देग में कोरे कपड़े डाल कर जल मिला दिया जाय । जिससे ये कपड़े भीग जाय । यदि इस देग में गरमी अधिक प्रतीत हो या छोटे-छोटे कीड़े उत्पन्न हो जाय तो इस लक्षण से समझ लें कि, यह अधिक वर्षा होने की सूचना है ।

(३)

वणकर केरी पांजणी, सूखे नहीं सताव ।
आबादानी मेह की, जद लाल रंग लखि आब ॥

कपड़े बुनने वाले (बुनकर) लोग, कपड़े पर पांण लगाते हैं और वह शीघ्र नहीं सूखती है साथ ही उस समय आकाश में लालिमा दिखाई दे तो ये वर्षा शीघ्र आने के लक्षण हैं ।

(४)

पांण लग्यौड़ी तांण, जे झटपट सूखे नहीं ।
मेह आयौड़ो जांण, इण में मत संदेह कर ॥

कपड़ा बुनने के सूत पर पांण लगाई हुई हो और वह सूखे नहीं तो इसमें सन्देह करने की आवश्यकता नही, यह तो वर्षा के आने की सूचना है।

(५)

चर्मकार चिन्ता करे, लेई लगै नहीं चाम पर ।
इन्द्र अब असवारी करे, आयौ मेह झट देखले ।।

चमड़े पर ल्हेई नहीं लगने के कारण चर्मकार चिन्तित है। ऐसा देख कर वर्षा ज्ञान को जानने वाला कोई पण्डित कहता है कि, इन्द्र महाराज सवारी कर आ रहे है जिसके परिणामस्वरूप शीघ्र ही वर्षा आती हुई देख लो। अर्थात् वर्षा के आगमन की यह सूचना है।

(६)

÷वाजण रा जो साज, चमड़ा सूं मढिया थका ।
नहिं बाजै है वे आज, तो तीन दिनां में मेह लो ।।

यदि ढोल, नगारे आदि चमड़े से मढे हुए साज भली भाँति आवाज न करे तो समझले कि तीन दिनों में वर्षा आने वाली है।

(७)

करै प्रजापत जोर, पण बासण बिगडे चाक पर ।
मेह मचायौ शोर, रोजी किण बिध चालसी ।।

बरतन बनाते समय, कुम्हार अत्यन्त सावधानी एव परिश्रम करता है फिर भी कच्ची मिट्टी के बरतन चाक पर उत्तमता पूर्वक नही उतरते हैं। अर्थात उतारते-उतारते वे बिगड जाते हैं। वह चिन्तित है कि ये लक्षण तो वर्षा आने की सूचना है। अतः अब उसका रोजगार कैसे चलेगा।

÷ढोल बन्द ढीला पड्या, गहर नगारां गाज ।
मेघ घुमण्डे माघ जी, पेल समन्दां पाज ।।

(८)

ले रछाणी बैठो नाई,
नायण ने ली झट बुलाई ।
चढ्यो काट राछां के मांई,
आगम विरखा दिवी बताई ॥

नाई अपनी रछानी (उस्तरा कैंची आदि रखने का बक्स) लेकर बैठा और अपनी स्त्री को शीघ्र ही बुलाकर औजार दिखाये। औजारों को जंग-सा लगा हुआ देख कर इसकी पत्नी ने कहा कि, यह तो वर्षा शीघ्र ही आने की शुभ सूचना है ।

(९)

यों ही साबण लूंण ज्यूं, नवसादर गल् जाय ।
सोनी सावणगर केव्है, आ विरखा करै अन्याय ॥

नमक एवं नौसादर के समान साबुन भी गलने लग जाय तो यह वर्षा अधिक होने की सूचना है ऐसा समझ लेना चाहिए ।

(१०)

जड़ियो सोनी थक गयो, कुन्दन जमै न आज ।
काट सलाई है चढ्यो, ए विरखा रा है साज ॥

सुवर्ण के आभूषणों पर जड़ाई का काम करने वाले जड़िया-स्वर्णकार आज परिश्रम कर-कर के थक गये परन्तु सदैवानुसार आभूषणों पर कुन्दन नहीं जम रहा है। उनकी सलाइयों पर जंग भी लगा हुआ है। यह देख कर वर्षा ज्ञान के जानने वाले कवि ने उन्हें कहा कि देखते नहीं हो, आप लोगों की इन सलाइयों पर जंग चढा हुआ है ये तो वर्षा होने की सूचना देती है। अर्थात् अब वर्षा होने वाली है ।

(११)

साल बसौला बीन्धणी, कुल्हाड़ी औ साज ।
लकड़ी पर दोरो चले, तो बिरखा होसी आज ॥

लकड़ी काटने, छीलने, छेद करने आदि के औजार बसौला, कुल्हाड़ी बींधणी आदि यदि लकड़ी पर कठिनाई से चले तो समझ लें कि वर्षा होने की शुभ सूचना है।

(१२)

दक्षिण धनुष करै मेह हाण,
विग्रह टीडी पड़ै सुकाण ।।

दक्षिण दिशा मे धनुष होना इस वर्ष अकाल को सूचित करता है।

(१३)

लंकाऊ दिस के मांयने, इन्द्र धनुष हो जाय ।
कै तो विरखा व्है नहि, व्है तो झड़ी लगाय ॥

दक्षिण दिशा की ओर इन्द्र धनुप निकलने पर या तो वर्षा होगी ही नहीं और कदाचित प्रारम्भ हो जाय तो झडी लग जावेगी।

(१४)

धूराऊ दिस के मांयने, इन्द्र धनुष जे होय ।
अणचिन्त्या बादल् हुवे, विरखा आछी थाय ।।

उत्तर दिशा में इन्द्र धनुप का निकलना यह सूचित करता है कि, अचानक ही बादल आकर अच्छी वर्षा हो जावेगी।

(१५)

इन्द्र धनुष यूं फल् दरसावै । पच्छम व्है तो विरखा आवै ।।
जे पूरब व्है तो करदे बन्द । जो नहि एव्है तो खोलै बन्द ।।
जे उत्तरादे धनुष मण्डावै । विरखा उठ अचानक आवै ।।
दिखणादे धनु मेह ना लावै । जे बरसै तो झड़ी लगावै ।।

इन्द्र धनुप का फल इस प्रकार से समझें। पश्चिम दिशा मे निकलने पर वर्षा होगी। पूर्व दिशा मे निकलेगा तो बरसते मेह को बन्द कर देगा और कदाचित मेह पहले से बन्द ही होगा तो उसके बंधन

खोल देगा अर्थात् वर्षा प्रारम्भ हो जावेगी। उत्तर दिशा में धनुष निकलने से अचानक ही वर्षा आवेगी किन्तु दक्षिण दिशा में दिखाई देने वाले धनुष के प्रभाव से वर्षा होगी नहीं। कदाचित इस समय वर्षा आजाय तो फिर झड़ी ही लग जावेगी।

(१६)

पांच वरण पचरंगा होय,
तो तीजे दिन बरसेलौ तोय ॥

आकाश मे निकले हुए इन्द्र धनुष में के रंगों की गिनती करें। यदि इसमे पांच रङ्ग हों तो यह निश्चित है कि वर्षा तीन दिन बाद होगी।

(१७)

※ दोय च्यार छह मच्छ ह्वै, धनुष मण्डे सुण एक।
पवन चले परला पड़े, माघ भविष्यत लेख ॥

माघ को सम्बोधन कर कवि कहता है कि आकाश में धनुष एक ही हो और दो चार किम्वा छह मच्छ दिखाई दे तो इन लक्षणों मे वायु के साथ जोर की वर्षा होगी।

(१८)

‡ मोघ करे रवि आथमण, इन्द्र धनुष आकाश।
संध्या रो गस ऊपरो, जोसी पहर परकास ॥

※ दोपहरां व्है माछली, दिवस तीसरे मेह।
शाखाकार त्रिशूल सम, धरा उडावे खेह ॥

आकाश में मध्यान्ह में मच्छ दिखाई दे तो तीसरे दिन वर्षा होगी। यदि यह शाखाकार किम्वा त्रिशूलवत् हो तो पृथ्वी पर केवल आँधियें ही आवेगी।

‡ उगमते रो माछलो, आथम तेरी मोघ।
सन्ध्या आछी फूलसी, तो विरखा संजोग ॥

सूर्यास्त के समय पश्चिम दिशा में मेघ हों, इन्द्र धनुष हो, आकाश का रङ्ग लाल हो, मध्या फूले तो इन लक्षणों को देख कर कवि, ज्योतिषी (जोशी) से कहता है कि, कह दो इने गिने प्रहरों में अर्थात शीघ्र ही वर्षा आवेगी।

(१६)

समी सांझ पूरब दिशा, धनुष उगन्तो जोय।
चिन्ता मत कर मानवी, अवसे विरखा होय॥

सायंकाल के समय, सूर्य पश्चिम दिशा में हो तब पूर्व दिशा में इन्द्र धनुष निकल आवे तो इस लक्षण को देख कर कवि कहता है कि, चिन्ता मत करो। वर्षा अवश्य आवेगी।

(२०)

आथमणी तांणे काचवो, जे ऊगमते सूर।
ढांढा पाछा नहिं वालसो, तो बह जासी पूर॥

सूर्योदय के समय पश्चिम दिशा में इन्द्र धनुष दिखाई दे तो इस लक्षण को देखकर कवि प्रातः काल ही चरवाहों को कह देता है कि, जानवरों (गाय-भैंस-बकरी आदि) को जंगल में चराने मत ले जाओ। आज वर्षा अधिक होगी और कदाचित नदियों में जानवर बह भी जाय। यह प्रचण्ड वर्षा का लक्षण है।

(२१)

घड़ी दोय दिन पाछले, बादल धनुष धरेह।
डक्क कहै हे भड्डली, जल थल एक करेह॥

सूर्यास्त के समय से दो घड़ी पहले यदि बादलों में इन्द्र धनुष दिखाई दे तो इस लक्षण को देख कर कवि डक्क कहता है कि, इतनी वर्षा होगी कि जिससे जल एवं स्थल एकै समान दीखेंगे।

(२२)

जे सिझ्या का धनुवो देखो। (तो) बीजे दिन विरखा ने पेखो।

सायंकाल के समय यदि आकाश में इन्द्र धनुष दिखाई दे तो यह निश्चित है कि, दूसरे दिन वर्षा होगी ही।

(२३)

सिञ्झ्या धनुष दिनुगां मोर
तो जांणो विरखा रो जोर ।।

सायंकाल के समय आकाश में इन्द्र धनुष का दिखाई देना और प्रातःकाल के समय मोरों की आवाज सुनाई देना ये लक्षण, जोर से वर्षा होने की अग्रिम सूचना देते हैं।

वार और इन्द्र धनुष से वर्षा ज्ञान

(२४)

* चन्द्र शुक्र अर भौम शनि, तणे धनुष इण वार ।
दिन चौथे के पांचमे, बरसै मूसलधार ।।

सोमवार, मंगलवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार इन पांच वारों में से किसी भी वार के दिन आकाश में इन्द्र धनुष निकले तो इस लक्षण से यह सूचना मिलती है कि आज से चौथे अथवा पांचवें दिन मूसलाधार वर्षा होगी।

(२५)

सोमां सुकरां बुध गुरां, पुरवां धनुस तणे ।
तो तीजे चौथे दाहड़े सरवर ठेल भरे ।।

पूर्व दिशा में इन्द्र धनुष सोमवार, शुक्रवार, बुधवार एव गुरुवार में से किसी भी दिन आकाश में दिखाई तो इस लक्षण से, जिस दिन ऐसा हो उसके तीसरे या चौथे दिन अत्यन्त वर्षा होने की यह अग्रिम सूचना है ऐसा समझें।

---

* चन्द्र शुक्र गुरु भोम शनि, तने धनुष इन बार ।
दिन चौथे या पांचवें, बरसै मूसलधार ।।

दिग्दाह-प्रकरण

(१)

चहूं दिस व्है दिग्दाह, जब बिना अगन अतिझाल ।
भोर सिंझ्या की बखत, दीखै दाह विकराल ।।
लाख गयन्दां धड़ पड़ै, तुरकां मांहि विसाल ।
दिल्ली मण्डल के विसै, चालै तेग विकराल ।।
धरा धरी की धमक घणी, करा करी की मार ।।
नहिं तो विरखा व्है नहीं, पड़ै अचिन्त्यो काल ।।

प्रातःकाल तथा सायंकाल संध्या समय यदि चारों दिशाओं मे भयंकर अग्निज्वाला के समान, अत्यन्त तेज से परिपूर्ण लक्षण दिखाई दे तो इसे दिग्दाह कहते हैं ।

इस प्रकार का दृश्य दीखने पर या तो पृथ्वी पर भयंकर घमासान युद्ध होता है—राजाओं के राज्य नष्ट हो जाते हैं—या अनावृष्टि होने के कारण भयानक अकाल पड़ जाता है ।

(२)

आभो होवै निरमलो तारा व्है रलियामणा ;
होवै परदिक्षण वायरो, दिसांहुवै सोनांवणां ।।
ए लक्खण दिग्दाह रा, तो सोच करौ मत कोय ।
राजा सुखी परजा सुखी, घर-घर आनन्द होय ।।

यदि दिग्दाह के समय आकाश निर्मल हो, तारे रलियामणे अर्थात स्निग्ध हो, वायु प्रदक्षिण-गति (पूर्व से दक्षिण, दक्षिण से पश्चिम) चले, सुनहरे रंग एवं तेजयुक्त दिशाएँ दिखाई दे अर्थात् दिग्दाह का वर्ण सुनहरा तथा तेजयुक्त हो तो ये लक्षण शुभ हैं । राजा-प्रजा सब ककल याणा ही होगा ।

प्रतिसूर्य-प्रकरण

(१)

धूराऊ प्रतिसूरज हुयां, सुगन मेह को लावै।
लंकाऊ हुय जाय तो, वायु जोर को लावै॥
दोन्यूं दिस में हुयां, मेह घणेरो आय।
ऊपर नीचै हुयां, राज परजा दुख थाय॥

उत्तर दिशा का प्रतिसूर्य, वर्षा आने की सूचना देता है। दक्षिण दिशा का सूर्य, प्रबल वायु आने को सूचित करता है। यदि यह प्रतिसूर्य दोनों ही दिशाओं में दिखाई दे तो इस लक्षण से अत्यन्त वर्षा होने की सूचना मिलती है। किन्तु यह यदि सूर्य के ऊपर की ओर होगा तो इसका प्रभाव राजा के लिये और सूर्य के नीचे की ओर होने पर प्रजा के लिये क्लेशदायक होगा।

(२)

धोलो मूंगो निरमलो, स्निग्ध प्रतिसूरज होय।
रितु में रितु सिंझ्या जिसो सुभिक्ष क्षेम लो जोय।

प्रतिसूर्य का रंग श्वेत, हरा, स्निग्ध एवं निर्मल हो और जिस ऋतु में दिखाई दे उस ऋतु की सन्ध्या जैसे वर्ण का हो तो क्षेम (कल्याण) एवं सुभिक्षदायक फल होता है।

नोटः—एक प्रहर दिन चढ़े तक अथवा दिनके अन्तिम भाग (सूर्यास्त से एक प्रहर पूर्व से सूर्यास्त तक) में सूर्य से उत्तर, दक्षिण ऊपर किम्वा नीचे जरा-से अन्तर से एक गोलाकार सूर्य के समान ही प्रकाश (जिस प्रकार काच-दर्पण में के प्रकाश का प्रतिबिम्ब पड़ता है उस प्रकार) पड़ता है, उसे प्रतिसूर्य (दूसरा सूर्य अथवा परिधि) कहते हैं।

मोघ-प्रकरण

सूर्य-रश्मि द्वारा वर्षा ज्ञान

(१)

प्रातहि पूरब रेख चल, उत्तर पच्छम जाय ।
दिन दस पवन झकोलसी, मंडै तो भडी लगःय ।।

सूर्योदय, प्रात काल के समय आकाश मे सूर्य रश्मि की रेखा पूर्व दिशा से चल कर उत्तर पश्चिम की ओर जावे तो इस लक्षण से यही समझें कि या तो दश दिनों तक जोर की वायु ही चलेगा और कदाचित वर्षा प्रारम्भ हो गई तो फिर झड़ी ही लग जावगो ।

(२)

सूरज केरे ऊगते अस्त समय निन देख ।
तीन रेख मेह दूर है, तुरत एक ही रेख ।।

सूर्योदय और सूर्यास्त के समय वर्षा काल मे नित्य सूर्य को देखें । यदि इसकी रश्मियों की तीन रेखाएं प्रतीत हों तो वर्षा अभी दूर है और कदाचित एक ही रेखा हो तो, वर्षा शीघ्र ही आवेगी ।

(३)

सांझ समै उत्तर दिसा, लाम्बी खंचे मोघ ।
दिवस तीसरे माघजी, जल का जांणो जोग ।।

सायंकाल के समय मोघ की रेखा पश्चिम से निकल कर बहुत दूर तक उत्तर दिशा में जावे तो इस लक्षण से तीसरे दिन वर्षा होगी ।

(४)

उत्तर मोघ मयंक जल, आभे आरख एह ।
सियाले तो सी पड़ै, वरसाले तो मेह ।।

किन्तु यही मोघ (उत्तर की ओर जाने वाली) वर्षा काल मे हो तो वर्षा होगी और कदाचित शीतः काल में हुई तो इसके प्रभाव से सर्दी अधिक पड़ेगी ।

(५)

पच्छम सूं रेखा चलै, खण्ड रेव्है अधबीच ।
ग्वाल केव्है सिझ्या समै, मेघ मचासी कीच ।।

सायकाल संध्या के समय यह मोघ पश्चिम से निकल कर आकाश में आधी दूर तक ही गई हो (इसे राजस्थानी भाषा में बाण्डी मोघ कहते है) तो अवश्य वर्षा होगी ।

(६)

दिन आथमतो बखत, लाम्बी मोघां जोय ।
बादल जे नीचा चलै, तो मेह घणेरो होय ।।

सूर्यास्त के समय आकाश में सूर्य की रश्मियें 'मोघ' यदि लम्बी दिखाई दे और बादल बहुत नीचे-नीचे चलते हों तो इस लक्षण से बहुत वर्षा होगी ।

तारा प्रकरण

(१)

रात्यूं तारा जगमगै, तड़कै सूरज लाल ।
बिन विरखा धनु दीखियां, विरखा व्है तत्काल ।।

यदि रात्रि में आकाश स्वच्छ होने के कारण तारे टिमटिमाते रहें और प्रातःकाल सूर्योदय के समय सूर्य लाल हो, बिना वर्षा के आकाश में इन्द्र धनुष दिखाई दे तो यह समझ लें कि, यह वर्षा तुरन्त होने की अग्रिम सूचना है ।

(२)

निरमल तारा स्फटिक-सा, दीखै आभा मांय ।
ऊं महिना के मांयने, आछी विरखा थाय ।।

जिस महीने में आकाश में स्फटिक मणि के समान निर्मल एवं चमकते हुए तारे दिखाई दें तो इस लक्षण के प्रभाव से इस महीने मे इतनी वर्षा हो जावेगी कि, सुभिक्ष होगा ।

(३)

रोजीना दिन सात तक, तारा जल् ज्यूं झिलमिल करै ।
चमकै आभा मांयने, तो विरखा अवशं करै ।।

लगातार सात दिनों तक आकाश में तारे जल के सदृश झिलमिल करते हुए (चमकते हुए) दिखाई दें तो इस लक्षण से अवश्य ही वर्षा होगी ।

(४)

छोटा छोटा तारला, दीखै तेज परिपूर ।
सस्तो धान बिकाय दे, सुभिक्ष करै भरपूर ।।

अत्यन्त सूक्ष्म तारे आकाश में तेज से परिपूर्ण दिखाई दें तो यह सुभिक्ष का लक्षण है। अतः इस वर्ष पृथ्वी पर अन्न सस्ता बिकेगा।

(५)

मोटा मौटा तारला, तेज हीन काला पड़ै।
मूंगो धान बिकाय दे, निश्चै काल पड़ै॥

आकाश के अन्दर बड़े-बड़े किन्तु तेज हीन काले रंग के तारे जिस समय दिखाई दे तो समझ लें कि इस वर्ष दुर्भिक्ष होगा और परिणाम स्वरूप अन्न महँगा बिकेगा।

(६)

तारा अति झलमल करै, अम्बर हरियो रंग।
जल नहिं मावै मेदनी, अनभै मेघ उपंग॥

आकाश का रंग हरा हो, और तारे बहुत ही जगमगाहट करते हुए-से दिखाई दें तो इस लक्षण के प्रभाव से यह निश्चित है कि अत्यन्त वर्षा होगी।

(७)

अगस्त ऊगो (तो) मेह पूगो॥

अगस्त के तारे के उदय हो जाने के बाद वर्षा नहीं होती है।

(८)

ऊग्यो अगस्त फूल्यो वन कास,
अब छोड़ो विरखा की आस॥

अगस्त का तारा उदय हो जाने और जंगल में कास के फूलने को देख कर कवि कहता है, अब वर्षा होने की आशा नहीं रखनी चाहिये।

(९)

अगस्त ऊगां मेह न मण्डै,
जे मण्डै तो धार न खण्डै॥

अगस्त तारे के उदय होने पर बादल होते ही नहीं हैं। कदाचित बादल हो जाय तो फिर अच्छी वर्षा होती है।

अन्धकार प्रकरण

(१०)

वरसै रेणु धुन्ध हो जाय। पवन विनां अन्धियारा थाय ।।
पक्ष सात में बरसै मेह । पैंज बांध जोशी कह देय ।।
तारा टूटै मोकला, अंधकार हो जाय ।
दिग्दाह निर्घात तो, गृह जुद्ध देवे दिखाय ।।
मेह बरसती बखत, इन्द्र धनस जे होय ।
तो मेह गयो परदेसड़े, अनावृष्टि लो जोय ।।

बिना वायु के यदि रेत की आंधी से अंधकार हो जाय तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि, सातवे पक्ष मे अवश्य ही वर्षा होगी।

भिन्न-भिन्न प्रकार के तारे टूटते दिखाई दें, धूल-वृष्टि द्वारा अन्धकार हो जाय, दिग्दाह, निर्घात गृह-युद्ध आदि आकाश मे दिखाई दे, वर्षा बरस रही हो और इन्द्र धनुष तन जाय तो इन लक्षणों से यह समझे कि, मेह अब अन्यत्र जा रहा है। अर्थात् अब यहाँ वर्षा नहीं होगी।

(११)

धूहर मेघ का पड़ै तुसार । सुनो माघजी इसका सार ।।
पक्ष ग्यारवें विरखा होय । निश्चै पैंज बांध कर सोय ।।

धुहर-कुहरा (जिसके कारण अन्धकार हो जाता है) या ओस पडे तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि, ग्यारहवें पक्ष मे अवश्य वर्षा होगी।

गन्धर्व प्रकरण

(१२)

* श्वेत अभ्र बिजली सहित, स्निग्ध वर्ण जे होय ।
गन्धर्व नगर दीखं अगर, तो मेह घणेरो होय ।।

श्वेत बादलों से बना हुआ बिजली सहित एवं स्निग्ध वर्ण का गन्धर्व नगर दिखाई दे तो इस लक्षण से वर्षा अधिक होगी ।

(१३)

कपिल वरण करसण को हाण । पशुनाशक लाल पहचांण ।।
भेलसेल् रगां को पावं । तो राजावां री फौजां डरावै ।।

कपिल वर्ण का गन्धर्व नगर दिखाई दे तो खेती का नाश, लाल रग का हो तो गौ आदि पशुओं का नाश, मिले-जुले रंगो का हो तो राजाओं की सेना का भय होगा ।

---

* गन्धर्व नगर से तात्पर्य है, आकाश में नगर आदि आकार के चिह्न दृष्टिगत होना ।

जलादि प्रकरण

(१)

रवि उगन्ते भडुली जे जल बिन्दु पड़ंत ।
पोरां चौथे क पांचवें, वरण सगलै बरसन्त ॥

सूर्योदय के समय यदि जल की बूंदें पड़ें तो इससे यह सिद्ध होता है कि चौथे या पांचवें प्रहर में सब जगह वर्षा होगी।

(२)

रवि अथमते भडुली जे जल बिन्दु पड़न्त ।
दिन चौथे क पांचवें, निश्चं धरण बरसन्त ॥

सूर्यास्त के समय यदि आकाश में जल की बूंदें बरसें तो इस लक्षण से यह समझें कि चौथे अथवा पांचवें दिन में अवश्य वर्षा होगी।

(३)

खारो कड़वो गन्धलो, जो वरसैलो तोय ।
करसण री हांणी हुवै, देश नाश लो जोय ॥

यदि क्षारयुक्त, कडुवा, एवं दुर्गन्धित जल बरसै तो इससे खेती की हानि और देश का नाश होगा।

(४)

मैण्डक मच्छ ममोल्या बरसै । होय सुभिक्ष जगत सब हरसै ॥
शंख सिगोट्या बरसै गार । कैव्है फोगसी काल बिचार ॥

फोगसी नामक कवि कहता है कि, वर्षा के साथ यदि मेंडक, मछलियें, या वीरबहूटियाँ बरसें तो इस लक्षण से यह विदित होता है कि इस वर्ष सुभिक्ष होगा। कदाचित ऐसा न हो कर शंख, सिगोट्या अथवा ओले पड़ें तो यह दुर्भिक्ष के आगमन की अग्रिम सूचना है यह समझें।

(५)

बिन बादल अम्बर गरजै, गाजत जीं दिस जाय ।
करै भंग उण देस ने, लोगां हाय तिराय ॥

बिना बादलों के ही खाली आकाश में गर्जना होना अशुभ माना गया है। जब कभी ऐसा हो तो जिस देश (प्रान्त) की ओर उस गर्जनाकी आवाज जावेगी, उस देश (प्रदेश) का नाश हो जावेगा और प्रजा में हा-हा कार मच जावेगा।

(६)

रवि उगन्तो स्याम, आथमतो कालो तर्वौ ।
माघा मेह न थाय, दस दिन पवन झकोलसी ॥

प्रातःकालीन सूर्य उदय होते समय श्याम वर्ण हो, और सायं काल को अत्यन्त ही गहरा काला दिखाई दे (प्रातःकालीन बादल श्याम हो और सायंकाल के गहरे काले हों) तो बर्षा नहीं होगी और दश दिन तक वायु ही बहेगा।

वायु द्वारा वर्षा ज्ञान

(१)

ग्रौ ग्रा बौ ग्रा बहै बतास ।
जणां हुवै विरखा की ग्रास ।।

वर्षा-ऋतु में अनिश्चित रीति से कभी तेज, कभी मन्द, कभी पूर्व से, कभी पश्चिम से वायु चले तो इससे यह समझ लें कि, वर्षा अवश्य होगी ।

(२)

छिण पूरब छिण पच्छम वाव,
छिण छिण व्हैवै बधूल्यो वाव ।
जे बादल बादल में जावै,
तो घाघ केव्है जल कठै समावै ।।

यदि पूर्व की हवा चलते-जलते तुरन्त पश्चिम की हो जाय, बाद में शीघ्र ही बवण्डर भी उठ ग्रावे ग्रौर एक बादल दूसरे बादल में समाता हुग्रा दिखाई दे तो इन लक्षणों से वर्षा ग्रत्यन्त होगी ।

(३)

पोष माघ दिखणादी वाय,
तो सावण में विरखा थाय ।।

पौष ग्रौर माघ मास मे दक्षिण दिशा की वायु चले तो इस लक्षण से ग्रागामी श्रावण मास में वर्षा होगी ।

(४)

= ग्राम्बा झड़ चालै परवाई,
तो जाणो विरखा रुत ग्राई ।।

= ग्रामा झोड़ चालै पुरवाई । तो जाणो विरखा रुत ग्राई ।।

पूर्व दिशा का पवन इतना जोर से चले कि, आम के वृक्ष पर से फल टूट कर नीचे गिर पड़ें। इस लक्षण से यह समझा जाता है अब वर्षा-ऋतु आगई है।

(५)

दिक्खण पच्छम कूण री, चालण लागै पून।
विणजारो राजी हुयो, बालद भरणी लूण॥

वर्षा काल में जब दक्षिण-पश्चिम कोण से वायु बहने लग जाय तो इसे मेह बन्द हो जाने का लक्षण समझ कर बनजारा अपनी बालद (जानवरों की कतार) द्वारा नमक भर कर बेचने के लिये अन्यत्र रवाना हो जाता है।

(६)

÷ पेलो पवन उगूणो आवै (तो) वरसै मेह अर धान भर लावै।

वर्षा काल में सर्व प्रथम पूर्व दिशा का वायु चले तो समझ लें कि इस वर्ष, वर्षा अच्छी होने के कारण अन्न बहुत होगा।

(७)

आभो ढक्यो है खूब ही, घटाटोप व्है जाय।
च्यारू दिश वायु नहीं, आवै विरखा धाय॥

आकाश बादलों से ढका हुआ घटाटोप-सा हो और पवन भी स्थिर हो तो ये लक्षण वर्षा शीघ्र आने के हैं।

÷ पेलो पवन पूरब सूं आवै (तो) निपजै नाज मेघां झड़ लावै।

आषाढ़ मास में सर्व प्रथम जो वायु बहे वह यदि पूर्व का हो तो इसके परिणामस्वरूप इस वर्ष जल अधिक बरसेगा और अन्न बहुत होगा।

(८)

धूराऊ वायु बहे, जे उगूणो हो जाय ।
पाँच दिनां के बाद में, विरखा खूब कराय ।।

उत्तर दिशा का बहता हुआ वायु एकाएक पूर्व दिशा का हो जाय तो इस लक्षण से यह पता लग जाता है कि, आज से पाँच दिन बाद बहुत वर्षा होगी ।

(९)

च्यारूं दिश वायु चलै, धनुषादिक नहिं होय ।
जे विरखा आगी हुवै, तो नेड़ी करलो जोय ।।

वायु चारों ओर का चलता हो, आकाश में धनुष-कुण्डलादि कुछ भी नहीं हो तो दूर में कहीं भी वर्षा होती होगी उसे यह हवा वहां से उड़ा कर यहां ले आवेगी ।

(१०)

† धूराऊ या ऊगूण की, लाम्बी चाले वाय ।
झटपट विरखा होवसी, अग्गम दियो बताय ।।

उत्तर अथवा पूर्व दिशा की लम्बी वायु, शीघ्र ही वर्षा को ले आती है ।

(११)

× लंकाऊ वायु हुयां, आई विरखा जावै ।
आथूणी जे हो जाय तो, देरी करके आवै ।।

---

† पवन बाजै पूरियो । हाली हलाव किम पूरियो ।।

उत्तर-पश्चिम की वायु देख कर किसान नई भूमि में हल नहीं चलाता है क्योंकि, यह लक्षण शीघ्र वर्षा आने के हैं ।

× लंकाऊ नो वायरो, पाणी दे बरसाय ।
(पण) चौमासा में होय तो मेह ने दे उडाय ।।

दक्षिण दिशा की वायु तो आई हुई वर्षा को भगा देता है। पश्चिम का वायु वर्षा विलम्ब से आने की सूचना देता है।

(१२)

गर्भ कुण्डल धनु कछु न व्है, वहै चौबाया वाय ।
दूर दिसन्तर बरसती, ल्यावै घटा उड़ाय ।।

आकाश में गर्भ, कुण्डल, इन्द्र-धनुष आदि कुछ भी न हो और केवल चारों दिशा का वायु बहता हो इस लक्षण से वर्षा यदि कहीं दूर बरसती होगी तो भी वह, वहाँ से उड़ कर यहाँ आकर बरसने लग जावेगी ।

(१३)

चौबाया च्यारूं दिसा, जब तब बाजै जोय ।
तो नहचै करने जांणजो, कहूंक वरसे तोय ।।

जब कभी चारों दिशाओं से जोर का वायु चलता हो तो इस लक्षण से यह निश्चित समझें कि कहीं न कहीं वर्षा हो रही है ।

(१४)

* वायव कूण रो वायरो, पवन सहित वरसाय ।
निपजे खटमल जीवड़ा, ईति भय कर जाय ।।

पिछले पृष्ठ के फुटनोट का शेषांश:—

किसी भी मौसिम में दक्षिण दिशा का वायु चले तो इससे वर्षा आजाती है। किन्तु यही वायु वर्षा-काल (चातुर्मास) में हो तो मेह नहीं बरसता है।

* ईतिभयः—

अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभा मूषिकाः शुकाः ।
प्रत्यासन्नाश्चराजानः षडेता ईतयः स्मृताः ।।
अतिवृष्टिरनावृष्टिमूषकाः शलभाः शुकाः ।
स्वचक्रं परचक्रं च सप्तैता ईतयः स्मृताः ।।

वायव्य कोण की वायु, पवन सहित वर्षा कराती है। किन्तु इससे खटमल आदि जीव उत्पन्न हो जाते हैं। इस वर्षा से ईति-भय भी उत्पन्न हो जाता है।

(१५)

रात्यु गरजै बादला, दिन में बिजली लाल।
वाजै उगूणो वायरो, तो बिरखा व्है तत्काल॥

रात्रि मे बादलों की गर्जना हो, दिन में लाल रंग की सीधी बिजली चमकती हुई दिखाई दे और पूर्व दिशा का वायु चलता हो तो इन लक्षणों से तत्काल वर्षा होगी।

(१६)

ईशाण कूण को वायरो, बिरखा आछी लावै।
अग्नि कूण आछो नहिं, अग्नि भय जतावै॥

ईशान कोण का वायु अच्छी वर्षा कारक है और अग्नि-कोण का वायु आग लग जाने की सूचना है।

(१७)

आछो नहीं है वायरो, नैरुत कूण को जांण।
मूंघो धान बिकावसी, रोग शोक पहचाण॥

पिछले पृष्ठ के फुटनोट का शेषांश;—

"मेघमाला" नारायण प्रसाद मिश्र द्वारा अनुवादित। पंचम अध्याय श्लोक॥ ४०-४१॥

१—अति-वृष्टि (Exessive rain)। २—अनावृष्टि (Drought), ३—शलभा (Locusts) टिड्डियें, पतिंगे, ४—मूषिका (Rats), ५—शुका: (Parrots), ६—विदेशी आक्रमण (Foreign invasions), ये छः ईति भय माने गये हैं।

नैऋत्य-कोण का वायु उत्तम नहीं। इसके चलने से उस वर्ष, दुर्भिक्ष होता है। इस योग का प्रभाव अन्न महँगा, रोग-शोक उत्पन्न करता है।

(१८)

इणगी उणगी घूमतो, आजै चहुँदिस वाय।
तो निस्चै कर जांणजो, बिरखा बेगी आय॥

कभी इधर और कभी उधर से, इस प्रकार चारों ओर की दिशाओं से घूमता हुआ वायु बहे तो कहीं आस-पास ही वर्षा है, ऐसा समझें। यह वायु उसे उड़ा कर अपने यहाँ ले आवेगी।

(१९)

धूराऊ ऊगूण नो बीज सहित व्है वाय।
चातक बोले जोर थी, तो बिरखा बेगी आय॥

उत्तर अथवा पूर्व दिशा का वायु हो, पपीहा जोर-जोर से बोलता हो, बिजली चमकती हो तो इन लक्षणों से यह समझें कि, वर्षा शीघ्र ही आने वाली है।

(२०)

आमो सामो वायरो, मेह घणो रो आवे॥

एक ही समय मे आमने-सामने की दो हवाएँ चलती हुई प्रतीत हों तो यह लक्षण वर्षा बहुत आने को सूचित करता है।

(२१)

आथूणी दिस वायरो, मेघ बीज जे होय।
तो वरसै मूसलधार जल, सात दिनां तक जोय॥

पश्चिम दिशा में वायु हो, बादल और बिजली आकाश में दिखाई दे तो इन लक्षणों से सात दिन तक वर्षा होने की सूचना मिलती है।

---

* वायू में जद वायू समावै, धाम केब्हे जल कठै बव जावै॥

(२२)

पोस माघ जे चालै परवाई,
तो सरसूं ने दे रोग लगाई ।।

पौष एवं माघ मास में पूर्व दिशा का वायु हो तो इसके परिणाम स्वरूप इस वर्ष सरसों की फसल को रोग लग जाने से इसको क्षति ही पहुँचेगी ।

(२३)

परवाई चालै घणी, विधवा पान चबाय ।
आ तो ल्यावै मेघ नै, अर बा लेवे घर बसाय ।।

पान खाने वाली विधवा स्त्री सयम से नहीं रह सकती और उसे नया पति करना ही पड़ता है । इसी प्रकार से पूर्वी हवा के अधिक चलने से मेह को भी बरसना ही पड़ता है ।

(२४)

आंधी साथे तो मेह आया ही करै है ।।

आंधी के साथ वर्षा का आना निश्चित ही है ।

(२५)

* आंधी पूठै मेह आवै ।।

आंधी आने के पश्चात वर्षा आती ही रहती है ।

(२६)

आंधी राण्ड मेहां रो पाली रेव्है है ।।

आंधी तो वर्षा आने से ही रुकती है ।

---

* पाठान्तरः—आंधी पछै मेह आवै

(२७)

चैत आथूणो वायरो, भादूं मेह बरसाय ।
भादूं आथूणो वायरो, माघां पालो लाय ।।

चैत्र मास में पश्चिम दिशा का वायु बहने से भाद्रपद में अच्छी वर्षा होती है और यही पश्चिमी वायु यदि भाद्रपद मास में चले तो इसके प्रभाव से माघ मास में पाला पड़ता है ।

(२८)

गाजै बीजै करे डफांण । वाय लंकाऊ दूध उफांण ।
रंग रूप जे घणां जतावै । तो यूं ग्वालियो काल बतावै ।।

कोई ग्वाल नामक वर्षा विशेषज्ञ कहता है कि आकाश में बादलों की गर्जना हो, बिजली चमके, और इस समय यदि दक्षिण दिशा का वायु हो तो इस प्रकार के विभिन्न रंग-रूप दिखाने वाले बादल नहीं बरसते हैं और इसके परिणाम स्वरूप अकाल पड़ जाता ही है ।

(२९)

पांच वरण रा बादल आवै । मिलकर झुण्ड दसूं दिस धावै
थिर होयेर वाय उगूणो लावै । तो माघा मेह गयोड़ो आवै ।।

पांच वर्ण के बादल आकाश में एकत्रित हो इधर-उधर चारों ओर दौड़ते हुए दिखाई देवें । जब ये स्थिर हो जाय और पूर्व दिशा का वायु चलने लग जाय तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि गया हुआ मेह भी वापस आ जाता है ।

(३०)

धूराऊ वा ऊगूण की, लाम्बी चाले वाय ।
झटपट विरखा होवसी, अगम दियो बताय ।।

उत्तर अथवा पूर्व दिशा की लम्बी हवाओं के चलने से वर्षा शीघ्र ही आने वाली है, ऐसा समझना चाहिये ।

(३१)

१ ऊगूणा आथूणवा, बादल आवें जावें।
बिरखा आछी होवसी, दस दिन झड़ी लगावें॥

यदि पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व इस प्रकार बादल आते-जाते दीखें तो यह लक्षण अच्छी वर्षा होने का है। इससे दस दिन तक झड़ी लग जाने की सूचना मिलती है।

(३२)

घूमे वायु चालतो, जे पूरब को हो जाय।
मेघ घटा छा जाय तो, अन्न घणेरो थाय॥

किसी भी दिशा की ओर बहता हुआ वायु यदि घूम कर पूर्व की ओर हो जाय और उस समय आकाश में बादलों की घटाएं छा जाय तो यह लक्षण अच्छी वर्षा होने का है। इसके परिणामस्वरूप अन्न बहुत उत्पन्न होगा।

(३३)

घूराऊ व्है बादला, वाय पूरबलो होय।
तो मांहना च्यारू बरससी, सोच करो मत कोय॥

घूराऊ अर्थात् ध्रुव की ओर से (उत्तर दिशा में) बादल हो, पूर्व दिशा का वायु हो तो यह समय कृषक के आनन्दित होने का है। इस शकुन से यह सूचना मिलती है कि, वर्षा-ऋतु चारों महीनों में बरसती ही रहेगी।

(३४)

उतरादी कांठल बन्धै, पूरब वाजै वाय।
न्यूंत्यां जीमे पाँवणां, बरस्या बिना न जाय॥

---

१ आमां सामां बादला, पूरब पच्छम वाय।
पंच मिलावा माघजी, दिन दस झड़ी लगाय।

उत्तर दिशा में बादलों की पंक्ति बन जाय, पूर्व दिशा का वायु हो तो जिस प्रकार, निमन्त्रित महमान बिना भोजन किये नहीं जाता उसी प्रकार यह बादल भी बरसे बिना नहीं जावेंगे।

(३५)

बाजै पच्छम वाय, नाड़ी नीरज निरमला।
दस दिन मेह न थाय, ग्वाल केव्है सुण माघजी ॥

ग्वाल नामक कवि कहता है कि, हे माघ, जब पच्छिम दिशा का वायु हो, तालाब-तलैयाओं का जल निर्मल हो तो इस स्थिति में यह निश्चित है कि दस दिनों तक वर्षा नहीं होगी।

(३६)

ऊगूणो वायु चलै, आथूणो जो होय।
तो तीन दिनां के बाद ही, बिरखा निश्चै होय ॥

पूर्व दिशा का चलता हुआ वायु, अचानक ही अपनी रुख पलट कर पश्चिम का हो जाय तो इसके प्रभाव से तीन दिन के पश्चात वर्षा अवश्य होगी।

(३७)

आथूणो व्है वायरो, नेरुत कूण हुय जावै।
लावै आन्धी जोर सूं, थोड़ी बिरखा आवै ॥

पश्चिम दिशा का बहता वायु बन्द होकर यदि नैऋत्य-कोण का हो जाय तो इस लक्षण से यह विदित होता है कि, हवा तो जोरों से चलेगी (आंधी आवेगी) परन्तु वर्षा थोड़ी ही होगी।

(३८)

नैरुत अगनीकूण वा, चाले दिक्खण वाय।
मेह बरसयो रोक दे, ऐसो जोग बताय ॥

नैऋत्य, अग्नि-कोण अथवा दक्षिण दिशा का वायु यदि बहता हो तो यह ऐसा योग बन जाता है कि, बरसते हुए मेह को भी रोक दे।

महीनों और वायु-प्रवाह से वर्षा ज्ञान

(३९)

असाडां तो दिक्खण चाले, सावण पूरब वाय ।
भादवड़े उत्तर चाले, तो पाँणी परत न थाय ।।

आषाढ-मास में दक्षिण दिशा का, श्रावण मास में पूर्व दिशा का, भाद्रपद मास में उत्तर दिशा का वायु चले तो यह निश्चित है कि, इस वर्ष, वर्षा का सर्वथा अभाव रहेगा ।

(४०)

अगनकूंण सावण में बाजै । भादवड़े नेरुत नहिं गाजै ।
जे वरसे तो लूंवां वरसै । गाज वीज कितहूं नहिं दरसै ।।

श्रावण मास में अग्नि-कोण का, भाद्रपद मास में नैऋत्य-कोण का, वायु हो तो यदि बरसाना ही होगा तो ये गरम हवा ही बरसावेंगी । अर्थात् इसके प्रभाव से लूं ही चलेगी । बादल का गर्जना, बिजली का चमकना या वर्षा का होना ये लक्षण कहीं भी दृष्टिगत नहीं होंगे ।

(४१)

१ सावण बाजे पच्छम वाय । भादवड़े नेरुत भरणाय ।।
आसू पूरब फल सब झड़ै । फूल मार क कीड़ो पड़ै ।।

श्रावण मास मे पश्चिम का, भाद्रपद में नैऋत्य का, एवं आसौज मास मे पूर्व का वायु हो तो इस वर्ष, फल-फूलों में कीड़े पड़ेंगे या वे झड़ जावेंगे ।

(४२)

भादवड़े पूरब पवन, अग्नि कोण की धार ।
काँणाँ काचर काकड़ी, पोटे जाय जवार ।।

---

१ सावण पच्छम, भादूं सूर्यो, केव्है फोगसी बरस ग्रघूर्यो ।।

भाद्रपद मास में पूर्व दिशा का या अग्नि कोण का वायु हो तो इसके प्रभाव से तत्कालीन फलों (काचरे, ककड़ी आदि) में कीड़े पड़ जावेंगे और ज्वार के खेतों में खड़ी फसल को रोग हो जावेगा।

(४३)

जे भादवड़े दिक्खरण बाजै । बाय बीजली गोरम गाजै ॥
घूजै धरती धरकै नाग । सोखे नदियां सूखै बाग ॥

भाद्रपद मास में दक्षिण दिशा का वायु हो, बिना बादलों के आकाश गर्जना करे, बिजली चमके तो इन लक्षणों से इस वर्ष, वर्षा का अभाव रहेगा जिसके परिणामस्वरूप नदी, तालाब आदि सूख जावेंगे, पृथ्वी घूमेगी, शेष-नाग कांपने लग जावेंगे अर्थात् भू-कम्प होगा और बाग, बगीचे भी सूख जावेंगे।

(४४)

केव्है फोग सुरण माघजी, भादूं पिच्छम बाय ।
खण्डे तो कोरो करवरौ, मण्डै तो झड़ी लगाय ॥

फोग नामक कवि, माघ को सम्बोधन कर कहता है कि, भाद्रपद मास में यदि पश्चिम दिशा का वायु चले तो वर्षा हो रही हो तो बन्द हो जाती है। परन्तु यदि इस हवा से वर्षा प्रारम्भ ही हो रही हो तो वह बहुत दिनों तक बरसती रहेगी।

(४५)

भादवड़े च्यारूं दिसा बाजै आठूं कूंण ।
आयो मेह उड़ाय दे, परजा रहै सिर धूण ॥

यदि भाद्रपद मास में चारों दिशाओं का वायु चलता रहे तो इसका यह प्रभाव होता है कि बरसने के लिये आई हुई घटा भी उड़ जाती है। अतः प्रजा वर्षा के लिये सिर धुनती ही रह जाती है।

(४६)

आसाढ़ आसोजां पच्छम बाजै । सावण उत्तर दिस निवाजै ।।
तो बोला दिन बरसेगो आय । जे भादूं पूरब व्हैवै वाय ।।

आषाढ़ और आसोज में पश्चिम दिशा का वायु, श्रावण में उत्तर का वायु और भाद्रपद में पूर्व का वायु बहे तो ऐसी वायु के प्रभाव से वर्षा बहुत दिनों तक होती रहेगी ।

ऋतुओं एवं वायु द्वारा वर्षा ज्ञान

(४७)

दिक्खण वाजै वायरो, हेमन्त रितु के मांय ।
सिसिर रुत आछी हुवै, नैरुत वाज्यां वाय ।।
आथूणी वायु भली, जे वसन्त रुत में आवै ।
शरद रितु जे होय तो, रूंखां फल बधावै ।।

हेमन्त-ऋतु (मार्गशीर्ष-पौष) में दक्षिण दिशा का, शिशिर-ऋतु (माघ-फाल्गुण) में नैऋत्य का और वसन्त-ऋतु (चैत्र-बैशाख) में पश्चिम का वायु श्रेष्ठ होता है एवं शरद-ऋतु (आसोज-कार्तिक) में भी यदि यही पश्चिम दिशा का वायु हो तो फलों की वृद्धि करता है।

४८)

फलफूल को नाश व्है, शरद पूरब जे होय ।
उत्तर दिश रितुराज हुआं, फल ऊपरलौ लौ जोय ।।

शरद-ऋतु में पूर्व का एवं वसन्त-ऋतु में उत्तर का वायू होने से फल-फूलों का नाश हो जाता है ।

(४९)

बादल रंग सिमेण्ट सो, नेरुत वायु आय ।
सूरज शीतल शशि जिसौ, तब लग विरखा नांय ।।

जब तक बादलों का रंग कौए के पेट के रंग (सीमेण्ट-सा) समान, उनमें रूखापन-सा हो, सूर्य का रंग चन्द्रमा के समान शीतल हो; तब तक वर्षा का अभाव रहेगा ।

(५०)

सूरज रंग रूखो हुवै, नैरुत वायु आय ।
नखत रोयणी करूर ग्रह, तबलग विरखा नाँय ।।

नैऋत्य का वायु हो, सूर्य का रंग रूखा हो, रोहिणी नक्षत्र पर क्रूर-ग्रह हो जब ये सभी एक साथ हो तो वर्षा का अभाव रहेगा ।

(५१)

उत्तरादी कांठल बन्धै, उत्तर बहै समीर ।
घड़ी पलक में माघजी, पुहमी पूरै नीर ।।

उत्तर दिशा में बादलों की घटा छाई हुई हो, और उत्तर दिशा का ही वायु बहता हो तो इस लक्षण से शीघ्र ही वर्षा आवेगी ।

(५२)

उतरादी कांठल बन्धे, दिक्खण बाजै वाय ।
पय उफणता नीरज्यूं, आई घटा उड़ाय ।।

उत्तर दिशा में बादलों की घटा छाई हुई हो परन्तु उस समय यदि दक्षिण दिशा का वायु आ जाय तो जिस प्रकार उफान खाता दूध गिर रहा हो उसे जल के छींटे रोक देते हैं उसी प्रकार इन बरसने को तैयार बादलों को, जल बरसाने से यह वायु रोक कर उन्हें इधर-उधर उड़ा देती है ।

(५३)

राते वाय न वायरो, ऊग्ये सूरज तपेय ।
हाते हाले वेंजणो, खूब घडूके मेंय ।।

रात के समय वायु सर्वथा बन्द हो जाय, सूर्योदय होते ही अत्यन्त गरमी प्रतीत हो और हाथ में पंखा ढोलता ही रहे तो ये लक्षण खूब गरज कर वर्षा होने को सूचित करते हैं ।

(५४)

* भादूड़े नेरुत चालै, सावण आथूणो वाय
आसोजां ऊगूणो चाल्यां, विरला ही फल् खाय ॥

श्रावण मास में पश्चिम दिशा का, भाद्रपद में नैऋत्य-कोण का और आसोज में पूर्व दिशा का वायु हो तो ये, फल नाशक प्रभाव करती है।

(५५)

श्रावण पूरब भादू पच्छम, आसोजां नेरित।
काती में जे सीक न डोले, तो नहिं उपजै निश्चित ॥

श्रावण मास में पूर्व का वायु, भाद्रपद में पश्चिम का वायु, आसोज मे नैऋत्य का और कार्तिक में किसी ओर का वायु न हो तो अर्थात् एक सींक भी नहीं हिले तो यह निश्चित है कि, इस वर्ष कुछ भी उत्पन्न हो जाय यह असम्भव है।

(५६)

अम्बर तांण धनुस जद बाजे पच्छम वाय।
अति झड़ लागी बादली, तो आ जाय विलाय ॥

वर्षा की झड़ी लगी हुई हो उस समय यदि पश्चिम दिशा का वायु चलने लग जाय अथवा आकाश में इन्द्र-धनुष दिखाई दे तो, वर्षा सर्वथा बन्द हो जावेगी।

---

* सावण वाजै दक्खण वाय,
भादवड़े नेरुत भरणाय।
ऊगूणी आसोज तो फलझड़ै,
फूल मार के कीड़ा पड़ै ॥

नोटः—पीछे सं० ४१ पर सावण बाजै पच्छम बाय आया है।

(५७)

सावण वायव पवन भलेरी,
भादवड़े पूरब दिस फेरी ।
आसोजां बाजै पच्छम वाय,
तो काती साख सवाई थाय ।।

श्रावण मास में वायव्य-कोण का वायु, भाद्रपद में पूर्व का, आश्विन में पश्चिम का, वायु बहता रहे तो इसके प्रभाव से वर्षाकालीन कृषि उत्तम होती है ।

(५८)

आथूरणी दिस रौ वायरो, सावण महीना मांय ।
दोय च्यार दिन भै जाय तो, धान घणेरो थाय ।।

श्रावण मास में पश्चिम दिशा का वायु दो-चार दिन भी बह जाय तो इसके प्रभाव से पृथ्वी की उपज अत्यन्त होगी । अर्थात् कहीं भी बो दोगे, अवश्य निपजेगा ।

(५९)

पूरब उत्तर ईस दिस, जबलग वजै न वाय ।
तबलग विरखा व्है नहीं, जे आवै त्रिभुवनराय ।।

जब तक पूर्व, उत्तर और ईशान इन दिशाओं का वायु नहीं चले तब तक चाहे स्वयं जगन्नियन्ता ही क्यों न आ जाय, वर्षा नहीं होगी । यहां कवि यह व्यक्त करता है कि, परमात्मा भी तो नियम के आधीन ही है । अतः नियम-भंग कार्य (उपरोक्त दिशाओं की वायु चले बिना ही वर्षा हो जाना) होना कैसे सम्भव है ।

(६०)

भादू महिना मांयने, चालै अथूरणी वाय ।
कै विरखा होवै नहीं, व्है तो झड़ी लगाय ।।

भाद्रपद मास मे पश्चिम दिशा की वायु चले तो इसके प्रभाव से वर्षा नहीं होगी। कदाचित वर्षा प्रारम्भ हो जाय तो फिर झड़ी लग जावेगी।

(६१)

भादू महिना मांयने, चालै चहुं दिस वाय।
आयो मेह उड़ाय दे, परजा दुखी हो जाय॥

भाद्रपद मे वायु चारों ओर से चलती रहे तो इसके प्रभाव से आये हुए वर्षा के बादल तक उड़ जाते हैं। अतः वर्षा न होने के कारण प्रजा कष्ट पावेगी।

(६२)

वायव कूण को वायरो, चालै असाडां मांय।
कदियक दिस फेर कर, उत्तर को हो जाय॥
ईशाण कूण को वायरो, सावण में जो आय।
निश्चै जाणो सायबा, भादू कोरो जाय॥

आषाढ मास में वायव्य-कोण का वायु चलते-चलते कभी उत्तर की ओर हो जाय और श्रावण मास मे ईशाण-कोण का वायु चले तो कृषक पत्नि इन लक्षणों को देख कर अपने पति से कहती है कि, अब भाद्रपद मास मे वर्षा नही होगी।

(६३)

नेरुत कूण को वायरो, चालै असाडां मांय।
सावण वाजै वायरो, दिक्खण दिस में आय॥
अगन कूण को वायरो, जे आसोजां होय।
ऊभी साखां सूखसी, सोच लेवो सब कोय॥

आषाढ मास मे नैऋत्य कोण का वायु, श्रावण मास में दक्षिण दिशा का वायु, और आसोज मास मे अग्नि-कोण का वायु चले तो यह समझ लें कि, खेतों में खड़ी फसल सूख जावेगी।

(६४)

*वायव कूंण असाढ़ में, सावण पूरब होय।
आथूणो भादू भेवे, तो धान ज मूंघो होय।।

आषाढ मास में वायव्य-कोण का, श्रावण में पूर्व दिशा का, और भाद्रपद में पश्चिम का वायु चले तो इसके प्रभाव से वर्षा की कमी रहेगी और अन्न महँगा बिकेगा।

(६५)

अगन कूंण को वायरो, वाजै सावण मास।
भादूं नेरुत चालियां, नहिं विरखा की आस।।

श्रावण मास में अग्नि कोण का और भाद्रपद मास में नैऋत्य-कोण का वायु चले तो वर्षा की आशा नही है। केवल गर्मी ही बढ़ेगी।

(६६)

नेरुत कूण हो सावणै, भादूं दिक्खण जोय।
ऊगूणै आसोज पवन, ऊभी साख सुकोय।।

श्रावण मास में नैऋत्य-कोण का वायु हो, भाद्रपद मास में दक्षिण दिशा का और आसोज मास में पूर्व दिशा का वायु हो तो ये खड़ी फसल सूख जाने के लक्षण समझें।

(६७)

लंकाऊ व्है जे वायरो, माघ पोस जे मांय।
तो सावण महिना मांयने, मेह घणेरो थाय।।

पौष-माघ में यदि दक्षिण दिशा का पवन चले तो इस लक्षण से आगामी श्रावण मास में अच्छी वर्षा होने की यह अग्रिम सूचना है।

---

* आषाढां वायव चालै, सावण पूरब वाय।
आथूणी भादूं चाल्यां, मूंघो नाज कराय।।

(६८)

पूरब व्है तो वायरो, जे पच्छम में मिल् जाय ।
इण लक्खणां सूं जांणजो, मेह बर्सेलो आय ।।

पूर्व दिशा का वायु बहते-बहते यदि पश्चिम दिशा के वायु में मिल जाय तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि, वर्षा होगी ।

(६९)

अखय दिवाली होलका, साड़ी पूनम जोय ।
चौबाया जे चलै, तो नहीं बरसैलो तोय ।।

अक्षय-तृतीया, दीपमालिका, होली एवं आषाढी-पूर्णिमा इन दिनो मे यदि चारों दिशाओं का वायु चले तो इस लक्षण से वर्षा का अभाव रहेगा । अर्थात् वर्षा नहीं होगी ।

(७०)

ढांढा मारण, खेत सुकावण, तूं क्यूं चाली आघे सावण ।।

पशुओं का नाश करने वाली, हरे-भरे खेतों को सुखाकर नष्ट करने वाली है नागोरण-वायु ! अर्थात् हे नैऋत्य-कोण की वायु, तू क्यों चलने लग गई ।

तात्पर्य यह है कि आघे श्रावण के निकल जाने के पश्चात इस दिशा की ओर से यदि वायु चलने लग जाय तो इसके प्रभाव से कृषि का सूख जाना, पशुओं का मर जाना निश्चित है । इससे वर्षा की सम्भावना ही नहीं रहती है ।

(७१)

नाड़ा टांकण, बलद विकावण, तूं मत चालै आघे सावण ।।

कृषक, वायु को सम्बोधन कर कहता है कि दक्षिण-पूर्व आग्नेय कोण का वायु ! तू आघे श्रावण में मत चल । क्योंकि यदि ऐसा हुआ अर्थात् इस अवसर पर तू चलेगी तो परिणाम स्वरूप नाडी (छोटी-छोटी

तलैयाओं) में रेत भर जावेगी और अकाल पड़ जाने के कारण मुझे अपने बैल बेच देने पड़ेंगे ।

नोट:—नाड़ा शब्द से कोई कोई यह भी अर्थ करते हैं कि बैलों को बांधने अथवा हल चलाने हेतु काम में लिये जाने वाले रस्से के सम्बन्ध में ऐसा कहा गया है ।

(७२)

जेठ महीने वैरण वाजै, सूका सरवर भाण तपै ।
इन्दर राजा म्हारी अरज सांमलो थां बूठा म्हारा कारज सरै ।।
सज सिणगार धरतड़ी ऊभी, हरिया धामण धैन चरै ।
गउवांरी अरज सुणो अजमल् रा भाटी ऊभो अरज करै ।।

ज्येष्ठ मास में बैरन अर्थात् शत्रुणी याने उष्ण-वायु चल रही है, सरोवर भी सूर्य के ताप के कारण सूख गये हैं। भाटी जाति का एक कृषक, राजस्थान की ग्रीष्म-ऋतु से त्रस्त हो अजमल-पुत्र रामदेवजी से और इन्द्र महाराजा से प्रार्थना करता है कि इन्द्र की तुष्टि से मेरा कार्य-कृषि-सुधर जाता है और सौभाग्यवती नारी की तरह शृंगार सजी यह पृथ्वी हरी-भरी हो जाती है। अतः हे रामदेव जी ! गौवों की ओर से आप मेरी अर्ज सुनो ।

(७३)

‡ जेठ में चालै परवाई,
तो सावण सूखो जाई ।।

ज्येष्ठ मास में पूर्व दिशा का वायु चलना आगामी श्रावण में वर्षा के अभाव को सूचित करता है ।

---

‡ जे दिन जेठ बहै पुरवाई, ते दिन सावण धूर उड़ाई ।।

(७४)

ऊगूणो भादूं चालै, सावण उत्तर होय ।
आथूणो आसोज में, ल्यावै मेवड़ो जोय ।।

श्रावण मास में उत्तर दिशा का वायु, भाद्रपद मास में पूर्व दिशा का वायु और आश्विन मास में पश्चिम दिशा का वायु चले तो जहाँ कहीं भी वर्षा के बादल होंगे वहां से ये हवाएं उन्हें उड़ा कर अपने यहाँ ले आवेगी; जिसके परिणाम स्वरूप वर्षा होगी।

(७५)

सावण मासे सूर्यो बाजे, भादरवै परवाई ।
* आसोजाँ आथूणो चालै, ज्यूं ज्यूं साख सवाई ।।

श्रावण मास में उत्तर की, भाद्रपद में पूर्व की आसोज मे पश्चिम की वायु चले तो ये शुभ लक्षण हैं। इन दिनों मे ज्यों-ज्यों हवा चलेगी, फसल को बल मिलेगा और नियमित उत्पादन से सवाया उत्पादन होगा।

(७६)

दिखणादी वायु चल्यां, नित का बरसै मेह ।
जे चौमासे में वाय तो, नहिं दरसेला एह ।।

यों तो दक्षिण दिशा की वायु से वर्षा सदैव आती ही है। किन्तु, यही वायु यदि वर्षा-काल के चार महीनों मे हो तो वर्षा नही होगी।

---

* आसोजां में समदरी बाजै, काती साख सवाई ।।

(७७)

चौमासा के लागते वाय बादला बीज ।
दिक्खण दिस जे हुवै, तो बेगो मेह मासीज ।।

वर्षाकाल के प्रारम्भ में यदि दक्षिण दिशा का वायु, इसी दिशा में बादल हो और बिजली चमके तो ये लक्षण शुभ हैं। ऐसे योग के प्रभाव से उस वर्ष, वर्षा शीघ्र होगी।

(७८)

काक उदर सम आभो हुवै, नैरुत चालै वाव ।
सूरज फीको चान्द ज्यूं, ए नहिं बरसण रा भाव ।।

आकाश मे बादलों का रंग कौवे के पेट के रंग-सा हो, नैऋत्य-दिशा का वायु चल रहा हो, सूर्य का तेज चन्द्रमा के समान शीतल हो तो इन लक्षणो के रहते, वर्षा नही आती है। अर्थात् जब तक ये लक्षण बने रहेंगे, वर्षा नही होगी।

(७९)

सूरज वरण रूखो हुवै, नैरुत चालै वाय ।
जित्ते ए बदलै नहीं, मेह बित्ते नहिं आय ।।

जिन दिनों मे सूर्य का रंग रूक्ष-सा हो और नैऋत्य-दिशा का वायु चलता हो तो जब तक ये लक्षण विद्यमान रहेंगे, वर्षा नहीं होगी। अर्थात इन लक्षणों के बदलने पर ही वर्षा होगी।

(८०)

लगै फूल जद बांस कै, समो करवरो जांण ।
राजी होसी ऊंदरा, करसण होसी हांण ॥

जंगल में जा कर देखने पर जिस वर्ष, बांस के फूल आए हुए दिखाई दे तो यह, उस वर्ष अकाल होने की अग्रिम सूचना है, ऐसा समझ ले ।

उस वर्ष चूहों की प्रचुरता होगी । इनकी वंश-वृद्धि के कारण, कृषि का नाश हो जावेगा ।

(८१)

चन्दा तूं पीलन्थियो, ज्यूं सूरज पीलन्त ।
तीजै चौथे क पाचवें, सरवर ठेल भरन्त ॥

हे चन्द्र ! आज तुम भी सूर्य के समान ही लालिमा धारण किये हुए दिखाई देते हो । तुम्हें इस प्रकार से देख कर यह निश्चित हो जाता है कि आज से तीसरे, चौथे या पांचवे दिन सरोवर जल से परिपूर्ण भर आवेंगे ।

तात्पर्य यह है कि, केवल इस एक लक्षण से ही इन दिनों में वर्षा अवश्य होगी ।

दिल्ली से प्रकाशित दैनिक नवभारत के दि० २० अगस्त १९५९ के अन्तिम पृष्ठ पर 'फूल और अकाल' शीर्षक के अन्तर्गत शिलांग के जो समाचार प्रकाशित हुए हैं, उनसे वहां के आदिवासियों की परम्परागत धारणा से इस उक्ति का समर्थन होता है ।

प्रकृति से वर्षा ज्ञान पूर्वार्द्ध की अकारादि क्रम से

अनुक्रमणिका

घ

— —

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	३	६६ अगुल किम्वा ६ फुट की	६६ अगुल किम्वा ६ फुट की
१	६	पैलो	पैली
२	११	काल	काल्
३	१५	मो	सोल्
३	१६	ग्वदै	चवदै
४	६	आश्वलेषा	आश्लेषा
५	८	करसणा	करसण
६	६	शिखावन	शिखावान्
८	३	थाय	थाय
१०	८	घरोरी	घणेरी
११	७	शुक्ला	शुक्ल
११	१५	अनुराधा	अनुराधा
१२	५	मिले	मिलें
१६	७	प्रजा के लाभदायक	प्रजा के लिये लाभदायक
२५	४	थम्म	थम्भ
२७	२	।६।	:७:
२७	२२	तृणा-स्तम्भ	तृण-स्तम्भ
२८	५	रिच्छ बक्ख	रिच्छ वक्ख

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६	६	थन	घन
२६	१८	सतभिल	सतभिख
२६	१८	बऊ	बेऊ
३०	६	मेला	भेला
३०	२५	डेऊ	बैऊ
३०	२६	ग्रत	ग्रस्त
३१	१४	ग्रवश्य वर्षा होती	वर्षा नहीं होती
३२	४	भरण गली	भरणी गली
३२	६	ग्राश्विनी नक्षत्र	ग्रश्विनी नक्षत्र
३५ फुट नोट प्रथम पंक्ति		मेड़ न बूंद	मेह न बूंद
३७	२	कुरणडाली	कुरणडाली
३६ फुट नोट प्रथम पंक्ति		जो दोख	जो दोख
४०	११	ग्रोर ग्रार्दा	ग्रोर ग्रार्द्रा
४३	१७	मघा	मघा
४४	११	सर्य	सूर्य
४६	४	हस्त के ग्रन्त में	हस्त के ग्रन्त तक में
४६	२१	सरज	सूरज
४७	१	ग्राद्रा	ग्रार्द्रा
४६	२	वरस	वरसै
५०	४	ती	तो
५०	६	मग्घ	मग्वा
५१	१६	लक्षण इस के	इस लक्षण के
५२	१४	मालवे	मालबे
५३	१५	तीनूं ग्रावै	तीनूं जावे
५४	११	काले ननाल्हे	काले उन्हाले

पृष्ठ संख्या	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५६	५	विशाखा नक्षत्र	विशाखा नक्षत्र
५६	२५	स्वातो दीपक	स्वाती दीपक
५९	८	घुर दिस	घुर दिस
५९	१३	दुखिण	दक्षिण
६२	२२	निर्वाण	निर्वांण
७४	२०	शुक	शुक्र
७४	२४	बीनो	बोली
८२	२	मेला आव	भेला आवै
८२	१७	हाना है	होता है
८२	२२	प्रभव	प्रभाव
८३	५	हासो	होसी
८३	१८	नैरुत्य	नैऋत्य
८३	१९	प्रजा को	प्रजा का
८४	१७	शुक	शुक्र
८५	६	आपम है	आपस में
८५	२०	कर ग्रहों	क्रूर ग्रहों
८६	४	गरम	गरग
८६	१६	धारण से	धारण में
८६	१९	वधै	बधै
८७	११	सांखर	भाखर
८७	१३	गरम	गरम
८७	१९	यकी	थकी
८८	४	धीमो	धीमो
८८	५	गरम	गरम
८८	१९	बाधा	बाधा

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९३	११	ग्रामो	ग्राभो
९३	२०	किम्बा	किम्वा
१००	८	दस	दश
१०१	२५	बल	वेला
१०२	१२	बला	वेला
११४	१६	ग्राव मेह	ग्रावे मेह
१२५	१०	बन बेरी	बनबेरी
१३२	१५	घूर	धूर
१३४	८	अपने बिल में	अपने दर (बिल) में
१३४	२०	'कूंकल	कूपल
३२४	२१	पूडियो	कुंडियो
१३७	४	वहद	वेहद
१३९	१०	बिल्लयों	बिल्लियो
१४२	१४	विघन	विघन
१४२	२६	कर डराटा	करे डगाटा
१४३	१२	तीव्र	तीव्र
१४५	२	अन्ड	अगड
१४५	१०	अम्बाडा	अम्बाडी
१४५	२०	घघोड़	घूघोड़
१४८	२४	वघो	वघे
१४८	२७	शत्र	शत्रु
१४९	२	भाघ	भाग
१४९	२३	बोले तौ	बोले तो
१५०	१९	चढ़	चढै
१५०	१२	सायवा	सायबा

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५४	३	ऊगएते	ऊगन्ते
१५६	२२	रात्यू	रात्यूं
१५७	५	हो जाना	हो जाना ये
१५९	९	पढ़	पड़े
१६१	१८	बकर	बकरी
१६३	५	जाल	जाय
१६३	१५	बस्वादो	बेस्वादो
१६३	१८	जल में	जल में से
१६५	७	नाड़ी द	नाड़ी दे
१६६	८	१६८	१३८
१६६	२	उदाता	उद्वता
१६७	२२	दह	देह
१६८	१२	भह	भेह
१७४	९	१६६	इसे १५ वी पंक्ति में समझ
१७४	११	यायु	वायु
१७४	२०	सुरा	सुरा
१७४	२५	वारे	बारे
१७७	३	वर वरे	वरै वर
१७७	२४	तरो	तो
१७९	२१	प्रावे	आवे
१८२	१५	यो हो	यो ही
१८८	८	शुक्ल के	के शुक्ल
१८८	१०	बह	वह
१८९	५	१२८	२१८
१९०	५	दिवा की ओर	दिशा की ओर

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९२	२६	बाजली	बीजली
१९९	२	ततकाल	तत्काल
१९९	५	दिसा	दिस
१९९	१२	छेंह	छेह
२०२	३	मचना है।	सूचना है।
२०२	१९	एव	एवं
२०४	१५	थाय ॥	जोय ॥
२०८ अंतिम पंक्ति		कक ल्याणा	का कल्याण
२१५	४	दीख	दीखै
२१५	९	रगां	रंगां
२१६	४	घण	घण
२१७	५	आर	और
२१९	६	भरणो	भरसी
२२०	२०	ढेरो	देरी
२२१	२६	वृष्टि मूषका :	वृष्टिर्मूषकाः
२२२	२१	इलाक ॥	श्लोक ॥
२२४	२०	समय	संयम
२२४	२०	मेहां रो	मेहाँ री
२२५	१७	होयेर	होय'र
२२६	४	पश्चित	पश्चिम
२२६	१०	बहता हुआ	बहता हुआ
२२८	१३.	लूं	लू
२३०	१२	बघार्व ॥	बधावें ॥

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३१	२६	ढोलता	डोलता
२३३	१६	धाय	वाय
२३५	२०	जे	के
२३५	२६	मूंधो	मूंधौ

पूर्वार्द्ध की अनुक्रमणिका में

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२	२१, २२, २३	१९६	२००